بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيۡكَ يَا رَسُوۡلَ اللّٰهِ ﷺ

وَعَلٰى آلِكَ وَاَصۡحَابِكَ يَا حَبِيۡبَ اللّٰهِ ﷺ

قَالَ النَّبِىُّ ﷺ : مَنۡ اَحَبَّ سُنَّتِىۡ فَقَدۡ اَحَبَّنِىۡ وَمَنۡ اَحَبَّنِىۡ كَانَ مَعِىَ فِى الۡجَنَّةِ۔

(الحدیث)

برکات شریعت

(دوم)

बरकाते शरीअत

(हिस्सा-२)

★ मुअल्लिफ ★

हाफ़िज़ो क़ारी मौलाना मुहम्मद शाकिर अली नूरी साहब *(अमीरे सुन्नी दावते इस्लामी)*

★ नाशिर ★

मकतबाए तयबाह, मर्कज़ इस्माईल हबीब मस्जिद
१२६, कांबेकर स्ट्रीट, मुंबई-४००००३

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيۡكَ يَا رَسُوۡلَ اللّٰهِ ﷺ

وَعَلٰى آلِكَ وَاَصۡحَابِكَ يَا حَبِيۡبَ اللّٰهِ ﷺ

किताबका नाम : बरकाते शरीअत *(हिस्सा-२)*

तालीफ़ : **हाफ़िज़ो क़ारी मौलाना मुहम्मद शाकिर अली नूरी साहब** *(अमीरे सुन्नी दावते इस्लामी)*

सफहात : ३३८

कम्पोजिंग : **सादिक याकूब बरजी** (गुजरात)

प्रुफ रीडिंग : **पटेल शब्बीर अली रज़वी** (गुजरात)

आवृत्ति : प्रथम

ताअदाद : २०००

कीमत :

★ नाशिर ★

मकतबाए तयबाह, मर्कज़ इस्माईल हबीब मस्जिद
१२६, कांबेकर स्ट्रीट, मुंबई-४००००३
फोन : ०२२-२३४३४३६६

हम्दे बारी तआला

अज़ : **सैय्यदी आला हज़रत** عَلَیْهِ الرَّحْمَةُ وَ الرِّضْوَان

वही रब है जिसने तुझ को हमा तन करम बनाया
हमें भीक मांगने को तेरा आस्तां बताया
तुझे हम्द है ख़ुदाया

तुम्हीं हाकिमे बुराया तुम्हीं क़ासिमे अताया
तुम्हीं दाफ़ेए बलाया तुम्हीं शाफ़ेए ख़ताया
तुझे हम्द है ख़ुदाया

वह कुंवारी पाक मरयम वह नफख्त फीह का दम
है अजब निशाने आज़म मगर आमिना का जाया
वही सब से अफ़ज़ल आया

यही बोले सिदरह वाले चमने जहां के थाले
सभी मैंने छान डाले तेरे पाये का न पाया
तुझे यक ने यक बनाया

फइजा फरगत फन्सब यह मिला है तुझको मन्सब
जो गदा बना चुके अब उठो वकते बख़्शिश आया
करो क़िस्मते अताया

अरे ऐ ख़ुदा के बंदो! कोई मेरी दिल को ढूंढो
मेरे पास था अभी तो अभी क्या हुआ ख़ुदाया
न कोई गया न आया

हमें ऐ **"रज़ा"** तेरे दिल का बता चला बमुश्किल
दरे रौज़ा के मुक़ाबिल वह हमें नज़र तो आया
यह न पूछ कैसा पाया

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ

★ अरबी नआत शरीफ ★

अज़ : मौलाना रफीउद्दीन अशरफी (परभनी)

يَا مُصْطَفٰى مَاجِئْتَنَا اِلَّا لَنَا يَا سَيِّدِیْ
قَدْ نُوِّرَتْ بِنُوْرِكَ الدُّنْيَا لَنَا يَا سَيِّدِیْ

مَنْ عَاصِمٌ يَّوْمَ الْقِيَامَهْ لَيْسَ اِلَّا الْمُصْطَفٰى
نَحْنُ نَحْتَاجُ اِلَيْكَ ارْحَمْ لَنَا يَا سَيِّدِیْ

اِنْ رَّأَيْتُ عَكْسَ نَعْلَيْكَ وَجَدْتُّ رَاحَةً
اِنْ وَّضَعْتَ قَدَمَكَ قَلْبًا لَّنَا يَا سَيِّدِیْ

لَيْسَ فِیْ مَنْ حُبُّكَ اَنْ لَّيْسَ اِيْمَانٌ لَّهٗ
مِنْكَ نَرْجُوْ حُبَّكَ فَارْزُقْ لَنَا يَا سَيِّدِیْ

لَيْسَ فِی الدُّنْيَا فَمَنْ يَّرْحَمْ لَنَا اِلَّا سِوَاكَ
اَنْتَ هَادٍ اَنْتَ شَافِعٌ لَّنَا يَا سَيِّدِیْ

اَلْحُبُّ حُبُّكَ يَا نَبِیْ قَالَ تَعَالٰى فِی الْكِتَابِ
مَنْ اَحَبَّ بِالنَّبِیْ يُحِبُّ لَنَا يَا سَيِّدِیْ

كَانَ يَسْئَلُكَ رَفِيْعُ الدِّيْنِ شَيْئًا لَّمْ يَزَلْ
اَعْطِنَا عَلٰى رَوْضَتِكَ مَوْتًا لَّنَا يَا سَيِّدِیْ

★ शर्फ़े इन्तेसाब ★

نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّیْ وَنُسَلِّمُ عَلٰی رَسُوْلِهِ الْکَرِیْمِ

मेरे उस्ताज़ मां बाप भाई बहन

अहले विल्दो व अशीरत पे लाखों सलाम

मैं अपनी इस काविश को अपने वालदैन करीमैन की ज़ात से मंसूब करता हूं जिनकी आग़ोशे तर्बियत में परवान चढ़कर आज मैं इस लायक़ बना।

बचपन में जब वालदैन बुजुर्गवार सरकार हुजूर मुफ़्तीए आज़म हिंद عَلَیْهِ الرَّحْمَةُ وَ الرِّضْوَانُ और हुजूर मुजाहिदे मिल्लत عَلَیْهِ الرَّحْمَةُ وَ الرِّضْوَانُ जैसे अज़ीम बुजुर्गों के पास ले जाते और इनसे यूं अर्ज़ करते कि मेरे इस बेटे के लिये दुआ फ़रमायें। उस वक़्त मैं सोचता कि आख़िर मुझे ही क्यों ले जाते हैं? आज मैं समझता हूं कि उन्हीं बुजुर्गाने दीन का फ़ैज़ाने नज़र है कि मैं इस लायक़ बना। अल्लाह ﷻ मरहूम वालिदे बुजुर्गवार की क़ब्र पर अनवार व तजल्लियात की बारिश फ़रमाये और रहमते आलम ﷺ के सदक़े व तुफ़ैल इनकी मग्फ़िरत फ़रमाये।

इसी तरह मेरी वालदा मशफ़का माजेदा जो हर लम्हा हर घड़ी मेरी फ़िक्र, मेरे लिये दुआयें और सब्र व इस्तेक़ामत की तलक़ीन नीज़ दीनी ख़िदमात में मसरूफ़ रहने के लिये ताकीद और शब की तारीकियों में मेरे लिये कामयाबी की दुआयें करती रहती हैं। इन सारी चीज़ों ने मुझे यहां तक पहुंचाया। सच है कि वालदैन की दुआ का मर्तबा औलाद के हक़ में ऐसा ही है जैसे नबी की दुआ उम्मती के हक़ में। अलाह ﷻ उनके सायाए आतेफ़त को दराज़ तर फ़रमाये और उनको दराज़गीए उम्र बिल ख़ैर अता फ़रमाये ता कि मैं राहे दीन में अपने सफ़र को जारी रख सकूं। और उनकी दुआओं से मुहब्बते रसूल ﷺ के चिराग़ लोगों के दिलों में रौशन कर सकूं।

"رب ارحمهما کما ربیانی صغیرا"

آمین بجاہ النبی الکریم علیه افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

दुआओं का तालिब

★ तक़रीजे जलील ★

अज़ : हज़रतुल अल्लाम मुफ़्ती जुबैर अहमद बरकाती मिस्बाही

(उस्ताज़े दर्स व इफ़ता अल जामिअतुल ग़ौषिया, मुंबई-3)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّیْ وَنُسَلِّمُ عَلٰی رَسُوْلِهِ الْکَرِیْمِ

जबसे दुनिया वजूद में आयी उस वक़्त से लेकर अब तक इंसानों के सामने बे शुमार सियासी, इक़्तेसादी और समाजी तंज़ीमें वजूद में आयीं। लेकिन अब तक दुनिया तर्जबा कर चुकी है कि यह सारे निज़ाम इंसानों को अख़लाक़ी और रूहानी इक़दार से आरास्ता करने और क़लबी सुकून व इत्मिनान अता करने में बिल्कुल नाकाम हो चुके हैं बल्कि इन सारे निज़ामों की ख़राबियां तश्त अज़बाम हो चुकी हैं जिनके बाइष दुन्या एक मतअफ़न आतशकदा बनती जा रही है और मज़लूम इंसानियत क़लबी तस्कीन के लिये अल अतश की सदा बुलंद कर रही है। कारगाहे हयात में कामरानियों का मुस्तहकम ज़रिया और अपने मसीहा की तलाश में सरगरदां है।

लेकिन जैसे ही वह कशां कशां इस्लाम की आग़ोश में आती है तब उसे पता चलता है कि हक़ीक़ी सकून तो यहां है! अपनी प्यास बुझाने के लिये सर चश्मए हयात तो यही है! अब यह हक़ीक़त बिल्कुल आशकारा होती जा रही है कि इस्लाम ही तबाह हाल दुनिया को फ़िरोज़ मंदी व सआदत मंदी से हम किनार करके मज़लूम इंसानियत की दस्तगीरी कर सकता है। क्यों कि इस्लामी निज़ामे हयात ही में यह ताक़त है कि इंसानों के अंदर ख़ौफ़े ख़ुदा, आख़ेरत का तसव्वुर, अपनी और सारी मख़्लूक़ की ख़ैर ख़्वाही और भलाई के अफ़कार व

जज़्बात पैदा कर सके, नीज़ वह इबादात व मामलात दोनों ही पर मुश्तमिल एक जामेअ और मज़बूत दस्तूर पेश करता है। वह जहां अपने मानने वालों को दुन्यावी मफ़ादात के हुसूल के तरीक़े व उसूल बताता है वहीं पर वह अख़्लाक़ी क़दरों और रूहानी तवानाईयों के उसूल व ज़वाबत भी पेश करता है। इसकी हकीमाना जामेइयत का तो यह आलम है कि मफ़ासिद व मज़ालिम के जहां से दरवाज़े खुल सकते थे चौदह सौ साल पहले ही उनका सद्दे बाब कर चुका है।और हर मुश्किलात का ईलाज व मुदावा पहले ही पेश कर चुका है।इसलिये आज दुन्या के सामने हम चेलैंज के साथ कह सकते हैं कि मज़लूम इंसानियत की दस्तगीरी और आलमी अम्न व सलामती की सलाहियत सिर्फ़ इस्लाम में है। मगर शर्त यह है कि इसे पूरी दुन्या में निफ़ाज़ हासिल हो। क्योंकि इस्लाम की कुव्वत व सलाहियत इसका जलाल व जमाल और इसका हुस्न व कमाल पूरे तौर पर इस सूरत में नुमायां हो सकता है जब कि उसकी तनफ़ीज़ अमल में आये। जैसा कि आज भी दुनिया के बाज़ ख़ित्तों पर उसकी कार फ़रमाई का हुस्न नुमायां है।

इस्लाम के हुस्न व जमाल और जलाल व कमाल की तफ़सीलात पेश करने की मुझे चंदां ज़रूरत नहीं क्यों कि एक जामेअ और मबसूत किताब दावे की दलील के तौर पर आप के हाथों में है जिसके अंदर मोअल्लिफ़े गिरामी हज़रत अल्लामा मौलाना शाकिर अली नूरी साहब ने निज़ामे इस्लाम के कई पहलुओं को कुरआन व हदीस की रौशनी में उजागर किया है।

आज ज़रूरत इस बात की है कि इस्लामी निज़ामे हयात की तन्फीज़ के लिये भरपूर सई की जाये। इसी अज़ीम मक़सद के पेशे नज़र आलमी तहरीक **सुन्नी दावत इस्लामी** शब व रोज़ मसरूफ़े अमल है। जिसके अमीर मुबल्लिग़े इस्लाम व मुफ़क्किरे इस्लाम **हज़रत अल्लामा मौलाना हाफिज़ व क़ारी मुहम्मद शाकिर अली नूरी साहब** क़िब्ला मद्द ज़िल्लहु क़ौमो मिल्लत के दर्द व कर्ब को महसूस करते हुए तक़रीर व तहरीर, तबलीग़ व इशाअत के ज़रिये ख़िदमते दीने मतीन में अपनी पूरी ज़िन्दगी को वक्फ़ कर चुके हैं। आप एक तरफ़ ख़िताबत के बेताज बादशाह हैं तो दूसरी तरफ मैदान तहरीर के अज़ीम शहसवार भी हैं। सबसे अहम बात तो यह है कि

आप सिर्फ़ गुफ़्तार के ग़ाज़ी नहीं बल्कि किरदार के भी ग़ाज़ी हैं।

मैंने बहुत क़रीब से आपका मुताला किया है यक़ीनन ! आप निहायत ही शरीफ़ और ख़लीक़ आलिमे बा अमल हैं।आपकी तबलीग़ी मस्साईए जमीला से एशिया व यूरप के बे शुमार ख़ित्ते मुस्तफ़ैज़ हो रहे हैं।आज दुनिया के बेश्तर इलाक़ों में आप एक महबूब व मक़बूल ख़तीब बल्कि अज़ीम दाइए दीन की हैसियत से मुतारिफ़ हैं।

अल्लाह ﷻ आपको जज़ाए ख़ैर व सआदते दारैन से मालामाल फ़रमाये कि आपने इस्लाम से लोगों की अदमे वाक़िफ़ियत और उसकी तरफ़ से बदगुमानियों को दूर करने की ख़ातिर मज़लूम इंसानियत के लिये **बरकाते शरीअत** के ज़रिये शिफ़ा बख़्श दवा पेश फ़रमाई है। अल्लाह तबारक व तआला अपने हबीब पाक ﷺ के सदक़े व तुफ़ैल इस किताबे मुस्तताब को कुबूलियत अता फ़रमाकर मक़सद में कामयाबी अता फ़रमाये, नीज़ मोअल्लिफ़े गिरामी के इल्म व अमल, तक़वा व परहेज़गारी, तबलीग़ व तहरीर में रोज़ अफ़ज़ूं तरक़्क़ी फ़रमाये और **सुन्नी दावते इस्लामी** को इस्तेहकाम अता फ़रमाये।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم-

फ़क़ीर बरकाती मुहम्मद जुबैर बरकाती मिस्बाही अफ़ी अन्हू
10 ज़ीक़ादा 1426 हि.

الصلوٰة والسلام عليك يارسول الله ﷺ

وعلىٰ آلك واصحابك يا نور الله ﷺ

★ अहवाले वाक़ई ★

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ

وَعَلٰى آلِهٖ وَاَصْحَابِهِ الطَّيِّبِيْنَ الطَّاهِرِيْنَ اما بعد !

اَلْحَمْدُ لِلّٰه! सरकार रहमते आलम ﷺ के सदक़े व तुफ़ैल इस वक़्त आपके हाथ में **"बरकाते शरीअत हिस्सा दोम"** है और इसे आप तक पहुंचाते हुए बड़ी मुसर्रत हो रही है। अल्लाह ﷻ हम सबको रहमते आलम ﷺ के सदक़ा व तुफ़ैल कुरआन व अहादीस के अहकाम पर अमल की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये। آمين بجاه النبى الكريم عليه افضل الصلوٰة والتسليم-

क़ारेईन किराम ! आप अच्छी तरह जानते हैं कि आज पूरी दुन्या में मुसलमान इल्मी, अख़लाक़ी और सियासी पसमांदगी के शिकार हैं या तो ग़फ़लत की वजह से या तो फिर ग़ैरों की साज़िशों के सबब। क़ौमे मुस्लिम को इस परेशानी से नजात दिलाने के लिये साहिबे दर्द उलेमा व मशाइख़ नीज़ दानिश्वराने मिल्लत अपनी अपनी कोशिशों में मसरूफ़ हैं, अल्लाह तआला उनकी कोशिशों का सिला उन्हें अपनी शान के मुताबिक़ अता फ़रमाये और उनकी ख़िदमाते जलीला को शर्फ़े क़बूलियत से नवाज़े।

हमारी पसमांदगी के असबाब में से एक सबब यह भी है कि हमारी क़ौम अपने मताए ईमान और अख़लाक़ी इक़दार की हिफ़ाज़त करने कि बजाए अग़यार की नक़्क़ाली को अपनी कामयाबी का जौहर तसव्वुर करती है, दर हक़ीक़त हमारी कामयाबी और कामरानी ग़ैरों की नक़्क़ाली में नहीं बल्कि अहकामे कुर्आने मुक़द्दस और अहकामे रसूलुल्लाह ﷺ की पैरवी और कुरआने मुक़द्दस

से ताल्लुक़ मज़बूत करने में है।

आज कुरआने मुक़द्दस और साहिबे कुर्आन ﷺ से हमारा ताल्लुक़ कमज़ोर हुआ और हम तबाही के दलदल में फंस गये, कुरआने मुक़द्दस की तिलावत और उसके अहकाम व असरार को समझने के जज़्बे को बेदार करने के लिये और गुनाहों से दामन को बचाकर सुन्नते रसूल ﷺ के रास्ते पर चलकर दोनों जहान में सुर्ख़रूई हासिल करने के लिये **"बरकाते शरीअत हिस्सा दोम"** तर्बियत दी गयी जो आपके हाथ में है। आप अच्छी तरह समझ सकते हैं कि सेंकड़ों सफ़हात पर मुश्तमिल इस किताब की तर्तीब कोई आसान काम नहीं, फिर भी फ़ज़ले इलाही शामिले हाल हो और करमे मुस्तफ़ा ﷺ और ग़ौष व ख़्वाजा व रज़ा رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن की निगाहे इनायत हो तो हर मुश्किल आसान हो जाती है और ग़ैब से मदद मिल जाती है।

اَلْحَمْدُ لِلّٰه! इन्हीं ग़ैबी मदद में हमारे इदारे के उलेमाए किराम और तहरीक के रुफ़क़ाए दावत शामिल हैं, जिनका नाम अगर न ज़िक्र करूं तो नाशुक्री होगी। मुहक़्क़िक़े मसाइले जदीदा **हज़रत अल्लामा मुफ़्ती निज़ामुद्दीन साहब** क़िब्ला सदर शोबए इफ़ता अलजामिअतुल अशरफ़िया, **हज़रत अल्लामा मुफ़्ती जुबैर अहमद बरकाती मिस्बाही, हज़रत मौलाना मुहम्मद रफ़ीउद्दीन अशरफ़ी, मौलाना मज़हर हुसैन अलीमी, मौलाना एजाज़ साहब रज़वी, मौलाना अबुल हसन नूरी, मौलाना सय्यद इमरानुद्दीन साहब, मौलाना अब्दुल्लाह आज़मी वग़ैरह** जिन्होंने तसहीह तर्बियत और कम्पोज़िंग वग़ैरह में पूरा तआवुन फ़रमाया और इस किताब को आपके हाथों तक पहुंचाने में हमारी मदद की।

इस किताब को इशाअत के मरहले से गुज़ारने में मोअमारे क़ौम व मिल्लत अलहाज मुहम्मद उष्मान ज़रूदवाला और अल्हाज मुहम्मद इरफ़ान इब्राहीम नमक वाला ने नुमायां किरदार अदा किया और इशाअत की ज़िम्मेदारी बहुस्न व ख़ूबी निभाकर इस किताब को आपके हाथों तक पहुंचाने में मदद फ़रमायी। अल्लाह तआला मज़कूरा जुमला रुफ़क़ाए दावत को अपनी शान के मुताबिक़ अज्र अता फ़रमाकर हर क़िस्म की अरज़ी व समावी बलाओं से महफ़ूज़ रखे।

آمين بجاه النبى الكريم عليه افضل الصلوٰة والتسليم-

الحمد لله! **बरकाते शरीअत हिस्सा अव्वल** से लोगों ने ख़ूब इस्तेफ़ादा किया, चार ज़बानों में जिसका तर्जमा भी हो चुका है और मुल्क व बैरूने मुल्क में लोगों ने **बरकाते शरीअत** की बरकतें हासिल कीं। उम्मीद है कि **बरकाते शरीअत हिस्सा दोम** भी लोगों के लिये मुफ़ीद और कार आमद षाबित होगी, नीज़ कुरआन व हदीष के बरकात के हुसूल का ज़रिया होगी।

फ़क़ीर को अपनी इल्मी बे मायगी और इस्तेअदाद की कमी का एक एतेराफ़ है, किताब में वह कुछ तो न लिखा जा सका जिससे मज़ामीन का हक़ अदा होता हो, लेकिन एक कमज़ोर बंदे की हक़ीर कोशिश है जिससे मक़सूद महज़ तबलीग़ व इशाअते दीन है।

अहले इल्म हज़रात की बारगाह में इल्तेमास है कि ज़ेरे नज़र किताब **बरकाते शरीअत हिस्सा दोम** में किसी क़िस्म की इस्लाह की ज़रूरत महसूस करें तो आगाह फ़रमायें ता कि आइंदा इसका ख़्याल रखा जा सके।

रब्बे क़दीर ﷻ की बारगाह में दुआ है कि अपने महबूबीन के सदक़े इस किताब को शर्फ़े क़ुबूलियत अता फ़रमाये।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

मैंने रुख़ कर लिया मदीने का

मैंने रुख़ कर लिया मदीने का
कया बिगाड़े कोई सफ़ीनेका
चश्मे रहमत पळी है मुझ पर भी
लुत्फ़ आओगा अब तो जीनेका

अपनी उल्फ़तका जाम दो मुझको
मस्त करदो मुझे मदीने का
जानिबे नार मैं न जाउंगा
मैंने रुख़ कर लिया मदीने का

कौन रोकेगा राहसे मुझको
मैंने रुख कर लिया मदीनेका
आखरी वकत दफ़न होनेको
दे दो टुकडा मुझे मदीनेका

कैसे कह दूं के बे सहारा हूं
मुझको आका मिला मदीने का
मैं मदीनेमें आता जाता रहूं
बख्त चमकाइए कमीने का

अब्रे रहमतको अब बरसने दो
दाग धूल जाओ मेरे सीनेका
कश्ती तहरीक की यह चलती रहे
रख लो आक़ा भरम सफ़ीनेका

काश ! फ़र्माओं हश्रमें आक़ा
यह तो दीवाना है मदीनेका
शाकिरे खस्ता हाल पर हो करम
फ़िरसे मेहमान करो मदीने का

ख्वाजओ ख्वाजगां के सदके में
मैं मुसाफ़िर बना मदीने का
गौषो ख्वाजा रझा व ईब्ने रझा
नाम खुल्दे बरींके झीनेका

है यही विर्दे "शाकिरे रझवी"
मैंने रुख कर लिया मदीने का

बरकाते शरीअत एक नज़र में

हिस्सा दोम
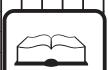
फ़ज़ाइले कुरआन शरीफ़

اِنَّا نَحنُ نَزَّلنَا الذِّكرَ وَ اِنَّا لَهٗ لَحَافِظُونَ

तर्जुमा : बेशक ! हमने उतारा है यह कुर्आन और बेशक ! हम ख़ूद इस्के निगेहबान हैं।

तौहीद का बयां भी इमान की रोशनी भी
हम्दे ख़ुदाए बर हक़ और मिदहते नबी भी

देखो बनज़रे गाइर कुर्आनमें है सब कुछ
वअदो वइदे उख़रवी क़ानूने ज़िंदगी भी

الصلوٰة والسلام عليك يارسول الله صلى الله عليه وسلم

وعلىٰ آلك واصحابك يا نور الله صلى الله عليه وسلم

"بِسمِ الله" के फ़ज़ाइल

"بِسمِ اللهِ الرَّحمٰنِ الرَّحِيمِ" की फ़जीलतें, बरकतें और खूबियां बहुत ज़्यादा हैं, हम यहां इख़्तसार के साथ उसकी चंद ख़ूबियों और बरकतों को कुरआन व हदीष के ज़रिये वाज़ेह करते हैं ता कि मुसलमान भाई इसकी बरकतों से अच्छी तरह फ़ायदा उठा सकें।

★ कुर्आन की कुंजी ★

कुर्आन मुक़द्दस अल्लाह عزوجل की अज़ीम किताब है, यह बरकत वाली किताब है, इसकी आयतें मोमिनों के लिये शिफ़ा हैं, इसके एक एक हर्फ़ में दस दस नेकियां अल्लाह तआला ने मुक़र्रर फ़रमाई है। कुरआन मुक़द्दस दुनिया व आख़रत की परेशानियों का इलाज है, कुरआन मुक़द्दस रहमतों का ख़ज़ाना है, लेकिन इस अज़ीम रहमत वाले ख़ज़ाने से मालामाल होना हो तो पहले सच्चे दिल से "بِسمِ اللهِ الرَّحمٰنِ الرَّحِيمِ" पढ़ो। फिर इस ख़ज़ाने को खोलो और ज़्यादा से ज़्यादा अल्लाह جل جلاله की रहमतों को हासिल करो।

سبحان الله! जब कुरआन मुक़द्दस जैसी अज़ीम किताब बग़ैर "بِسمِ اللهِ الرَّحمٰنِ الرَّحِيمِ" के नहीं खुलती तो दूसरे जाइज़ काम की बरकतें बग़ैर "بِسمِ اللهِ الرَّحمٰنِ الرَّحِيمِ" के कैसे हासिल हो सकती हैं ?!

★ जायज़ काम की इब्तेदा ★

मेरे प्यारे आक़ा صلى الله عليه وسلم के प्यारे दीवानो ! हर जाइज़ काम से पहले "بِسمِ اللهِ الرَّحمٰنِ الرَّحِيمِ" ज़रूर पढ़ लिया करो। इससे फ़ायदा यह होगा कि

अगर ख़ुदा न ख़्वास्ता उस काम में कोई ऐब या नक़्स रहने वाला हो तो "بِسمِ اللهِ الرَّحمٰنِ الرَّحِيمِ" की बरकत से वह नक़्स या ऐब दूर हो जायेगा और अल्लाह عزوجل की रहमत उस पर साया फ़गन होगी और ख़ुदाए क़दीर उस काम में बरकतें अता फ़रमा देगा।

इसलिये कि जो शख़्स अपने जाइज़ काम की इब्तेदा में अपने रब को न भूला तो भला उसकी रहमत उसे कैसे छोड़ सकती है ? हदीस शरीफ़ में है कि हुज़ूर अक़दस صلى الله عليه وسلم ने इरशाद फ़रमाया, जो भी अहम काम "بِسمِ اللهِ الرَّحمٰنِ الرَّحِيمِ" से शुरू न किया जाये वह काम नाक़िस और अधूरा रहता है। लिहाज़ा जो भी काम को मुकम्मल करना चाहे वह बंदा अपने काम की इबतेदा "بِسمِ اللهِ الرَّحمٰنِ الرَّحِيمِ" से ही करे।

★ बख़्शिश का ज़रिया ★

हज़रत अली كرم الله تعالى وجهه الكريم से मरवी है। एक शख़्स ने "بِسمِ اللهِ الرَّحمٰنِ الرَّحِيمِ" बड़ी उम्दगी और ख़ूबी से लिखा उसकी वजह से उसकी बख़्शिश हो गयी। *(दुर्रे मन्सूर)*

मेरे प्यारे आक़ा صلى الله عليه وسلم के प्यारे दीवानो ! हम "بِسمِ اللهِ الرَّحمٰنِ الرَّحِيمِ" तो पढ़ते ही हैं लेकिन उम्दगी और ख़ूबी से एक बार पढ़ लें तो बख़्शिश का ज़रिया बन जाये। लिहाज़ा जब भी "بِسمِ اللهِ الرَّحمٰنِ الرَّحِيمِ" पढ़ें तो निहायत ही उम्दगी और ख़ूबी से पढ़ा करें। उसमें ख़ुदाए करीम के तीन अस्माए हुस्ना हैं, एक इस्मे ज़ात **अल्लाह** और दूसरा अस्माए सिफ़ात **अर्रहमान** और **अर्रहीम** इन अस्मा को उम्दगी और ख़ूबी से पढ़ना और दर हक़ीक़त अल्लाह तआला की ताज़ीम है और जो दिल अल्लाह तआला की ताज़ीम करेगा अल्लाह तआला उसे अपने कुर्बे ख़ास से ज़रूर सरफ़राज़ फ़रमायेगा।

★ निराला अंदाज़ ★

हज़रत अनस رضى الله عنه से रिवायत है कि मदनी आक़ा रहमते आलम صلى الله عليه وسلم ने फ़रमाया, जो शख़्स अल्लाह की ताज़ीम के लिये "بِسمِ اللهِ الرَّحمٰنِ الرَّحِيمِ" उम्दा शक्ल में तहरीर करेगा अल्लाह तआला उसे बख़्श देगा। *(दुर्रे मन्सूर)*

सच है : **रहमते हक़ बहाना मी जायद–रहमते हक़ बहा न मी जोयद**

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! ज़रा ग़ौर तो करो ! हमारे आक़ा ﷺ को हम गुनाहगारों का कितना ख़्याल है कि किसी तरह उम्मत की बख़्शिश हो जाये ! लेकिन हम कितने ग़ाफ़िल हैं कि अपने आक़ा ﷺ के फ़रमान का ख़्याल नहीं रखते । अफ़सोस ! आज हम अपने बच्चों को अंग्रेज़ी लिखना, पढ़ना तो ज़रूर सिखाते हैं लेकिन कुरआन शरीफ़ पढ़ना और लिखना नहीं सिखाते । अगर हमें या हमारी औलाद को अरबी पढ़ना आता तो मज़कूरा हदीषे पाक पर अमल पेरा होकर अपनी निजात तलाश करते और "**بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ**" अदब के साथ लिखते तो आक़ा ﷺ के फ़रमान के मुताबिक़ परवरदिगारे आलम हमें बख़्श देता । लिहाज़ा अपने बच्चों को अरबी लिखना, पढ़ना ज़रूर सिखाओ ।

★ हज़रत मूसा عليه السلام का ईलाज ★

हज़रत मूसा عليه السلام एक बार बीमार हो गये और शिकम में शदीद दर्द हुवा आपने अल्लाह तआला की बारगाह में उस का ज़िक्र किया, अल्लाह तआला ने हज़रत मूसा عليه السلام को जंगल की एक घास बताई । हज़रत मूसा عليه السلام को शिफ़ा मिल गयी, फिर दोबारा हज़रत मूसा عليه السلام उसी मर्ज़ में मुब्तला हुए, आपने फिर वही घास खायी लेकिन इस मर्तबा मर्ज़ बढ़ गया ! आपने अल्लाह عزوجل की बारगाह में अर्ज़ की, ऐ परवरदिगार ! मैंने पहले उसे खाया तो फ़ायदा हुआ और अब खाया तो मर्ज़ बढ़ गया ! अल्लाह तआला ने फ़रमाया, उसकी वजह यह है कि पहली बार घास के लिये तुम मेरे हुक्म से गये थे लिहाज़ा शिफ़ा मिली और दूसरी बार तुम ख़ूद गये इसलिये मर्ज़ में इज़ाफ़ा हो गया, क्यों तुम्हें मालूम नहीं कि पूरी दुनिया ज़हरे क़ातिल है और इसका ईलाज मेरा नाम है । سبحان الله ! *(दुर्रे मन्षूर, तफसीरे कबीर, सफा : 167)*

★ हलाकत से हिफ़ाज़त ★

मरवी है कि फ़िरओन ने अपनी ख़ुदाई के दावे से पहले एक महल बनवाया था और उसके बाहरी दरवाज़े पर "**بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ**" लिखने का हुक्म दिया था । फिर जब उसने ख़ुदाई का दावा किया और उसके पास हज़रत मूसा عليه السلام भेजे गये, हज़रत मूसा عليه السلام ने उसको ख़ुदाए वाहिद पर ईमान लाने की दावत दी, लेकिन उसकी सरकशी और शिर्क व कुफ़्र को देखकर बारगाहे इलाही

में अर्ज़ किया, ऐ परवर्दिगार ! मैं बार बार इसको तेरी तरफ़ बुलाता हूं लेकिन इसमें मुझे कोई भलाई नज़र नहीं आती ! अल्लाह तआला ने इरशाद फ़रमाया, ऐ मूसा ! तुम उसकी हलाकत चाहते हो, ऐ मूसा ! तुम उसके कुफ़्र को देख रहे हो और मैं अपना नाम देख रहा हूं जो उसने अपने दरवाज़े पर लिखा रखा है ।

★ अहम नुक्ता ★

इमाम राज़ी رحمة الله عليه फ़रमाते हैं कि इसमें नुक्ता यह है कि जिसने कलिमा "**بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ**" अपने बाहरी दरवाज़े पर लिख लिया वह हलाकत से बेख़ौफ़ हो गया, ख़्वाह काफ़िर ही क्यों न हो । भला उस मुसलमान का आलम क्या होगा ? जिसने "**بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ**" को सारी ज़िन्दगी अपने क़ल्ब की हयात का ज़रिया बनाये रखा हो । *(दुर्रे मन्षूर)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! आज अक्सर मुसलमान परेशानी की शिकायत करते हैं लेकिन इसका सबब तलाश नहीं करते । कितने अफ़सोस की बात है कि आज मुसलमानों के घरों के बाहरी दरवाज़ों पर अपने नाम की प्लेट लगी होती है लेकिन अल्लाह तआला के नाम की प्लेट नहीं लगी होती !

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! हमें चाहिये कि ख़ूबसूरत तरीक़े से "**بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ**" बाहरी दरवाज़े पर लिखवाकर उसकी तख़्ती बाहर के दरवाज़े पर लगायें ! انشاء الله घर की भी हिफ़ाज़त होगी और घर वालों की भी हिफ़ाज़त होगी ।

★ तबाही से छुटकारा ★

हज़रत अली كرم الله تعالىٰ وجهه الكريم से मन्कूल है कि हुज़ूर ﷺ ने फ़रमाया, जब तुम तबाही में पड़ जाओ तो :–

"**بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ**" पढ़ो । इसलिये कि अल्लाह तआला इससे कई तरह की मुसीबतें दूर फ़रमाता है ।

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! सबसे बड़ी तबाही माल व दौलत की क़िल्लत नहीं, बल्कि इंसान का गुनाहों के दलदल में धंसना है । अगर तबाही और ज़िल्लत व ख़्वारी के दलदल से बाहर निकलना चाहते हो तो "**بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ**" को अपना वज़ीफ़ा बना लो ।

हज़रत इब्ने अब्बास رضی اللہ عنہما से रिवायत है कि हज़रत उष्मान बिन अफ़्फ़ान رضی اللہ عنہ ने "بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ" के बारे में हुजूर ﷺ से दर्याफ़्त फ़रमाया तो आपने इरशाद फ़रमाया, यह अल्लाह तआला के नामों में एक नाम है और उसके और अल्लाह तआला के इस्मे अकबर के दर्मियान आंख की सियाही और सफ़ेदी जितना फ़ासला है। *(दुर्रे मन्सूर, तफसीरे अबू हातिम वगैरह)*

ताजदारे मदीना ﷺ से मरवी है कि आपने हज़रत अबू बकर رضی اللہ عنہ को अपनी अंगूठी मरहमत फ़रमाई और इरशाद फ़रमाया :–

इसमें **لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ** नक़्श करा लाओ। हज़रत अबू बकर رضی اللہ عنہ ने वह अंगूठी नक़्क़ाश को दी और उससे फ़रमाया :–

इसमें "**لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ**" नक़्श कर दो। नक़्क़ाश उसमें "**لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ**" नक़्श कर दिया, हज़रत अबू बकर رضی اللہ عنہ सरकारे मदीना ﷺ की ख़िदमत में अंगूठी लेकर हाज़िर हुए। ताजदारे दो आलम ﷺ ने उसमें : "**لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ اَبُوْ بَكْرٍ صِدِّيْق**" मुनक़्क़श देखा।

सरकारे दो आलम ﷺ ने फ़रमाया, ऐ अबू बकर ! رضی اللہ عنہ यह **لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ** से ज़ाइद इबारत कैसी है? हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ رضی اللہ عنہ ने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह ! ﷺ मुझे यह बात पसंद न थी कि मैं आपके इस्मे गिरामी को अल्लाह तआला के इस्मे गिरामी से अलग करता, लेकिन बाक़ी हिस्सा अबू बकर सिद्दीक़ इसके लिये मैंने नहीं कहा था ! हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ को नदामत हुई, इतने में हज़रत जिब्राईल अमीन علیہ السلام हाज़िर हुए और अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह ! ﷺ अबू बकर नाम तो मैंने लिखवाया है ! इसकी वजह यह है कि उन्होंने आपके नाम मुबारक को अल्लाह तआला के मुक़द्दस नाम से जुदा करना पसंद न फ़रमाया तो अल्लाह तआला ने उनके नामको आपके नाम नामी से जुदा करना पसंद नहीं फ़रमाया। سبحان اللہ !

ताजदारे मदीना ﷺ ने फ़रमाया, जो शख़्स एहतेराम और ताज़ीम के सबब ज़मीन से कोई काग़ज़ उठाता है जिसमें "**بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ**" लिखा हो तो वह अल्लाह के नज़दीक सिद्दीक़ीन में लिखा जाता है और उसके वालिदैन के अज़ाब में कमी की जाती है। *(दुर्रे मन्सूर)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! अल्लाह तआला का नाम लिखा हुआ काग़ज़ ताज़ीम के सबब ज़मीन से उठाए तो सिद्दीक़ीन का दर्जा हासिल होता है, लिहाज़ा अख़बार वग़ैरह में जो नाम बारी तआला लिखे होते हैं उसकी ताज़ीम करनी चाहिये बल्कि जहां भी ऐसा परचा नज़र आये या अख़बार नज़र आये तो उसको फ़ौरन उठा लें, उसे ऊंची और पाक व साफ़ बुलंद जगह पर रख दें या मस्जिद में संदूक़ में एहतियात से डाल दें।

★ जहन्नम से नजात ★

हज़रत इब्ने अब्बास رضی اللہ عنہ से रिवायत है कि ताजदारे मदीना ﷺ ने फ़रमाया जब उस्ताज़ बच्चे से कहता है कि "**بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ**" कहो ! हुजूर ﷺ फ़रमाते हैं कि उस्ताज़, बच्चे और उसके वालिदैन के लिये जहन्नम से नजात लिख दी जाती है। *(दुर्रे मन्सूर)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! आज हम अपने बच्चों को दुनियावी तालीम तो दिलाते हैं इस दुनियावी तालीम का फ़ायदा तो सिर्फ़ दुनिया में हो सकता है आखरत में नहीं, लेकिन अगर हम अपने बच्चों को दीनी तालीम के लिये मदरसा में भेजते हैं तो बच्चे की जुबान से निकले हुए पहले लफ़्ज़ की बरकत से बख़्शिश का परवाना मिल जाता है ! लिहाज़ा अपने बच्चों को दीन की तरफ़ माइल करें और आख़रत संवारें।

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! हम अच्छी तरह जानते हैं कि हज़रत जिब्राईल علیہ السلام जब पहली मर्तबा वहीए ख़ुदा लेकर हुजूर पुर नूर ﷺ की बारगाह में बेकस पनाह में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया "**اِقْرَأْ**" तो आपने जवाब में इरशाद फ़रमाया, "**مَا اَنَا بِقَارِئٍ**" मैं नहीं पढ़ता। लेकिन जब मज़ीद अर्ज़ किया "**اِقْرَأْ بِاسْمِ رَبِّكَ الَّذِىْ خَلَقَ**" यानी पढ़ो अपने रब के नाम से तो पढ़ने लगे।

लेकिन ऐ शम्ए रिसालत के परवानो ! हमने अपना मामूल कुछ और ही बना लिया है। हमारी फ़िकरें बदल गयी हैं, अपने प्यारे नबी ﷺ के बताए हुए अज़ीम तरीक़ों को हम ने भूला दिया है। जिसका ख़मियाज़ा यह है कि हम भी भूली हुई दास्तान बन गये हैं, दुन्या ने हमें भूला दिया, हम बे यार व मदद गार होकर रह गये हैं।

★ कामिल वुज़ू ★

जब कोई ईमान वाला मर्द या औरत वुजू करने से पहले "بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ" पढ़ लेता है तो वह अअ्ज़ाए वुज़ू पानी से धुल जाते हैं साथ ही साथ इनके गुनाह भी झड़ जाते हैं और अअ्ज़ाए वुज़ू के सिवा बदन के दूसरे हिस्से पर जहां वुज़ू का पानी नहीं पहुंचता अल्लाह तआला उसे अपने रहम व करम के पानी से धो देता है।

ऐ शमए रिसालत के परवानो ! देखा आपने "بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ" की बरकत?! हमेंऔर आप को चाहिये कि वुज़ू करने से पहले "بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ" नीज़ हर अज़ू धोते वक़्त "بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ" ज़रूर ज़रूर पढ़ लिया करें। अल्लाह तआला अपने हबीब महबूब ﷺ के सदक़ा व तुफ़ैल में हमारे गुनाहों को माफ़ फ़रमायेगा।

★ और नबी की क़ुदरत ★

सय्यदना हज़रत सुलेमान علیہ السلام से जब हुद हुद ने मलिकाए सबा बिलक़ीस के तख़्त शाही और फ़रमां रवाई और कुफ़्र व इल्हाद का ज़िक्र किया तो सय्यदना हज़रत सुलेमान علیہ السلام ने बिलक़ीस को ख़त लिखकर इस्लाम की दावत दी और इताअत गुज़ारी का हुक्म दिया। इस ख़त की इब्तेदा आपने "بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ" से फ़रमाई। जिसका तज़किरा बिलक़ीस ने अपने दरबारियों में इस तरह फरमाया, अल्लाह तआला ने इसका ज़िक्र कुरआन में फ़रमाया :–

"قَالَتۡ یٰۤاَیُّهَا الۡمَلَؤُا اِنِّیۡۤ اُلۡقِیَ اِلَیَّ کِتٰبٌ کَرِیۡمٌ ۝ اِنَّهٗ مِنۡ سُلَیۡمٰنَ وَ اِنَّهٗ بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ"

तर्जुमा : (बिलक़ीस) बोली ऐ सरदारो ! बेशक ! मेरी तरफ़ एक इज़्ज़त वाला ख़त डाला गया, बेशक ! वह सुलेमान की तरफ़ से है और बेशक ! वह अल्लाह के नाम से है जो निहायत महरबान रहम वाला। और इस तरह बिलक़ीस ने अल्लाह के नाम और उसके नबी के भेजे हुए ख़त को ताज़ीम की तो अल्लाह तआला ने उसे इस ताज़ीम की बरकत से ईमान की दौलत नसीब फ़रमाई और सय्यदना सुलेमान علیہ السلام के ज़ौजियत में दाख़िल होने का मौक़ा नसीब फ़रमाया कि क़ुर्बते नबी से सरफ़राज़ फ़रमा दिया।

★ ईलाजे दर्दे सर ★

क़ैसरे शाह रोम ने हज़रत उमर رضی اللہ عنہ की ख़िदमत में लिखा कि मुझे मुस्तक़िल दर्दे सर रहता है आप मेरे लिये कोई दवा भेजिये। हज़रत उमर رضی اللہ عنہ ने उसके पास एक टोपी भेजी। जब भी उस टोपी को वह अपने सर पर रखता उसका दर्दे सर जाता रहता। और जब उसे उतार देता फिर दर्दे सर शुरू हो जाता। इससे उसको हैरत हुई, उसने टोपी की तलाशी ली तो उसके अंदर एक काग़ज़ मिला जिस पर "بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ" लिखा हुआ था। *(तफसीरे कबीर)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! बड़े बड़े तबीब जिस बीमारी के ईलाज से आजिज़ हैं इन बीमारियों का इलाज अल्लाह के कलाम में है। ऐ काश ! हमारा लगाव कुरआने मुक़द्दस से होता और अपनी बीमारियों का इलाज दवाओं के साथ साथ हम अल्लाह तआला के कलाम से भी करते। जो यक़ीनन ! शाफ़ी है, लेकिन अफ़सोस ! हमारा ईमान इतना कमज़ोर हो गया है कि तबीबों की दवा पर तो भरोसा होता है लेकिन अल्लाह के कलाम पर कामिल भरोसा नहीं होता, जिसकी वजह से तासीर नज़र नहीं आती। अल्लाह हम सबको कुरआने मुक़द्दस से फैज़ हासिल करने और "بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ" पढ़ने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये। آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

★ ज़हर बे अषर ★

किसी ने हज़रत ख़ालिद رضی اللہ عنہ से कोई निशानी तलब करते हुए कहा कि आप इस्लाम की दावत दे रहे हैं हमें कोई निशानी दिखाइये ता कि हम इस्लाम क़बूल कर सकें। हज़रत ख़ालिद رضی اللہ عنہ ने फ़रमाया, मेरे पास ज़हरे क़ातिल लाओ। उसका एक तश्त लाया गया, आपने उसको अपने हाथ में लिया और "بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ" पढ़कर सब पी गये और अल्लाह के फ़ज़्ल से सलामती के साथ उठ खड़े हुए ! यह देखकर मजूसियों ने कहा कि यह दीन हक़ है। *(दुर्रे मन्सूर)*

سبحان اللہ ! क्या ईमान था उन बुजुर्गों का और ज़ाते बारी तआला पर कितना एतेमाद था ? अल्लाह तआला उन बुजुर्गों के ईमान का सदक़ा हमें भी नसीब

फ़रमाये और सहाबाए किराम के फ़ुयूज़ व बरकात से मुस्तफ़ीज़ फ़रमाये।

★ हिजाब है ★

हज़रत अनस رضی اللہ عنہ से रिवायत है कि ताजदारे मदीना ﷺ ने फ़रमाया जब बनी आदम अपने कपड़े उतारते हैं उस वक़्त अगर वह "بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ" पढ़ लें तो यह उनकी शर्मगाहों और जिन्नों की निगाहों के दर्मियान पर्दा बन जाती है, इस तरह शैतानी निगाहें इंसानी शर्मगाहों तक पहुंच नहीं सकतीं।

इसमें इशारा यह है कि दुन्या के अंदर जब यह इस्मे इलाही इन्सान और दुश्मन जिन्नों के दर्मियान हिजाब और पर्दा बन सकता है तो क्या यही इस्मे इलाही आख़रत में बंदए मोमिन और अज़ाबके फरिश्तों के दरमियान हिजाब न बन सकेगा? *(दुर्रे मन्सूर)*

سبحان اللہ! अल्लाह جل جلالہ अपने प्यारे महबूब ﷺ के तुफैल पढ़ने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये। **آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔**

★ ऐसी आयत बताऊंगा ★

हज़रत बुरैदा رضی اللہ عنہ से रिवायत है कि ताजदारे मदीना ﷺ ने फ़रमाया, मस्जिद से निकलने से पहले मैं तुम्हें ज़रूर एक ऐसी आयत या सूरत बताऊंगा जो हज़रत सुलेमान علیہ السلام के बाद मेरे अलावा किसी और नबी पर नाज़िल नहीं हूई।

रावी कहते हैं कि हुज़ूर ﷺ चले और मैं हुज़ूर ﷺ के पीछे हो लिया। हुज़ूर ﷺ मस्जिद के दरवाज़े पर पहुंचे और अपना एक पांव मस्जिद की दहलीज़ से बाहर कर चुके अभी दूसरा पांव मस्जिद की दहलीज़ के अंदर ही था कि मैंने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह ﷺ मुझे इश्तेयाक़ है! (वह बात रह गयी) उस वक़्त हुज़ूर ﷺ अपने चेहरे मुबारक के साथ मेरी तरफ़ मुतवज्जेह हुए और फ़रमाया, नमाज़ में किस चीज़ से कुरआन शुरू करते हो? मैंने कहा, "بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ" से। सरकारे दो जहां ﷺ ने फ़रमाया, यही तो वह आयत है जो हज़रत सुलेमान علیہ السلام के बाद मेरे अलावा किसी नबी علیہ السلام पर नाज़िल नहीं हूई। उसके बाद हुज़ूर ﷺ मस्जिद से बाहर तशरीफ़ ले गये। *(दुर्रे मन्सूर)*

★ समंदर में जोश ★

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह رضی اللہ عنہ से रिवायत है कि "بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ" नाज़िल हुई, बादल मश्रिक़ की तरफ़ भागा, हवा ठहर गयी, समंदर में जोश आ गया, चौपायों ने तवज्जोह के साथ अपने कान से सुना, शैतानों पर आसमान से पत्थर बरसे, और अल्लाह तआला ने अपने इज़्ज़त व जलाल की क़सम के साथ फ़रमाया, जिस चीज़ पर भी उसका नाम लिया जायेगा वह उसमें बरकत देगा। *(दुर्रे मन्सूर)*

अल्लाह عزوجل हमें अपने प्यारे महबूब ﷺ के सदक़े में हर जाइज़ काम पर "بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ" पढ़ने के तौफ़ीक़े रफ़ीक़ बख़्शे और ज़्यादा से ज़्यादा बरकतें हासिल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

★ वह शख़्स मलऊन है ★

हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ رضی اللہ عنہ से रिवायत है कि तादारे मदीना ﷺ का गुज़र एक ऐसी बस्ती से हुआ जहां ज़मीन पर एक तहरीर थी। सरकार ﷺ ने अपने साथ के एक शख़्स से फ़रमाया, ज़मीन पर गिरे हुए काग़ज़ पर क्या लिखा है? उसने कहा "بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ" सरकार ﷺ ने फ़रमाया, जिसने यह किया (गिराया) वह मलऊन है। "بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ" का जो मक़ाम है वही उसे दो। *(अबू दाउद, दुर्रे मन्सूर)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! इससे साबित हुआ कि "بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ" की तौहीन करने वाला मलऊन है, लिहाज़ा ख़ुदारा! "بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ" लिखा हुआ काग़ज़ ज़मीन पर न फेंके बल्कि कहीं नज़र आये तो उसे अदब और ताज़ीम के साथ बुलंद मुक़ाम पर रखें।

★ वसीयत ★

एक बुज़ुर्ग ने "بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ" लिखा और वसीयत की कि यह उनके कफ़न में रखा जाये। उनसे पूछा गया कि इसमें क्या फ़ायदा है? उन्होंने फ़रमाया, मै क़यामत के दिन अर्ज़ करूंगा कि ऐ मेरे अल्लाह! तूने एक किताब भेजी उसका उनवान "بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ" रखा, लिहाज़ा तू अपनी किताब के उनवान के लिहाज़ से मेरे साथ मामला फ़रमा और बख़्श दे। *(दुर्रे मन्सूर)*

★ तीन हज़ार नाम ★

तफ़सीर कबीर के शुरू में "بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ" के तहत है कि हक़ तआला के तीन हज़ार नाम हैं। जिनमें से एक हज़ार को मलाइका जानते हैं और एक हज़ार को सिर्फ़ अंबिया عَلَيۡهِمُ السَّلَام जानते हैं और एक हज़ार में से तीन सौ नाम तौरात शरीफ़ में और तीन सौ नाम इंजील शरीफ़ में और तीन सौ नाम ज़बूर शरीफ़ में और निन्नावें नाम कुरआन पाक में हैं। और एक नाम वह है जिस को सिर्फ़ हक़ तआला ही जानता है लेकिन "بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ" में हक़ तआला के जो तीन नाम आये है। इन तीन में तीन हज़ार के माअना पाए जाते हैं। लिहाज़ा जिसने इन तीन नामों से हक़ तआला को याद कर लिया गोया उसने तमाम नामों से उसको याद कर लिया।

★ चार नहरें ★

साहिबे तफ़सीरे रूहुल बयानने "بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ" के तहत एक हज़ार हदीस नक़्ल फ़रमाई कि जब हुज़ूर ﷺ मेअराज में तशरीफ़ ले गये और जन्नतों की सैर फ़रमाई तो वहां चार नहरें मुलाहेज़ा फ़रमाईं, एक पानी की, दूसरी दूध की, तीसरी शराबे तहूर की और चौथी शहद की। जिब्रईले अमीन علیہ السلام से दर्याफ़्त किया, यह नहरें कहां से आ रही हैं? हज़रत जिब्रईले अमीन علیہ السلام ने अर्ज़ किया, मुझे ख़बर नहीं? दूसरे फ़रिश्ते ने कहा, इन चारों का चश्मा मैं दिखाता हूं। एक जगह ले गया, वहां एक दरख़्त था जिसके नीचे एक इमारत बनी हुई थी और दरवाज़े पर कुफ़ल (ताला) लगा हुआ था और उसके नीचे से यह चारों नहरें निकल रही थीं। इरशाद फ़रमाया, दरवाज़ा खोलो! अर्ज़ किया, इसकी चाबी हमारे पास नहीं बल्कि आपके पास है यानी "بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ" हुज़ूर ﷺ ने "بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ" पढ़कर कुफ़ल को हाथ लगाया, दरवाज़ा खुल गया। अंदर जाकर मुलाहेज़ा फ़रमाया कि इस इमारत में चार सुतून हैं और हर सुतून पर लिखा हुआ मुलाहेज़ा फ़रमाया :–

الرحیم	الرحمٰن	الله	بسم
4	3	2	1

और بِسۡمِ اللّٰهِ की (मीम) से पानी जारी है और अल्लाह की (हा) से दूध जारी है रहमान की (मीम) से शराबे तहूर जारी है और रहीम की (मीम) से शहद। अंदर से आवाज़ आयी, ऐ मेरे महबूब! ﷺ आपकी उम्मत में जो शख़्स "بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ" पढ़े वह इन चारों का मुस्तहिक़ होगा। *(तफसीरे नइमी)*

★ बिस्मिल्लाह क्यों ? ★

1. जिस काम की इब्तेदा अच्छी हो उसकी इंतेहा भी अच्छी होती है बच्चे के पैदा होते ही उसके कान में अज़ान दी जाती है ता कि उसकी इब्तेदा अल्लाह جَلَّ جَلَالُهٗ के नाम पर हो और उसकी तमाम ज़िन्दगी बख़ैरियत गुज़रे।

2. दुकानदार अपनी पहली बिक्री के वक़्त ज़्यादा भाव ताल नहीं करता कि सारा दिन तिजारत के लिये अच्छा गुज़रे। इसी तरह मुसलमान के लिये यह ज़रूरी है कि अपने हर जाइज़ काम की इब्तेदा अल्लाह के नाम से करे ता कि बख़ैर व ख़ूबी अंजाम को पहूंचे।

3. हुकूमत के माल पर कोई हुकूमत की अलामत लगा दी जाती है ता कि कोई चोर उसको लेते वक़्त ख़ौफ़ करे और चुरा न सके, क्योंकि हुकूमत के माल की चोरी एक क़िस्म की बग़ावत है। इसी तरह मुसलमान को चाहिये कि अपने हर जाइज़ काम की इब्तेदा "بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ" पढ़ ले ता कि वह रब्बुल आलमीन की निशानी बन जाये और शैतान चोर उसमें अपना दख़ल न दे सके। और हदीषे पाक में भी आया है कि जिस जाइज़ काम की इब्तेदा में "بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ" न पढ़ी जाये उसमें शैतान शरीक हो जाता है और "بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ" के पढ़ लेने से वह काम महफ़ूज़ हो जाता है।

4. आदमी जिसका ज़िक्र ज़्यादा करता है उसको उसी के साथ रखा जाता है। इंसान "بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ" ज़्यादा पढ़े तो انشاء الله! दोनों जहां में रहमते इलाही उसके साथ रहेगी। क्यों कि इंसान सुबह से लकर रात तक बे शुमार जाइज़ और नाजाइज़ काम करता है और अगर जाइज़ काम की इब्तेदा में "بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ" पढ़ ले तो सुबह से शाम तक रब का ज़िक्र उसकी ज़बान पर जारी रहेगा। जिसकी वजह से रहमते इलाही उसके साथ रहेगी। अल्बत्ता नाजाइज़ काम की इब्तेदा "بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ" पढ़ना नाजाइज़ और हराम है।

5. दुन्या के सारे काम इंसान के लिये ज़हरे क़ातिल होते हैं क्योंकि यह रब तआला से ग़ाफ़िल करने वाले हैं और इसका तिर्याक़ रब का नाम है, जो इंसान रब के नाम से अपने काम शुरू करेगा ख़ुदा चाहे तो उसका कोई काम ज़िक्रे इलाही व ख़ौफ़े ख़ुदा से ग़फ़लत पैदा न करेगा।

6. जब कोई फ़क़ीर किसी अमीर के दरवाज़े पर जाता है तो भीक मांगने की ग़र्ज़ से उसकी तारीफ़ शुरू कर देता है जिससे अमीर यह समझता है कि यह भिकारी है मेरी तारीफ़ कर करके मुझसे भीक मांगना चाहता है। तो गोया फ़क़ीर का यह कहना घर वाला बड़ा सख़ी दाता है, मतलब उसका कुछ यह होता है कि दिलवा दे। इसी तरह जब कोई इंसान काम शुरू करता है तो चाहता है रब तआला से उसमें मदद मांगे और उसके पूरा करने और दुरूस्त करने की तौफ़ीक़ मांगे। तो साफ़ साफ़ नहीं कहता, बल्कि रब तआला की तारीफ़ें करता है और उससे मक़सूद यह होता है कि मेरे इस नाम लेने की लाज रखते हुए तू ही इस बेड़े को पार लगाने वाला है। लिहाज़ा रब तआला की रहमत जोश में आती है बंदे के सवाल को "بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ" की बरकत से पूरा फ़र्मा देता है।

तफ़सीरे अज़ीज़ी में है कि औलिया अल्लाह में से एक वली ने मरते वक़्त वसियत की थी कि मेरे कफ़न में "بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ" लिखकर रख देना। लोगों ने उसकी वजह पूछी तो उन्होंने जवाब दिया कि यह क़यामत के दिन मेरे लिए दस्तावेज़ होगी जिसके ज़रिये मैं रमहते इलाही की दरख़्वास्त करूंगा।

★ बिस्मिल्लाह के 19 हरूफ़ ★

तफ़सीरे कबीर वग़ैरह में है कि "بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ" में 19 हुरूफ़ हैं और दौज़ख़ पर अज़ाब के फ़रिश्ते भी 19 हैं। उम्मीद है कि उसके एक हर्फ़ की बरकत से एक एक फ़रिश्ते का अज़ाब दूर हो जायेगा। दूसरी ख़ूबी यह है कि दिन रात में चौबीस घंटे हैं जिनमें से पांच घंटे नमाज़ों ने घेर लिये और 19 घंटों के लिये "بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ" के 19 हरूफ़ अता फ़र्माये गये। जो "بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ" का विर्द करता है! انشاء اللہ उसका हर घंटा इबादत में शुमार होगा और हर वक़्त के गुनाह माफ़ होंगे। *(तफसीरे नइमी)*

★ तराजू का पल्ला ★

ताजदारे मदीना ﷺ ने फ़रमाया कि ऐसी कोई दुआ नहीं होती जिसके

आग़ाज़ में "بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ" हो। आपने फ़रमाया, क़यामत के दिन बिला शुब्हा मेरी उम्मत "بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ" कहती हुई आगे बढ़ेगी और मीज़ान में उसकी नेकियां वज़नी हो जायेगी। उस वक़्त दूसरी उम्मतें कहेंगी कि उम्मते मुहम्मदिया ﷺ के तराजू में किस क़द्र वज़नी आमाल हैं! अंबिया عَلَيۡهِمُ السَّلَام उनके जवाब में फ़रमायेंगे कि उम्मते मुहम्मदिया ﷺ के कलाम का आग़ाज़ अल्लाह के तीन ऐसे नामों से है कि उनको अगर तराजू के एक पल्ला में रख दिया जाये तो तमाम मख़लूक़ की बुराईयां (गुनाह) दूसरे पल्ले में रख दिये जायें तब भी यक़ीनन नेकियां ही भारी होंगी। *(गुन्यतुत्तालिबीन)*

★ खाने और घर में दाख़िल होनेसे क़ब्ल ★

खाने से पहले और घर में दाख़िल होने से पहले "بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ" पढ़ने की हदीष शरीफ़ में बड़ी ताकीदें वारिद हैं। रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया, जिस खाने पर "بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ" न पढ़ी जाये शैतान के लिये वह खाना हलाल हो जाता है। *(मुस्लिम शरीफ)*

यानी "بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ" न पढ़ने की सूरत में शैतान उस खाने में शरीक हो जाता है। जैसा कि हज़रत अय्यूब رضی اللہ عنہ रिवायत करते हैं कि हम हुज़ूर ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर थे कि खाना पेश किया गया, इब्तेदा में खाने में इतनी बरकत हुई कि हम ने इतनी बरकत किसी भी खाने में नहीं देखी थी। मगर आख़िर में बड़ी बेबर्कती देखी। हमने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह! ﷺ ऐसा क्यों हुआ? इरशाद फ़रमाया, हम सबने खाने के वक़्त "بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ" पढ़ी थी, फिर एक शख़्स बग़ैर "بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ" पढ़े खाने के लिये बैठ गया, उसके साथ शैतान ने खाना खा लिया। *(शरहुस्सुन्नह)*

इस हदीषे पाक से यह भी मालूम हुआ कि एक साथ चंद आदमी खाना खायें और उनमें से एक ने भी "بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ" न पढ़ी तो पूरे खाने की बरकत चली जाती है और उस एक के न पढ़ने से शैतान खाने में शरीक हो जाता है, लिहाज़ा "بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ" बुलंद आवाज़ से पढ़ें ता कि साथ वालों को भी याद आ जाये।

इसी तरह हज़रत जाबिर رضی اللہ عنہ से रिवायत है कि हुज़ूरे अक़दस ﷺ ने

फ़रमाया जब कोई शख़्स मकान में आया और दाख़िल होते वक़्त और खाने के वक़्त उसने "بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ" पढ़ ली तो शैतान अपनी जुर्रियत से कहता है कि इस घर में न तुम्हें रहने मिलेगा, न खाना। और अगर घर में दाख़िल होते वक़्त "بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ" न पढ़ी तो अपनी जुर्रियत से कहता है, अब तुम्हें रहने की जगह मिल गयी और खाने के वक़्त بسم الله न पढ़ी तो कहता है कि रहने की भी जगह मिली और खाना भी मिला। *(मुस्लिम शरीफ़)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! पता चला कि अगर हम ज़रा सी ग़फ़लत बरतें और "بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ" न पढ़ें तो शैतान अपनी औलाद के साथ हमारे घर में भी घुस आता है और खाने में भी शरीक हो जाता है, जिससे "بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ" पढ़ना हमारा मामूल रहा तो हमारे खाने में भी बरकतें नाज़िल होंगी और घर भी ख़ैर व बरकत से मामूर रहेगा, शैतान की औलाद से मकान व सामान सब महफ़ूज़ हो जायेंगे।

लिहाज़ा हमें "بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ" पढ़ने की आदत डालनी चाहिये ता कि उसकी बरकतें ज़्यादा से ज़्यादा हासिल कर सकें। और हरगिज़ उससे ग़फ़लत न बरतें वरना शैतान हमारे काम में शरीक हो जायेगा।

بِسْمِ اللّٰه शरीफ़ के फ़वायद व फ़ज़ाइल बहुत ज़्यादा हैं तवालत के ख़ौफ़ से हमने इनमें से कुछ यहां ज़िक्र किया इस उम्मीद पर कि हमारे इस्लामी भाई और बहन उसकी अफ़ादियत व अहमियत को समझेंगे और इसके पढ़ने लिखने की जानिब पूरी तवज्जोह देंगे और खैर व बरकत से मालामाल होंगे। रब्बे पाक अपने हबीबे पाक ﷺ के सदक़े में हमारी इस कोशिश को क़बूल फ़रमाये और हमारे लिये इसे ज़रिया नजात बनाये।

★ मसाइले मुतअल्लिक़ा "بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ" ★

بِسْمِ اللّٰه क़ुर्आने मुक़द्दस की पूरी आयत है मगर किसी सूरत का जुज़्व नहीं। बल्कि सूरतों में फ़ासला करने के लिये उतारी गयी है इस लिये नमाज़ में इसको आहिस्ता ही पढ़ते हैं। हां ! जो हाफ़िज़ तरावीह में पूरा कुरआने पाक ख़त्म करे वह ज़रूर किसी न किसी सूरत के साथ بِسْمِ اللّٰه ज़ोर से पढ़े।

मस्अला : सिवा सूरए तौबा के बाक़ी हर सूरत بِسْمِ اللّٰه से शुरू करे लेकिन

अगर कोई शख़्स सूरए तौबा से ही तिलावत शुरू करे तो वह तिलावत के लिये بِسْمِ اللّٰه पढ़ ले।

मस्अला : हर जाइज़ काम بِسْمِ اللّٰه से शुरू करना मुस्तहब है, नाजाइज़ काम पर بِسْمِ اللّٰه पढ़ना मना है अगर कोई शख़्स بِسْمِ اللّٰه कह कर शराब पिये, चोरी करे, ग़ीबत करे, झूठ बोले तो कुफ़्र का अंदेशा है। शामी में है कि हुक़्क़ा पीते वक़्त और बदबूदार चीज़ें (जैसे प्याज़, लहसन वग़ैरह) खाते वक़्त بِسْمِ اللّٰه न पढ़ना बेहतर है।

मस्अला : नंगे होकर, पाख़ाना में पहुंचकर بِسْمِ اللّٰه पढ़ना मना है।

मस्अला : नमाज़ी नमाज़ में जब कोई सूरः पढ़े आहिस्ता بِسْمِ اللّٰه पढ़ना मुस्तहब है।

मस्अला : जो जाइज़ काम भी बग़ैर بِسْمِ اللّٰه के शुरू किया जाएगा उसमें बरकत न होगी।

मस्अला : जब मुर्दा को क़ब्र में उतारा जाये तो उतारने वाले यह पढ़ते जायें بِسْمِ اللّٰهِ وَعَلٰى مِلَّتِ رَسُوْلِ اللّٰه

الصلوٰة والسلام عليك يارسول الله ﷺ

وعلىٰ آلك واصحابك يا نور الله ﷺ

तिलावते कुर्आन की फ़ज़ीलत

उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा सिद्दीक़ा رضی اللہ عنہا से रिवायत है कि रसूले अकरम ﷺ ने इरशाद फ़रमाया कि कुर्आने पाक अल्लाह तआला के अलावा हर चीज़ से अफ़ज़ल है। कुर्आन पाक को दीगर कलाम पर इस तरह बरतरी है जैसे ख़ुदाए तआला को मख़लूक़ पर। जो शख़्स कुर्आन पाक की ताज़ीम करता है वह यक़ीनन! अल्लाह तआला की ताज़ीम करता है और जो कुरआन पाक की ताज़ीम नहीं करता वह यक़ीनन! अल्लाह तआला को कोई हैसियत नहीं देता। और अल्लाह तआला के नज़दीक कुरआन की इज़्ज़त व तौक़ीर औलाद के लिये वालिद की इज्ज़त व तौक़ीर की तरह है। कुर्आन ऐसा शफ़ाअत करने वाला है जिसकी शफ़ाअत क़बूल होगी और ऐसा मुख़ालिफ़ है जिसकी मुख़ालफ़त सुनी जायेगी। जो शख़्स कुर्आन को अपने आगे करेगा कुरआन उसे जन्नत में ले जायेगा और जो उसे पसे पुश्त डालेगा उसे जहन्नम में पहुंचा देगा। हामेलीने कुरआन को अल्लाह की रहमत घेरे हुए होती है, वह अल्लाह तआला के नूर का लिबादा ओढ़े होते हैं और कलामे इलाही की तालीम हासिल करने वालों से जो अदावत व दुश्मनी करता है वह बिलाशुब्हा अल्लाह तआला से अदावत रखता है और जो इनसे दोस्ती करता है वह यक़ीनन! अल्लाह तआला से दोस्ती रखता है। अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है, ऐ किताबुल्लाह को अपने पास रखनेवालो! अल्लाह तआला तुम्हें अपनी किताब की ताज़ीम के लिये दावत दे रहा है। तुम उसकी दावत पर लब्बैक कहो, वह तुमसे मज़ीद मुहब्बत फ़रमायेगा और तुम को अपनी मख़लूक़ में मक़बूल व महबूब बना देगा। अल्लाह तआला कुरआन सुनने वाले से दुनिया की बुराई दूर फ़रमाता है और

कुरआन की तिलावत करने वाले से आख़ेरत की मुसीबत रफ़अ फ़रमाता है और यक़ीनन किताबुल्लाह की एक आयत सुनने वाले की जज़ा एक पहाड़ सोने से भी बेहतर है। और किताबुल्लाह की एक आयत तिलावत करने वाले का अज्र ज़ेरे आसमान की हर चीज़ से बेहतर है और बिला शुब्हा कुरआन में एक सूरत है जिसे अल्लाह तआला के यहां अज़ीम कहा जाता है। साहिबे सूरत (इसका हाफ़िज़ और उसकी निगहदाश्त और उसके मुताबिक़ अमल करने वाले) को "शरीफ़" कहा जाता है। यह सूरत क़यामत के दिन साहिबे सूरत के लिये क़बीला रबीया व मुज़िर के अफ़राद से ज़्यादा लोगों के हक़ में शफ़ाअत करेगा और यह सूरए यासीन है।

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! कुरआने मुक़द्दस की ताज़ीम करो और उसकी तिलावत करो इंशाअल्लाह! दुन्या व आख़रत में कामयाबी नसीब होगी।

★ तिलावत के आदाब ★

तिलावत करने वाला क़िब्ला रू सर झुकाकर अदब और वक़ार के साथ उस्ताद के सामने बैठने की तरह बैठ कर तिलावत करे। मस्जिद में नमाज़ के अंदर खड़े होकर कुरआन पढ़ने में सबसे ज़्यादा सवाब है। बिस्तर पर लेटकर हिफ़्ज़ से कुरआन पढ़ने में भी सवाब है मगर कम, जैसा कि अल्लाह तआला के इस फ़रमान से मालूम होता है :—

"اَلَّذِيۡنَ يَذۡكُرُوۡنَ اللّٰهَ قِيَا ماً وَّ قُعُوۡداً وَّعَلٰى جُنُوۡبِهِمۡ وَيَتَفَكَّرُوۡنَ فِىۡ خَلۡقِ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ"

वह जो अल्लाह तआला को खड़े बैठे और अपने पहलुओं पर लेटे याद करते है। और आसमान व ज़मीन की तख़लीक़ पर ग़ौर करते हैं। *(आले इमरान—191, कन्जुल इमान)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! इस आयते करीमा में अल्लाह तआला ने तीनों हालतों में ज़िक्र करने वालों की मदह फ़रमाई है मगर खड़े होकर ज़िक्र करने वालों को सब पर मुक़द्दम किया है। फिर बैठकर और फिर सोकर ज़िक्र करने वालों का तज़किरा किया है।

हज़रत अली کرم اللہ تعالیٰ وجہہ الکریم ने फ़रमाया, जो शख़्स नमाज़ में खड़े होकर

कुरआन पढ़ता है उसके लिये हर हर्फ़ पर सौ नेकियां हैं और जो शख़्स बैठकर नमाज़ पढ़ता है उसके लिये हर हर्फ़ पर पचास नेकियां हैं। और जो शख़्स नमाज़ के बाहर बा वुज़ू पढ़ता है उसके लिये पच्चीस नेकियां हैं। और जो शख़्स बग़ैर वुज़ू पढ़ता है उसके लिये दस नेकियां हैं। कुरआन देखकर तिलावत करना हिफ़्ज़ से तिलावत करने से अफ़ज़ल है इसलिये कि कुरआन का उठाना, छूना और उसका देखना यह सब इबादत है।

कुरआन देखकर पढ़ने के फ़ज़ाइल अपने मक़ाम पर आयेंगे यहां सिर्फ़ दो रिवायतों पर इक्तेफ़ा किया जा रहा है।

★ दो हज़ार दर्जा ★

तिबरानी ने मोअजम में और बैहक़ी ने शोअबुल ईमान में हज़रत अवस رضی اللہ عنہ से रिवायत की है कि नबी करीम ﷺ ने इरशाद फ़रमाया, कुरआने पाक हिफ़्ज़ से पढ़ना एक हज़ार दर्जा रखता है, और देखकर पढ़ना दो हज़ार का दर्जा रखता है। एक और हदीष शरीफ़ में है कि कुरआन मजीद देखकर पढ़ना वही दर्जा रखता है जो फ़ज़ीलत फर्ज़ को नफ़्ल पर हासिल है।

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! खड़े रहकर बैठकर बल्कि हमेशा अपने रब ﷻ के कलाम को पढ़ते रहो।

★ तिलावत की मिक़्दार ★

तिलावत किस मिक़्दार में करना चाहिये, सहाबाए किराम और अस्लाफ़े अेज़ाम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْھِمْ اَجْمَعِیْنَ का तरीक़ा इस में मुख़्तलिफ़ रहा है। बाज़ हज़रात रात दिन में एक ख़त्म तिलावत करते, बाज़ दो ख़त्म और बाज़ तीन ख़त्म तक तिलावत करते और बाज़ एक माह में एक ख़त्म तिलावत करते। लेकिन आम लोगों के लिये तीन दिन से कम में ख़त्म करना ख़िलाफ़े ऊला है। हुज़ूर ﷺ का इरशादे पाक है, **"لَمْ يَفْقَهُ مَنْ قَرَأَ الْقُرْآن فِی اَقَلِّ مِنْ ثَلٰثٍ"** जिनसे तीन दिन से कम में कुरआन ख़त्म किया उसने उसको समझा नहीं। इस हदीष का मिस्दाक़ यही है कि आम तौर पर ज़ेहन की जो कैफ़ियत होती है वह यही है कि तीन दिन से कम में पढ़ने वाला कुरआन समझ न सकेगा। इसी को हुज़ूर ﷺ ने बयान फ़रमाया, गोया इसमें आम हाल की ख़बर दी गयी है।

लेकिन ख़ासाने ख़ुदा, औलिया अल्लाह की शान निराली है वह हज़रात कुरआने अज़ीम कम से कम वक़्त में यूं ख़त्म फ़रमाते हैं कि आयत पूरी सेहत के साथ अदा भी करते और ख़ूब समझते और दिल में महफ़ूज़ भी रख लेते हैं। जैसा कि मरवी है कि सय्यदना इमामे आज़म رضی اللہ عنہ हर रात एक कुरआन मजीद ख़त्म फ़रमाते और मसाइले शरइय्या का भी इन आयतों से इस्तिंबात फ़रमाते। यह उनकी करामत है। बाज़ हज़रात दस दिन में ख़त्म करते और बाज़ सात दिन में। अक्षर सहाबा और अस्लाफ़े किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْھِمْ اَجْمَعِیْنَ का इस पर अमल रहा है।

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! कम से कम कुरआन मुक़द्दस को हफ़्ता में एक बार तो ज़रूर ख़त्म कर लिया करें! انشاء اللہ क़ल्ब को इत्मिनान नसीब होगा।

★ हिस्सों में तिलावत करना ★

जो हफ़्ता में एक बार ख़त्म कर सके वह कुरआन मुक़द्दस सात हिस्सों में तक़सीम करे यही सहाबाए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْھِمْ اَجْمَعِیْنَ की सुन्नत है।

मरवी है कि हज़रत उष्मान رضی اللہ عنہ जुम्आ की रात में सूरए बक़रा से शुरू करके सूरए माइदा तक पढ़ते और सनीचर की रात में सूरए अनआम से सूरए हूद तक और इतवार की रात में सूरए यूसुफ़ से सूरए मरयम तक और पीर की रात में सूरए ताहा से सूरए क़सस तक और मंगल की रात में सूरए अनकबूत से सूरए صٓ तक और बुध की रात में सूरए तनज़ील से सूरए रहमान तक और जुमेरात की रात में सूरए वाक़िया से सूरए नास तक, इस तरह कुरआन ख़त्म कर देते।

★ दौराने तिलावत रोना ★

तिलावत के साथ रोना मुस्तहब है हुज़ूर ﷺ ने फ़रमाया कि तुम कुरआन की तिलावत करो और उसके साथ रोया करो, अगर न रो सको तो रोने जैसा अंदाज़ इख़्तेयार कर लिया करो। *(इब्ने माजह)*

अल्लाह तआला फ़रमाता है **"یَخِرُّوْنَ لِلْاَذْقَانِ یَبْکُوْنَ"** वह अहले ईमान रोते हुए सज्दा रेज़ हो जाते हैं। *(सूरए बनी इस्राइल, कन्ज़ुल इमान)*

बुख़ारी और मुस्लिम शरीफ़ की हदीष है कि इब्ने मस्ऊद رضی اللہ عنہ ताजदारे कायनात ﷺ की बारगाह में क़िराअत कर रहे थे, उस वक़्त हुज़ूर ﷺ की आंखें अश्कबार थीं। *(बुख़ारी व मुस्लिम)*

परवर्दिगार अपने प्यारे हबीब ﷺ के सदक़े हमें तिलावते कुरआने पाक में रोने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये। آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

★ हुकूक़े आयात का लिहाज़ रखना ★

सज्दा की आयत आये तो तिलावत करने वाला सज्दा करे। रहमते आलम ﷺ ने फ़रमाया, जब इब्ने आदम आयते सज्दा पढ़ता है फिर सज्दा करता है तो शैतान रोता हुआ अलग हो जाता है और हाए हलाकत कहता है। एक रिवायत में है कि वह कहता है कि हाए मेरी हलाकत! इब्ने आदम को सज्दा का हुक्म दिया गया वह सज्दा रेज़ हो गया और उसको जन्नत मिल गयी। मुझे सज्दा का हुक्म दिया गया तो मैंने इन्कार किया इसलिये मेरे हिस्से में जहन्नम है।

★ चौदह सज्दे ★

(1) सूरए अअ़राफ (2) सूरए रअद (3) सूरए नहल (4) सूरए बनी इस्राइल (5) सूरए मरयम (6) सूरए हज्ज (7) सूरए फुर्क़ान (8) सूरए अलिफ लाम मीम तन्ज़ील (9) सूरए صٓ (10) सूरए नम्ल (11) सूरए हा मीम सज्दा (12) सूरए नज्म (13) सूरए इन्शिक़ाक़ (14) सूरए इक़्रा

आयते सजदा पढ़ते या सुनते ही फ़ौरन सज्दा कर ले, अगर कोई चीज़ मानेअ हो तो उस वक़्त सिर्फ़ यह आयत :–

"سَمِعْنَاوَاَطَعْنَا غُفْرَانَكَ رَبَّنَا وَاِلَيْكَ الْمَصِيْرُ" पढ़ ले और बाद में जब भी मौक़ा मिले फ़ौरन सज्दा कर ले।

★ सज्दा कैसे करे ? ★

यह वह सज्दा है जो आयते सज्दा पढ़ने या सुनने से वाजिब हो जाता है उसका सुन्नत तरीक़ा यह है कि खड़ा होकर **"الله اکبر"** कहता हुआ सज्दे में जाये और कम से कम तीन मर्तबा **"سبحان ربی الا علی"** कहे, फिर **"الله اکبر"** कहता हुआ खड़ा हो जाये।

★ सज्दा कब करे ? ★

सज्दए तिलावत के लिये तकबीरे तहरीमा के सिवा वह तमाम शराइत हैं जो नमाज़ के लिये हैं, मषलन : तहारत, इस्तिक़बाले क़िब्ला, नियत, वक़्त सतरे औरत वग़ैरह।

मस्अला : अगर आयते सजदा नमाज़ ही में तिलावत की गयी तो सज्दए तिलावत फ़ौरन नमाज़ ही में करना वाजिब है।

★ सज्दा कब न करें ? ★

तुलूअ आफ़ताब यानी सूरज निकलने के वक़्त, गुरूबे आफ़ताब यानी सूरज डूबने के वक़्त और निस्फ़ुन्नहार यानी ज़वाल के वक़्त सजदा तिलावत करना नाजाइज़ है। उस वक़्त अगर किसी की तिलावत के दौरान आयते सज्दा आ जाये तो इन अवक़ात के गुज़रने के बाद सज्दा अदा करे।

★ तिलावत की इब्तेदा ★

तिलावत की इब्तेदा **"اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ"** से करे और उसके बाद **"بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ"** भी मुस्तहब है।

★ तअव्वुज़ कब पढ़े ? ★

"اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ" **तर्जुमा :** अल्लाह की पनाह चाहता हूं शैतान मरदूद से।

कुरआन अज़ीम की तिलावत से पहले, चूं कि इस्तेआज़ा (**"اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ"**) का हुक्म है जैसे कि इरशादे बारी तआला है :

"اِذَا قَرَاتَ الْقُرْاٰنَ فَاسْتَعِذْ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَجِيْمِ" यानी जब तुम कुरआन पढ़ो तो पनाह मांगो अल्लाह की शैतान मरदूद से। इसलिये कुरआन पाक की इब्तेदा से पहले **اَعُوْذُ بِاللّٰهِ** पढ़ने का हुक्म है। इसके पढ़ लेने से अल्लाह तआला का हिफ़्ज़ व अमान हासिल होता है और शैतानी मकर व कैद से नजात मिल जाती है। जिसे शैतानी वसवसे ज़्यादा आते हों उसे चाहिये कि इसका कषरत से विर्द करे।

★ फ़ज़ाइले तअव्वुज़ ★

हज़रत इमाम हुसैन رضی اللہ عنہ फ़रमाते हैं, जो हुजूरे क़ल्ब के साथ **"اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ"** पढ़े रब तआला उसके और शैतान के दर्मियान तीन सौ पर्दे हाइल कर देता है। *(तफसीरे नइमी)*

और बुस्तानुत् तफ़ासीर में है कि हुज़ूर ﷺ ने इरशाद फ़रमाया, जो शख़्स रोज़ाना दस बार **"اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ"** पढ़ लिया करे हक़ तआला उस पर एक फ़रिश्ता मुक़र्रर कर देता है जो कि उसको शैतान से बचाता है। *(तफसीरे नइमी)*

और हदीषे पाक में है कि एक शख़्स पर गुस्सा बहुत वारिद था और मुंह से झाग निकल रहे थे। हुज़ूर ﷺ ने फ़रमाया, अगर यह शख़्स **اَعُوْذُ بِاللّٰهِ** पढ़ ले तो उसकी यह हालत दूर हो जाये। *(बहवाला तफषीरे नइमी)*

★ मसाइले तअव्वुज़ ★

मस्अला : तिलावत से पहले **"اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ"** पढ़ना सुन्नत है।

मस्अला : जब कोई शार्गिद उस्ताद से कुरआने अज़ीम या कोई दूसरी किताब पढ़ता हो तो उसके लिये **"اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ"** आहिस्ता पढ़ना सुन्नत नहीं। *(शामी)*

मस्अला : नमाज़ में इमाम और मुन्फ़रिद के लिये षना से फ़ारिग़ होकर **"اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ"** आहिस्ता पढ़ना सुन्नत है। *(शामी)*

मस्अला : शैतान चूं कि अल्लाह व रसूल और अहले ईमान का दुश्मन है इसलिये उस से बेज़ारी का इज़्हार करना अहले ईमान का शेवा है।

मस्अला : अज़ाज़ील का नाम लेना भी कुरआन ने गवारा नहीं किया बल्कि शैतान, रजीम, मलऊन वग़ैरह अल्क़ाबे बद से ज़िक्र किया। इससे मालूम हुआ कि ख़ुदा और रसूल के दुश्मन की अेहानत अलल ऐलान जाइज़ व दुरुस्त और तालीमे कुरआन के मुताबिक़ है।

★ तिलावत कैसे ख़त्म करें ? ★

तिलावत से फ़ारिग़ होते वक़्त इन कलिमात का अदा करना बेहतर है :–

"صَدَقَ اللّٰهُ الْعَظِيْمُ وَبَلَّغَنَا رَسُوْلُهُ الْكَرِيْمُ اَللّٰهُمَّ انْفَعْنَا بِهٖ وَبَارِكْ لَنَا فِيْهِ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ وَاَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ الْحَىَّ الْقَيُّوْمَ"

तर्जुमा : अल्लाह तआला ने सच फ़रमाया और उसके रसूल ﷺ ने हम तक उसे पहुंचाया। ऐ अल्लाह ! हमें इस से नफ़ा दे और हमारे लिये इसमें बरकत दे। तमाम हम्द व सना अल्लाह के लिये जो सारे आलम का रब है और मैं अल्लाह व क़य्यूम से मग़्फ़िरत का सवाल करता हूं।

★ नमाज़ में तिलावत ★

इतनी आवाज़ से तिलावत करना कि जो ख़ूद सुन सके वाजिब है। सिर्री नमाज़ें यानी जुहर व अस्र में भी इस तरह पढ़ना वाजिब है कि सिर्फ़ ख़ूद सुन सके और अगर इस तरह न पढ़ेगा तो नमाज़ सहीह न होगी। और जहरी नमाज़ें यानी मग़्रिब, ईशा और फ़ज्र में इतनी आवाज़ में तिलावत करना मुस्तहब है कि अपने अलावा भी कोई सुन सके। और अगर नमाज़ बा जमाअत अदा की जा रही हो तो इमाम पर उन नमाज़ों में इतनी आवाज़ से पढना कि पहली सफ़ के चंद मुक़्तदी इमाम की क़िराअत को सुन लें यह वाजिब है।

★ खुश आवाज़ी से तिलावत ★

हुजूर ताजदारे कायनात फख़्रे मौजूदात ﷺ ने फ़रमाया :–

"زَيِّنُوا الْقُرْاٰنَ بِاَصْوَاتِكُمْ" तुम अपनी (अच्छी) आवाज़ से कुरआन को मुज़य्यन करो।

मरवी है कि सरकारे दो आलम ﷺ एक शब हज़रत आइशा رضی اللہ عنہا का इंतज़ार फ़रमा रहे थे कि उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा सिद्दीक़ा رضی اللہ عنہا ताख़ीर से हाज़िर हुई, हुजूर ﷺ ने दर्याफ़्त किया, कैसे ताख़ीर हुई ? उन्होंने अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह ! ﷺ मैं क़िराअत सुन रही थी, मैंने इससे अच्छी आवाज़ नहीं सुनी। ताजदारे काइनात ﷺ उठकर तशरीफ ले गए और उस शख़्स से बहुत देर तक सुनते रहे फिर वापस तशरीफ़ लाये। फ़रमाया कि यह अबू हुजैफ़ा के मौला सालिम हैं। अल्लाह तआला की हम्द व सताइश है कि जिसने मेरी उम्मत में ऐसे शख़्स को भी पैदा फ़रमाया है।

इसी तरह रहमते आलम ﷺ ने अपने एक सहाबी हज़रत मूसा رضی اللہ عنہ से

एक बार क़िराअत सुनी तो फ़रमाया कि इनको आले दाऊद की ख़ुश आवाज़ का एक हिस्सा मिला है। *(बुख़ारी व मुस्लिम)*

जब हज़रत मूसा رضی اللہ عنہ को हुज़ूर صلی اللہ علیہ وسلم के यह तारीफ़ी कलिमात पहुंचे तो उन्होंने हुजूर صلی اللہ علیہ وسلم की बारगाह में हाज़िर होकर अर्ज़ किया, अगर मुझे मालूम होता कि सरकार صلی اللہ علیہ وسلم सुन रहे हैं तो मैं और हसीन व जमील आवाज़ में पढ़ता। *(अहयाउल उलूम)*

★ मामूली समझने वाले को तंबीह ★

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर رضی اللہ عنہما से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صلی اللہ علیہ وسلم ने फ़रमाया :—

"مَنْ قَرَاَ الْقُرْاٰنَ ثُمَّ رَاٰی اَنَّ اَحَدًا اُوْتِیَ اَفْضَلَ مِمَّا اُوْتِیَ فَقَدِ اسْتَصْغَرَ مَا اَعْظَمَهٗ اللّٰهُ تَعَالٰی"

जिसने कुरआन पढ़ा फिर उसने यह समझा कि उसको जो षवाब मिला है उससे बढ़कर किसी को षवाब मिल सकता है, तो उसने यक़ीनन ! इसको मामूली समझा जिसको अल्लाह तआला ने अज़ीम किया है। *(तिब्रानी)*

मेरे प्यारे आक़ा صلی اللہ علیہ وسلم के प्यारे दीवानो ! तिलावते कुरआन का इतना ज़बरदस्त सवाब है कि तिलावत करने वाले ने अगर यह समझा कि उसके जैसा षवाब किसी और इबादत पर मिला तो उसने इसे मामूली समझा जिसको अल्लाह तआला ने अज़ीम किया है। इससे मालूम हुआ कि तिलावत अज़ीम तरीन इबादत है।

और इस हदीष में सख़्त तंबीह की गयी है कि तिलावते कुरआन के अज्र व सवाब को हरगिज़ हरगिज़ कोइ मामूली न समझे, अल्लाह तआला ने उसका ज़बरदस्त षवाब मुक़र्रर फ़रमाया है। परवर्दिगार अपने प्यारे महबूब صلی اللہ علیہ وسلم के सदक़ा व तुफ़ैल हमें तिलावते कुरआन के षवाबे अज़ीम से मालामाल फ़रमाये और हमें कुरआन मुक़द्दस की शफ़ाअत नसीब फ़रमाये।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

★ कुरआन का इनाम ★

हज़रत अबू हुरैरा رضی اللہ عنہ से रिवायत है कि ताजदारे कायनात صلی اللہ علیہ وسلم ने

फ़रमाया :—

"یَجِیْئُ صَاحِبُ الْقُرْاٰنِ یَوْمَ الْقِیَامَةِ فَیَقُوْلُ الْقُرْاٰنُ یَا رَبِّ حَلِّهٖ فَیُلْبَسُ تَاجَ الْکَرَامَةِ ثُمَّ یَقُوْلُ یَارَبِّ زِدْهُ فَیُلْبَسُ حُلَّةُ الْکَرَامَةِ ثُمَّ یَقُوْلُ یَارَبِّ اِرْضَ عَنْهُ فَیُقَالُ لَهٗ اِقْرَأْ وَارْقِ وَیَزْدَادُ بِکُلِّ اٰیَةٍ حَسَنَةٌ"

कुरआन पाक की तिलावत करने वाला क़यामत के दिन आयेगा, कुरआन कहेगा, ऐ परवर्दिगार ! इसे आरास्ता फ़रमा दे। चुनांचे उसे इज़्ज़त व शर्फ़ का ताज पहनाया जायेगा। फिर वह कहेगा, ऐ परवर्दिगार ! इसे और नवाज़ दे ! उसके बाद उसे इज्ज़त व शर्फ़ का जोड़ा पहनाया जायेगा। फिर वह कहेगा, ऐ रब ! इससे राज़ी हो जा। अल्लाह तआला उससे राज़ी हो जायेगा। फिर कुरआने मुक़द्दस की तिलावत करने वाले से कहा जायेगा, तुम कुरआन पढ़ते जाओ और बुलंदी पर चढ़ते जाओ ! यहं तक कि वह हर आयत के साथ एक दर्जा बढ़ता चला जायेगा। *(तिर्मिज़ी)*

रोज़े क़यामत कुरआने पाक की तिलावत करने वालों को यह अेअ्ज़ाज़ हासिल होगा कि कुरआन की सिफ़ारिश से उनको इज्ज़त व शर्फ़ के ताज और अेअ्ज़ाज़ के लिबास से आरास्ता किया जायेगा। और उन्हें हुक्म दिया जायेगा कि जन्नत के बुलंद दर्जो में चढ़ते चले जायें। दूसरी रिवायत में है कि हर आयात के साथ एक दर्जा बुलंद होंगे।

★ मोमिन और मुनाफ़िक़ की तिलावत का फ़र्क़ ★

हज़रत अबू मूसा अशअरी رضی اللہ عنہ से रिवायत है कि रहमते आलम صلی اللہ علیہ وسلم ने फ़रमाया :—

"مَثَلُ الْمُؤْمِنِ الَّذِیْ یَقْرَأُ الْقُرْاٰنَ کَمَثَلِ الْاُتْرُجَّةِ رِیْحُهَا طَیِّبٌ وَّطُعْمُهَا طَیِّبٌ وَّمَثَلُ الْمُؤْمِنِ الَّذِیْ لَایَقْرَأُ الْقُرْآنَ کَمَثَلِ التَّمْرَةِ لَارِیْحَ لَهَا وَطُعْمُهَا حُلْوٌوَمَثَلُ الْمُنَافِقِ الَّذِیْ یَقْرَأُ الْقُرْآنَ کَمَثَلِ الرَّیْحَانَةِ رِیْحُهَا طَیِّبٌ وَّطُعْمُهَا مُرٌّ وَّمَثَلُ الْمُنَافِقِ الَّذِیْ لَا یَقْرَأُ الْقُرْآنَ کَمَثَلِ الْحَنْظَلَةِ لَیْسَ لَهَا رِیْحٌ وَّطُعْمُهَا مُرٌّ"

उस मोमिन की मिषाल जो कुरआन की तिलावत करता है उत्रूज्जह की तरह है जिसकी ख़ुशबू पाकीज़ा और मज़ा उम्दा होता है। और उस मोमिन की मिसाल जो कुरआन की तिलावत नहीं करता खजूर की तरह है जिसकी कोई

ख़ुश्बू नहीं होती और मज़ा शीरीं होता है। और उस मुनाफ़िक़ की मिसाल जो कुरआन पढ़ता है फूल की तरह है जिसकी ख़ुश्बू पाकीज़ा और मज़ा तल्ख़ होता है और उस मुनाफ़िक़ की मिसाल जो कुरआन नहीं पढ़ता हंज़ल (इंदराइन) की तरह है जिसमें ख़ुश्बू भी नहीं होती और उसका मज़ा भी तल्ख़ होता है। *(बुख़ारी व मुस्लिम)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! उतरुज्जा एक बहुत ही उम्दा क़िस्म का मेवा होता है। इस हदीस में कुरआने पाक की तिलावत करने वाले मोमिन को उतरुज्जा की तरह बताया गया है। अल्लामा ऐनी رحمۃ اللہ علیہ उसकी दलील पेश करते हैं कि यह तमाम ममालिक के फलों में सबसे बेहतर और उम्दा फल है। उसके बहुत से असबाब हैं, यह पसंदीदा औसाफ़ का जामेअ होता है, उसकी बहुत सी ख़ुसूसियात हैं; मषलन, यह बड़ा और ख़ूबसूरत होता है, छूने में नर्म और मुलायम, रंग बाइषे कशिश कि देखने वाले खुश हो जायें, खाने से पहले तबीअत उसकी ख़्वाहिश मंद होती है। खाने वाले को खाने की लज्ज़त से महफ़ूज़ करने के साथ साथ उम्दा ख़ुश्बू, मेदा की नर्मी और हज़्म की कुव्वत देता है, यह एक बार में यह मेवा चार हवास देखने, चखने, सूंघने और छूने के फ़ायदे देता है। इसके अलावा की ताषीराती ख़ुसूसियात और फ़वायद तिब्ब की किताबों में देखे जा सकते हैं। *(उम्दतुल क़ारी)*

★ उम्मत को बशारत ★

हज़रत अबू हुरैरा رضی اللہ عنہ से रिवायत है कि ताजदारे मदीना ﷺ ने इरशाद फ़रमाया :–

"اِنَّ اللّٰهَ تَعَالٰی قَرَأَ طٰه وَيٰس قَبْلَ اَنْ يَخْلُقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِاَلْفِ عَامٍ فَلَمَّا سَمِعَتِ الْمَلٰئِكَةُ الْقُرْاٰنَ قَالَتْ طُوْبٰى لِاُمَّةٍ يُنَزَّلُ هٰذَا عَلَيْهَا وَطُوْبٰى لِاَجْوَافٍ تَحْمِلُ هٰذَا وَطُوْبٰى لِاَلْسِنَةٍ تَتَكَلَّمُ بِهٰذَا"

तर्जमा : बिला शुबह अल्लाह ﷻ ने आसमान व ज़मीन को पैदा करने से एक हज़ार साल पहले सूरए ताहा व यासीन पढ़ी। जब फ़रिश्तों ने कुरआन सुना तो उन्होंने कहा, उस उम्मत को बशारत हो जिस पर कुरआन नाज़िल होगा और उन सीनों के लिये ख़ैर व ख़ूबी हो जो इसे अपने अंदर महफ़ूज़ करेंगे और उन जुबानों के लिये ख़ुशख़बरी हो जिन से कुरआनी अलफ़ाज़ अदा होंगे। *(अहयाउल उलूम)*

हज़रत अल्लामा अली क़ारी رحمۃ اللہ علیہ लिखते हैं कि अल्लाह तआला के कुरआन पढ़ने का मतलब यह है कि उसी ने उसे ज़ाहिर फ़रमाया और उसकी तिलावत का सवाब बयान फ़रमाया। इस हदीस से जहां कुरआने पाककी अज़मत साबित होती है वहीं उम्मते मुहम्मदिया की फ़ज़ीलत भी साबित होती है कि फ़रिश्तों ने आसमान व ज़मीन की तख़लीक़ से एक हज़ार साल पहले इस कुरआन की हामिल उम्मत को मुबारक बाद पेश की और हाफ़िज़े कुरआन को बशारत दी और जिन जुबानों से कुरआनी अलफ़ाज़ निकलते हैं उन्हें भी ख़ुशख़बरी दी।

سبحان اللہ ! कितना एहसान है ताजदारे मदीना ﷺ का कि उनके सदक़े में कुरआन मिला और उनके सदक़े में रहमान मिला और फ़रिश्ते भी सरकारे दो आलम ﷺ के सदक़े में इस उम्मत पर रश्क करते हैं।

★ नूर का ताज ★

हज़रत बुरीदा رضی اللہ عنہ से मरवी है कि हुज़ूर ﷺ ने फ़रमाया जो कुरआन पढ़ेगा, उसकी तालीम हासिल करेगा और उसके मुताबिक़ अमल करेगा उसके वालिदैन को क़यामत के दिन एक नूर का ताज पहनाया जायेगा जिसकी रौशनी आफ़ताब की रौशनी की तरह होगी और उसके वालिदैन को दो ऐसे जोड़े पहनाये जायेंगे जिनकी क़ीमत सारी दुन्या न हो सकेगी। तो वह दोनों कहेंगे, हमें क्यों पहनाया ?! तो कहा जायेगा, तुम्हारे बेटे के कुरआन पढ़ने की वजह से ! *(अत्तर्ग़ीब वत्तर्हीब)*

कितने ख़ुशनसीब हैं वह वालिदैन जिनकी औलाद कुरआने मुक़द्दस पढ़ती और उसके मुताबिक़ अमल करती है जिसकी वजह से उन्हें क़यामत के दिन यह अज़ीमुश्शान अेअ्ज़ाज़ मिलेगा।

★ चौदहवीं का चांद ★

तिबरानी ने भी हज़रत अनस رضی اللہ عنہ से रिवायत की है कि रहमते आलम ﷺ ने फ़रमाया, जो अपनी औलाद को कुरआन की तालीम दे और वह इसमें ग़ौर व फ़िक्र करें, अल्लाह तआला उनके अगले पिछले गुनाह बख़्श देगा। और जो अपनी औलाद को चंद आयतों की तालीम देंगे अल्लाह तआला उनको क़यामत

के दिन चौदहवीं के चांद की शक्ल में उठायेगा और उनकी औलाद से कहा जायेगा, पढ़ो ! चुनांचे जैसे जैसे वह आयत पढ़ेगी अल्लाह तआला उनके वालिदैन को हर आयत के साथ एक दर्जा बुलंद फ़रमायेगा और वह वहां तक पहुंचा देंगे जहां तक कुरआन का हिस्सा उनके साथ देगा। *(जमउल फवाइद)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! जिनकी औलाद कुरआन की तालीम हासिल करती है और उसके मुताबिक़ अमल करती है उनको क़यामत के दिन ऐसा ताज पहनाया जायेगा कि वह ताज अगर दुन्या में नमूदार हो जाये तो हमारी आंखें उसकी ताब न ला सकें। और ऐसे जोड़े पहनाये जायेंगे जो क़ीमत में पूरी दुनिया से बढ़कर होंगे और उनके उगले पिछले गुनाह बख़्श दिये जायेंगे। और वह कल क़यामत के दिन चौदहवीं के चांद की तरह उठाये जायेंगे और हर आयत के साथ उनके दर्जे बुलंद होंगे।

★ ......मगर......??? ★

लेकिन यहां तस्वीर का दूसरा रुख़ भी है वह यह है कि जिन लोगों की औलाद इस अज़ीम सआदत से महरूम रही वह ख़ूद भी इस बड़े अेअ्ज़ाज़ से महरूम होंगे। (अल्लाह की पनाह !) वह मां बाप ग़ौर फ़रमायें जो दुनिया व माल के हुसूल के लिये अपनी औलाद को कुरआन की तालीम से हटाकर दूसरी राहों को लगा देते हैं, वह ख़ूद भी इस महरूमी का शिकार होते हैं और अपनी औलाद की महरूमी के ज़िम्मेदार भी बनते हैं।

★ दावते फ़िक्र ! ★

बुख़ारी शरीफ़ की रिवायत में है "كُلُّكُمْ رَاعٍ وَكُلُّكُمْ مَسْئُوْلٌ عَنْ رَعِيَّتِهٖ" यानी तुम में का हर शख़्स ज़िम्मेदार है और जिनकी ज़िम्मेदारी उनके सर है उनके बारे में उनसे सवाल होगा। लिहाज़ा हर शख़्स पर अपनी औलाद की तालीम व इस्लाह की ज़िम्मेदारी आयद होती है। जिन लोगों ने अपनी औलाद को कुरआन की तालीम और उलूमे दीनिया की तरफ़ मुतवज्जोह किया क़यामत के दिन उनके सरों पर नूर का ताज भी होगा और वह अपनी ज़िम्मेदारी से सुबकदोश भी हो जायेंगे। और जिन लोगों ने अपनी औलाद को ग़लत राहों पर लगाया, बज़ाहिर उनको बहुत सारी दौलत तो हासिल हो गयी, दुन्यावी अेज़ाज़ात

भी मिल गये, लेकिन उनमें अगर इस्लामी तालीमात की रूह बाक़ी न रही और वह बे राह रवी के शिकार हो गये तो उसका ख़मीयाज़ा औलाद के साथ साथ वालिदैन को भी भुगतना होगा।

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! यह अहादीषे तैय्येबा हम सबको दावते फ़िक्र दे रही है कि हम अपनी औलाद को वक़्ती ख़ूशी की राह पर गामज़न करते हैं या दाइमी सआदत के रास्ते पर चलाते हैं।

★ क़ब्र का साथी ★

बज़्ज़ार की रिवायत है कि कुरआन का पढ़ने वाला जब इंतेक़ाल कर जाता है और उसके अहले ख़ाना तजहीज़ व तकफ़ीन में मसरूफ़ होते हैं उस वक़्त कुरआन हसीन व जमील शक्ल में आता है और उस कुरआन पढ़ने वाले के सर के पास उस वक़्त तक खड़ा रहता है जब तक वह कफ़न में लपेट न दिया जाये। फिर जब वह कफ़न में लपेट दिया जाता है तो कुरआन कफ़न के क़रीब उसके सीने पर होता है। फिर जब उसको क़ब्र के अंदर रख दिया जाता है और मिट्टी डाल दी जाती है और उससे उसके ख़ेश व अक़ारिब रुख़सत हो जाते हैं तो उसके पास मुन्कर नकीर आते हैं। और उसको क़ब्र में बिठाते हैं इतने में कुरआन आता है और उस मैयत और उन फ़रिश्तों के दर्मियान हाइल हो जाता है। वह दोनों फ़रिश्ते कुरआन से कहते हैं, हटो ! ता कि हमें इससे सवाल करें ! तो कुरआन कहता है कि रब्बे काबा की क़सम ! यह नहीं हो सकता। बिला शुब्हा यह मेरा साथी और दोस्त है और इसकी हिमायत व हिफ़ाज़त से किसी हाल मैं बाज़ नहीं आ सकता (इसकी पूरी हिमायत करता रहूंगा) अगर तुम्हें किसी और चीज़ का हुक्म दिया गया है तो तुम उस हुक्म की तामील के लिये जाओ और मेरी जगह छोड़ दो, क्योंकि मैं जब तक इसे जन्नत में दाख़िल न कर लूंगा इससे रुख़सत नहीं हो सकता। इसके बाद कुरआन अपने साथी की तरफ़ देखेगा और कहेगा कि मैं कुरआन हूं जिसे तुम आवाज़ या बिला आवाज़ पढ़ा करते थे। *(मुस्नदे बज़्ज़ार)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! कुरआन की जिसने कमा हक़्क़हू क़द्र की तो ! انشاء الله कुरआन यक़ीनन ! उसका हिमायती और सिफ़ारिशी होगा। लेकिन अगर कुरआन पढ़ने वाले में यह बातें न रहीं तो कुरआन उनके

ख़िलाफ़ जंग करेगा : **الله اكبر** जैसा कि हदीष मुबारका में है :—

"اَلْقُرآنُ حُجَّةٌ لَكَ اَوْ عَلَيْكَ"

कुरआन तेरे मवाफ़िक़ या तेरे ख़िलाफ़ हुज्जत षाबित होगा। *(मिर्क़ात शरहे मिश्कात)*

यानी जिसने कुरआन के हुक़ूक़ अदा न किये कुरआन पाक अल्लाह तआला के सामने उसके ख़िलाफ़ जंग करेगा।

★ शफ़ाअत क़ुबूल होगी ★

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर رضی اللہ عنہ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صلی اللہ علیہ وسلم ने फ़रमाया :—

"اَلصِّيَامُ وَالْقُرآنُ يَشْفَعَانِ لِلْعَبْدِ يَقُوْلُ الصِّيَامُ رَبِّ اِنِّى مَنَعْتُهُ الطَّعَامَ وَالشَّرَابَ بِالنَّهَارِ فَشَفِّعْنِى فِيْهِ وَيَقُوْلُ الْقُرآنُ رَبِّ مَنَعْتُهُ النَّوْمَ بِاللَّيْلِ فَشَفِّعْنِى فِيْهِ فَيَشْفَعَانِ"

यानी रोज़ा और कुरआन बंदे के लिये शफ़ाअत करेंगे। रोज़ा कहेगा, ऐ मेरे रब! मैंने इसको दिन में खाने पीने से रोक रखा था इसलिये इसके हक़ में मेरी शफ़ाअत क़बूल फ़रमा। और कुरआन कहेगा, ऐ मेरे परवर्दिगार! मैंने इसको रात में नींद से रोक रखा था इसलिये इसके हक़ में मेरी शफ़ाअत क़बूल फ़रमा। चुनांचे दोनों की शफ़ाअत क़बूल की जायेगी। *(अत्तर्गीब व तर्हीब)*

मेरे प्यारे आक़ा صلی اللہ علیہ وسلم के प्यारे दीवानो! क़यामत का दिन कितना होलनाक होगा। इसका सही अंदाज़ा नहीं किया जा सकता। हर शख़्स नफ़्सी नफ़्सी पुकार रहा होगा। ऐसे नाज़ुक वक़्त में दो क़िस्म के लोगों के लिये दो इबादतों की शफ़ाअत क़बूल होगी। (1) रोज़ा की शफ़ाअत रोज़ादार के लिये। (2) कुरआन पाक की शफ़ाअत तिलावत करने वाले के लिये।

★ रात की तन्हाई ★

दरबारे इलाही जिसका हाल दुनियावी दरबार जैसा न होगा। बल्कि **"اَلْمُلْكُ يَوْمَئِذٍ لِّلّٰه"** इक़्तेदार व बादशाही उस दिन सिर्फ़ अल्लाह ही की होगी। कोई बग़ैर इजाज़त दम मारने वाला न होगा। ऐसे दरबार में रोज़ेदार के लिये रोज़ा अर्ज़ करेगा, ऐ रब! मैंने इसके लिये दिन में खाने पीने वग़ैरह पर पाबंदी लगा रखी थी और वह खंदा पेशानी के साथ उनका पाबंद रहा इसलिये उसे

बख़्श दे और जन्नत में ठिकाना मरहमत फ़रमा दे। इसी तरह कुरआन तिलावत करेन वाले के लिये बारगाहे इलाही में अर्ज़ करेगा, ऐ मेरे रब! मैंने रात की मीठी नींद से इसे बेदार रखा, यह रातों को जागकर मेरी तिलावत में मशग़ूल रहता था इसलिये इससे दरगुज़र फ़रमा और जन्नतुल फ़िरदौस में इसका ठिकाना बना। ताजदारे कायनात صلی اللہ علیہ وسلم फ़रमाते हैं कि दोनों की शफ़ाअत क़बूल होगी और वह लोग जन्नत में दाख़िल होंगे। इस हदीषे मुबारका में दो अज़ीम इबादतों का तज़किरा फ़रमाया गया। हुज़ूर صلی اللہ علیہ وسلم रात की तन्हाई में तिलावते कुरआन से बंदा के जन्नत का मुस्तहिक़ होने का मुज़दाए जां फ़िज़ा सुनाया गया। अल्लाह तआला हमें इन दोनों इबादतों की पाबंदी करके शफ़ाअत के मुस्तहिक़ होने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये। **آمين بجاه النبى الكريم عليه افضل الصلوٰة والتسليم۔**

★ कुरआन देखकर ★

हज़रत उष्मान बिन अब्दुल्लाह बिन अवस षक़फ़ी رضی اللہ عنہ ने अपने दादा से रिवायत की है कि सरकारे कोनैन صلی اللہ علیہ وسلم ने इरशाद फ़रमाया :—

"قِرَائَةُ الرَّجُلِ الْقُرْآنَ فِى غَيْرِ الْمُصْحَفِ اَلْفُ دَرَجَةٍ وَّقِرَائَتُهٗ فِى الْمُصْحَفِ تَضْعُفُ عَلٰى ذٰلِكَ اِلٰى اَلْفَى دَرَجَةٍ"

यानी किसी शख़्स का कुरआन बग़ैर देखे पढ़ना एक हज़ार दर्जा रखता है और उसका कुरआन देखकर पढ़ना उससे बढ़कर दो हज़ार तक पहुंच जाता है। *(मिश्क़ात)*

कुरआन देखकर पढ़ने में दोगुना षवाब है। अल्लामा तैबी अलैहिर्रहमा इसकी वजह बताते हैं कि कुरआन का देखना, उसका उठाना, उसका छूना, कुरआन पर ग़ौर व फ़िक्र का मौक़ा फ़राहम होना और उसके माअना व मफ़हूम का समझना इन सबकी वजह से उसका सवाब दोगुना हो जाता है। *(मिर्क़ात शरहे मिश्क़ात)*

★ दिलों का ईलाज ★

हज़रत इब्ने उमर رَضِیَ اللهُ عَنْهُمَا से रिवायत है कि सरकारे मदीना صلی اللہ علیہ وسلم ने फ़रमाया :—

"اِنَّ هٰذِهِ الْقُلُوْبَ تَصْدَأُ كَمَا يَصْدَأُ الْحَدِيْدُ اِذَا اَصَابَهُ الْمَاءُ قِيْلَ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ وَمَا جِلَائُهَا قَالَ كَثْرَةُ ذِكْرِ الْمَوْتِ وَتِلَاوَةِ الْقُرْآنِ"

बेशक! दिलों को भी ज़ंग लग जाता है जिस तरह से लोहे को ज़ंग लग जाता है जब उसे पानी लग जाये। अर्ज़ किया गया, उनकी सफ़ाई किस तरह होती है? फ़रमाया, मौत को कषरत से याद करना और कुरआन की तिलावत करना। कुरआने हकीम में है **"كَلَّا بَلْ رَانَ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ مَّا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ"** इनके दिलों पर इनके करतूतों ने ज़ंग चढ़ा दी है। *(कन्ज़ुल इमान)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! जब दिल ख़्वाहिशात में डूब जाते हैं और तरह तरह के गुनाह करने लगते हैं और वह अल्लाह ﷻ की याद से ग़ाफ़िल हो जाते हैं और अपना मक़सूदे ज़िन्दगी फ़रामोश कर जाते हैं तो उनकी कैफ़ियत यह हो जाती है कि उन पर तह ब तह ज़ंग चढ़ जाता है और यह ज़ंग पूरे जिस्म के फ़साद का सबब बन जाता है, जैसा कि ताजदारे मदीना ﷺ ने एक दूसरी हदीस मुबारका में फ़रमाया :–

"जिस्म में एक टुकड़ा है अगर वह दुरुस्त होता है तो पूरा जिस्म दुरुस्त होता है। सुन लो! यह टुकड़ा दिल है।" एक और मौक़े पर सरकारे दो आलम ﷺ ने फ़रमाया, "बिला शुब्हा मोमिन जब कोई गुनाह करता है तो उसके दिल में एक स्याह नुक़्ता हो जाता है फिर अगर वह तौबा व इस्तिगफ़ार कर लेता है और अल्लाह तआला की तरफ़ माइल हो जाता है तो उसका दिल क़लई की तरह साफ़ हो जाता है और अगर वह गुनाह और ज़्यादा करता है तो वह नुक़्ता बढ़ जाता है, इस हद तक कि उसका दिल उससे ढक जाता है। इसी को अल्लाह तआला ने अपनी किताब में "رَان" कहा है। *(तिमिज़ी)*

इसलिये सहाबाए किराम رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن ने इस ज़ंग का ऐलान और उसकी सफ़ाई की दवा दर्याफ़्त की। क्योंकि उन्होंने समझ लिया था कि अगर दिल ज़ंग आलूद होंगे तो उनमें अल्लाह तआला की तजल्लियात और अनवार का अक्स कैसे आ सकेगा? उन्होंने अर्ज़ किया, या रसूलुल्लाह! ﷺ इन दिलों की सफ़ाई कैसे होगी? सरकारे दो आलम ﷺ ने फ़रमाया, मौत को ख़ूब ख़ूब याद करने से होगी।

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! मौत एक ख़ामोश वाइज़ है हर क़दम और हर मोड़ पर रूश्द व इस्लाह का दर्स देती है, फूंक फूंक कर क़दम रखने की तलक़ीन करती है, ग़लत रवी और ख़्वाहिशाते नफ़सानी में गिरफ़्तार होने से रोकती है। दूसरी मश्हूर हदीष मुबारका में हुजूर ﷺ ने फ़रमाया: **"اَكْثِرُوْا ذِكْرَهَادِمِ اللَّذَّاتِ"** तुम लज्ज़तों को ख़त्म कर देने वाली मौत को ख़ूब याद करो।

अल्लाह तआला का इरशाद है :–

"اَلَّذِىْ خَلَقَ الْمَوْتَ وَالْحَيَاتَ لِيَبْلُوَكُمْ اَيُّكُمْ اَحْسَنُ عَمَلًا" वह ज़ात जिस ने मौत व ज़िन्दगी पैदा की ता कि तुम्हें आज़माए कि कौन अमल में बेहतर है। *(कन्ज़ुल इमान)*

उसकी एक तफ़सीर यह की गयी है कि तुम में कौन मौत को सब से ज़्यादा याद करने वाला है? जिसका मतलब यह हुआ कि ख़ालिक़े कायनात ने मौत व ज़िन्दगी इसलिये पैदा की कि तुम से इम्तेहान लेकर तुम में से कौन लोग मौत को ज़्यादा याद करते हैं और उसकी वजह से अच्छे अमल करते हैं और बुरे अमल बचते हैं।

★ दिल की सफ़ाई ★

हुजूर ﷺ ने दिल की सफ़ाई के लिये दूसरी दवा तिलावते कुरआन तजवीज़ फ़रमाई। इसमें क्या शुब्हा कि कुरआन बोलता हुआ वाइज़ है, कुरआन का हर लफ़्ज़ सही रास्ते पर चलने और ग़लत रवी से बाज़ रहने का सबक़ देता है। हर जगह कुरआन अच्छाईयों का हुक्म देता है और बुराईयों से रोकता है। दूसरे मौक़ा पर सरकारे मदीना ﷺ ने फ़रमाया, मैंने तुम में दो मना करने वाली चीज़ों को छोड़ा: एक बोलने वाली और एक ख़ामोश रहकर मना करने वाली। बोलने वाली चीज़ **कुरआन** है और ख़ामोशी से आगाही देने वाली चीज़ **मौत** है। यही दोनों ऐसे वाइज़ हैं कि एक चुपचाप रहकर वअज़ कहता है दूसरा अपने हर हर लफ़्ज़ से दर्स व नसीहत पेश करता है। और इन्हीं दोनों से दिल का ज़ंग दूर होता है और फिर दिल साफ़ व शफ़्फ़ाफ़ होता है। यही दोनों इन्सान के दिल को साफ़ व शफ़्फ़ाफ़ निखरा हुआ आइना बना सकते हैं ता कि मोमिन के दिल में अन्वार व तजल्लियाते इलाही का अक्स उतर सके।

★ सिफ़ारिश क़बूल होगी ★

हज़रत जाबिर رضی اللہ عنہ से रिवायत है कि ताजदारे कायनात ﷺ का इरशाद है :–

"اَلْقُرْآنُ شَافِعٌ مُّشَفَّعٌ وَّمَاحِلٌ مُّصَدَّقٌ مَّنْ جَعَلَهٗ اِمَامَهٗ قَادَهٗ اِلَی الْجَنَّةِ وَمَنْ جَعَلَهٗ خَلْفَ ظَهْرِهٖ سَاقَهٗ اِلَی النَّارِ"

यानी कुरआन शफ़ाअत करने वाला है उसकी शफ़ाअत क़बूल होगी।और मुख़ालफ़त भी करने वाला है उसकी मुख़ालफ़त भी क़बूल होगी। जो शख़्स उसे अपना पेशवा बनायेगा उसको वह जन्नत में ले जायेगा।और जो उसे पसे पुश्त डालेगा उसको वह जहन्नम में पहुंचायेगा। *(अत्तर्गीब वत्तर्हीब)*

कुरआन की कमाहक़्क़हू जिसने क़द्र की, उसके आदाब मलहूज़ रखे, अमल के मैदान में उसने उसको अपना राहबर बनाया और उसकी तालीमात व अहकाम पर पूरी तौर पर अमल पैरा हुआ ऐसे शख़्स की कुरआन शिफ़ाअत करेगा और उसे जन्नत में दाख़िल करेगा और जिसने कुरआन से बे एअतेनाई बरती उसे पसे पुश्त डाल दिया, उससे कोई ताल्लुक़ न रखा, न उसकी तिलावत से कोई दिलचस्पी रखी न उसकी तालीमात व अहकाम पर अमल किया, ऐसे शख़्स को कुरआन जहन्नम रसीद करेगा। जैसा कि इससे पहले गुज़र चुका है कि कुरआन बंदे के हक़ में जंग करेगा या उसके ख़िलाफ़ मारका आरा होगा।

एक हदीषे मुबारका में फ़रमाया गया है कि जिसे अल्लाह तआला ने हाफ़िज़े कुरआन की नेअमत अता फ़रमाइ फिर उसने यह ख़्याल किया कि किसी को इससे बेहतर कोई चीज़ मिली तो उसने अल्लाह तआला की सबसे बेहतर नेअमत के बारे में ग़लत ख़्याल क़ायम किया। *(कन्जुल उम्माल)*

★ ज़मीन खा नहीं सकती ★

एक हदीषे मुबारका में फ़रमाया गया है कि जब हाफ़िज़े कुरआन मर जाता है अल्लाह तआला ज़मीन को हुक्म देता है कि तू इसके गोश्त (पोस्त) न खाना। ज़मीन अर्ज़ करती है, मेरे मअबूद ! मैं इसका गोश्त कैसे खा सकती हूं जब कि इसके सीने में तेरा कलाम मौजूद है। *(कन्जुल उम्माल)*

एक और हदीषे मुबारका में फ़रमाया गया, कुरआन के हुफ़्फ़ाज़ अल्लाह तआला के दोस्त हैं जो इनसे दुश्मनी करेगा वह गोया अल्लाह ﷻ से दुश्मनी करेगा और जो इनसे दोस्ती करेगा वह गोया अल्लाह तआला से दोस्ती करेगा।
(कन्जुल उम्माल)

★ मुश्क की तरह ★

हज़रत अबू हुरैरा رضی اللہ عنہ से रिवायत है कि ताजदारे कायनात ﷺ ने फ़रमाया :–

"تَعَلَّمُوا الْقُرْآنَ فَاقْرَؤُوْهُ فَاِنَّ مَثَلَ الْقُرْآنِ لِمَنْ تَعَلَّمَ فَقَرَاَ وَقَامَ بِهٖ كَمَثَلِ جِرَابٍ مَحْشُوٍّ مِسْكًا تَفُوْحُ رِيْحُهٗ كُلَّ مَكَانٍ وَمَثَلُ مَنْ تَعَلَّمَهٗ فَرَقَدَ وَهُوَ فِیْ جَوْفِهٖ كَمَثَلِ جِرَابٍ اُوْكِیَ عَلٰی مِسْكٍ"

लो गों ! तुम कुरआन की तालीम हासिल करो और उसको पढ़ो ! इसलिये कि कुरआन की मिषाल उस शख़्स के लिये जो उसकी तालीम हासिल करता है फिर उसे पढ़ता है और उसका एहतेमाम करता है उस थैली की सी है जो मुश्क से भरी हुई हो जिसकी ख़ुश्बू हर तरफ़ फैल रही हो।और उस शख़्स की मिषाल जो उसकी तालीम हासिल करता है फिर उससे ग़ाफ़िल होकर सो जाता है इस तरह कि कुरआन उसके सीने में होता है उस थैली की तरह है जिसकी ख़ुश्बू (थैली के मुंह) को बंद कर दिया गया हो।

जो शख़्स कुरआन का इल्म हासिल करता है फिर उसकी तिलावत करता है और रात की नमाज़ तहज्जुद वग़ैरह में उसे पढ़ता है ऐसे कुरआन की मिषाल एक ऐसे मुश्क से भरी हुई थैली की सी है जिसकी ख़ुश्बू हर तरफ़ होती है।और उस शख़्स की मिसाल जो उसकी तालीम हासिल करता है फिर ग़ाफ़िल होकर रात को सोता है और कुरआन उसके सीने में महफ़ूज़ होता है, मुश्क की उस थैली की तरह है जिसका मुंह बंद कर दिया गया हो।

★ अच्छी आवाज़ और कुरआन ★

हज़रत फ़ज़ाला बिन उबैद رضی اللہ عنہ से रिवायत है कि रहमते आलम ﷺ ने इरशाद फ़रमाया :–

"اَللّٰهُ اَشَدُّ اُذُناً لِلرَّجُلِ الْحَسَنِ الصَّوْتِ بِالْقُرْآنِ مِنْ صَاحِبِ الْقِيْنَةِ اِلٰی قِيْنَتِهٖ"

यानी यक़ीनन ! अल्लाह तआला अच्छी आवाज़ से कुरआन पढ़ने वाले से जिस तवज्जोह व इल्तेफ़ात से सुनता है गाने वाली लौंडी से उसका मालिक क्या इस तवज्जोह से (ग़ेना) सुनता होगा।

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! लौंडी का मालिक लौंडी से जाइज़

क़िस्म का गे़ना (गाना) सुन सकता है चूं कि गाना की आवाज़ की तरफ़ मैलान फ़ितरी होता है इसलिये लौंडी का आक़ा पूरी यकसूई के साथ उसकी तरफ़ मुतवज्जोह होकर गे़ना सुनता है। इस हदीषे मुबारका में फ़रमाया गया कि लौंडी का मालिक जिस तरह पूरी तवज्जेह के साथ लौंडी का गे़ना सुनता है इससे कहीं ज़्यादा तवज्जोह से ख़ुश आवाज़ी के साथ कुरआन पढ़ने वाले की तरफ़ अल्लाह तआला मुतवज्जेह होकर सुनता है।

★ पहली अच्छी आवाज़ ★

हज़रत जाबिर رضی اللہ عنہ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صلی اللہ علیہ وسلم ने फ़रमाया :–

"اِنَّ مِنْ اَحْسَنِ النَّاسِ صَوْتًا بِالْقُرْآنِ الَّذِیْ اِذَا سَمِعْتُمُوْہٗ یَقْرَأُ حَسِبْتُمُوْہٗ یَخْشَی اللّٰہَ"

बिला शुब्हा लोगों में सबसे अच्छी आवाज़ से कुरआन पढ़ने वाला वह शख़्स है जिससे जब तुम पढ़ते सुनो तो तुम यह ख़्याल करो कि वह अल्लाह तआला से डर रहा है। *(अत्तर्गीब वत्तर्हीब)*

क़ारी की क़िराअत से अल्लाह तआला का ख़ौफ़ और उसकी ख़शियत ज़ाहिर हो, यही ख़ुश आवाज़ी का सही मेअयार है। हज़रत इब्ने ताऊस رضی اللہ عنہ अपने वालिद गिरामी से रिवायत करते हैं कि हुजूर صلی اللہ علیہ وسلم से पूछा गया कि सबसे अच्छी आवाज़ से कुरआन पढ़ने वाला कौन है? हुज़ूर صلی اللہ علیہ وسلم ने फ़रमाया, **"اَلَّذِیْ اِذَا سَمِعْتُمُوْہٗ رَاَیْتُمُوْہٗ خَشِیَ اللّٰہَ"** वह शख़्स कि जब उससे (कुरआन) सुनो तो ख़्याल हो कि वह अल्लाह عزوجل से डरता है।

इमाम ग़ज़ाली عَلَیْہِ الرَّحْمَۃُ وَ الرِّضْوَان ने हदीष रिवायत की है :–

"لَایُسْمِعُ الْقُرْآنَ اَحَدٌ اَشْھٰی مِمَّنْ یَّخْشَی اللّٰہَ عَزَّوَجَلَّ" यानी किसी से भी इतना उम्दा कुरआन नहीं सुना जा सकता जितना उस शख़्स से जो अल्लाह तआला से डरता हो। *(उम्दतुल क़ारी)*

दारमी की रिवायत है हज़रत ताऊस رضی اللہ عنہ से रिवायत है, वह कहते हैं कि हुज़ूर صلی اللہ علیہ وسلم से सवाल किया गया, सबसे अच्छी आवाज़ से कुरआन पढ़ने वाला कौन ? और क़िराअत में सबसे अच्छा कौन है ? ताजदारे कायनात صلی اللہ علیہ وسلم ने फ़रमाया : **"مَنْ اِذَا سَمِعْتَہٗ یَقْرَأُ رَأَیْتَ اَنَّہٗ یَخْشَی اللّٰہَ"** वह शख़्स है कि जब तुम उसको कुरआन पढ़ते सुनो तो तुम्हारा ख़्याल हो कि वह अल्लाह तआला से डर रहा है।

★ ग़म का अषर ★

हज़रत सअद बिन अबी वक़ास رضی اللہ عنہ ने बयान किया। मैंने रसूलुल्लाह صلی اللہ علیہ وسلم को फ़रमाते सुना है :–

"اِنَّ ھٰذَا الْقُرْآنَ نُزِّلَ بِحُزْنٍ فَاِذَا قَرَأْتُمُوْہٗ فَابْکُوْا فَاِنْ لَّمْ تَبْکُوْا فَتَبَاکَوْا وَتَغَنَّوْہٗ فَمَنْ لَّمْ یَتَغَنَّ بِالْقُرْآنِ فَلَیْسَ مِنَّا"

यक़ीनन ! यह कुरआन ग़म के साथ नाज़िल हुआ। इसलिये जब तुम कुरआन पढ़ो तो रोया करो, अगर तुम न रो सको तो रोने की कोशिश ही करो और तुम उसे ख़ुश आवाज़ी से पढ़ो क्योंकि जो कुरआन ख़ुश आवाज़ी से न पढ़े वह हम में से नहीं। *(इब्ने माजह)*

कुरआन इस तरह पढ़ना चाहिये कि आवाज़ से सोज़ व दर्द और हुज़्न व ग़म ज़ाहिर हो और दौराने तिलावत रोना भी चाहिये। अगर तिलावत करने वाले में इतनी रिक़्क़त पैदा न हो कि वह रो सके तो रोने की कोशिश करनी चाहिये।

★ आबदीदा होना चाहिये ★

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद رضی اللہ عنہ से रिवायत है कि उन्होंने कहा :–

"قَالَ لِیْ رَسُوْلُ اللّٰہِ ا وَھُوَ عَلَی الْمِنْبَرِ اِقْرَأْ عَلَیَّ الْقُرْآنَ قُلْتُ أَ اَقْرَأُ عَلَیْکَ وَعَلَیْکَ اُنْزِلَ قَالَ اِنِّیْ اُحِبُّ اَنْ اَسْمَعَہٗ مِنْ غَیْرِیْ فَقَرَأْتُ سُوْرَۃَ النِّسَاءِ حَتّٰی اَتَیْتُ اِلٰی ھٰذِہِ الْاٰیَۃِ "فَکَیْفَ اِذَا جِئْنَا مِنْ کُلِّ اُمَّۃٍ بِشَھِیْدٍ وَّ جِئْنَا بِکَ عَلٰی ھٰؤُلَاءِ شَھِیْداً" قَالَ حَسْبُکَ الْاٰنَ فَالْتَفَتُّ اِلَیْہِ فَاِذَا عَیْنَاہُ تَذْرِفَانِ"

मुझसे रसूलुल्लाह صلی اللہ علیہ وسلم ने उस वक़्त फ़र्माया जब आप मिम्बर पर तशरीफ़ फ़रमा थे, मुजे कुरआन सुनाओ ! मैनें अर्ज़ किया, क्या मैं आपको कुरआन सुनाऊं जब कि कुरआन आप ही पर नाज़िल हुआ है ! हुजूर صلی اللہ علیہ وسلم ने फ़रमाया, किसी और ही से सुनना चाहता हूं। फिर मैंने सूरए निसाअ पढ़नी शुरू की। जब मैं इस आयत तक पहुंचा, "तो क्या हाल होगा जब हम हर क़ौम से एक गवाह लायेंगे और हम आपको ऐ नबी ! صلی اللہ علیہ وسلم इन लोगों पर गवाह बनायेंगे।" हुज़ूर صلی اللہ علیہ وسلم ने फ़रमाया, बस ! इतना ही काफ़ी है। मैंने हुजूर صلی اللہ علیہ وسلم की तरफ़ निगाह उठाई तो क्या देखता हूं कि हुज़ूर صلی اللہ علیہ وسلم की आंखों में आंसू जारी हैं। *(बुखारी शरीफ)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! जब हुज़ूर ﷺ ने हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद رضی اللہ عنہ को कुरआन पढ़ने का हुक्म दिया तो हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद رضی اللہ عنہ ने मअज़रत की कि हुज़ूर ﷺ पर कुरआन उतरा है। हुज़ूर ﷺ ही पढ़ने का हक़ अदा कर सकते हैं, हिकमत हकीम की ज़बान हो तो ज़्यादा शिरीं होती है और हबीब का कलाम हबीब की ज़बान पर ज़्यादा बेहतर होता है इसलिये कुरआन व अहादीष पढ़ाने के सिलसिले में अस्लाफ़े किराम का तरीक़ा यही होता है कि वह कुरआन व हदीष ख़ूद पढ़ते और शार्गिदों से सुनते और वह उनको तेज़ी के साथ महफूज़ करते।

लेकिन सरकारे दो आलम ﷺ उस वक़्त सुनने के ख़्वाहिशमंद थे इसलिये फ़रमाया, मैं किसी और ही से सुनना चाहता हूं। इसकी वजहें मुख़्तलिफ़ हो सकती हैं जिनमें से एक यह भी है कि कुरआन सुनना भी सुन्नते रसूल ﷺ हो जाये। गोया कुरआन पढ़ना भी इबादत और सुनना भी इबादत बन जाये। इसलिये बाज़ का कहना है कि सुनना पढ़ने से अफ़ज़ल है। हज़रत अल्लामा मुल्ला अली क़ारी رحمۃ اللہ علیہ फ़रमाते हैं, यह उस वक़्त होगा जब सुनना तालीम देने के लिये कामिल तरीन अंदाज़ में हो। इसीसे मुताख़्ख़रीन ने यह तरीक़ा इख़्तेयार किया कि वह कुरआन व हदीष शार्गिदों से सुनते हैं। *(मिर्क़ात)*

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद رضی اللہ عنہ फ़रमाते हैं, तामीले हुक्म के लिये मैंने सूरए निसाअ पढ़नी शुरू की जब आयत करीमा :–

"فَكَيْفَ اِذَا جِئْنَا مِنْ كُلِّ اُمَّةٍ بِشَهِيْدٍ وَّ جِئْنَا بِكَ عَلٰى هٰۤؤُلَاۤءِ شَهِيْدًا" मैं ने पढ़ी, "उस वक़्त आलम क्या होगा? जब हम हर क़ौम से एक गवाह उस क़ौम के नबी को लायेंगे। और अंबिया के लिये आप को गवाह बनायेंगे।'' पिछले अंबियाए किराम अपनी क़ौमों के कुफ़्र व तुग़यान, बातिल अक़ाइद और बद आमाली के ख़िलाफ़ जब अल्लाह तआला के हुज़ूर गवाही देंगे तो हुज़ूर ﷺ उन अंबिया की गवाही पर मुहरे तस्दीक़ सिब्त करेंगे।

आयते करीमा की दूसरी तफ़सीर में है कि रोज़े क़यामत हर नबी अपनी अपनी क़ौम के हक़ में या उनके ख़िलाफ़ गवाह होंगे। जब उम्मते मुहम्मदिया पिछली कौमों के ख़िलाफ़ गवाही देगी उस वक़्त हुज़ूर ﷺ अपनी उम्मत के हक़ में गवाही देंगें और उनकी गवाही की तौषीक़ करेंगे। *(अश्अतुल लम्आत)*

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद رضی اللہ عنہ फ़रमाते हैं कि जब मैं आयत करीमा तक पहुंचा, सरकारे दो आलम ﷺ की आंखें अश्कबार हो गयीं। और फ़रमाया बस करो ! इतना ही काफ़ी है। इसलिये कि इस आयत पर ग़ौर व फ़िक्र कर रहा हूं, आंखें बेक़ाबू होती जा रही हैं, कुरआन सुनने का मेरा हाल नहीं रह गया। जब हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद رضی اللہ عنہ ने हुज़ूर ﷺ की तरफ़ निगाह उठाकर देखा तो ताजदारे कायनात ﷺ आबदीदा थे। **"الله اكبر"**

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! हमें भी आराए सुन्नत की नियत से रोना चाहिये और अगर रोना न आये तो रोने वालों जैसी आवाज़ निकालनी चाहिये कि इस पर अल्लाह रब्बुल इज्ज़त अज्र अता फ़रमायेगा।

★ वीरान घर ★

हज़रत इब्ने अब्बास رضی اللہ عنہما से रिवायत है कि सरकारे मदीना ﷺ ने फ़रमाया : **"اِنَّ الَّذِیْ لَيْسَ فِیْ جَوْفِهٖ شَیْءٌ مِّنَ الْقُرْاٰنِ كَالْبَيْتِ الْخَرِبِ"**

बिला शुब्हा वह शख़्स जिसके सीने में कुरआन का कोई हिस्सा नहीं वह वीरान घर की तरह है। *(तिर्मिज़ी शरीफ़)*

जो दिल कुरआन से ख़ाली है वह एक वीराना है हज़रत अल्लामा मुल्ला अली क़ारी इसकी वजह तहरीर फ़रमाते हैं कि दिलों की आबादी ईमान और तिलावते कुरआन से होती है और बातिन की ज़ीनत हक़ और सही अक़ाइद और अल्लाह तआला की नेअमतों पर ग़ौर करने से होती है, और जब यह बातें न होंगी तो दिल वीराने में होंगे। *(मिर्क़ात)*

जिन घरों में इंसान आबाद नहीं रहते वह घर जिन्नों और शैतानों का बसैरा बन जाते हैं। गोया हदीष शरीफ़ में यह लतीफ़ इशारा भी है कि जिन दिलों में कुरआन नहीं उन पर शैतान का दौर दौरा हो जाता है। जिस सीने में कुरआन होता है वह आबाद व आरास्ता होता है और जब दिल कुरआन से ख़ाली होता है तो वीरान घर की तरह हो जाता है।

★ बलाअें दूर होंगी ★

इसी तरह एक दूसरी हदीष में फ़र्माया गया है कि जो घर कुरआन से ख़ाली है वह सबसे ख़ाली घर है। हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद رضی اللہ عنہ से रिवायत

है कि **"اِنَّ اَصْفَرَ الْبُيُوْتِ بَيْتٌ لَيْسَ فِيْهِ شَىْءٌ مِّنْ كِتَابِ اللّٰهِ"** यक़ीनन ! घरों में सबसे ख़ाली घर वह है जिसमें अल्लाह तआला की किताब का कोई हिस्सा नहीं।

जिस घर में कुरआन नहीं और न ही उसमें किसी और तरह कुरआन की तिलावत होती है वह दुन्या के घरों में सबसे ख़ाली घर है। इमाम ग़ज़ाली عَلَيْهِ الرَّحْمَةُ وَ الرِّضْوَان हज़रत अबू हुरैरा رضی اللہ عنہ का क़ौल नक़्ल करते हैं, बिला शुब्हा वह घर जिस में कुरआन की तिलावत की जाती है वह अहले ख़ाना के साथ वसीअ हो जाता है, उसकी ख़ैर व बरकत बढ़ जाती है, उसमें फ़रिश्ते आते और शैतान निकल भागते हैं। और वह घर जिसमें किताबुल्लाह की तिलावत नहीं होती वह अहले ख़ाना के साथ तंग हो जाता है, उसकी ख़ैर व बरकत कम हो जाती है और उससे फ़रिश्ते चले जाते हैं और उसमें शैतान आ जाते हैं। *(अहयाउल उलूम)*

★ कुरआन से ग़फ़लत का नतीजा ★

हज़रत अबू मूसा अशअरी رضی اللہ عنہ से रिवायत है कि सरकारे मदीना صلی اللہ علیہ وسلم ने फ़र्माया : **"تَعَاهَدُوْا الْقُرْآنَ فَوَالَّذِىْ نَفْسِىْ بِيَدِهٖ لَهُوَ اَشَدُّ تَفَصِّيًا مِّنَ الْاِبِلِ فِىْ عُقُلِهَا"**

तुम कुरआन से ताल्लुक़ रखो, उसको मुस्तक़िल पढ़ते रहो। उस ज़ात की क़सम जिसके क़ब्ज़ए कुदरत में मेरी जान है। यक़ीनन !कुरआन पैरों में बंधन लगे हुए ऊंटों से निकल भागने में कहीं ज़्यादा तेज़ है। *(मुस्लिम शरीफ)*

मेरे प्यारे आक़ा صلی اللہ علیہ وسلم के प्यारे दीवानो ! कुरआन ज़ेहनों से बहुत तेज़ निकल जाता है। इसी मफ़हूम को एक मोअष्षिर मिषाल के ज़रिये समझाया गया है कि जिन ऊंटों के पांव रस्सी से बंधे हों उन्हें अगर थोड़ी मोहलत मिल जाये तो कितनी तेज़ी से किसी तरफ़ निकल भागते हैं। इसी तरह कुरआन भी ज़ेहनों से बहुत तेज़ी से निकलता है। इसलिये तुम इससे बराबर ताल्लुक़ रखो, इसको मुसलसल और मुस्तक़िल पढ़ते रहो, उससे हमेशा वाबस्तगी और रब्त बाक़ी रखो वरना जहां ताल्लुक़ टूटा वह ज़ेहन से निकला। हाफ़िज़े कुरआन इस हदीष को आसानी से समझते हैं इसका तो हम आप भी मुशाहिदा करते हैं। लिहाज़ा बिला नाग़ा तिलावते कुरआन की पाबंदी करते रहना चाहिये ता कि कुरआने पाक हमेशा के लिये दिलों में महफ़ूज़ रहे।

★ फ़ज़ाइले सूरए फ़ातिहा ★

हज़रत अबू सईद رضی اللہ عنہ से सहीह बुख़ारी में रिवायत है, कहते हैं : मैं नमाज़ पढ़ रहा था और नबी करीम صلی اللہ علیہ وسلم ने मुझे बुलाया, मैंने जवाब नहीं दिया। (जब नमाज़ से फ़ारिग़ हुआ) हुज़ूर की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और अर्ज़ की या रसूलल्लाह ! मैं नमाज़ पढ़ रहा था। इरशाद फ़रमाया कि अल्लाह ने तुम्हें फ़रमाया है : **"اِسْتَجِيْبُوْا لِلّٰهِ وَلِلرَّسُوْلِ اِذَا دَعَاكُمْ"** अल्लाह व रसूल के पास हाज़िर हो जाओ ! जब वह तुम्हें बुलायें। फिर फ़रमाया, मस्जिद से बाहर जाने से पहले कुरआन में जो सबसे बड़ी सूरत है वह बता दूंगा और हुज़ूर صلی اللہ علیہ وسلم ने मेरा हाथ पकड़ लिया। जब निकलने का इरादा हुआ, मैंने अर्ज़ की, हुजूरने यह फ़रमाया था कि मस्जिद से बाहर जाने से पहले कुरआन की सबसे बड़ी सूरत की तालीम करूंगा। फ़रमाया **اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ** वही सबअे मषानी और कुरआने अज़ीम है जो मुझे मिला है।

और तिर्मिज़ी ने हज़रत अबू हुरैरा رضی اللہ عنہ से रिवायत की है कि रसूलुल्लाह صلی اللہ علیہ وسلم ने हज़रत उबय बिन कअब رضی اللہ عنہ से पूछा कि नमाज़ में तुम किस तरह पढ़ते हो ? उन्होंने उम्मुल कुरआन यानी सूरए फ़ातेहा को पढ़ा। हुज़ूर ने फ़रमाया, क़सम है उस ज़ात की जिसके दस्ते कुदरत में मेरी जान है ! न इसके मिष्ल तौरात में कोई सूरत उतारी गयी है, इंजील में, न ज़बूर में न कुरआन में। वह सबअे मषानी और कुरआने अज़ीम जो मुझे मिला।

★ सूरए फ़ातेहा हर बीमारी से शिफ़ा है। ★

सहीह मुस्लिम में हज़रत इब्ने अब्बास رضی اللہ عنہما से मरवी है कहते हैं हज़रत जिब्रईल علیہ السلام हुज़ूर صلی اللہ علیہ وسلم की ख़िदमत में हाज़िर थे। ऊपर से एक आवाज़ आयी, उन्होंने सर उठाया और यह कहा कि आसमान का यह दरवाज़ा आज ही खोला गया, आज से पहले कभी नहीं खुला। एक फ़रिश्ता उतरा। जिब्रईल علیہ السلام ने कहा, यह फ़रिश्ता आज से पहले कभी ज़मीन पर नहीं उतरा था। उसने सलाम किया और यह कहा कि हुज़ूर को बशारत हो कि दो नूर हुज़ूर को दिये गये हैं और हुज़ूर से पहले किसी नबी को नहीं मिले। वह दो नूर यह हैं : सूरए फ़ातेहा और सूरए बकरह् का ख़ात्मा जो हुरूफ़ आप पढ़ेंगे वह दिया जायेगा।

★ फ़ज़ाइले सूरए बक़रह ★

सहीह मुस्लिम में हज़रत अबू हुरैरा رضی اللہ عنہ से मरवी है कि रसूलुल्लाह صلی اللہ علیہ وسلم ने फ़रमाया, अपने घरों को मक़ाबिर न बनाओ ! शैतान उस घर से भागता है जिसमें सूरए बक़रह पढ़ी जाती है ।

सहीह मुस्लिम में हज़रत अबू अमामा رضی اللہ عنہ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صلی اللہ علیہ وسلم को मैंने यह फ़रमाते सुना कि कुरआन पढ़ो ! क्योंकि वह क़यामत के दिन अपने असहाब के लिये शफ़ीअ होकर आयेगा । दो चमकदार सूरतें सूरए बक़रह और आले इमरान को पढ़ो, यह दोनों क़यामत के दिन इस तरह आयेंगे गोया दो अब्र हैं, सायबान हैं या सफ़ बस्ता परिन्दों की दो जमाअतें । वह दोनों अपने अस्हाब की तरफ़ से झगड़ा करेंगी यानी उनकी शफ़ाअत करेंगी । सूरए बक़रह को पढ़ो कि उसका लेना बरकत है और उसका छोड़ना हस्रत है और अहले बातिल उसकी इस्तेताअत नहीं रखते ।

★ फ़ज़ाइले आयतुल कुर्सी ★

सहीह मुस्लिम में हज़रत उबय बिन कअब رضی اللہ عنہ से मरवी है कि रसूलुल्लाह صلی اللہ علیہ وسلم ने फ़रमाया, ऐ अबुल मुंज़र ! (यह हज़रत अबू कअब की कुन्नियत है) तुम्हारे पास कुरआन की सबसे बड़ी आयत कौन सी है ? मैंने कहा, अल्लाह جل جلالہ रसूलुल्लाह صلی اللہ علیہ وسلم ज़्यादा जानते हैं । हुजूर صلی اللہ علیہ وسلم ने फ़रमाया, ऐ अबुल मुंज़र ! तुम्हें मालूम है कि कुरआन की कौन सी आयत तुम्हारे पास सबसे बड़ी है ? मैंने अर्ज़ की "اَللّٰهُ لَا اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْحَیُّ الْقَیُّوْمُ" (यानी आयतुल कुर्सी) हुजूर صلی اللہ علیہ وسلم ने मेरे सीने पर हाथ मारा और फ़रमाया, अबुल मुंज़र ! तुमको इल्म मुबारक हो ।

सहीह बुख़ारी में हज़रत अबू हुरैरा رضی اللہ عنہ से मरवी है कि कहते हैं कि रसूलुल्लाह صلی اللہ علیہ وسلم ने ज़कात रमज़ान यानी सदक़ए फ़ित्र की हिफ़ाज़त मुझे सुपुर्द फ़रमाई थी । एक आने वाला आया और ग़ल्ला भरने लगा, मैंने उसे पकड़ लिया और यह कहा कि तुझे हुज़ूर की ख़िदमत में पेश करूंगा । कहने लगा, मैं मोहताज अयालदार हूं, सख़्त हाजतमंद हूं, मैंने उसे छोड़ दिया । जब सुबह हुई हुजूर صلی اللہ علیہ وسلم ने फ़रमाया, अबू हुरैरा ! तुम्हारा रात का क़ैदी क्या हुआ ? मैंने अर्ज़ की, या रसूलल्लाह ! उसने शदीद हाजत और अयाल की शिकायत की, मुझे रहम आ गया, छोड़ दिया । इरशाद फ़रमाया वो तुमसे झूठ बोला और वह

फिर आयेगा । मैंने समझ लिया कि वह फिर आयेगा क्योंकि हुजूर ने फ़र्मा दिया है । मैं उसके इंतेज़ार में था वह आया और ग़ल्ला भरने लगा, मैंने उसे पकड़ लिया और यह कहा कि मैं तुझे हुजूर صلی اللہ علیہ وسلم के पास पेश करूंगा । उसने कहा, मुझे छोड़ दो ! मैं मोहताज अयालदार हूं, अब नहीं आऊंगा । मुझे रहम आ गया उसे छोड़ दिया । सुबह हुई तो हुजूर ने फ़रमाया, अबू हुरैरा ! तुम्हारे क़ैदी का क्या हुआ? मैंने अर्ज़ की, उसने हाजते शदीद और अयालदारी की शिकायत की, मुझे रहम आया, उसे छोड़ दिया । हुजूर صلی اللہ علیہ وسلم ने फ़रमाया, वह तुमसे झूठ बोला, वह फिर आयेगा । मैं उसके इंतेज़ार में था वह आया और ग़ल्ला भरने लगा, मैंने पकड़ लिया और कहा, तुझे हुजूर के पास पेश करूंगा ! तीन मर्तबा हो चुका है, तू कहता है नहीं आयेगा फिर आता है । उसने कहा, मुझे छोड़ दो ! मैं तुम्हें ऐसे कलिमात सिखाता हूं जिससे अल्लाह तुम को नफ़ा देगा । जब तुम बिछौने पर जाओ आयतुल कुर्सी आख़िर आयत तक पढ़ लो, सुबह तक अल्लाह की तरफ़ से तुम पर निगेहबान होगा और शैतान तुम्हारे क़रीब नहीं आयेगा । मैंने उसे छोड़ दिया । जब सुबह हुई तो हुजूर صلی اللہ علیہ وسلم ने फ़रमाया, तुम्हारा क़ैदी क्या हुआ ? मैंने अर्ज़ की, उसने कहा, चंद कलिमात तुमको सिखाता हूं अल्लाह तआला तुम्हें इससे नफ़ा देगा । हुजूर صلی اللہ علیہ وسلم ने फ़रमाया, यह बात उसने सच कही और वह बड़ा झूटा है ! और तुम्हें मालूम है कि तीन रातों से तुम्हारा मुख़ातब कौन है ? मैंने अर्ज़ की, नहीं ! हुजूर صلی اللہ علیہ وسلم ने फ़रमाया कि वह शैतान है ।

★ सूरए बक़रह की आख़री दो आयतें ★

सहीह बुख़ारी व मुस्लिम में हज़रत अबू मस्ऊद رضی اللہ عنہ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صلی اللہ علیہ وسلم ने फ़रमाया, सूरए बरक़ह की आख़री दो आयतें जो शख़्स रात में पढ़ ले वह उसके काफ़ी है । सूरए बक़रह की आख़री आयतें अल्लाह तआला के उस ख़ज़ाने में से हैं जो अर्श के नीचे है, अल्लाह جل جلالہ ने मुझे यह दो आयतें दीं उन्हें सीखो और अपनी औरतों को सिखाओ कि वह रहमत है और अल्लाह جل جلالہ से नज़दीकी और दुआ हैं । *(दारमी)*

★ सूरए कहफ़ की फ़ज़ीलत ★

सहीह मुस्लिम में हज़रत अबू दाऊद رضی اللہ عنہ से मरवी है कि रसूलुल्लाह صلی اللہ علیہ وسلم ने फ़रमाया सूरए कहफ़ की पहली दस आयतें जो शख़्स याद करे वह

दज्जाल से महफ़ूज़ रहेगा। जो शख़्स सूरए कहफ़ जुम्आ के दिन पढ़ेगा उसके लिये दो जुम्आ के माबैन नूर रौशन होगा।

★ सूरए यासीन की फ़ज़ीलत ★

हर चीज़ के लिये दिल है और कुरआन का दिल यासीन है। जिसने यासीन पढ़ी दस मर्तबा कुरआन पढ़ना अल्लाह तआला इसके लिये लिखेगा। *(तिर्मिज़ी व दारमी)*

अल्लाह तआला ने ज़मीन व आसमान पैदा करने से हज़ार बरस पहले ताहा व यासीन पढ़ा। जब फ़रिश्तों ने सुना यह कहा, मुबारक हो उस उम्मत के लिये जिस पर यह उतारा जाये और मुबारक हो जो जोफों के लिये जो इसके हामिल हों और मुबारक हो उन ज़ुबानों के लिये जो इसको पढ़ें। *(दारमी)*

जो शख़्स अल्लाह तआला की रज़ा के लिये यासीन पढ़ेगा उसके अगले गुनाहों की मग्फ़िरत हो जायेगी लिहाज़ा उसको अपने मुर्दों के पास पढ़ो। *(बयहकी)*

★ सूरए हा मीम और सूरए मुअ्मिन ★

जो शख़्स सूरए हा मीम और सूरए मुअ्मिन को **"اِلَيْهِ الْمَصِيْرُ"** तक और आयतुल कुर्सी सुबह को पढ़ लेगा, शाम तक महफ़ूज़ रहेगा और जो शाम को पढ़ लेगा सुबह तक महफ़ूज़ रहेगा।

★ सूरए दुख़ान की फ़ज़ीलत ★

जो शख़्स हा मीम दुख़ान शबे जुम्आ में पढ़ेगा उसकी मग्फ़िरत हो जायेगी। *(तिर्मिज़ी)*

★ सूरए इख़्लास के फ़ज़ाएल ★

जो एक दिन में दो सो मर्तबा **"قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ"** पढ़ेगा उसके पचास बरस के गुनाह मिटा दिये जायेंगे मगर यह कि उस पर दैन हो। *(तिर्मिज़ी व दारमी)*

जो शख़्स सोते वक़्त बिछौने पर दाहिनी करवट लेटकर सौ मर्तबा **"قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ"** पढ़े क़यामत के दिन रब तआला उससे फ़रमायेगा, ऐ मेरे बंदे ! अपनी दाहिनी जानिब जन्नत में चला जा। *(तिर्मिज़ी)*

नबी करीम ﷺ ने एक शख़्स को **"قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ"** पढ़ते सुना, फ़रमाया कि जन्नत वाजिब हो गयी। *(इमाम मालिक तिर्मिज़ी)*

मुस्तफ़ा जाने रहमत पे लाखों सलाम
शम्ओ बज़्मे हिदायत पे लाखों सलाम
मुझसे ख़िदमत के कुदसी कहें हां रज़ा
मुस्तफ़ा जाने रहमत पे लाखों सलाम

—आ'ला हज़रत عليهِ الرَّحمةُ و الرِّضوانُ

आप अपने कमाल के सबब बुलंदी को पहुंचे
अपने जमाले जहां आरा से अंधेरों को दूर कर दिया
आपकी सारी ख़ासलतें हसीन हैं
दुरूद भेजो उन पर उनकी औलाद पर

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ
وَعَلٰى آلِكَ وَاَصْحَابِكَ يَا حَبِيْبَ اللّٰهِ ﷺ

फ़ैज़ाने दुरूद

مَوْلَایَ صَلِّ وَسَلِّمْ دَائِماً اَبَداً عَلٰی حَبِیْبِکَ خَیْرِ الْخَلْقِ کُلِّھِمِ

मुश्किल जो सर पर आ पड़ी तेरे ही नाम से टली
मुश्किल कुशा तेरा ही नाम तुझ पर दुरूद और सलाम

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! सरकारे मदीना रहमते आलम ﷺ पर सलात व सलाम बकषरत भेजा करो कि यही वह वाहिद अमल है जो सुन्नते इलाहिया है कि अल्लाह रब्बुल इज्ज़त ﷻ अपने हबीब ﷺ पर बकषरत दुरूदो सलाम के फूल निछावर फ़रमाता है और उसके फ़रिश्ते भी यही गुलदस्ता पेश करते हैं और अल्लाह ﷻ हमसे भी मुतालबा करता है कि हम भी उसकी इताअत व फ़रमां बरदारी करें और प्यारे महबूब ﷺ पर दुरूद व सलाम पढ़ें।

चुनांचे फ़रमाने बारी तआला है :–

"اِنَّ اللّٰهَ وَمَلٰٓئِكَتَهٗ يُصَلُّوْنَ عَلَى النَّبِيِّ يٰاَيُّهَا الَّذِيْنَ آمَنُوْا صَلُّوْا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوْا تَسْلِيْماً"

बेशक ! अल्लाह और उसके तमाम फ़रिश्ते दुरूद भेजते हैं उस ग़ैब बताने वाले (नबी) पर, ऐ ईमानवालो ! तुम भी उन पर दुरूद और सलाम भेजो।

★ आयते करीमा का पस मंज़र ★

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! इस्लाम को मिटाने के लिये

कुफ़्फ़ार के सारे हरबे नाकाम हो चुके थे, मक्का के बेबस मुसलमानों पर उन्होंने मज़ालिम के पहाड़ तोड़े लेकिन उन के जज़्बए ईमान को कम न कर सके। उन्होंने अपने वतन, घर बार, अहल व अयाल को ख़ुशी से छोड़ना गवारा किया लेकिन दामने मुस्तफ़ा ﷺ को मज़बूती से पकड़े रहे। कुफ़्फ़ार ने बड़े कर्रो फ़र के साथ मदीना तैयबा पर बार बार यूरिश की (हम्ला किया) लेकिन उन्हें हर बार अहले ईमान की मुख़्तसर सी जमाअत से शिकस्त खाकर वापस आना पड़ा। अब उन्होंने हुज़ूर ﷺ की ज़ाते अक़्दस व अतहर पर तरह तरह के बेजा इल्ज़ामात तराशने शुरू कर दिये ता कि लोग रुश्दो हिदायत की इस शम्अ से नफ़रत करने लगें और इस तरह इस्लाम की तरक़्क़ी रुक जाये। अल्लाह तआला ने यह आयत नाज़िल फ़रमाकर उनकी इन उम्मीदों को ख़ाक में मिला दिया कि यह मेरा ऐसा हबीब और ऐसा प्यारा रसूल है जिसकी वस्फ़ व षना मैं ख़ुद करता हूं और मेरे सारे फ़रिश्ते अपनी नूरानी और पाकीज़ा ज़बानों से उसकी जनाब में हदिया पेश करते हैं, तुम (काफ़िर) चंद लोग अगर मेरे महबूब की शान में हरज़ह गोई करते भी रहो तो सुनो जिस तरह तुम्हारे पहले मन्सूबे ख़ाक में मिल गये और तुम्हारी कोशिशें नाकाम हो गयीं इसी तरह इस नापाक मुहिम में भी तुम ख़ाइब व ख़ासिर रहोगे। *(मुलख़्ख़स तज़ जफसीरे ज़ियाउल कुर्आन)*

इसी आयते करीमा के तहत अल्लामा अनवारुल्लाह عَلَيْهِ الرَّحْمَةُ وَ الرِّضْوَانُ हैदराबादी मुसन्निफ़ अनवारे अहमदी ने चंद नुक़ात तहरीर की हैं जिनसे रब की बारगाह में सरकार ﷺ की अज़्मत व तकरीम ज़ाहिर होती है। एक बंदए मोमिन के लिये यह ज़रूरी है कि दुरूद व सलाम पढ़ने से पहले सरकार ﷺ की अज़्मत को जाने और क़ल्ब व जिगर में उनकी अज़्मत को बिठा ले और फिर दुरूद व सलाम पढ़े ! انشاء اللّٰه लुत्फ़ आयेगा और इश्क़ भी बढ़ेगा।

★ पहला नुक्ता ★

आयते करीमा :–

"اِنَّ اللّٰهَ وَمَلٰٓئِكَتَهٗ يُصَلُّوْنَ عَلَى النَّبِيِّ يٰاَيُّهَا الَّذِيْنَ آمَنُوْا صَلُّوْا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوْا تَسْلِيْما"

यानी बेशक ! अल्लाह और उसके तमाम फ़रिश्ते दुरूद भेजते हैं उस ग़ैब बताने वाले (नबी) पर, ऐ ईमान वालो ! तुम भी उन पर दुरूद और ख़ूब सलाम भेजो। अगर आप इस आयते करीमा में ग़ौर फ़रमायें तो पता चलेगा कि अल्लाह

के कलाम का आग़ाज़ "اِنَّ" से हुआ है अरबी ज़बान में "اِنَّ" इज़ालाए शक के लिये आता है। अब यहां सवाल यह पैदा होता है कि वह कौन लोग थे जिनके शक और तरद्दुद के इज़ाला को इस कलामे क़दीम में मलहूज़ रखा गया है और "اِنَّ" के ज़रिये इनके शक और तरद्दुद का इज़ाला किया गया है। यह बात सब जानते है कि जिस ज़माने में इस आयते करीमा का नुजूल हुआ उस वक़्त तीन क़िस्म के लोग थे।

पहला गिरोह इस्लाम के मानने वाले यानी सहाबाए किराम का था। दूसरा गिरोह इस्लाम का इन्कार करने वाला यानी कुफ़्फ़ार व मुश्रेकीन का था और तीसरा गिरोह मुनाफ़िक़ीन का था जो अंदर से काफ़िर व मुर्तद और ऊपर से इस्लाम के दावेदार थे। कुरआन और साहिबे कुरआन ﷺ पर सहाबाए किराम का ईमान तो इतना पुख़्ता और मुस्तहकम था कि वहां शक और तरद्दुद की कोई गुजांईश ही नहीं। अब रह गये खुले कुफ़्फ़ार व मुश्रेकीन तो वह सिरे से इस आयते करीमा में मुख़ातब ही नहीं हैं, इसलिये कि उनके कुफ़्र के सबब उनके इन्कार व शक के, इज़ाले का कोई सवाल ही पैदा नहीं होता। अब रह गया एक गरोह मुनाफ़ेक़ीन का, यह तबक़ा ऐसा है कि एक तरफ़ तो वह कुरआन पर ईमान लाने का मुद्दई भी था और दूसरी तरफ़ अपने दिलो में कुफ़्र और हुजूर ﷺ की अज़्मत के इन्कार का अक़ीदा भी छुपाकर रखता था और इस तबक़े के अफ़राद की अब भी कमी नहीं है। बहरहाल इस दौर के मुनाफ़ेक़ीन हों या बाद के आने वाले इस ख़स्लत के लोगों को इस आयते करीमा में मतनब्बा किया गया है कि जब सब का हाकिम व मालिक और उसके तमाम फ़रिश्ते हमेशा सरकारे दो आलम ﷺ पर दुरूद भेजते हैं तो सल्तनते इस्लामिया की वफ़ादार रिआया का फ़र्ज़ क्या होना चाहिये ? और उसके महबूब की अज़्मत उनके दिलों में किस क़द्र रासिख़ होनी चाहिये और किस दर्जा दुरूद व सलाम का उन्हें एहतेमाम करना चाहिये। जब कि सराहत के साथ दरबारे सुलतानी से हुक्म भी सादिर हो गया तो अब शक की कया गुजांईश रह गयी ? इतनी ताकीद के बाद भी अगर किसी का दिल नबी करीम ﷺ की अज़्मत के आगे न झुके तो समझ लीजिये कि इस के अंजाम पर बदबख़्ती की मुहर लग गयी है। (अल्लाहनी पनाह !)

★ दूसरा नुक्ता ★

"اِنَّ اللّٰهَ وَمَلٰٓئِكَتَهٗ يُصَلُّوْنَ عَلَى النَّبِىِّ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا صَلُّوْا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا"

यानी बेशक ! अल्लाह और उसके तमाम फ़रिश्ते दुरूद भेजते हैं उस ग़ैब बताने वाले (नबी) पर। ऐ ईमान वालो ! तुम भी उन पर दुरूद और ख़ूब सलाम भेजो। अगर आप इस आयते करीमा में ग़ौर फ़रमायें तो पता चलेगा कि इस आयते करीमा में अल्लाह तआला ने दुरूद भेजने वाले फ़रिश्तों का ज़िक्र किया तो उन्हें अपनी तरफ़ मन्सूब करके अपना फ़रिश्ता कहा है हालांकि देखा जाये तो सारे फ़रिश्ते अल्लाह ही के हैं मगर जहां हज़रत आदम علیہ السلام के सज्दे का ज़िक्र किया वहां सिर्फ़ "فَسَجَدَ الْمَلٰٓئِكَةُ كُلُّهُمْ اَجْمَعُوْنَ" फ़रमाया कि सारे फ़रिश्तों ने आदम علیہ السلام को सज्दा किया, वहां फ़रिश्तों का तज़किरा अपनी तरफ़ मंसूब फ़रमाकर नहीं फ़रमाया।

इस अंदाज़े बयान से दरबारे ख़ुदावंदी में हबीबे पाक ﷺ के इस मक़ामे तक़र्रुब का पता चलता है कि जो फ़रिश्ते उन पर दुरूद भेजते हैं वह भी अपने हो गये। यह शान सिर्फ़ महबूब ही की हो सकती है कि जिसे उनकी तरफ़ किसी तरह की निस्बत हासिल हो जाये वह भी महबूब हो जाये। और ख़ास बात यह है कि जब लफ़्ज़ सलात की निस्बत अल्लाह तआला की तरफ़ हो तो उसका माअना यह होता है कि अल्लाह तआला फ़रिश्तों की भरी महफ़िल में अपने महबूबे करीम ﷺ की तारीफ़ व षना करता है हुजूर ﷺ ख़ूद इरशाद फ़रमाते हैं : "فَهِىَ مِنْهُ عَزَّوَجَلَّ ثَنَاءُهٗ عَلَيْهِ عِنْدَ الْمَلٰٓئِكَةِ وَ تَعْظِيْمُهٗ" *(रवाहुल बुखारी)*

और अगर लफ़्ज़े सलात की निस्बत मलाइका की तरफ़ हो तो सलात का माअना दुआ है कि मलायका अल्लाह तआला की बारगाह में उसके प्यारे रसूल ﷺ के दर्जात की बुलंदी और मक़ामात की रफ़अत के लिये दुआ में मस्रूफ़ रहते हैं। ! سبحان اللہ दुरूद पढ़ने वाले बंदे पर अल्लाह तआला अपनी बरकतें नाज़िल फ़रमाता रहता है और उसके फ़रिश्ते दुरूद पढ़ने की बरकतों से पढ़ने वाले की रिफ़अते शान के लिये दुआएँ मांगते रहते हैं। तो ऐ ईमानवालो ! तुम भी मेरे महबूब की रिफ़अते शान के लिये दुआ मांगा करो कि ऐ अल्लाह ! अपने रसूल के ज़िक्र को बुलंद फ़रमा, उनके दीन को ग़ल्बा दे और उनकी शरीअत को बाक़ी

रख, उनकी शान को इस दुन्या में बुलंद फ़रमा और रोज़े महशर उनकी शफ़ाअत कुबूल फ़रमा और उनके दर्जात को बुलंद फ़रमा।

★ ख़ुदा का ईनाम ★

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! अगर चे दुरूद भेजने का हुक्म हम गुलामों को दिया जा रहा है लेकिन हम न शाने रिसालत को कमाहक़्क़हू जानते हैं और न इसका हक़ अदा कर सकते हैं, इसलिये हम अपने इज्ज़ का एतेराफ़ करते हुए नीज़ अल्लाह के हुक्म पर अमल करते हुए इस तरह ख़ुदा की बारगाह में अर्ज़ करते हैं **''اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ''** यानी मौला करीम ! तू ही अपने महबूब की शान को और क़द्र व मंज़िलत को सही तौर पर जानता है लिहाज़ा हमारी तरफ़ से अपने महबूब पर दुरूद नाज़िल फ़रमा जो तेरे महबूब की शायाने शान है। *(ज़ियाउल कुर्आन–22)*

जब यह आयत करीमा :–

''اِنَّ اللّٰہَ وَمَلٰٓئِکَتَہٗ یُصَلُّوْنَ عَلَی النَّبِیِّ یٰٓاَیُّھَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا صَلُّوْا عَلَیْہِ وَسَلِّمُوْا تَسْلِیْما''

नाज़िल हुई तो हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ رضی اللہ عنہ ने कहा, या रसूलल्लाह ! ﷺ आप को अल्लाह ने जिस क़दर दौलत अता फ़रमाई और जिस सआदत से आप को नवाज़ा गया उस ख़्वाने करम से हमें भी कोई तौशा मिलेगा ! क्या ख़िरमने फ़ैज़ान से हमें भी कुछ हिस्सा नसीब होगा? इस फ़ैज़ाने करम से हमें किस क़दर फ़ायदा होगा और हमें कितना हिस्सा मिलेगा? हुज़ूर रहमते आलम ﷺ हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ رضی اللہ عنہ के इस सवाल के जवाब में ख़ामोश रहे। हज़रत जिब्रईल علیہ السلام आये और यह आयत नाज़िल हुई।

''ھُوَ الَّذِیْ یُصَلِّیْ عَلَیْکُمْ وَمَلٰٓئِکَتُہٗ لِیُخْرِجَکُمْ مِّنَ الظُّلُمٰتِ اِلَی النُّوْرِ''

ख़्वाजए आलम ﷺ को जिस क़दर रहमते इलाही से हिस्सा मिला उस का अंदाज़ा किसी इंसान के बस में नहीं और इसमें से उम्मत को दुरूद का फ़ैज़ान क्या मिलता है उसकी तफ़सील के लिये आप इस आयते करीमा को सामने रखें **''لِیَغْفِرَ لَکَ اللّٰہُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْبِکَ وَمَا تَاَخَّرَ''** ता कि अल्लाह तुम्हारे सबब से गुनाह बख़्शे तुम्हारे अगलों के और तुम्हारे पिछलों के। *(तजुर्मा : कन्जुल इमान)*

हुज़ूर ﷺ के सहाबा इस ख़ुशख़बरी से बे पनाह ख़ुश हुए और कहने लगे **''ھَنِیْئًا لَّکَ یَا رَسُوْلَ اللّٰہِ''** यह नेअमते ख़ुश गवार हम मुफ़लिस और मुश्ताक़ाने दीद के लिये इनाम की गयी है शराबे मुहम्मदी से एक घूंट इन तिश्नगाने बादाए महब्बत को भी मिला है। एक और जगह यूं इरशाद फ़रमाया गया **''اِنَّ اللّٰہَ یَغْفِرُ الذُّنُوْبَ جَمِیْعاً''** बेशक ! अल्लाह तआला तमाम गुनाह माफ़ फ़रमाता है। फिर एक और आयते करीमा के ज़रिये उम्मत को बशारत से नवाज़ा गया, चुनांचे इरशाद हुआ **''وَیَنْصُرَکَ اللّٰہُ نَصْراً عَزِیْزاً''** उम्मते मुहम्मदिया के मुश्ताक़ाने दीद इन बशारतों को सुनकर **ھَنِیْئًا لَّکَ** पुकार उठे। *(मआरिजुन्नबुव्वत–319)*

★ उम्मत को दुरूद का हुक्म क्यों ? ★

इमाम फ़ख़रुद्दीन राज़ी رحمۃ اللہ علیہ अस्रारुत्तन्ज़ील में लिखते हैं कि हुज़ूरे अकरम ﷺ पर दुरूद पढ़ने के लिये हुक्म फ़रमाने में हिकमत यह है कि रूहे इन्सानी अपने जिल्ली ज़ोअफ की वजह से अनवारे तजल्लीए इलाही के कुबूल करने की इस्तेअदाद हासिल कर ले लेकिन जिस वक़्त यह फ़ैज़ान हासिल करने का तअल्लुक़ अपने और अंबियाए किराम के अरवाह के दर्मियान मज़बूत हो जाता है तो आलमे ग़ैब से फ़ैज़ान के अनवार वारिद होना शुरू हो जाते हैं। जिस तरह आफ़ताब की किरनें मकान के रौशनदान से अंदर झांकती हैं तो मकान की दीवारें और फ़र्श तो रौशन नहीं होते हां अगर उस मकान के अंदर पानी का तश्त या एक आईना रख दिया जाये तो रौशनदान से आयी हुई आफ़ताब की किरनें उस पर पड़नी शुरू हो जायें तो उसके अक्स से छत और दरो दीवार चमक उठते हैं, इसी तरह अंबियाए किराम علیہم السلام की अरवाह हैं जिनमें हुज़ूरे अकरम नूरे मुजस्सम ﷺ की रूहे मुनव्वर को यह ख़ुसूसियत हासिल है कि वह कायनात की हर शई का इदराक कर लेती है। गोया इस में कायनात की हर शई का अक्स मौजूद है और उम्मत के अरवाह अपनी जबलत और ज़ोअफ़ की वजह से जुलमत आबाद में पड़े होते हैं वह हुज़ूर ﷺ के आफ़ताब से रौशन तर रूहे अनवर के इन ज़र्रात से फ़ायदा हासिल करके अपने अंदर इस्तेअदाद पा लेते हैं। यह इस्तेफ़ादा सिर्फ़ दुरूदे पाक के ज़रिये से होता है, इसलिये हुज़ूरे अकरम ﷺने फ़रमाया, क़यामत के दिन मुझसे सबसे

ज़्यादा क़रीब वह शख़्स होगा जो मुझ पर सबसे ज़्यादा दुरूद शरीफ़ पढ़ता है। *(मआरिजुन्नबुव्वत, जिल्द–1, सफ़ा–318)*

★ फ़रिश्तों को दुरूदे पाक पढ़ने का हुक्म क्यों? ★

फ़रिश्तों को दुरूद पाक पढ़ाने में यह हिकमत थी कि उन्हें हुज़ूर ﷺ की क़द्र व मंज़िलत से आगाह कर दिया जाये और वह अपने आपको हुज़ूरे अकरम नूरे मुजस्सम ﷺ का ख़ादिम, मुतीअ व फ़र्माबर्दार समझने लगें। दूसरी हिकमत यह थी कि इन्सान मसाइब व तकालीफ़ में फंसा हुआ था फ़रिश्तों को यह वहम था और खदशा लगा रहता था कि इनका हश्र भी इबलीस, हारूत व मारूत जैसा न हो जाये, उन्होंने इत्मिनाने क़ल्ब और पनाहे ख़ुदावंदी हासिल करने के लिये हुज़ूर ﷺ पर दुरूदे पाक पढ़ना अपना शिआर बना लिया ता कि वह हमेशा के लिये इन ख़तरात से महफ़ूज़ हो जायें। *(मआरिजुन्नबुव्वत, जिल्द–1, सफ़ा–316)*

★ फ़ज़ाइले दुरूद अहादीष की रौशनी में ★

हज़रत अनस बिन मालिक رضی اللہ عنہ से मरवी है कि हुज़ूर ﷺ ने इरशाद फ़रमाया : **مَنْ صَلّٰى عَلَىَّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ عَشْرَصَلَوٰتٍ وَحَطَّ عَنْهُ عَشْرَخَطِيْئَاتٍ** जिसने मुझ पर एक मर्तबा दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह तआला उस पर दस रहमतें नाज़िल फ़रमाता है और दस गुनाह महव फ़रमा देता है। *(तिमिज़ी शरीफ़, बहवाला जामिउल अहादीष)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! ताजदारे कायनात ﷺ पर एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ने के एवज़ अल्लाह ﷻ जो दस रमहतें नाज़िल फ़रमाता है वह अपनी शान के मुताबिक़ नाज़िल फ़रमाता है। देखिये, सख़ी जब कुछ देगा तो अपनी शान के मुताबिक़ ही देगा और जब ख़ता माफ़ फ़रमायेगा तो वह भी अपनी शान के मुताबिक़ ही तो माफ़ फ़रमायेगा। दर हक़ीक़त मौलाए करीम को अपने महबूब ﷺ से इतनी महब्बत है कि उसकी रहमत अपने महबूब ﷺ की उम्मत को बख़्शने के मुख़्तलिफ़ बहाने ढूंढती रहती है ता कि उम्मत की नजात पर महबूब ﷺ की आंखों को ठंडक हो, उन बहानों में सबसे मोअष्षिर, मुफ़ीद और रब की रहमत को मुतवज्जेह करने वाला अमल दुरूदे मुबारका है

जिस पर जुम्ला औलियाए कामलीन और उलमाए मुतक़्क़देमीन व मुताख़्ख़रीन पाबंद रहे, लिहाज़ा अपने दफ़्तर से अगर गुनाहों को मिटाना हो और अपने नामए आमाल में नेकियों को बढ़ाना हो तो दुरूद शरीफ़ की कषरत करो। **اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍوَّعَلٰی آلِ سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِكْ وَسَلِّمْ** अल्लाह ﷻ हम सबको दुरूद शरीफ़ की कषरत की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

हज़रत अनस رضی اللہ عنہ से मरवी है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया :–

"مَنْ صَلّٰى عَلَىَّ صَلَاةً وَّاحِدَةً صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ عَشَرَ صَلَوَاتٍ وَحُطَّتْ عَنْهُ عَشَرَ خَطِيْئَاتٍ وَرُفِعَتْ لَهُ عَشَرُ دَرَجَاتٍ"

जिसने मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ा अल्लाह तआला उस पर दस रहमतें भेजता है और उसके दस गुनाह मिटा देता है और उसके दस दर्जे बुलंद फ़रमाता है। *(मिश्क़ात शरीफ़, बहवाला मिर्अतुल मनाजिह, जिल्द–2, सफ़ा–100)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! अल्लाह ﷻ को उस बंदे पर बे पनाह प्यार आता है जो उसके महबूब ﷺ पर दुरूद शरीफ़ पढ़ता है, कभी दस गुनाह माफ़ फ़रमाता है तो कभी दस रहमतें नाज़िल फ़रमाता है और मज़कूरा हदीषे मुबारका में इरशाद फ़रमाया गया कि दस दर्जे बुलंद फ़रमाता है।

سبحان اللہ! आज हर कोई बुलंदी चाहता है, हर शोबा में बुलंदी चाहता है। हर मक़ाम पर बुलंदी चाहता है। ऐ बुलंदी के तलबगार आओ! मेरे महबूब ﷺ पर सिदक़ दिल से दुरूदे पाक पढ़ने की आदत बना लो, انشاء اللہ! दुन्या ही में नहीं बल्कि आख़िरत में भी बुलंदी हासिल हो जायेगी।

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍوَّعَلٰی آلِ سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِكْ وَسَلِّمْ अल्लाह ﷻ हम सबको कषरत से दुरूदे पाक पढ़ने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

★ दर्जात की बुलंदी ★

इमाम जलालुद्दीन सियूती رحمۃ اللہ علیہ किताब के दीबाचा में लिखते हैं कि इब्ने असाकिर ने अपनी तारीख़ में हज़रत हफ़्स बिन अब्दुल्लाह से रिवायत है कि

अबू ज़राआ को मौत के बाद ख़्वाबमें देखा कि आसमाने दुन्या पर मलाइका के साथ नमाज़ में इमामत करते हैं। मैंने आपसे कहा, आपने यह रुत्बा किस वजह से पाया? उन्होंने जवाब दिया कि मैंने अपने हाथ से कई हज़ार अहादीष को लिखा है और हर हदीष के लिखते वक़्त **"عَنِ النَّبِیِّ"** पर ﷺ लिखा है। *(जज़्बुल कुलूब)*

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र رضی اللہ عنہ से मरवी है, उन्होंने कहा कि **"مَنْ صَلّٰی عَلَی النَّبِیِّ ا وَاحِدَۃً صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَ ملٰئِکَتُہٗ سَبْعِیْنَ صَلاَۃً"** जो नबी करीम ﷺ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़े उस पर अल्लाह तआला और उसके फ़रिश्ते सत्तर रहमतें नाज़िल फ़रमाते हैं। *(मिश्क़ात शरीफ़)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! एक रिवायत के मुताबिक़ अल्लाह جل جلالہ एक मर्तबा दुरूद शरीफ़ पढ़ने के एवज़ सत्तर रहमतें नाज़िल फ़रमाता है, गोया मौला अपने महबूब ﷺ से इतना प्यार फ़रमाता है कि जो शख़्स उसके महबूब ﷺ पर एक बार दुरूद पढ़े तो रब्बे क़दीर उस दुरूद पढ़ने वाले बंदे से इस तरह प्यार फ़रमाता है कि उस पर सत्तर रहमतें नाज़िल फ़रमाता है। पता चला कि दुरूद शरीफ़ ऐसा अमल है कि जो कोई उसकी कषरत करे अल्लाह तआला की रहमत उस पर बरसने के लिये तैयार रहती है। **اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰی آلِ سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِکْ وَسَلِّمْ** अल्लाह तआला हम सबको कषरत से दुरूद शरीफ़ पढ़ने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

कंज़ुल उम्माल में है कि हुज़ूर रहमते आलम ﷺ ने इरशाद फ़रमाया कि जिब्रईले अमीन علیہ السلام ने मुझे ख़बर दी कि जो उम्मती मुझ पर दुरूद पढ़ता है उसके बदले में अल्लाह तआला दस नेकियां लिखता है और उसके दस गुनाह मिटाता है और दस बार उसके दर्जे बुलंद फ़रमाता है, और एक फ़रिश्ता दुरूद पढ़ने वाले के हक़ में वही अल्फ़ाज़ कहता है जो वह आपके हक़ में कहता है, हुज़ूर ﷺ ने दर्याफ़्त फ़रमाया कि वह फ़रिश्ता क्या है? उन्होंने जवाब दिया कि हक़ तआला ने जब से आपको पैदा किया उसी वक़्त से वह फ़रिश्ता उस काम पर मुक़र्रर है कि आपका जो उम्मती आप पर दुरूद पढ़े वह फ़रिश्ता जवाब में कहे, तुझ पर भी ख़ुदा अपनी रहमत नाज़िल फ़रमाये।

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! आप ख़ूद देखें दुरूद शरीफ़ पढ़ने

का हुक्म 2 हि. में सादिर हुआ लेकिन दुरूद पढ़ने का सिला देने के लिये वह फ़रिश्ता पहले ही से मौजूद है इससे यह बात ज़ाहिर होती है कि अल्लाह तआला के दरबार में दुरूद शरीफ़ की कैसी क़दर व क़ीमत है और उसकी अज़्मते शान के इज़्हार के लिये हक़ तआला ने कितना एहतेमाम किया है। *(अन्वारे हदीष)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! दुरूद शरीफ़ अल्लाह के नज़दीक सबसे महबूब अमल है इसलिये उसके मुख़्तलिफ़ फ़ज़ाइल व बरकात रखे गये ता कि बंदा किसी भी तरह दुरूद शरीफ़ का आदी बन जाये और दुरूद शरीफ़ का फ़ायदा उसे दोनों जहां में हासिल होता रहे।

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰی آلِ سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِکْ وَسَلِّمْ अल्लाह तआला हम सबको दुरूद शरीफ़ पढ़ने का आदी बनाये।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

★ कषरते दुरूद की फज़ीलत ★

हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने मसऊद رضی اللہ عنہ से मरवी है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इरशाद फ़रमाया : **اِنَّ اَوْلَی النَّاسِ بِیْ یَوْمَ الْقِیٰمَۃِ اَکْثَرُھُمْ عَلَیَّ صَلوٰۃً** यानी क़यामत के दिन मुझसे ज़्यादा क़रीब वह शख़्स होगा जो मुझ पर ज़्यादा दुरूद व सलाम पेश करता होगा। *(मोअजमे कबीर, तिब्रानी)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! दुन्या के इन्सानों का यह मिज़ाज है कि बड़ों से क़रीब और छोटों से दूर रहने की कोशिश करते हैं। आप देखते होंगे कि मालदारों, इक़्तेदार की मस्नद पर बैठने वालों से हर कोई क़रीब होने की कोशिश करता है लेकिन याद रखें दुनिया के नाम निहाद बड़े लोगों से क़रीब होकर इंसान के हाथ क्या आता है? कुछ रुपया, कुछ शोहरत, और कभी इक़्तेदार की कुर्सी। लेकिन दुनिया में बड़े कहलाने वाले या समझे जाने वाले लोग कभी खुद ही कंगाल होते हैं, लेकिन अल्लाह جل جلالہ ने इंसानों में सबसे ज़्यादा बड़ा जिसे बनाया है वह हैं हमारे प्यारे आक़ा ﷺ जिनकी शान यह है : **"وَ لَلْاٰخِرَۃُ خَیْرٌ لَّکَ مِنَ الْاُوْلٰی"** हर लम्हा जिनका मर्तबा बुलंद होता है वह रसूले आज़म ﷺ फ़रमाते हैं, क़यामत में मुझसे ज़्यादा क़रीब वह होगा जो मुझ पर ज़्यादा दुरूद शरीफ़ पढ़ता होगा।! سبحان اللہ कितना आसान कर दिया है हुज़ूर ﷺ ने उम्मती को ख़ूद से क़रीब होना। दुरूद शरीफ़ की कषरत

करने वाला ! انشاء الله वहां सबसे ज़्यादा क़रीब होगा, जहां पर हर कोई नफ़्सी नफ़्सी कह रहा होगा ।

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍوَّعَلٰی آلِ سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِکْ وَسَلِّم

परवर्दिगार हम सबको कसरत से दुरूद शरीफ़ पढ़ने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये ।

हज़रत हब्बान رضی اللہ عنہ से मरवी है :–

"اِنَ رَجُلاً قَالَ یَا رَسُوْلَ اللّٰهِ ا اَجْعَلُ ثُلُثَ صَلٰوتِیْ عَلَیْكَ قَالَ نَعَمْ اِنْ شِئْتَ قَالَ الثُّلُثَیْنِ قَالَ نَعَمْ قَالَ فَصَلَا تِیْ كُلُّهَا قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم اِذَنْ یَكْفِیْكَ اللّٰهُ مَا هَمَّكَ مِنْ اَمْرِ دِیْنِكَ وَاٰخِرَتِكَ"

रसूलुल्लाह ﷺ की बारगाह में हाज़िर होकर एक शख़्स ने अर्ज़ की कि या रसूलल्लाह ! ﷺ मैं अपनी तिहाई दुआ हुजूर के लिये करता हूं । फ़रमाया, अगर तू चाहे । अर्ज़ की, दो तिहाई । फ़रमाया, हां ! अर्ज़ की कुल दुआ के एवज़ दुरूद मुक़र्रर करता हूं ! फ़रमाया, ऐसा करेगा तो ख़ुदा तेरे दुन्या व आख़ेरत के सब काम बना देगा ।

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! सहाबए किराम अलैहिर्रज़वान के ज़ौक़ व शौक़ का अंदाज़ा लगायें ताकि ताजदारे कायनात ﷺ पर जितना भी वक़्त है उसमें दुरूद शरीफ़ पढ़ने की ख़्वाहिश ज़ाहिर करते हैं और आक़ाए कायनात ﷺ सहाबी की तमन्ना नीज़ के अमल से ख़ुश होकर इरशाद फ़रमाते हैं अगर मुकम्मल वक़्त पर ख़र्च करोगे तो मेरा रब दुनिया व आख़रत के सब काम बना देगा । *(मजमउज़्ज़वाइद लिल हैषमी, मिश्कात शरीफ)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! दोनों जहां में अगर अपने काम बनाना है तो अपने क़ीमती औक़ात को फ़ुज़ूल गोई में नहीं बल्कि प्यारे आक़ा ﷺ पर दुरूद पढ़ने में ख़र्च करो । ! انشاء الله दोनों जहां के काम आसान हो जायेंगे । अल्लाह ﷻ हम सबको दुरूदे मुबारका की कषरत की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये । آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

★ सोने का क़लम, चांदी की दवात और नूर का काग़ज़ ★

कंजुल उम्माल में हज़रत दयलमी के हवाले से मन्कूल है जिसके रावी हज़रत अली رضی اللہ عنہ हैं । वह हुज़ूरे अकरम ﷺ से रिवायत करते हैं कि

अल्लाह तआला के कुछ मख़सूस फ़रिश्ते हैं जो जुम्आ की रात और दिन के वक़्त आसमान से नाज़िल होते हैं और उनके हाथों में सोने का क़लम और चांदी की दवात और काग़ज़ भी होते हैं और उनका काम सिर्फ़ यह है कि हुज़ूरे अकरम ﷺ पर पढ़ा जाने वाला दुरूद शरीफ़ लिखते रहेंगे । *(बहवाला अन्वारे अहमदी, रूहुल बयान, सफा–202)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! जुम्अतुल मुबारका को दुरूद शरीफ़ पढ़ने की बहुत सी फ़ज़ीलतें हदीषे मुबारका में मौजूद हैं जिनमें से एक हदीष शरीफ़ आपने सुनी कि सोने का क़लम, चांदी की दवात और काग़ज़ होते हैं, इससे यह साबित होता है कि नबी करीम ﷺ पर दुरूद भेजना यह मामूली अमल नहीं बल्कि इतना अहम है कि इसको सोने के क़लम से और चांदी की दवात व काग़ज़ पर भी लिखा जाना चाहिये । इससे अज़मत ज़ाहिर करना मक़सूद है और अपने प्यारे महबूब ﷺ की शान ज़ाहिर करना भी मक़सूद है । अल्लाह ﷻ हम सबको दुरूदे मुबारका की कषरत की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये ।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍوَّعَلٰی آلِ سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِکْ وَسَلِّم

★ जुम्आ को कषरत से दुरूद पढ़ो ★

हज़रत अबू अमामा बाहिली رضی اللہ عنہ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इरशाद फ़रमाया :–

"اَكْثِرُوْامِنَ الصَّلٰوةِعَلَیَّ فِیْ كُلِّ یَوْمِ الْجُمُعَةِ، فَمَنْ كَانَ اَكْثَرُهُمْ عَلَیَّ صَلٰوةً كَانَ اَقْرَبُهُمْ مِنِّیْ مَنْزِلَةً"

मुझ पर हर जुम्आ के दिन कषरत से दुरूदे पाक पढ़ा करो कि मेरी उम्मत का दुरूद मुझ पर पेश होता है । तो जो मुझ पर कषरत से दुरूदे पाक पढ़ेगा वह मुझसे ज़्यादा क़रीब रहेगा । *(अल मुस्तदरक लिल हाकिम ब हवाला जामिउल अहादीष)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! ज़रूर ज़रूर यौमे जुम्आ और शबे जुम्आ को दुरूद शरीफ़ की कषरत करो गुनाह भी माफ़ होंगे तंग दस्ती भी दूर होगी और करम बालाए करम ख़ूद मदनी आक़ा रहमते आलम ﷺ दुरूद शरीफ़ बनफ़से नफ़ीस सुनेंगे और पहचानेंगे भी ! انشاء اللهआओ ! आज ही अपने

प्यारे आक़ा ﷺ के करम को हासिल करने और शबे जुम्आ और यौमे जुम्आ में कषरत से दुरूद शरीफ़ पढ़ने की नियत करें। अल्लाह ﷻ सबको दुरूदे मुबारका की कसरत की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍوَّعَلٰی آلِ سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِکْ وَسَلِّمْ

इसी तरह एक और हदीषे मुबारका में जुम्आ को दुरूद शरीफ़ पढ़ने की फ़ज़ीलत बयान की गयी है। सुनिये और आदत बना लीजिये। हुज़ूरे अकरम ﷺ का इर्शादे गिरामी है, जो मुझ पर हर जुम्आ के दिन 80 बार दुरूदे पाक पढ़ता है उसके अस्सी सालके गुनाह बख़्श दिये जाते हैं और जो मुझ पर रोज़ाना पांच सौ बार दुरूद शरीफ़ पढ़ता है वह कभी तंग दस्त न होगा। *(रुहुल बयान, जिल्द–1, सफा–202)*

बाज़ उलमा फ़रमाते हैं शब जुम्आ की ख़ुसूसियात में से है कि जो शख़्स आप पर इस रात में सलात व सलाम अर्ज़ करता है तो सरकारे दो आलम ﷺ ब नफ़्से नफ़ीस सलात व सलाम का जवाब इरशाद फ़रमाते हैं। *(जज़्बुल कुलूब, सफा–272)*

मुफ़ाख़िरुल इस्लाम में एक हदीष बयान करते हैं :–

"مَنْ صَلّٰی عَلَیَّ فِیْ لَیْلَةِ الْجُمُعَةِ مِائَةَ صَلَوَاتٍ قُضِیَ لَهٗ سَبْعِیْنَ حَاجَةً مِنْ اُمُوْرِ الدُّنْیَا وَثَلٰثِیْنَ مِنْ اُمُوْرِ الْاٰخِرَةِ"

यानी जो मुझ पर शबे जुम्आ में सौ मर्तबा दुरूद पढ़े उसकी सौ हाजतें पूरी हों। मिन जुमला उनकी सत्तर हाजतें दुनियावी और तीस हाजतें आख़रत की। *(जज़्बुल कुलूब)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! हम अपनी हाजतों को लेकर हर तरफ़ जाते हैं और उम्मीदें लगाते हैं कभी एक हाजत पूरी हुई और बाक़ी ना तमाम ! लेकिन यौमे जुम्आ को अगर सौ मर्तबा दुरूद शरीफ़ हमने पढ़ा, सत्तर हाजतें दुन्या की और तीस हाजतें आख़ेरत की अल्लाह तआला पूरी फ़रमायेगा।

एक दूसरी हदीष में आया है कि जो शख़्स जुम्आ के दिन एक हज़ार बार इस दुरूद मुबारक को पढ़े जब तक अपना ठिकाना बहिश्त में न देख लेगा दुन्या से ख़ाली न उठाया जायेगा और वह दुरूद यह है :–

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّ اٰلِهٖ اَلْفَ اَلْفَ مَرَّةٍ *(जज़्बुल कुलूब)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! आप अंदाज़ा लगायें, कितना मुख़्तसर दुरूद शरीफ़ है और बरकतें कितनी ज़्यादा हैं ! लिहाज़ा हमें चाहिये कि इस क़िस्म के दुरूद शरीफ़ याद कर लें और दूसरों को याद भी करायें और पढ़कर खुल्द में अपनी नशिस्त देख लें। अल्लाह ﷻ हम सबका ख़ात्मा ईमान पर फ़रमाये और दुरूदे मुबारका आख़री सांस तक पढ़ने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍوَّعَلٰی آلِ سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِکْ وَسَلِّمْ

★ जुम्आ के रोज़ दुरूद पढ़ने के सबब बख़्शिश ★

हदीष शरीफ़ में है कि हज़रत ख़ालिद बिन कशीर के तकिये के नीचे से उनकी रूह निकलने से पहले एक फटा हुआ काग़ज़ मिला जिसमें लिखा था "بَرَآءَةٌ مِّنَ النَّارِ لِخَالِدِ بْنِ کَثِیْرٍ" यानी ख़ालिद बिन कशीर की जहन्नम से नजात हो गयी। इनके घर वालों से दर्याफ़्त किया गया कि यह कौन सा अमल करते थे जो यह करामत हासिल हुई ? तो घर वालों ने कहा, उनका अमल यह था कि हर जुम्आ को हज़ार मर्तबा रसूले ख़ुदा ﷺ पर दुरूद पढ़ते थे। *(जज़्बुल कुलूब, सफा–273)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! यक़ीनन ! दुरूदे मुबारका दोनों जहां की मुसीबतों का ईलाज है। ख़ुश नसीब है वह शख़्स जो पूरे यक़ीन के साथ ताजदारे कायनात ﷺ पर दुरूद पढ़ता है। अभी आपने पढ़ा कि यौमे जुम्आ को पाबंदी से हज़ार मर्तबा दुरूद शरीफ़ पढ़ने के एवज़ दुन्या ही में जहन्नम से नजात की सनद मिल गयी और क्यों न हो कि जब रसूले आज़म ﷺ ने फ़रमा दिया तो वह हक़ है। क्या हम सब को निजात की फ़िक्र नहीं है ? अगर है तो हर जुम्आ को जितना ज़्यादा हो सके इतना दुरूद शरीफ़ पढ़कर दौज़ख़ से रिहाई हासिल करने की कोशिश करें ! अल्लाह ﷻ हम सबको इसकी तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍوَّعَلٰی آلِ سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِکْ وَسَلِّمْ

★ कषरते दुरूद का सिला ★

हज़रत सुफ़यान षौरी رضی اللہ عنہ ने फ़रमाया कि हम काबा का तवाफ़ कर रहे थे। एक शख़्स को देखा कि बजाए लब्बैक पढ़ने के हर क़दम पर दुरूद शरीफ़ पढ़ता है। मैं ने कहा, यह क्या ? तसबीह व तहलील छोड़कर तुम दुरूद शरीफ़ पढ़ते हो, तुम्हारे पास इसका कोई शरई सबूत है ? उसने कहा, अल्लाह तआला आपको सेहत व आफ़ियत बख़्शे आप का इस्मे गिरामी क्या है ? मैंने कहा, मुझे सुफ़यान षौरी कहते हैं । उसने कहा, अगर आप मुसाफ़िर होते और मुझे यह यक़ीन होता कि आप मेरा राज़ फ़ाश नहीं करेंगे तो आपको यह हाल बता देता। बहरहाल, हक़ीक़त यह है कि मैं और मेरे वालिद हज को आ रहे थे। रास्ते में मेरे वालिद बीमार होकर मर गये और बद क़िस्मती से उनका चेहरा सियाह हो गया, आंखें नीली हो गयीं, और पेट फूल गया। इस पर मैं ख़ूब रोया और "اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّا اِلَيْهِ رَاجِعُوْنَ" पढ़ा। अफ़सोस कि मेरे वालिद की मौत सफ़र में हुई और ऐसी बुरी कि जिसे बताया नहीं जा सकता। मैं अपने वालिद का चेहरा चादर से ढांप कर सो गया। ख़्वाब में देखा कि एक हसीन व जमील शख़्स आया है जिसकी शक्ल व सूरत कभी न देखी थी और निहायत ख़ूब सूरत लिबास में मलबूस था और ख़ुश्बू से मोअत्तर। मेरे वालिद के क़रीब होकर उनके चेहरे से कपड़ा उतारकर चेहरे पर हाथ फेरा तो मेरे वालिद का चेहरा दूध से ज़्यादा सफ़ेद हो गया और उनके पेट पर हाथ फेरा तो पहले की तह हो गये। उसके बाद वह हसीन व जमील हस्ती वापस जाने लगी, मैंने बढ़ कर अर्ज़ की, आपको उस ज़ात की क़सम ! जिसने आपको मेरे वालिद के लिये रहमत बनाकर भेजा, आप हैं कौन? फ़रमाया, मैं मुहम्मद (صلی اللہ علیہ وسلم) हूं, अगर चे तेरा बाप बहुत गुनाहगार था लेकिन मुझ पर दुरूद शरीफ़ का बकषरत पढ़ता था, जब उसे यह मुसीबत पहुंची तो उसने मुझे पुकारा, मैंने उसकी हाजत पूरी की। जो मुझ पर कषरत से दुरूदे पाक पढ़ता है तो मैं दुन्या में उसकी हाजत पूरी करता हूं। इसके बाद मैं बेदार हुआ तो देखा कि मेरे वालिद का चेहरा सफ़ेद और पेट सही व सालिम था। हज़रत सुफ़यान ने यह वाक़िया सुनकर फ़रमाया, तुम सही कहते हो। और अपने शार्गिदों को हुक्म दिया कि इस वाक़िया को उम्मते रसूल को सुनायें, अपनी किताबों में लिखें ता कि लोग हुज़ूरे अकरम ﷺ पर दुरूदे पाक की बरकत से दुन्या और आख़रत के अज़ाब से नजात पा लें।

मेरे प्यारे आक़ा صلی اللہ علیہ وسلم के प्यारे दीवानो ! मज़कूरा वाक़िया से यह वाज़ेह हो गया कि हर मुसीबत का इलाज रहमते आलम صلی اللہ علیہ وسلم पर दुरूद पढ़ना है। दुन्या में कौन है जो किसी न किसी मुसीबत में गिरफ़्तार न हो, यह दुनिया है ही मुसीबतों का घर, यहां पर हम इम्तेहान देने के लिये भेजे गये हैं। तख़लीक़े इंसानी का मक़सद अल्लाह तआला ने क़ुर्आने पाक में वाज़ेह फ़रमा दिया "اَلَّذِیْ خَلَقَ الْمَوْتَ وَالْحَیٰوۃَ لِیَبْلُوَکُمْ اَیُّکُمْ اَحْسَنُ عَمَلًا" कि मौत व ज़िन्दगी की तख़लीक़ का मक़सद तुम को आज़माना है कि तुम में कौन हे जो बेहतरीन अमल करता है। यक़ीनन ! हमारे आमाले सालेहा क़ाबिले क़द्र हैं लेकिन जो अमल ख़ूद अल्लाह तआला का हो वह अमल कितना अच्छा होगा? वह अमल जो अल्लाह عزوجل करता है वह दुरूद शरीफ़ है, लिहाज़ा दुरूदे मुबारका का आदी ख्वाह कितना ही गुनाहगार हो दुरूदे मुबारका की बरकतों से उस पर अल्लाह عزوجل का करम हो ही जायेगा जैसा कि मज़कूरा वाक़िया में आप ने समाअत फ़रमाया। अल्लाह عزوجل हम सबको इसकी तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

★ कषरते दुरूद की तादाद ★

इमाम शअरानी رحمۃ اللہ علیہ ने कशफ़ुल गम्मा मे बयान किया कि बाज़ उलमाए किराम ने फ़रमाया है कि हुज़ूर صلی اللہ علیہ وسلم पर कषरते दुरूद का मतलब हर रात सात सौ बार है। और दिन में सात सौ बार है। और एक आलिम ने कहा है कि कषरते दुरूद रोज़ाना साढ़े तीन सौ बार और साढ़े तीन सौ बार रात में है।

हज़रत शैख़ अब्दुल हक़्क़ मुहद्दिष देहलवी رحمۃ اللہ علیہ फ़रमाते हैं कि एक तादादे मख़सूस में हर रोज़ का वज़ीफ़ा करे तो बेहतर है कि हज़ार से कम न हो, अगर यह न हो सके तो पांच सौ पर इक्तेफ़ा करे, यह भी न हो सके तो फिर सौ से कम कभी न करे। बाज़ ने तीन सौ को पसंद किया है मोमिन कषरते दुरूद की आदत करता है तो फिर उस पर आसान भी हो जाता है।

मेरे प्यारे आक़ा صلی اللہ علیہ وسلم के प्यारे दीवानो! दुरूदे मुबारका के मुताल्लिक़ तादाद के तअय्युन से दर हक़ीक़त एक आदत बनाना मक़सूद है, अगर कोई शख़्स किसी काम के करने की आदत बना ले तो वह काम उस पर आसान हो जाता है। एक बार बंदा अपनी आदत बना ले तो उस पर आसान हो जाता है

और बुज़ुर्गाने दीन का मन्शा हर एक मुसलमान को दुरूद का आदी बनाकर उनकी आख़ेरत को संवारना होता है। लिहाज़ा कोशिश करें कि रोज़ाना कम से कम 100 से 300 मर्तबा ज़रूर दुरूद शरीफ़ पढ़ें। इंशाअल्लाह रफ़्ता रफ़्ता कषरते दुरूद शरीफ़ की आदत पड़ जायेगी। अल्लाह جَلَّ جَلَالُهٗ हम सबको कषरते दुरूद की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये। آمین بجاہ النبی الکریم علیه افضل الصلوٰة والتسلیم۔

★ बुज़ुर्गाने दीन और दुरूद शरीफ़ की कषरत ★

अश्शैख़ मुहम्मद अबुल मवाहिब शाज़ली رحمۃ اللہ علیہ जलीलुल क़द्र बुज़ुर्ग उलमाए रासेख़ीन में से हैं आप दिन में हज़ार बार और रात में हज़ार बार दुरूदे पाक पढ़ते। इमाम शअरानी رحمۃ اللہ علیہ ने अपनी तबक़ात में कहा कि आप बकषरत दुरूद पढ़ा करते थे, आप सरकार صلی اللہ علیہ وسلم की बकषरत ज़ियारत किया करते थे। आपने बेदारी के आलम में भी अपनी आंखों से 725 हि० में जामेअ अज़हर के मैदान में आप صلی اللہ علیہ وسلم को देखा। सरकार صلی اللہ علیہ وسلم ने अपना दस्ते अक़दस आपके दिल पर रखा, यह सारी बरकतें कषरते दुरूद की वजह से थीं। *(सआदतुद्दीन)*

इमाम शअरानी फ़रमाते हैं कि हज़रत नूरुद्दीन शवफ़ी رحمۃ اللہ علیہ उन बुज़ुर्गो में हैं जो बेदारी में सरकार صلی اللہ علیہ وسلم की ज़ियारत किया करते थे। आप का यह मामूल था जहां जाते "اَلصَّلوٰۃُ عَلَی النَّبِیِّ" मजलिस क़ायम करते। मक्का, मदीना, बैतुल मुक़द्दस, मिस्र, शाम, यमन वग़ैरह में इस मजलिस के मूजिद आप ही हैं। हत्ता कि 797 हि. में जामेअ अज़हर में भी आपने मजलिस "اَلصَّلوٰۃُ عَلَی النَّبِیِّ" मनाई। आप ख़ूद फ़रमाते हैं कि मैं बचपन में ही दुरूदे पाक का शौक़ीन था। आप फ़रमाते हैं कि मैं बच्चों को जमा करता और सुबह का खाना देता और कहता इसे खाओ और हम सब मिलकर सरकारे दो आलम صلی اللہ علیہ وسلم पर दुरूद भेजें। हम दिन का अकषर हिस्सा दुरूदे पाक पढ़ने में गुज़ारते। आप हर रोज़ दस हज़ार बार निहायत अदब से दुरूदे पाक पढ़ा करते थे। और शैख़ अहमद ज़वारी رحمۃ اللہ علیہ रोज़ चालीस हज़ार बार दुरूदे पाक पढ़ते। इमाम शअरानी رحمۃ اللہ علیہ ख़ूद फ़रमाते हैं कि जब मैंने अल्लाह का ज़िक्र और सरकारे दो आलम ﷺ पर बकषरत दुरूद पढ़ा है, मेरा सीना खोल दिया गया पस जिसने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और उसके रसूल صلی اللہ علیہ وسلم के ज़िक्र को अपना शुग्ल बनाया वह अल्लाह तआला के फ़ज़ल व करम से दोनों जहां में कामयाब हुआ।

आप फ़रमाते हैं कि सिलसिलए तरीक़त में कषरत से दुरूदे पाक पढ़ना चाहिये, दुरूद पढ़ते ही हुज़ूर صلی اللہ علیہ وسلم की बारगाह में रसाई हासिल होती है। दुरूद की कषरत से आलमे बेदारी में सरकार صلی اللہ علیہ وسلم की ज़ियारत नसीब होती है।

इमाम जलालुद्दीन सियूती رحمۃ اللہ علیہ अपने ही बारे में फ़रमाते हैं कि मैंने आलमे बेदारी में 75 मर्तबा सरकारे दो आलम صلی اللہ علیہ وسلم की ज़ियारत की। *(मीज़ाने कुबरा)*

और हज़रत शैख़ अब्दुल हक़्क़ मुहद्दिष देहलवी رحمۃ اللہ علیہ मदारिजुन्नबुव्वत में लिखते हैं कि मुझे कसरते दुरूदे पाक की बरकत से हुजूर صلی اللہ علیہ وسلم की बारगाह में इस तरह हाज़री नसीब होती जिस तरह सहाबाए किराम رِضْوَانُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن को हुजूरी मिलती थी। *(खुलासा अफज़लुस्सलवात, सफा–144, शिफाउल कुलूब, सफा–154, 155, आबे कौषर)*

★ दीदार का शर्फ़ ★

हज़रत मरुऊद राज़ी رحمۃ اللہ علیہ जो कि मुल्के फ़ारस के सुलहा में से थे, उनका काम यह था कि वह मौक़फ़ (मज़दूरों के ठहरने की जगह) में जाते और जितने मज़दूर मिल जाते उनको अपने मकान में ले आते, इन मज़दूरों को यह गुमान होता कि शायद कोई तामीर वग़ैरह का काम लिया जायेगा, लेकिन हज़रत मौसूफ़ उनको बिठाकर फ़रमाते, दुरूद पाक पढ़ो! और ख़ूद भी साथ बैठकर पढ़ते। और जब अस्र के वक़्त छुट्टी का वक़्त आता उनको पूरी मज़दूरी देकर रुख़सत फ़रमाते। आपको सरकार صلی اللہ علیہ وسلم से इश्क़ व महब्बत की बिना पर आलमे बेदारी में भी सरकारे कोनो मकां صلی اللہ علیہ وسلم के दीदार का शर्फ़ हासिल हुआ था। *(आबे कौषर, सफा–186)*

★ अज़ीमुलजषा फ़रिश्ता ★

आक़ाए नामदार صلی اللہ علیہ وسلم ने फ़रमाया कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने एक फ़रिश्ता पैदा फ़रमाया है जिसके दोनों बाज़ूओं का दर्मियानी फ़ासला मश्रिक व मग़्रिब को घेरे हुए है, और उसका सर ज़ेरे अर्श है और दोनों पांव तहतुष्षरा में हैं। रुए ज़मीन पर आबाद मख़लूक़ के बराबर उसके पैर हैं। मेरी उम्मत में से जब कोई मर्द या औरत मुझ पर दुरूद पढ़ते हैं तो उस फ़रिश्ते को इज़ने इलाही होता है कि वह अर्श के नीचे बहरे नूर में ग़ोताज़न हो! वो गोता लगाता है और बाहर

निकलकर जब वह अपने बाज़ूओं (परों) को झाड़ता है तो उसके परों से जिस क़दर क़तरात टपकते हैं उनमें से हर एक क़तरा से अल्लाह तआला एक एक फ़रिश्ता पैदा करता है जो क़यामत तक उस दुरूद पढ़ने वाले के लिये दुआए मग़्फ़िरत करते हैं।

एक दाना का क़ौल है कि जिस्म की सलामती कम खाने में है और रूह की सलामती कम गुनाहों में है और ईमान की सलामती हुज़ूर ﷺ पर सलात व सलाम पढ़ने में है। *(मआरिजुन्नबुव्वत, सफा–305, मुकाशफतुल कुलूब, सफा–41)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! वही बंदा कामयाब है जिसका ख़ात्मा ईमान पर हो और ख़ात्मा बिल ख़ैर के लिये दुरूद शरीफ़ बेहतरीन अमल है लिहाज़ा मज़कूरा हदीष शरीफ़ से इस्तेफ़ादा करते हुए दुरूद शरीफ़ की कषरत करें ता कि ईमान पर ख़ात्मा यक़ीनी हो जाये। अल्लाह ﷻ हम सबको ख़ात्मा बिल ख़ैर की दौलत नसीब फ़रमाये।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰی آلِ سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِکْ وَسَلِّمْ

हज़रत मआज़ बिन जबल رضی اللہ عنہ से मरवी है कि हुज़ूर ﷺ ने फ़रमाया कि हक़ तआला ने मुझे वह रुत्बे दिये हैं जो किसी नबी को नहीं मिले हैं और मुझको सारे नबियों पर फ़ज़ीलत दी और मेरी उम्मत के कई आला दर्जे मुक़र्रर फ़रमाये कि वह मुझ पर दुरूद पढ़ते हैं और मेरी क़ब्र के पास मंतूश नामी एक फ़रिश्ता मुतय्यन फ़रमाया वह इतना तवीलुल क़ामत और अज़ीम है कि इसका सर अर्शे इलाही के नीचे और उसका पांव तहतुष्षेरा में है और उसके अस्सी हज़ार बाज़ू हैं, अस्सी हज़ार पर हैं और हर पर के नीचे अस्सी हज़ार रोंगटे हैं और हर रोंगटे के नीचे एक ज़बान है जिससे वह अल्लाह तआला की तस्बीह व तमहीद करता है और उस शख़्स के हक़ में दुआए मग़्फ़िरत करता है जो मुझ पर दुरूद पढ़े। *(अन्वारे अहमदी, सफा–74, 75)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! कितना अज़ीम फ़ैज़ान है दुरूदे मुबारका का कि फ़रिश्तों में भी जो अज़ीम फ़रिश्ता है वह दुआए मग्फ़िरत करेगा। अगर उसके बावजूद कोई सुस्ती करे तो कितना नादान है ! लिहाज़ा आइये हम अहद करें कि इंशाअल्लाह ज़िन्दगी की आख़री सांस तक दुरूदे

मुबारका पढ़ने की पाबंदी करेंगे अल्लाह तआला हम सबको कषरत से दुरूद पढ़ने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! मज़कूरा हदीषे पाक से यह भी मालूम हुआ कि अगर कोई शख़्स सिद्क़ दिल से रहमते आलम ﷺ पर दुरूद पढ़े तो मासूम फ़रिश्ते उसकी मग़्फ़िरत की दुआ करते हैं और यक़ीनन फ़रिश्ते दुआ करें तो अल्लाह ﷻ ज़रूर बख़्श देगा।

★ आसमान में तआरुफ़ ★

इमामे अजल सिराजुल मिल्लत वद्दीन अबी अहमद ज़ैद बिन ज़ैद رحمۃ اللہ علیہ ने लिखा है कि हज़रत रिसालत मआब ﷺ ने फ़रमाया जो शख़्स मुझ पर एक बार दुरूदे पाक पढ़ता है अल्लाह तआला उस पर दस बार दुरूद पढ़ता है और आसमाने दुन्या के रहने वालों को उस शख़्स के दुरूद से मुतआरूर्फ कराया जाता है और उन्हें इस दुरूद के पढ़ने में शरीक किया जाता है। फिर आसमाने दोम वालों से इस दुरूदे पाक पढ़ने वाले का तआरुफ़ कराया जाता है और वह लोग इस दुरूद पढ़ने वाले पर 22 बार दुरूद पढ़ते हैं। फिर आसमाने सोम के लोगों को इस दुरूद से वाकिफ़ कराया जाता है और वहां के लोग इसी तरह इस शख़्स पर हज़ार बार दुरूद शरीफ़ पढ़ते हैं और इस दुरूद को आसमाने चहारूम के लोगों को सुनाया जाता है तो वह दो हज़ार बार दुरूदे पाक पढ़ते हैं। इस दुरूद को जब आसमाने पंजुम के लोग सुनते हैं तो वह जवाब में पांच हज़ार बार दुरूदे पाक पढ़ते हैं, जब आसमाने शशुम वाले इस दुरूद व सलाम को सुनते हैं तो छः हज़ार बार दुरूद व सलाम पढ़ते हैं। आसमाने हफ़्तुम के लोग इस दुरूद के जवाब में सात हज़ार बार दुरूद पढ़ते हैं। उसके बाद अल्लाह तआला फ़रमाता है, इन तमाम दुरूदो सलाम का सवाब मेरे उस बंदे को अता किया जाये जिसने मेरे हबीब ﷺ पर दुरूद पढ़ा था। मैं ऐलान करता हूं कि उसके तमाम गुनाह बख़्श दिये गये। यह ऐअज़ाज़ व बरकात मेरे नबी ﷺ पर दुरूद पढ़ने से हासिल होते हैं। *(मआरिजुन्नबुव्वत, जिल्द–1, सफा–296)*

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! कितना करम है अल्लाह ﷻ का और कितना फ़ैज़ान है रहमते आलम ﷺ पर दुरूद पढ़ने का ! मज़कूरा हदीष

शरीफ़ पढ़कर दुरूद शरीफ़ पढ़ने का जज़्बा पैदा होना ईमान की निशान है। यक़ीनन ! एक मोमिन के लिये इससे बढ़कर और क्या सआदत हो सकती है कि इधर वह दुरूद पढ़े और उधर सातों आसमानों पर फ़रिश्ते उस के दुरूद को सुनकर उसके लिये सलामती की दुआ करें और अल्लाह ﷻ अपने हबीब ﷺ के सदक़ा व तुफ़ैल दुरूद पढ़ने वाले की बख़्शिश फ़रमा दे। आइये, हम अपने प्यारे आक़ा ﷺ पर महब्बत से एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लें और दुआ करें कि अल्लाह तआला हम को मरते दम तक दुरूद शरीफ़ पढ़ने की तौफ़ीक़ अता करे।

آمين بجاه النبى الكريم عليه افضل الصلوٰة والتسليم۔

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍوَّعَلٰى آلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِكْ وَسَلِّمْ

★ सरकार ﷺ का तोहफ़ा ★

अमीरुल मोमिनीन हज़रत उमर رضی اللہ عنہ से रिवायत है कि मैंने एक दिन हुजूर ﷺ की बारगाह में अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह ! ﷺ आपकी उम्मत का तोहफ़ा तो दुरूदे पाक है जो आपकी ख़िदमत में पेश किया जाता है। आपकी तरफ़ से इस तोहफ़े के जवाब में क्या अता किया जायेगा ? आप ﷺ ने फ़रमाया, ऐ उमर ! तुमने बहुत अच्छा सवाल किया है :–

"اَلصَّلٰوةُ مِنْ اُمَّتِىْ تُحْفَةٌ لِّىْ وَتُحْفَةٌمِّنِّىْ غَدًافِىْ الْجَنَّةِ" मेरी उम्मत का तोहफ़ा तो मुझ पर दुरूदे पाक है और मैं उसे कल बरोज़े क़यामत अपनी जानिब से जन्नत का तोहफ़ा दूंगा।

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! मज़कूरा हदीष शरीफ़ में उम्मत के दुरूद पढ़ने का बदला अल्लाह के प्यारे हबीब ﷺ ने जन्नत की सूरत में अता करने का वादा फ़रमाया। रहमते आलम ﷺ जो वादा फ़रमा दें उस पर सारे उम्मतियों को यक़ीन है कि वह यक़ीनन ! पूरा फ़रमायेंगे, लिहाज़ा दुरूद पढ़ो और आख़ेरत में रहमते आलम ﷺ के सदक़े में जन्नत हासिल करो।

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍوَّعَلٰى آلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِكْ وَسَلِّمْ

★ ख़ाक आलूद नाक ★

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया :–

"رَغِمَ اَنْفُ رَجُلٍ ذُكِرْتُ عِنْدَهٗ فَلَمْ يُصَلِّ رَغِمَ اَنْفُ رَجُلٍ دَخَلَ عَلَيْهِ رَمَضَانُ ثُمَّ انْسَلَخَ قَبْلَ اَنْ يُّغْفَرَ لَهٗ وَرَغِمَ اَنْفُ رَجُلٍ اَدْرَكَ عِنْدَهٗ اَبَوَاهُ الْكِبَرَ اَوْ اَحَدُهُمَا فَلَمْ يُدْخِلَاهُ الْجَنَّةَ"

उसकी नाक ख़ाक आलूद हो जिसके पास मेरा ज़िक्र हो और मुझ पर दुरूद न पढ़े, उसकी नाक गर्द आलूद हो जिस पर रमज़ान आये फिर उसकी बख़्शिश से पहले गुज़र जाये, और उसकी नाक ख़ाक आलूद हो जिसके सामने उसके मां बाप या उनमें से एक बुढ़ापा पायें और उसे जन्नत में न पहुंचाए। *(तिर्मिज़ी शरीफ, मिश्क़ात शरीफ)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! मज़कूरा हदीष शरीफ़ में रहमते आलम ﷺ ने अपनी नाराज़गी का इज़हार फ़रमाया है। जिस अमल से हुजूर ﷺ नाराज़ होते हैं उसकी निशानदेही फ़रमाते हुए इरशाद फ़रमाते हैं कि जिसके सामने मेरा ज़िक्र किया जाये और मुझ पर दुरूद न पढ़े उसकी नाक ख़ाक आलूद हो।

"الله اكبر" पता चला कि जब भी रहमते आलम ﷺ का ज़िक्र किया जाए ज़रूर हम को हुजूर ﷺ पर दुरूद पढ़ना चाहिये वरना हुजूर ﷺ की ख़ुशी जिस तरह हमारी जन्नत की ज़मानत है वैसे ही हुजूर ﷺ की नाराज़गी हमारी तबाही का ज़रिया। (अल्लाह की पनाह !) अल्लाह ﷻ हम सबको इन तमाम चीज़ों से बचाये जिन से मेरे आक़ा ﷺ नाराज़ होते हैं, मषलन मां बाप की ख़िदमत में कोताही और माहे सियाम में रोज़े से ग़फ़लत और ज़िक्रे रसूल ﷺ सुनकर दुरूद शरीफ़ पढ़ने में सुस्ती। अल्लाह ﷻ हमें हुजूर ﷺ को ख़ुश करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

آمين بجاه النبى الكريم عليه افضل الصلوٰة والتسليم۔

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍوَّعَلٰى آلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِكْ وَسَلِّمْ

★ बख़ील कौन ? ★

हज़रत अली رضی اللہ عنہ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इरशाद फ़रमाया **"اَلْبَخِيْلُ الَّذِىْ مَنْ ذُكِرْتُ عِنْدَهٗ فَلَمْ يُصَلِّ عَلَىَّ"** यानी बड़ा कंजूस वह है जिसके पास मेरा ज़िक्र हुआ और वह मुझ पर दुरूद न पढ़े। *(तिर्मिज़ी शरीफ, मिश्क़ात शरीफ)*

हज़रत अबू सईद खुदरी رضی اللہ عنہ से रिवायत है कि हुज़ूरे अकरम नूरे मुजस्सम ﷺ ने इरशाद फ़रमाया कि जिस मजलिस में लोग जमा हों और जनाबे रिसालत ﷺ पर दुरूदे पाक न पढ़ें तो उस मजलिस पर क़यामत तक हस्रत बरसती रहती है। अगर वह अहले मजलिस की दूसरी नेकी की वजह से बहिश्त में दाख़िल हो जायेंगे तो उनके दर्जात और सवाब से महरूम रहेंगे जो दुरूद पढ़ने वालों को हासिल होंगे।

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! हम अपनी मजलिस में दुन्या भर की बातें करते हैं और थकते नहीं लेकिन दुरूद शरीफ़ पढ़ने में कोताही करते हैं जिसका नुक़सान आख़ेरत में पता चलेगा। मज़कूरा रिवायत से यह बात समझ में आयी है कि मजलिस में ज़रूर दुरूदे मुबारका पढ़ लेना चाहिये ता कि महशर में अफ़सोस न हो और अल्लाह عزوجل दुरूदे मुबारका में दर्जात बुलंद होंगे तो क्या दुन्या में नहीं होंगे? काश ! हम अपनी आदत बना लें और दुरूद शरीफ़ की कषरत करें। अल्लाह तआला हम सबको कषरते दुरूद की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍوَّعَلٰی آلِ سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِکْ وَسَلِّمْ

ताजुल मुज़क्केरीन में लिखा है कि हज़रत इब्ने मस्ऊद رضی اللہ عنہ ने फ़रमाया कि मैंने हुजूर रहमते आलम ﷺ से सुना है कि आप ﷺ ने इरशाद फ़रमाया, क़यामत के दिन एक जमाअत को हुक्म होगा कि इन्हें बहिश्त में भेजा जाए मगर वह बहिश्त का रास्ता भूल जायेंगे। सहाबाए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْھِمْ اَجْمَعِیْنَ ने सुनकर अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह ! ﷺ यह कौन लोग होंगे? आप ﷺ ने इरशाद फ़रमाया, यह वह लोग होंगे जिनके सामने मेरा नाम लिया गया मगर वह दुरूदे पाक न पढ़ सके। **مَنْ نَسِیَ الصَّلٰوۃَ عَلَیَّ فَقَدْ اَخْطَأَ طَرِیْقَ الْجَنَّۃِ** यानी जो शख़्स मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ना भूल गया वह जन्नत का रास्ता भूल गया। *(मआरिजुन्नबुव्वत, सफा–218, नुज़हतुल मजालिस)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! बहिश्त में जाने का हुक्म तो मिल जायेगा लेकिन राहे जन्नत पर चल न सकेंगे और बहिश्त का रास्ता भूल जायेंगे वह लोग जो रसूलुल्लाह ﷺ का ज़िक्र सुनकर दुरूद शरीफ़ नहीं पढ़ते। आप

ग़ौर करें कि अच्छी मेहफ़िल में बैठे भी हैं और अच्छी बातें सुन भी रहे हैं लेकिन जब ताजदारे कायनात ﷺ का ज़िक्र किया जाए और दुरूदे मुबारका न पढ़ा जाये तो इतना बड़ा ख़सारा होगा कि बहिश्त न मिलेगा। लिहाज़ा दुरूद शरीफ़ पढ़कर जन्नत में दाख़िल हों और आख़ेरत के नुक़्सान से बचें। अल्लाह तआला हम सबको रहमते आलम ﷺ के सदक़े व तुफ़ैल दुरूद शरीफ़ का आदी बनाये। **آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔**

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍوَّعَلٰی آلِ سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِکْ وَسَلِّمْ

★ सरकार ﷺ के दीदार से महरूम ★

हुज़ूरे अकरम ﷺ ने इरशाद फ़रमाया :–

"لَا یَرَیٰ وَجْھِیَ ثَلَاثَۃُ اَقْوَامٍ اَحَدُھَا الْعَاقُّ لِوَالِدَیْہِ وَالثَّانِیْ تَارِکُ سُنَّتِیْ وَا لثَّالِثُ مَنْ ذُکِرْتُ عِنْدَہٗ فَلَمْ یُصَلِّ عَلَیَّ"

तीन गरोह क़यामत के दिन मेरे दीदार से महरूम रहेंगे :–

➡ **1.** वालिदैन का नाफ़रमान।

➡ **2.** मेरी सुन्नत का तारिक।

➡ **3.** जो मेरा नाम सुने और मुझ पर दुरूद न पढ़े।

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! मोमिने सादिक़ के लिये दीदारे आक़ा ﷺ से बढ़कर और क्या चीज़ होगी ? लेकिन मज़कूरा हदीष शरीफ़ में हुजूर ﷺ ने तीन कम नसीबों का ज़िक्र किया जो अपनी बे अमली की वजह से हुजूर ﷺ के दीदार से महरूम होंगे। एक गुलाम के लिये अपने आक़ा ﷺ के दीदार से बढ़कर दौलत क्या होगी? हम को चाहिये कि हम उन आमाल से परहेज़ करें जो दीदारे रसूल ﷺ से महरूम कर दें यानी वालिदैन की नाफ़रमानी। सुन्नत का तर्क करना और ताजदारे कायनात ﷺ का नाम सुनकर दुरूद न पढ़ना। अल्लाह عزوجل हम सबको मज़कूरा तीनों गुनाहों से बचाये और वालिदैन की फ़रमाबर्दारी, सुन्नत की अदायगी और दुरूद शरीफ़ की तिलावत की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

★ चार चीज़ें जुल्म हैं ★

हदीष शरीफ़ में है :–

"اَرْبَعٌ مِّنَ الْجَفَاءِ اَنْ يَّبُوْلَ الرَّجُلُ وَ هُوَ قَائِمٌ وَاَنْ يَّمْسَحَ جَبْهَتَهٗ قَبْلَ اَنْ يَّفْرُغَ وَاَنْ يَّسْمَعَ النِّدَآءَ فَلَا يَشْهَدُ مِثْلَ يَشْهَدُ الْمُوَذِّنُ وَاَنْ اُذْكَرَ عِنْدَهٗ فَلَا يُصَلِّىْ عَلَىَّ۔"

चार उमूर जुल्म में शामिल हैं :–

➡ **1.** खड़े होकर पेशाब करना।

➡ **2.** नमाज़ की फ़राग़त से पहेल मिट्टी झाड़ना।

➡ **3.** अज़ान सुनना और नमाज़ के लिये हाज़िर न होना।

➡ **4.** मेरा नाम सुनना और मुझ पर दुरूद न पढ़ना।

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! जिस चीज़ को रहमते आलम ﷺ ने जुल्म फ़रमाया हो यक़ीनन ! वह जुल्म है। जुल्म का माअना होता है तारीकी। मतलब यह होगा कि जो शख़्स मज़कूरा चार काम कर लेगा तो उससे उसको जुल्म यानी तारीकी मयस्सर होगी। अब इन कामों से दिल का तारीक होना, चेहरा का तारीक होना, क़ब्र में तारीकी होना वग़ैरह मुराद है। वह चार काम क्या हैं? तो इरशाद फ़रमायाः

1. खड़े होकर पेशाब करना। अगर कोई बंदा खड़े होकर पेशाब करता है तो उसे तारीकी हासिल होगी और उसी तरह खड़े होकर पेशाब करना दुश्मानाने इस्लाम का तरीक़ा है लिहाज़ा इससे परहेज़ करना चाहिए।

2. नमाज़ से फ़राग़त से पहले मिट्टी झाड़ना। बहुत सारे लोग ऐसी जगह नमाज़ अदा करते हैं जहां गर्द व गुबार होती है। अब बंदा सज्दा में जाता है तो पेशानी गर्द आलूद होती है और वह उसे झाड़ता है। उसे नहीं मालूम कि गर्द आलूद पेशानी अल्लाह ﷻ को कितनी महबूब होती है ! लिहाज़ा अगर झाड़ना हो तो हालते नमाज़ में नहीं बल्कि नमाज़ से फ़ारिग़ होकर झाड़ें अगर वह नमाज़ ही में झाड़ लें तो गोया हम ने ख़ूद पर जुल्म किया।

3. वह शख़्स जो अज़ान सुने, और नमाज़ पर हाज़िर न हो। आज यह बात आम हो गयी है कि लोग अज़ान सुनकर नमाज़ की तरफ़ तवज्जोह नहीं देते, ऐसा करने वाले अपने ऊपर जुल्म करते हैं।

4. वह शख़्स जो रहमते आलम ﷺ का नाम सुनकर दुरूद न पढ़े। ख़ुदारा

काहिली छोड़ दें और जब भी रहमते आलम ﷺ का नाम सुनें ज़रूर अज़ ज़रूर दुरूद शरीफ़ पढ़ लिया करें। अल्लाह तआला हम को तौफ़ीक़ अता करे।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى آلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِكْ وَسَلِّمْ

★ मुरदार की बदतरीन बदबू पर खड़ा होने वाला ★

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया, जो क़ौम भी किसी मजलिस में बैठती है फिर वह नबी ﷺ पर दुरूद पढ़े बग़ैर मुन्तशिर हो जाते हैं वह मुरदार की बदतरीन बदबू पर खड़े होते हैं। *(शिफा शरीफ, सफा–451, कदीम नुस्खा)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! मज़कूरा हदीष शरीफ़ से पता चला कि दुरूद शरीफ़ ख़ुश्बू है लिहाज़ा किसी भी मजलिस को दुरूद शरीफ़ के बग़ैर ख़त्म न करो। बल्कि दुरूद शरीफ़ पढ़कर मोअत्तर करो। इंशाअल्लाह दुरूद शरीफ़ की बरकत से महफ़िल भी मोअत्तर होगी और क़ब्र भी मोअत्तर होगी। इंशाअल्लाह तआला। **اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى آلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِكْ وَسَلِّمْ**

★ वह आग में दाख़िल होगा ★

रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया जिस शख़्स के पास मेरा ज़िक्र किया गया और उसने मुझ पर दुरूद न भेजा तो वह आग में दाख़िल हुआ।

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! अल्लाह ﷻ हम सबको आग से बचाये और हम सब को ज़िक्रे आक़ा ﷺ सुनकर दुरूद शरीफ़ की तौफ़ीक़ अता करे। आमीन

★ वह बदबख़्त है ★

रसूले करीम ﷺ ने फ़रमाया जिसके सामने मेरा ज़िक्र किया गया और उसने मुझ पर दुरूद न भेजा वह बदबख़्त हुवा।

★ उसका मुझ से कोई तअल्लुक़ नहीं ★

रसूले रहमते आलम ﷺ ने फ़रमाया, जिसके सामने मेरा ज़िक्र किया गया और मुझ पर दुरूदो सलाम न पढ़ा उसका मुझ से और मेरा उससे कोई तअल्लुक़ नहीं। फिर हुजूर ﷺ ने फ़रमाया, ऐ अल्लाह ! जो मेरे साथ हुआ

उसके साथ हो और जो मुझसे मुन्क़तअ हुआ तो उससे मुन्क़तअ हो।

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! ज़िक्रे आक़ा ﷺ सुनकर अगर कोई दुरूद नहीं पढ़ता तो हुज़ूर ﷺ को कितनी तकलीफ़ पहुंचती है इसका अंदाज़ा मज़कूरा हदीष शरीफ़ से लगायें कि ताजदारे कायनात ﷺ अल्लाह ﷻ के हुज़ूर उस ग़ाफ़िल शख़्स के हवाले से नाराज़गी के कलिमात इस तरह से फ़रमाते हैं कि मेरा उससे कोई ताल्लुक़ नहीं और ऐ अल्लाह ! जो मुझसे मुन्क़तअ हुआ तो उससे मुन्क़तअ हो जा ! **الله اكبر !** हुज़ूर ﷺ की कोई दुआ अल्लाह तआला रद नहीं फ़रमाता। लिहाज़ा अगर हम चाहते हैं कि अपने प्यारे आक़ा ﷺ से तअल्लुक़ात को मुन्क़तअ न करें तो ज़रूर बिज़्ज़रूर ज़िक्रे आक़ा ﷺ सुनकर दुरूद शरीफ़ पढ़ लिया करें और सरकारे दो आलम ﷺ की नाराज़गी से बचें।

★ दुरूद न भेजने वाले से हूज़ूर ﷺ का अेअ्राज़ ★

एक शख़्स हुज़ूर ﷺ पर दुरूद शरीफ़ नहीं भेजता था । एक रात उसने ख़्वाब में हुज़ूर ﷺ को देखा आपने उसकी तरफ़ तवज्जोह न फ़रमाई। उस आदमी ने अर्ज़ किया कि क्या हुज़ूर ﷺ मुझसे नाराज़ हैं इसलिये तवज्जेह नहीं फ़रमाई ?! आप ﷺ ने जवाब दिया, नहीं, मैं तुम्हें पहचानता नहीं हूं ! अर्ज़ की गयी कि हुज़ूर ﷺ मुझे कैसे नहीं पहचानते ! हालांकि उलमा कहते हैं कि आप ﷺ अपने उम्मतियों को उनकी मां से भी ज़्यादा पहचानते हैं। आप ﷺ ने फ़रमाया, उलमा ने सच कहा है, तूने मुझ पर दुरूद भेज कर मेरी याद नहीं दिलाई। मेरा कोई उम्मती मुझ पर दुरूद भेजता है मैं उसे उतना ही पहचानता हूं। उस शख़्स के दिल में यह बात बैठ गयी और उसने रोज़ाना एक सौ मर्तबा दुरूद भेजना शुरू कर दिया। कुछ मुद्दत बाद हुज़ूर ﷺ के दीदार से फिर ख़्वाब में मुशर्रफ़ हुआ। आप ने फ़रमाया, अब मैं तुझे पहचानता हूं और तेरी शफ़ाअत करूंगा कि वह रसूले ख़ुदा ﷺ का मुहिब बन गया था। *(मआरिजुन्नबुव्वत, जिल्द–1, सफा–328)*

अल्लामा इब्ने हिज्र असक़लानी रहमतुल्लाह अलैहि ने अपनी किताब में लिखा है कि कबीरा गुनाह साठ हैं नबी करीम ﷺ का इस्मे गिरामी सुनकर दुरूद शरीफ़ न भेजना भी इसी में है। *(अफ़ज़लुस्सलवात अला सैयेदिस्सादात, 85)*

آمین بجاہ النبی الکریم علیه افضل الصلوٰة والتسلیم۔

★ ज़बान गूंगी हो गइ ★

एक शख़्स जब कभी नबी करीम ﷺ का ज़िक्र पाक सुनता तो वह दुरूद पाक पढ़ने में बुख़्ल करता तो उसकी ज़बान गूंगी हो गयी और आंखों से अंधा हो गया फिर वह हम्माम की नाली में गिर गया और प्यासा मर गया। **نَعُوْذُ بِاللهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا** *(सआदतुद्दारैन, सफा–144)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! हम ने बहुत से नाम निहाद मुसलमानों को देखा है जो दुरूद शरीफ़ के हवाले से कुछ न कुछ बकवास करते रहते हैं। मषलन, इतने दुरूद क्यों पढ़ाते हो और अज़ान से पहले क्यों पढ़ते हो ?! वग़ैरह। उनको मज़कूरा वाक़िआ से सबक़ हासिल करना चाहिये और बुख़्ल से बचना चाहिये ता कि ख़ात्मा अच्छा हो और बुरी मौत से अल्लाह ﷻ बचा ले। याद रखो ! दुरूद शरीफ़ की कषरत करने वाले का ख़ात्मा इंशाअल्लाह ! बेहतर ही होगा और बख़ील का ख़ात्मा बुरा होगा। अल्लाह ﷻ हम सबका ख़ात्मा बिल ख़ैर फ़रमाए।

آمین بجاہ النبی الکریم علیه افضل الصلوٰة والتسلیم۔

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى آلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِكْ وَسَلِّمْ

★ अल्लाह तआला का कुर्ब ★

किताब मिस्बाहुल ज़लाम में हज़रत कअब رضی اللہ عنہ से रिवायत है कि हक़ तआला ने मूसा علیہ السلام पर वही भेजी कि ऐ मूसा ! अगर दुन्या में मेरी तारीफ़ करने वाले न रहें तो एक क़तरा बारिश का आसमान से न भेजूंगा और एक दाना सब्ज़ी का ज़मीन से न उगाऊंगा। इसी तरह बहुत सी चीज़ें ज़िक्र कीं। यहां तक कि फ़रमाया, ऐ मूसा ! क्या तुम चाहते हो कि मैं तुमसे क़रीब तर हो जाऊं, जैसा कि तुम्हारा कलाम तुम्हारी ज़बान से क़रीब है, या जिस तरह कि वसवसा तुम्हारे क़ल्ब का तुम्हारे दिल से, तुम्हारी रूह तुम्हारे बदन और तुम्हारी रौशनीए चश्म तुम्हारी आंख से ? मूसा علیہ السلام ने अर्ज़ किया कि ऐ मेरे रब ! मैं यही चाहता हूं। अल्लाह तआला ने इरशाद फ़रमाया कि मुहम्मद ﷺ पर कषरत से दुरूद पढ़ा करो तब तुम्हें यही निस्बत हासिल हो जायेगी।

एक रिवायत में आया है कि मूसा ! क्या तुम चाहते हो कि क़यामत के दिन तिशनगी से तुम को तकलीफ़ न पहुंचे ? मूसा علیہ السلام ने फ़रमाया, ऐ अल्लाह !

ऐसा ही चाहता हूं ! हुक्मे बारी हुआ कि मुहम्मद ﷺ पर कषरत से दुरूद पढ़ा करो। हाफ़िज़ अबू नुऐम ने हिल्या में इसको रिवायत किया है। *(जज़्बुल कुलूब)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! अल्लाह ﷻ से क़रीब होने की आरज़ू किसको नहीं है? लेकिन उसका कुर्ब कैसे हासिल हो? तो मज़कूरा हदीष शरीफ़ से मालूम हुआ कि अल्लाह ﷻ हज़रत मूसा علیہ السلام को इरशाद फ़रमा रहा है कि आंख से जितनी रौशनी क़रीब और दिल से वसवसा जितना क़रीब है उससे भी अगर क़रीब तर होना हो तो ताजदारे कायानात ﷺ पर दुरूद पढ़ो।

पता चला कि जब हज़रत मूसा علیہ السلام के लिये भी कुर्बते इलाही का ज़रिया मेरे आक़ा ﷺ पर दुरूद पढ़ना है तो हम गुलामों के लिये दुरूद शरीफ़ बदरजाए ऊला रहेगा, लिहाज़ा बकषरत दुरूद पाक पढ़ने की कोशिश करें ता कि रब्बे क़रीब ﷻ का कुर्ब दोनों जहां में नसीब हो। अल्लाह ﷻ हम सब पर करम की नज़र फ़रमाए और कषरते दुरूद की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍوَّعَلٰی آلِ سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِکْ وَسَلِّمْ

★ चार सौ हज के बराबर सवाब ★

हज़रत अली رضی اللہ عنہ से रिवायत करते है कि जब रसूले ख़ुदा ﷺ ने फ़रमाया, जो शख़्स फ़रीज़ाए हज अदा करे उसके बाद जिहाद करे तो यह चार सौ हज के बराबर है। अब वह लोग जो हज की इस्तेताअत और जिहाद की कुव्वत नहीं रखते थे शिकस्ता दिल हुए। हक़ सुबहानहू तआला ने अपने रसूल ﷺ पर वही भेजी कि जो शख़्स आप ﷺ पर दुरूद भेजे उसका षवाब चार सौ हज के बराबर है। उसको अबू हफ़स बिन अब्दुल मजीद सायशी ने मजालिसुल मक्किया में रिवायत किया है।

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! हम ग़रीबों पर अल्लाह ﷻ का कितना एहसान है कि गुरबत और कमज़ोरी की वजह से अगर कोई हज और जिहाद जैसे अहम फ़रीज़ा को अदा नहीं कर सकता और चार सौ हज का सवाब हासिल नहीं कर सकता तो उसको भी अल्लाह ﷻ ने महरूम नहीं रखा बल्कि फ़रमा दिया कि ऐ सवाब के तलबगारो ! आओ ! मेरे महबूब ﷺ

फ़ज़ाइले दुरूद शरीफ़

पर दुरूद पढ़ लो और अपने दामन में चार सौ हज का सवाब जमा कर लो। कितना करीम है मेरा मौला !

अल्लाह ﷻ अपने महबूब ﷺ पर कसरत से दुरूद शरीफ़ पढ़ने की तौफ़ीक़ अता करे और दामन को खुशियों और सवाब से भरने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍوَّعَلٰی آلِ سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِکْ وَسَلِّمْ

★ हर बाल दुआए मग़्फ़िरत करता है ★

हज़रत मक़ातिल رضی اللہ عنہ फ़रमाते हैं, अर्श के नीचे एक फ़रिश्ता है और उसका सर अर्श से मुत्तसिल है और उसके सर की चोटी तूल अर्ज़ में अर्श की कुशादगी तक फैली हुई है। उस पर जितने बाल हैं उन पर मरकूम है **"لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰہِ"** जब कोई इंसान नबी करीम ﷺ पर सलात व सलाम पेश करता है तो उस फ़रिश्ते का एक एक बाल उस दुरूद शरीफ़ के पढ़ने वाले के लिए दुआए मग्फ़िरत करते रहते हैं। *(नुज़हतुल मजालिस, जिल्द–2, सफा–409)*

मेरे प्यारे आका ﷺ के प्यारे दीवानो ! कितना एहसान है रब्बुल इज़्ज़त का कि दुरूद शरीफ़ पढ़ने वालों के लिये मासूम फ़रिश्तों से दुआ कराता है ता कि दुरूद शरीफ़ पढ़ने वाला बख़्श दिया जाये। काश ! हम अपनी ज़बान को दुरूद शरीफ़ के विर्द से तर रखते और मग़्फ़िरत के हक़दार बन जाते। अल्लाह ﷻ हम सबको दुरूद शरीफ़ की कषरत की तौफ़ीक़ अता करे।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍوَّعَلٰی آلِ سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِکْ وَسَلِّمْ

★ मौत की तल्ख़ी ख़त्म ★

किसी सालेह ने ख़्वाब में एक नेक बख़्श को देखा और दर्याफ़्त किया, तूने मौत की तल्ख़ी को कैसी पाया ? उसने कहा, मुझे तो किसी क़िस्म की तल्ख़ी वग़ैरह का पता नहीं चला ! क्योंकि उलमाए किराम से मैंने सुन रखा था कि नबी करीम ﷺ की ज़ाते अक़दस पर बकषरत दुरूद शरीफ़ पढ़ने वाले को अल्लाह तआला मौत की सख़्ती से अम्नमे रखेगा। और सलात व सलाम तो

मेरा मामूल रहा इसी वजह से बवक़्ते नज़अ तल्ख़ी महसूस तक न हुइ। *(नुज़हतुल मजालिस, जिल्द–2, सफा–402)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! कुरआने मुक़द्दस और अहादीषे मुबारका में मौत की तल्ख़ी और नज़अ के वक़्त की तकलीफ़ों का जो ज़िक्र है उसे पढ़कर बदन के रोंगटे रोंगटे कांप उठते हैं लेकिन मेरे करीम ने डर और ख़ौफ़ को दूर करने और सकरात की आसानी के लिये तरीक़ा बताया कि मेरे प्यारे महबूब ﷺ पर ख़ूब दुरूद पढ़ो, ख़ूब सलाम पढ़ते रहा करो। दुरूद शरीफ़ की बरकत से मैं हर तकलीफ़ दूर कर दूंगा और राहत अता फ़रमा दूंगा। अल्लाह ﷻ हम सबको दुरूद शरीफ़ की कषरत की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍوَّعَلٰی آلِ سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِکْ وَسَلِّمْ

★ क़ब्र के सवाल के जवाब में आसानी ★

शैख़ अहमद बिन अबी बकर रवाद सूफ़ी मुहद्दिष हज़रत शिब्ली رحمۃ اللہ علیہ के हवाले से अपनी किताब में बयान करते हैं कि मेरे पड़ोस में एक शख़्स इंतक़ाल कर गया था, मैंने उसको ख़्वाब में देखा और पूछा कि ख़ुदावंदे तआला ने तेरे साथ क्या मामला किया ? कहने लगा, क्या पूछते हो ? बड़े बड़े ख़ौफ़नाक मंज़र मेरे सामने आए ! मुन्किर नकीर के सवाल के जवाब का वक़्त तो मुझ पर निहायत ही दुश्वार हुआ। मैंने दिल में कहा कि शायद मेरा ख़ात्मा ईमान पर नहीं हुआ है ! आवाज़ आयी, दुन्या में तूने ज़बान को बेकार रखा यह सख़्ती इसी वजह से है। जब अज़ाब के फ़रिश्ते ने मेरी तरफ़ आने का क़स्द किया तो एक हसीन व जमील शख़्स ख़ुश्बू में मोअत्तर मेरे और फ़रिश्तों के दर्मियान हाइल हुआ। मुझको ईमान की मुहब्बत याद दिलाई। मैंने कहा, अल्लाह तुझ पर रहम करे, तू कौन है? उसने कहा, मैं वह शख़्स हूं जो तूने रसूले ख़ुदा ﷺ पर कषरत से दुरूद पढ़ा है मैं इसी से पैदा किया गया हूं और मुझे हुक्म दिया गया है कि हर सख़्ती और बेचैनी में तेरा मददगार रहूं। *(जज़्बुल कुलूब, सफा–226, नुज़हतुल मजालिस, जिल्द–2, सफा–419)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! दुरूदे मुबारका हर मुसीबत के वक़्त काम आता है जैसा कि मज़कूरा वाक़िया में आपने सुना कि क़ब्र में नकीरैन के

सवाल के जवाब के वक़्त और उससे पहले आपने सुना कि जांकनी के वक़्त दुरूदे मुबारक की वजह से मासूम फ़रिश्ते और क़ब्र में एक मुनव्वर शख़्स का आना और कहना कि मैं दुरूद शरीफ़ हूं तेरी मदद के लिये पैदा किया गया हूं। अब हमारी ज़िम्मेदारी है कि हम अपने करीम के करम को हासिल करने और दोनों जहां की मुसीबतों से रिहाई के लिये दुरूद शरीफ़ पढ़ते रहा करें। अल्लाह तआला हम सबको दुरूद शरीफ़ के कषरत की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍوَّعَلٰی آلِ سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِکْ وَسَلِّمْ

★ अहले क़ब्रस्तान की बख़्शिश ★

हज़रत हाफ़िज़ सख़ावी عَلَیْہِ الرَّحْمَۃُ وَ الرِّضْوَانُ से रिवायत है कि एक औरत हज़रत ख़्वाजा हसन बसरी رحمۃ اللہ علیہ की ख़िदमत में हाज़िर हुई और अर्ज़ किया, या शैख़ ! मेरी बेटी फ़ौत हो गयी है मैं उसे ख़्वाब में देखना चाहती हूं। तो हसन बसरी رحمۃ اللہ علیہ ने फ़रमाया, चार रकअत नफ़्ल पढ़ और यह अमल ईशा की नमाज़ के बाद हो, फिर लेट जा और नबी करीम ﷺ पर दुरूद पढ़ती रह यहां तक कि तू सो जाये। उसने ऐसा ही किया। उसने उसे ख़्वाब में देखा इस हाल में कि वह अज़ाब व अक़ूबत में थी और उस पर तारकोल का लिबास था और दोनों हाथ बंधे हुए थे और दोनों पांव आग की ज़ंजीर से जकड़े हुए थे। जब वह बेदार हुई तो हज़रत हसन बसरी رحمۃ اللہ علیہ की ख़िदमत में हाज़िर हुई और तमाम क़िस्सा उनको बताया। उन्होंने बताया कि कोई ख़ैरात कर, मुमकिन है अल्लाह इसे बख़्श दे। और हज़रत हसन बसरी رحمۃ اللہ علیہ उस रात सोए तो उन्होंने देखा कि एक तख़्त पर एक ख़ूबसूरत लड़की बैठी है और उसके सर पर नूर का ताज है। उसने कहा, ऐ हसन ! क्या आप मुझे पहचानते हैं ? उन्होंने कहा, नहीं ! उसने कहा, मैं उस औरत की लड़की हूं जिसे आपने नबी करीम ﷺ पर दुरूद पढ़ने का कहा था। हज़रत ख़्वाजा हसन बसरी رحمۃ اللہ علیہ ने उस से कहा कि तेरी वालिदा ने तेरा हाल इससे मुख़्तलिफ़ बयान किया था। उसने कहा, वह ऐसा ही था जैसा कि उसने बयान किया। हम सत्तर हज़ार नुफ़ूस अज़ाब में थे जैसा कि मेरी वालिदा ने बयान किया। एक नेक आदमी का हमारे क़ब्रस्तान से गुज़र हुआ और उसने एक मर्तबा नबी करीम ﷺ पर दुरूद भेजा

और उसका सवाब हमें बख़्श दिया। अल्लाह तआला ने उसे क़बूल फ़रमा लिया और हम सबको उस अज़ाब और अक़ूबत से उस नेक मर्द की बरकत से आज़ाद कर दिया और मुझे यह हिस्सा मिला जो आपने देखा और मुशाहिदा किया है। इमाम कुरतबी ने अपनी तज़किरे में इसे दूसरे अल्फ़ाज़ से बयान किया है। *(अफज़लुस्सलवात अला सैयदुस्सादात, सफा–71, खुलासा रूहुल बयान, जिल्द–11, सफा–181)*

एक दुरवेश किसी अजनबी क़ब्रस्तान से गुज़रे और सरकार ﷺ पर दुरूद शरीफ़ पढ़े तो सारे क़ब्रस्तान वालों से अज़ाब उठा लिया जाये! तो वह ख़ुदा का बंदा जो अपनी ज़िन्दगी के पचास या साठ साल सिद्क़ व सफ़ा के साथ रात दिन आक़ा ﷺ पर दुरूद पढ़े अगर उसे अज़ाबे आख़रत से आज़ादी और बशारते शफ़ाअते रसूल मयस्सर आये तो इसमें कौन सी ताज्जुब की बात है?

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! आपने देखा? कितना अज़ीम फ़ायदा है दुरूद शरीफ़ का कि पढ़ने वाले ने ज़मी के ऊपर पढ़ा और मौला ने उस दुरूद की वजह से क़ब्रस्तान के मुर्दों की बख़्शिश फ़रमा दिया। लिहाज़ा क़ब्रस्तान जाकर दुरूद शरीफ़ की कषरत करो। वह परवर्दिगार जिसने दुरूद शरीफ़ की वजह से मुर्दों पर करम फ़रमाया ज़िन्दों पर भी ऐसा करम फ़रमायेगा। अल्लाह तआला हम सबको तौफ़ीक़ अता करे।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰی آلِ سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِکْ وَسَلِّمْ

★ और पुल सिरात पार कर गया ★

हज़रत अबू हुरैरा رضی اللہ عنہ से मरवी है कि हुज़ूर ﷺ ने इरशाद फ़रमाया:

"لِلْمُصَلِّیْ عَلَیَّ نُوْرٌ عَلَی الصِّرَاطِ وَمَنْ کَانَ عَلَی الصِّرَاطِ مِنْ اَھْلِ النُّوْرِ لَمْ یَکُنْ مِنْ اَھْلِ النَّارِ"

मुझ पर दुरूद पढ़ने वाले को पुल सिरात पर अज़ीमुश्शान नूर अता होगा और जिसको पुल सिरात पर नूर अता होगा वह अहले दौज़ख़ से न होगा।

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! पुर सिरात दौज़ख़ पर बना है और

दौज़ख़ की आग सुर्ख़ नहीं बल्कि सियाह है जिसकी वजह से पुल सिरात पर सख़्त तारीकी होगी। अब ग़ौर करें कि इस मुसीबत के मौक़ा पर दुरूद शरीफ़ पढ़ने वाले पर अल्लाह عزوجل कितना करम फ़रमायेगा कि उसे ऐसा नूर अता फ़रमा देगा जिसकी वजह से पुल सिरात पार करना आसान हो जायेगा। लिहाज़ा ज़मीन पर दुरूद शरीफ़ पढ़ो और पुल सिरात पर नूर हासिल करो। अल्लाह عزوجل हम सबको दुरूद शरीफ़ की कषरत की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰی آلِ سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِکْ وَسَلِّمْ

नवादिरूल उसूल में हज़रत इमाम अली हकीम तिमिर्ज़ी قدس سرہ ने हज़रत अब्दुर्रहमान رضی اللہ عنہ की हदीष बयान की है कि एक दिन हुज़ूर ﷺ घर से बाहर आये। फ़रमाने लगे, कल रात मुझे एक अजीब व ग़रीब ख़्वाब दिखाई दिया है। मैंने अपनी उम्मत का एक आदमी पुल सिरात से गुज़रते देखा जो कांप रहा था, उफता व खैज़ां जा रहा था इतने में दुरूद पाक का वह तोहफ़ा जो उसने अपनी ज़िन्दगी में मुझ पर भेजा था आ पहुंचा, उसका हाथ पकड़ा और पुल सिरात पार करा दिया। *(मतालिउल मसर्रात, सफा–124)*

سبحان اللہ! मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! पुर सिरात से बढ़कर तकलीफ़देह रास्ता कौन सा हो सकता है! लेकिन रहमते आलम ﷺ पर पढ़ा जाने वाला दुरूद इस मुसीबत के मौक़ा पर राहत का सबब बन जायेगा। ख़ुदारा! दुरूद शरीफ़ की आदत बनाओ, जब दुरूद शरीफ़ आख़रत में राहत का सबब बन सकता है तो क्या दुनिया में नहीं बन सकता? अल्लाह عزوجل हम सबको कषरते दुरूद शरीफ़ की तौफ़ीक़ अता करे और दुरूद मुबारका को दुन्या व आख़ेरत की राहत का सबब बनाये।

ज़ह्रतुर्रियाज़ में लिख्खा है कि, हुजूर ﷺ ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने एक फ़रिश्ता पैदा फ़रमाया है उसका नाम इज़्राईल है। क़यामत के दिन यह फ़रिश्ता अपने पर फैलायेगा और पुल सिरात पर बिछायेगा और ऐलान करेगा, जिस शख़्स ने हुजूर ﷺ पर दुरूद पढ़ा था मेरे परों पर से गुज़रता जाये। *(मआरिजुन्नबुव्वत, जिल्द–1, सफा–308)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! سبحان اللہ मज़कूरा हदीष शरीफ़ से

यह बात समझ में आयी कि दुरूद शरीफ़ की बरकत से दुरूद शरीफ़ पढ़ने वाले के लिये अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मासूम फ़रिश्ते को पैदा फ़रमाकर ख़िदमत के लिये मुक़र्रर फ़रमा देगा। कितना फ़ैज़ है दुरूदे मुबारका का ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हम पर करम फ़रमाये और हम अपनी पूरी ज़िन्दगी दुरूद शरीफ़ पढ़ने में गुज़ार दें और दमे आख़िर भी दुरूद शरीफ़ ज़ुबां पर हो।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍوَّعَلٰی آلِ سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِکْ وَسَلِّمْ

★ दुरूद पाक ज़रिये नजात ★

हज़रत इब्ने उमर رضی اللہ عنہ से रिवायत है कि हुज़ूर ﷺ ने फ़रमाया, क़यामत के दिन मेरी उम्मत के एक शख़्स को आतिशे दौज़ख़ में डालने का हुक्म होगा। वह डरते हुए कहेगा मुझे कहां फेंकने का हुक्म दिया गया है? वह कहेंगे कि जहन्नम में। वह कहेगा कि चंद लम्हात मोहलत दो ता कि मैं अपने हालात पर रो सकूं। फ़रिश्ते कहेंगे, ऐ शख़्स! यह गिरये निदामत तो तुझे ज़िन्दगी में करनी चाहिये था ता कि तुझे कोई फ़ायदा होता आज रोने से क्या हासिल होगा ? वह शख़्स कहेगा, मैं हज़रत आदम علیہ السلام की उम्मत से हूं मुझे अपने अल्लाह से यह गुमान भी नहीं था। फ़रिश्ते पूछेंगे, ऐ अल्लाह के बंदे ! तुम्हें अपने अल्लाह से क्या गुमान था। वह कहेगा मुझे अपने अल्लाह से यह उम्मीद थी कि मुझे यहूद व नसारा के साथ जहन्नम में नहीं रखेगा। फ़रिश्ते कहेंगे, वह देखो हुज़ूर ﷺ बारगाहे इलाही में खड़े हैं इन्हें पुकार ता कि वह तेरी शफ़ाअत कर सकेंगे वरना तुझे दौज़ख़ में फेंक दिया जायेगा। बंदा निहायत बे ख़ूदी में चला जायेगा और मैदाने हश्र में हुज़ूर तक फ़रियाद पहुंचायेगा। हुज़ूर ﷺ उसकी दर्दनाक आवाज़ सुनकर उसकी तरफ़ मुतावज्जेह होंगे, उसे फ़रिश्तों के क़ब्ज़े में पायेंगे और अज़ाब के मलायका ने उसे जकड़ा होगा। हुज़ूर फ़रमायेंगे, इसे मेरे हवाले कर दिया जाये ताकि इसके आमाल को दोबारा तोला जा सके। इसके हालात की छानबीन करो। फ़रिश्ते कहेंगे, या रसूलल्लाह! ﷺ हम अल्लाह के फ़रमा बर्दार बंदे हैं, यह जो कुछ हम कर रहे हैं उसके हुक्म के मा तहत हो रहा है। जब तक अल्लाह का फ़रमान न हो हम इसे आज़ाद नहीं कर सकते। हुज़ूर ﷺ उस वक़्त सज्दे में गिर जायेंगे और अर्ज़ करेंगे, या अल्लाह! आज तेरे फ़रिश्ते

मेरे और तेरे एक बंदे के दर्मियान हाइल हो रहे हैं। अल्लाह तआला का इरशाद होगा, ऐ फ़रिश्तो! मेरे बंदे को मेरे पैग़म्बर के हवाले कर दो। हुज़ूर उस गुनाहगार उम्मती को लेकर मीज़ान के पास तशरीफ़ लायेंगे सहीफ़ए बीज़ा निकालेंगे इसमें नूर के क़लम से लिखा होगा नेकियों की छटी मीज़ान में रखेंगे जिससे बुराईयां दबकर रह जायेंगे। फ़रमाने इलाही आयेगा इसे बहिश्त में ले जाओ। जब उस बंदे को बहिश्त की तरफ़ ले जाया जायेगा तो सरकारे दो आलम ﷺ बहिश्त के दरवाज़े पर खड़े नज़र आयेंगे। आप मुस्कुरा कर दुआ फ़रमायेंगे, मुझे पहचानते हो! वह कहेगा, या रसूलल्लाह! मेरे मां बाप आप पर कुरबान हों। फ़रमायेंगे मैं ही तुम्हारा पैग़म्बर मुहम्मद ﷺ हूं। वह सहीफ़ा जिसमें नेकियों का दफ़्तर था जो तुम्हारी सारी बुराईयों पर छा गये वह दुरूद पाक था जो तुम दुन्यावी ज़िन्दगी में मेरे लिया पढ़ा करते थे। वह शख़्स उसी वक़्त हुज़ूर ﷺ की बारगाह में गिर जायेगा, क़दम बोसी का शर्फ़ हासिल करेगा और कहेगा **"لَوْلَا اَنْتَ وَصَلَوَاتِیْ عَلَیْکَ طُوِیْتُ فِی النَّارِمَعَ مَنْ هَوٰی"** अगर आज आप न होते, आपकी शफ़ाअत मेरी दस्तगीरी न करती, मेरा दुरूद आपकी ज़ात पर न होता तो मैं दूसरे दौज़ख़ियों की तरह आतिशे जहन्नम में होता और सदियों इस दर्दे बला में रहता। *(मआरिजुन्नबुव्वत, सफा–302, तफसीरे ज़ियाउल कुर्आन, सफा–926)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! मज़कूरा वाक़िया से आपने अंदाज़ा लगा लिया होगा कि दुरूद शरीफ़ और रहमते आलम ﷺ किस तरह महशर में दस्तगीरी फ़रमायेंगे। वह लोग जो गाना और ग़ज़लें गाते हैं और बेहूदा अशआर की कैसेटें ख़रीदकर सुनते हैं और गुनगुनाते हैं, काश! उनको यह बात समझ में आती कि गाने और ग़ज़लों से तबाही के अलावा कुछ हाथ नहीं आता जब कि दुरूद शरीफ़ और तिलावते कुरआन मुक़द्दस में दोनों जहां की कामयाबी है। खुदारा! गाने और ग़ज़लों से ज़बान की हिफ़ाज़त करते हुए ज़बान को दुरूद शरीफ़ से तर रखने की कोशिश करें। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ हम सबको तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍوَّعَلٰی آلِ سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِکْ وَسَلِّمْ

★ गुनाह मिट गये ★

हज़रत अबू बकर رضی اللہ عنہ से मरवी है कि नबी करीम ﷺ पर दुरूद पढ़ना

गुनाहों को उससे ज़्यादा मिटाता है कि ठंडा पानी आग को बुझाये। आप ﷺ पर सलाम भेजना गुलामों को आज़ाद करने से अफ़ज़ल है। *(शिफा शरीफ, सफा–448)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! गुनाहों की सज़ा आग में जलना ही तो है, क्या हम गुनाहगार नहीं? क्या हमारे दामन पर गुनाहों के दाग़ और धब्बे नहीं? सग़ीरा कबीरा गुनाहों से पूरा दफ़्तर सियाह है, ऐसे में अल्लाह عزوجل अगर गिरफ़्त फ़रमाये तो अंजाम कितना भयानक होगा? लिहाज़ा आओ और उसकी रहमत व फ़ज़्ल की बरसात से गुनाहों की आग को ठंडी करें यानी दुरूद शरीफ़ पढ़ें और गुलाम आज़ाद करने का सवाब हासिल करें।

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى آلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِكْ وَسَلِّمْ

★ फ़रिश्ता की बख़्शिश ★

एक दिन हज़रत जिब्रईल علیہ السلام हुजूर ﷺ की ख़िदमत में हाज़िर हुए और कहने लगे, या रसूलल्लाह ! ﷺ मैंने आज एक अजीब व ग़रीब वाक़िया देखा है। आप ﷺ ने दर्याफ़्त फ़रमाया, क्या वाक़िया है? हज़रत जिब्रईल علیہ السلام ने बताया, या रसूलल्लाह ﷺ मुझे कोहे काफ़ जाने का इत्तेफ़ाक़ हुआ, मुझे वहां आहो फुग़ां और रोने चिल्लाने की आवाज़ें सुनाई दीं, मैं उस आवाज़ की तरफ़ हो लिया तो मुझे वहां एक फ़रिश्ता दिखाई दिया कि इससे पहले मैंने उसे आसमान पर निहायत अेअज़ाज़ व इकराम से देखा था, वह एक नूरानी तख़्त पर बैठा हुआ था। सत्तर हज़ार फ़रिश्ते उसके इर्द गिर्द रहते और उसकी ख़िदमत में सफ़ बस्ता होते। उस फ़रिश्ता से सांस निकलता तो अल्लाह तआला उस सांस के बदले एक फ़रिश्ता तख़लीक़ फ़रमाता था। आज जब मैंने उसे वादीए कोह क़ाफ़ में सरगरदां ख़स्ता हाल शिकस्ता बाल रोते हुए देखा तो उसका हाल पूछा। कहने लगा, शबे मेअराज मैं अपने तख़्त पर बैठा था कि हुजूर ﷺ का मेरे पास से गुज़र हुआ तो मैंने हुजूर ﷺ की ताज़ीम व तकरीम की परवाह न की। अल्लाह तआला को मेरा यह तकब्बुर पसंद न आया तो मुझे इस ज़िल्लत व नामुरादी में फेंक दिया गया, अफ़लाक से ख़ाक की पस्ती में गिरा दिया गया, जिब्राईल! ख़ुदा के लिये तुम मेरे लिये शफ़ाअत करो, बारगाहे इलाही में मेरे गुनाह की माफ़ी हासिल करो ता कि मैं उसी मुक़ाम पर मामूर हो

जाऊं। या रसूलल्लाह ! ﷺ मैंने बारगाहे इलाही में उस फ़रिश्ते की माफ़ी की दरख़्वास्त की निहायत आह व ज़ारी से शफ़ाअत की, अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि ऐ जिब्रईल ! उस फ़रिश्ते को बता दो कि अगर वह किसी क़िस्म की रिआयत चाहता है तो मेरे नबी ﷺ पर दुरूद पढ़े ता कि उसे पहली सआदत व फ़ज़ीलत हासिल हो जाये, या रसूलल्लाह! ﷺ उसने यह सुनते ही आपकी ज़ाते बा बर्कत पर दुरूद ला महदूद भेजना शुरू किया था कि मेरे देखते देखते उसके बाल पर नमूदार हुए, सतहे ख़ाक से उड़कर आसमान की बुलंदियों पर जा पहुंचा, और अपनी मस्नदे अेअ्ज़ाज़ व इकराम से नवाज़ा गया। हक़ीक़त यह है कि हुजूर ﷺ की ज़ात पर दुरूदे पाक ही ज़रियाए नजात और बाइषे अेअ्ज़ाज़ व इकराम है।

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى آلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِكْ وَسَلِّمْ

(मआरिजुन्नबुव्वत, जिल्द–1, सफा–317)

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! سبحان الله ! फ़रिश्ता अगर ताज़ीमे रिसालत मआब ﷺ में कोताही करे तो वह भी सज़ा का हक़दार होगा। आज ताज़ीमे हुजूर ﷺ को शिर्क व बिदअत का नाम देकर गुस्ताख़ बनाने की मुहिम चल रही है। इसलिये कि ईमान मुसलमान की सबसे बड़ी कुव्वत है और ईमान महब्बते रसूल ﷺ का नाम है। अगर किसी ने गुस्ताख़ी की तो गोया वह अपना ईमान गंवा बैठा, अब वह सिवाए ज़लील व रुसवा होने के कुछ नहीं हो सकता। फ़रिश्ते ने ताज़ीम नहीं की इसलिये सज़ा पाई लेकिन उसे अपनी ग़लती पर पशेमानी हुई और तौबा व गिरया ज़ारी करता रहा तो मौला ने उसके लिये बख़्शिश का सामान बशक्ले दुरूद शरीफ़ अता फ़रमाया। जिसकी वजह से वह पहले वाले मक़ाम पर बहाल हो गया। ऐ गुलामाने रसूल ! ﷺ आज हम सब कुछ अपना गंवा बैठे हैं फिर से अज़्मते रफ़्ता को हासिल करना हो तो दुरूद शरीफ़ की कषरत करो। मौला करम फ़रमाकर उस मक़ाम पर बहाल फ़रमा देगा। اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى آلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِكْ وَسَلِّمْ

★ क़र्ज़ अदा हो गया ★

हुजूर ﷺ की उम्मत के एक ज़ाहिद पर पांच सौ दिरहम क़र्ज़ था मगर उसके हालात ऐसे थे कि क़र्ज़ अदा नहीं कर सकता था। उसने हुजूर ﷺ

को ख़्वाब में देखा तो अपनी परेशानी का इज़हार किया। आपने फ़रमाया, तुम अबुल हसन किसाई के पास जाओ, और मेरी तरफ़ से कहो कि वह तुम्हें पांच सौ रुपये दे। वह नीशापुर में एक सख़ी मर्द है, हर साल दस हज़ार गुरबा को कपड़े पहनाता है अगर वह कोई निशानी तलब करे तो कहना कि तुम हर रोज़ हुज़ूर ﷺ की बारगाह में सौ बार दुरूद का तोहफ़ा भेजते हो मगर कल तुमने यह तोहफ़ा नहीं भेजा और दुरूद नहीं पढ़ा। उस दुरवेश ने अबुल हसन किसाई के पास जाकर अपना हाले ज़ार बयान किया और हुज़ूर का पैग़ाम भी दिया। मगर अबुल हसन ने उसकी तरफ़ कोई तवज्जोह न दी। फिर उसने पूछा, तुम्हारे पास इस वाक़िया की निशानी है? दुरवेश ने बताया, हां ! मुझे हुज़ूर ﷺने तुम्हारी तरफ़ भेजा है और यह निशानी दी है। अबुल हसन यह सुनते ही तख़्त से ज़मीन पर गिर पड़ा और अल्लाह तआला की बारगाह में सज्दए शुक्र अदा किया और कहा ! ऐ दुरवेश ! यह मेरे और ख़ुदा के दर्मियान एक राज़ था, कोई दूसरा इससे वाकिफ़ न था, वाक़ई कल रात मैं दुरूद पाक की दौलत से महरूम रहा।

अबुल हसन ने हुक्म दिया कि इस दुरवेश को दो हज़ार पांच सौ दिरहम दिये जायें। फिर अर्ज़ की कि हज़ार दिरहम हुज़ूर ﷺ की तरफ़ से पैग़ाम व बशारत लाने का शुकराना है, हज़ार दिरहम यहां कदम रंजा फ़रमाने का शुकराना है और पांच सौ दिरहम हुज़ूर ﷺ के हुक्म की तामील है। उसने मज़ीद कहा कि जब भी आप को कोई मुश्किल दर पेश हो मेरे पास चले आओ।

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! क़र्ज़ ख़्वाह को क़र्ज़ की अदायगी में ताख़ीर हो जाये तो आप जानते हैं कि इज्ज़त चली जाती है। लेकिन मेरे आक़ा ﷺ ऐसे करम फ़रमां हैं कि सच्चे दिल से दुरूद शरीफ़ पढ़ने वाले की आबरू बचा लेते हैं और इज्ज़त से मालामाल भी कर देते हैं जैसा कि मज़कूरा वाक़िया से अंदाज़ा लगाया होगा।आइये, हम अपना मामूल बनायें और रोज़ाना बिला नाग़ा दुरूद पढ़ें। पढ़िये दुरूद शरीफ़ :–

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى آلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِكْ وَسَلِّمْ

★ दुरूद पढ़ने वाली मछलियां ★

एक हदीष में है हुज़ूर ﷺने फ़रमाया कि मैंने जिब्रईल से यह सुना कि

कोहे काफ़ के उस पार एक दरिया है जिसमें बे अदद बे हिसाब मछलियां हैं। वह सिर्फ़ रसूलुल्लाह ﷺ पर दुरूद पढ़ती रहती हैं, जो शख़्स उस मछली को पकड़ता है उसके हाथ शल हो जाते हैं और मछली भी उसके हाथ में आकर पत्थर बन जाती है।

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! ग़ौर करो कि एक मछली जो हुज़ूर ﷺ पर दुरूद पढ़ती है तो सय्याद के हाथ से आज़ाद रहती है तो एक मोमिन दिन व रात वजूदे मसऊद رضی اللہ عنہ पर दुरूद पढ़े और दौज़ख़ के फ़रिश्तों से नजात पा जाये तो इसमें कौन सी अजीब सी बात है। *(मआरिजुन्नबुव्वत, जिल्द–1, सफा–304)*

★ दौज़ख़ से नजात ★

इमाम तिबरानी ने नबी करीम ﷺ की एक हदीष नक़ल फ़रमाई जिसमें हुज़ूर ﷺने फ़रमाया, जो शख़्स मुझ पर दुरूद पढ़ता है उसकी पेशानी पर लिख दिया जाता है कि यह शख़्स आज से निफ़ाक़ से पाक कर दिया गया है, उसे दौज़ख़ की आग से नजात मिल गयी है और यह मैदाने हश्र में शोहदा के मजमा में उठाया जायेगा।

लिहाज़ा दुरूद शरीफ़ पढ़ो ता कि करमे मुस्तफ़ा ﷺ से शोहदा की जमाअत में उठो। اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى آلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِكْ وَسَلِّمْ

★ बुरे अमल से नजात का ज़रिया ★

एक आदमी ने जंगल में एक सूरते बद को देखकर पूछा, तू कौन है ? उसने जवाब दिया तेरा बद अमल हूं। उसने पूछा, तुझसे नजात की भी कोई सूरत है ? उसने कहा, हुज़ूर ﷺ पर दुरूद पाक पढ़ना। *(मुकाशफतुल कुलूब–80)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! पता चला कि बुरे अमल से नजात का ज़रिया दुरूद शरीफ है लिहाज़ा थोड़ा कुरबान कीजिये और बुरे अमल से नजात हासिल कीजिये। اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى آلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِكْ وَسَلِّمْ

★ हश्र में शदीद प्यास से नजात ★

अल्लाह तआला ने एक बार हज़रत मूसा علیہ السلام पर वही भेजी कि मैं चाहता हूं कि हश्र में शदीद प्यास से महफ़ूज़ रहने का एक नुस्ख़ा बता दूं? हज़रत मूसा

علیہ السلام ने अर्ज़ किया, या इलाही ! मैं ज़रूर ऐसा नुस्ख़ा चाहता हूं ! फ़रमाया, मेरे हबीब पर कषरत से दुरूद पाक पढ़ो। *(मुस्नदे इमाम अहमद बहवाला शिफाउल कुलूब–190)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के दीवानो ! दुनिया की धूप में आदमी प्यास से कितना परेशान होता है, तो आख़ेरत की गर्मी ! **الله اکبر** लेकिन वहां पर नबी हो या वली हर एक को मेरे आक़ा ﷺ की हाजत होगी। अल्लाह ﷻ ने हज़रत मूसा علیہ السلام से इरशाद फ़रमाया कि क़यामत की शदीद प्यास से महफ़ूज़ रहना हो तो मेरे महबूब ﷺ पर दुरूद पढ़ो। हुजूर ﷺ सिर्फ़ हमारे ही नबी नहीं बल्कि नबियों के भी नबी हैं लिहाज़ा दुरूद शरीफ़ सब के काम आयेगा।

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍوَّعَلٰى آلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِكْ وَسَلِّمْ

★ बुलंद आवाज़ से दुरूद पढ़ा करो ★

नबी करीम ﷺ ने फ़रमाया :–

"مَنْ صَلّٰى صَلٰوةً وَّجَهَرَ بِهَا شَهِدَ لَهٗ كُلُّ حَجَرٍ مَّدَرٍوَّرَطْبٍ وَّيَابِسٍ"

जो बुलंद आवाज़ से सलात व सलाम पेश करते हैं उनके लिये ज़मीन की हर चीज़ पत्थर, मिट्टी, ख़ुश्क व तर गवाह बन जाते हैं। *(नुज़हतुल मजालिस, जल्द–2, सफा–403)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! मेहफ़िल में जब रसूलुल्लाह ﷺ का नाम नामी इस्मे गिरामी आये तो बुलंद आवाज़ से दुरूद शरीफ़ पढ़ें। बुलंद आवाज़ से मुराद यह है कि दूसरा सुने तो उसे पढ़ने का शौक़ पैदा हो, और जंगल व बयाबान से गुज़र हो तो दुरूद शरीफ़ बुलंद आवाज़ से पढ़ो ता कि वह गवाह हो जायें। पढ़ लीजिये एक बार बुलंद आवाज़ से।

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍوَّعَلٰى آلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِكْ وَسَلِّمْ

★ सरकार ﷺ का नाम सुनकर दुरूद पढ़ा करो ★

रवज़तुल उलमा में आया है कि इमाम हसन बसरी رحمۃ اللہ علیہ ने अबू अस्मा बिन नूह बिन मरयम को उनकी वफ़ात के बाद ख़्वाब में देखा और दर्याफ़्त किया कि अल्लाह तआला ने तुम्हारे साथ क्या सलूक किया ? उसने कहा, अल्लाह तआला ने मुझे बख़्श दिया। पूछा किस नेकी पर? उसने बताया कि जब कभी

भी कोई हुजूर ﷺ की कोई हदीष बयान करता था तो मैं आपकी ज़ाते अक़दस पर दुरूद पढ़ कर लिया करता था। अल्लाह तआला ने मुझे उसकी बरकत से बख़्श दिया। *(मआरिजुन्नबुव्वत)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! कभी शर्म की वजह से कभी सुस्ती की वजह से बंदा दुरूद शरीफ़ पढ़ने में कोताही करता है। याद रखें कि महशर में दुरूद शरीफ़ की बरकत से करम ही करम होगा। लिहाज़ बख़्शिश की तमन्ना रखने वालों को चाहिये कि दुरूद शरीफ़ में शर्म महसूस न करें बल्कि जब नामे पाक आये तो दुरूदे मुबारका पढ़ लिया करें।

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍوَّعَلٰى آلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِكْ وَسَلِّمْ

हदीष शरीफ़ में है कि दुरूद शरीफ़ पढ़ते वक़्त आवाज़ बुलंद करो इसलिये कि बुलंद आवाज़ से दुरूद शरीफ़ पढ़ना सीक़ल है यानी इससे मुनाफ़िक़त का ज़ंग और मुख़ालफ़त की गुबार उड़ती है और क़लूब को जिला नसीब होती है। *(रूहुल बयान, जिल्द–11, सफा–206)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! अल्लाह ﷻ ने हम बंदों को ज़बान अपने और अपने प्यारे महबूब ﷺ के ज़िक्र ही के लिये अता फ़रमाई है। लिहाज़ा दुरूद शरीफ़ बुलंद आवाज़ से पढ़ने के लिये कहा जाये या फिर आयते दुरूद आये तो बुलंद आवाज़ से दुरूद शरीफ़ पढ़कर दिल को जिला बख़्शें। अल्लाह ﷻ हम सबको तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

آمین بجاہ النبی الکریم علیه افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍوَّعَلٰى آلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِكْ وَسَلِّمْ

★ ख़्वाब में देखना ★

एक शख़्स "मतह" नामी जो कि तबअ नफ़सानी ख़्वाहिशात का पैरोकार था वह फ़ौत हो गया, बाद वफ़ात किसी सूफ़ी बुज़ुर्ग ने ख़्वाब में देखा, पूछा क्या हाल है? उसने कहा, मुझे अल्लाह तआला ने बख़्श दिया है। पूछा, किस सबब से बख़्शिश हुई ? उसने कहा, मैंने एक मुहद्दिष के यहां एक हदीष बा सनद पढ़ी। हज़रत शैख़ मुहद्दिष ने सैयदे आलम ﷺ पर बुलंद आवाज़ से दुरूद पाक पढ़ा और जब अहले मजलिस ने सुना तो उन्होंने भी दुरूदे पाक पढ़ा तो अल्लाह तआला ने दुरूदे पाक की बरकत से हम सबको बख़्श दिया। *(अल कौलुल बदीअ*

बहवाला आबे कौषर, सफा–222)

इमाम अब्दुर्रहमान सफूरी رحمۃ اللہ علیہ के क़ौल के मुताबिक़ वह मुहद्दिष हदीष शरीफ़ बयान फ़रमा रहे थे कि जो शख़्स नबी ﷺ पर बुलंद आवाज़ से दुरूदे पाक पढ़ेगा उसके लिये जन्नत वाजिब हो जाती है। यह सुनकर उसने बुलंद आवाज़ से दुरूद पढ़ा।

नीज़ अल मुरदुल अज़ाब के हवालेसे आपने एक हदीष नक़ल की है कि जो शख़्स बखुशी बुलंद आवाज़ से मुझ पर दुरूद व सलाम पेश करता है बुलंद व बाला आसमानों में फ़रिश्ते मुस्कुराकर बुलंद आवाज़ से सलाम पेश करते हैं। नीज़ इमाम नववी عَلَيۡهِ الرَّحۡمَةُ وَ الرِّضۡوَانُ ने किताब अल अज़कार में बुलंद आवाज़ से दुरूद व सलाम पढ़ने को मुस्तहब लिखा है। हज़रत ख़तीब बग़दादी वग़ैरह ने इसकी तसरीह फ़रमाई है।

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! दुरूदे पाक बुलंद आवाज़ से पढ़ना चाहिये मगर याद रहे मोअतदल और मुतवस्सित बुलंद आवाज़ हो। आवाज़ दिलकश, नर्म, मुलायम और ख़ुशगवार होना चाहिये। बुलंद आवाज़ का यह मतलब नहीं कि अज़ान की तरह पढ़ना चाहिये।

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! ख़ूब दिल को महब्बत से सरशार करके दुरूदे मुबारक पढ़ो। ख़ासकर मेहफ़िल में जब रहमते आलम ﷺ का नामे नामी इस्मे गिरामी आये। इंशाअल्लाह! दोनों जहां में इसके फ़ायदे नज़र आयेंगे। अल्लाह ﷻ हम सबको तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍوَّعَلٰی آلِ سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِکْ وَسَلِّمْ

★ सवाब मिलता रहेगा ★

हुजूर ﷺ की हदीष है :–

"مَنۡ صَلّٰی عَلٰی کِتَابٍ لَمۡ تَزَلۡ صَلَا تُهٗ جَارِیَةً لَهٗ مَادَامَ اِسۡمِی فِیۡ ذَالِكَ الۡکِتَابِ"

जो मुझ पर दुरूद शरीफ़ पढ़कर किताब में लिखे तो जब तक वह दुरूद उस किताब में लिखा रहेगा उसे षवाब मिलता रहेगा। *(रूहुल बयान, जिल्द–11, सफा–193, किताबुश्शिफा, सफा–444, नसीमुर्रियाज़)*

हज़रत अब्दुल्लाह बिन हकम रिवायत करते हैं कि मैंने हज़रत इमाम शाफ़ई رحمۃ اللہ علیہ को ख़्वाब में देखा। मैंने उन्हें कहा कि ख़ुदा ने आपके साथ क्या

सुलूक किया? फ़रमाया, अल्लाह ने मुझ पर रहम फ़रमाया और बख़्श दिया और जन्नत मेरे लिये इस तरह आरास्ता की जैसे दुल्हन को आरास्ता किया जाता है। और मुझ पर मोती निछावर किये जिस तरह दुल्हन पर किये जाते हैं। मैंने पूछा, मैं किस वजह से इस कमाल को पहुंचा हूं? मुझे क़ाइल ने कहा, तेरी किताब अलरिसाला में इस दुरूद की वजह से :–

"وَصَلَّی اللّٰهُ عَلٰی مُحَمَّدٍ عَدَدَ مَاذَکَرَهُ الذَّاکِرُوۡنَ وَغَفَلَ عَنۡ ذِکۡرِهِ الۡغَافِلُوۡنَ"

जब सुबह हुई मैंने रिसाले को देखा तो मामला उसी तरह था जैसे मैंने ख़्वाब में देखा था।

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! अभी आपने हदीषे मुबारका के साथ साथ इमाम शाफ़ई عَلَيۡهِ الرَّحۡمَةُ وَ الرِّضۡوَانُ का वाक़िया भी समाअत फ़रमाया। इससे पता चला कि दुरूद शरीफ़ पढ़ना और लिखना दोनों बाइसे नजात और हुसूले षवाब का सबब है। अल्लाह ﷻ हम सबको दुरूद पढ़ने और लिखने की तौफ़ीक़ अता करे।

آمین بجاہ النبی الکریم علیه افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍوَّعَلٰی آلِ سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِکْ وَسَلِّمْ

★ लिखने का सिला ★

हज़रत अब्दुल्लाह बिन सालेह رحمۃ اللہ علیہ फ़रमाते हैं कि मैंने एक मुहद्दिष को ख़्वाब में देखा और उनसे पूछा, ख़ुदा ने आपके साथ क्या सलूक फ़रमाया? उन्होंने जवाब दिया ख़ुदाए तआला ने मेरी मग्फ़िरत फ़रमा दी है। मैंने पूछा, किस बात के सदक़े में? उन्होंने फ़रमाया, मैं हमेशा अपनी तहरीरों में हुजूर ﷺ के इस्मे मुबारक के साथ **"صَلَّی اللّٰهُ عَلَیۡهِ وَ سَلَّمَ"** लिखा करता था उसके सदक़े में अल्लाह तआला ने मेरी मग्फ़िरत फ़रमा दी है। *(शरहुस्सुदूर)*

★ हुज़ूर ﷺ का दीदार ★

हज़रत हम्ज़ा कनानी رحمۃ اللہ علیہ का बयान है कि मैं हदीष शरीफ़ लिखा करता था और हुज़ूरे अकरम ﷺ के नाम मुबारक के साथ **"صَلَّی اللّٰهُ عَلَیۡهِ وَ سَلَّمَ"** लिखा करता था। एक रात मैंने ख़्वाब में हुज़ूर ﷺ इरशाद फ़रमाते थे कि **"مَالَكَ لَاتُتِمُّ الصَّلٰوةَ عَلَیَّ"** क्या बात है कि तुम मुझ पर

पूरा दुरूद नहीं लिखते। जब मैं ख़्वाब से बेदार हुआ तो मैंने हमेशा के लिये नामे अक़्दस के साथ "صَلَّی اللّٰهُ عَلَيْهِ وَ سَلَّمْ" लिखने का इल्तेज़ाम कर लिया। *(अल क़ौलुल बदीअ बहवाला मआरिफे इस्मे मुहम्मद (ﷺ), सफा–383)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! आज दावते दीन के नाम पर क़ायम होने वाली बहुत सी तंज़ीमें और नाम निहाद मौलवी हुज़ूर ﷺ पर पूरा दुरूद लिखने के बजाए सिर्फ़ पर इक्तेफ़ा करते हैं इन्हें इस हिकायत से दर्स इबरत हासिल करके अपनी इस्लाह करनी चाहिये।

★ किताबत की बख़्शिश ★

कूफ़ा में एक ऐसा शख़्स था जो किताबत किया करता था मगर उसका एक तरीक़ा यह था कि अगर किसी की किताब लिखता और उसमें कहीं हुज़ूर ﷺ का नाम आ जाता तो अपनी तरफ़ से ﷺ का इज़ाफ़ा कर देता था और ज़बान पर दुरूदे पाक लाता। उसकी मौत के बाद लोगों ने उसको ख़्वाब में देखा तो पूछा कि अल्लाह तआला ने तुम्हारे साथ क्या मामला किया? तो उसने कहा कि मुझे बख़्श दिया गया और बख़्शिश का सबब सिर्फ़ यह था कि हुज़ूर ﷺ के इस्मे मुबारक के साथ दुरूद पाक लिख दिया करता था और इसमें मैंने कभी कोताही न की थी। *(मआरिजुन्नबुव्वत, जिल्द–1, सफा–321)*

★ हाथ सड़ गया ★

बयान करते है कि एह शख़्स बुख़्ल की वजह से सलात का लफ़्ज़ सैयदे कायनात पर नहीं लिखता था उसके हाथ में मर्ज़े आकेला हो गया। यानी हाथ सड़ना शुरू हो गया।

और एक शख़्स **صَلَّی اللّٰهُ عَلَيْهِ** लिखता था **وَ سَلَّمَ** नहीं लिखा करता था। हुज़ूर ख़ैरुल अनाम ﷺ की जानिब से ख़्वाब में झिड़का गया। आपने फ़रमाया कि तू चालीस नेकियों से किस तरह अपने आपको महरूम रखता है! यानी लफ़्ज़ **وَ سَلَّمْ** में चार हर्फ़ हैं और हर हर्फ़ के बदले दस नेकियां हैं। तो इस हिसाब से इस लफ़्ज़ के षवाब में चालीस नेकियां हुई। और इस क़बील में एक यह भी दाख़िल है कि बाज़ लोग रम्ज़ व इशारा पर इक्तेफ़ा करते हैं, जैसे बाज़ लिखने वाले ﷺ की जगह (ص، व م) या "صلعم" की अलामत देते हैं और عليه السلام की

तरफ़ इशारा (ع،س،عله) से करते हैं उनको इससे सबक़ हासिल करना चाहिये। *(कीमीयाए सआदत–219, जज़्बुल कुलूब–274)*

★ ज़बान कट गयी ★

शिफाउस्सिकाम में है कि एक कातिब था, किताबत करते वक़्त जहां नबी करीम ﷺ के नामे नामी इस्मे गिरामी के साथ ﷺ लिखा होता था उसकी जगह सिर्फ़ "صلعم" लिखा तो उसके मरने से पहले हाथ कट गया। *(सआदतुद्दारैन–131)*

एक शख़्स हुज़ूर ﷺ के इस्मे गिरामी के साथ सिर्फ़ "صلعم" लिखता था उसकी मौत से पहले ज़बान कट गयी। *(सआदतुद्दारैन–131, बहवाला आबे कौषर–248)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! दुरूद शरीफ़ पढ़ने और लिखने में कितना वक़्त लगता है? अगर थोड़ी सी हरकत से इतनी बरकत मिलती हो तो किस क़द्र ख़ुश नसीबी की बात है? इसलिये हमेशा ﷺ पढ़ने लिखने की आदत बनायें। **انشاء الله!** करम ही करम होगा। और सुस्ती और कोताही का अंजाम आपने सुन लिया। अल्लाह ﷻ हम सबको दुरूद पढ़ने और लिखने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

آمین بجاہ النبی الکریم علیه افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰی آلِ سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِكْ وَسَلِّمْ

★ यह नापसंद है ★

रूहुल बयान में है कि हुज़ूर ﷺ के लिये रम्ज़ व इशारा मकरूह है। मषलन एक दो हर्फ़ पर इक्तेफ़ा किया जाये या लिखा जाये, जैसे "عم" या बाज़ लोग लिखते हैं "صلعم" और इससे हुज़ूर ﷺ की तरफ़ इशारा होता है।

मस्अला: सलात व सलाम में किसी एक को हज़फ़ करके एक पर इक्तेफ़ा करना भी मकरूह है। *(रूहुल बयान, जिल्द–11, सफा–193)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! ख़बरदार! अपने प्यारे आक़ा ﷺ की महब्बत में ﷺ लिखने की कोताही क़तई तौर पर न करें बल्कि ख़ुशी ख़ुशी लिखें और ख़ुशी ख़ुशी पढ़ें और दिल में सुरूर भी महसूस करें। यक़ीन जानिये!

अल्लाह तआला दुरूद मुबारक की बरकतों से ज़रूर दोनों जहां में सुरूर की दौलत अता फ़रमायेगा। **انشاء الله !**

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى آلِ سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّبَارِكْ وَسَلِّمْ

★ आज़ुरदा न हों ★

हाफ़िज़ इब्ने सलाह ने कहा है कि जनाब रसूलुल्लाह ﷺ का इस्मे गिरामी लिखते वक़्त रसूलुल्लाह ﷺ के साथ सलात व सलाम लिखने पर इसरार करे और उसके बार बार आने से आज़ुरदह न हो क्यों कि यह सबसे बड़ा फ़ायदा है और अवाम और काहिल लोगों के तरीक़े से बचो कि वह ﷺ की बजाए "صلعم" लिखते हैं और उस शख़्स के लिये हुज़ूर ﷺ का ही इरशाद काफ़ी है कि उस शख़्स ने किताब में मुझ पर दुरूद शरीफ़ लिखा जब तक उस किताब में मेरा नाम लिखा है उसके लिये मलायका इस्तिग़फ़ार करते रहेंगे। *(अफ़ज़लुस्सलवात अला सैयिदिस्सादात, सफ़ा–54)*

इब्ने महमूद ने अपना वाक़िया जो ख़ूद बयान किया है कि मैं अहादीष लिखा करता था। जब हुज़ूर ﷺ का नाम आता तो मैं "صلعم" का लफ़्ज़ लिखा करता था। मुझे एक रात हुज़ूर ﷺ की ज़ियारत हुई। आपने फ़रमाया, हमारे दुरूद के बग़ैर तुम्हारा लिखना फ़ुजूल है। मैं उसके बाद पूरा दुरूद लिखने लगा। *(शिफ़ाउल कुलूब–326)*

मुहद्दिषे जलील हज़रत शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिष दहेलवी رحمۃ اللہ علیہ मज़कूरा बाला वाक़िया के तहत फ़रमाते हैं कि सरकार ﷺ ने फ़रमाया कि तू चालीस नेकियों से किस वास्ते अपने आपको महरूम रखता है! यानी लफ़्ज़ **وَسَلَّمَ** मैं चार हुरूफ़ हैं और हर हर्फ़ के एवज़ में दस नेकी हैं तो इस हिसाब से इस लफ़्ज़ के षवाब में चालीस नेकियां हुई और इसी क़बील में यह भी दाख़िल है कि बाज़ लोग रम्ज़ व इशारा पर इक्तेफ़ा करते हैं जैसे बाज़ लिखने वाले ﷺ की अलामत صل م صلعم बना देते हैं और علیہ السلام की तरफ़ इशारा ع व م से करते हैं। **وعلى هذا القياس** *(जज़्बुल कुलूब–216)*

★ दुआ कैसे क़ुबूल होगी ? ★

हज़रत उमर बिन ख़त्ताब رضی اللہ عنہ फ़रमाते हैं :–

"اِنَّ الدُّعَاءَ مَوْقُوْفٌ بَيْنَ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ لَا يَصْعَدُ مِنْهَا شَئٌ حَتّٰى تُصَلِّىَ عَلٰى نَبِيِّكَ"

यानी दुआ ज़मीन व आसमान के दर्मियान ठहरी रहती है, इससे कोई चीज़ नहीं चढ़ती हत्ता कि तुम अपने नबी पर दुरूद भेजो। *(मिर्अतुल मनाजीह, जिल्द–2, सफ़ा–108, मिश्कात शरीफ़)*

इमाम बैहक़ी शोएबुल ईमान में हज़रत जाबिर رضی اللہ عنہ से रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया, मेरे साथ सवार के प्याले वाला मामला न करो। सवार अपना प्याला भरकर रख देता है और अपना सामान उठा लेता है, अब अगर इसे पानी पीने की हाजत हो तो पी लेता है वरना इसे उन्डेल देता है। तुम दुआ कि इब्तेदा, वस्त और आख़िर में मेरा ज़िक्र करो। (मुज़ पर दुरूद भेजो) *(मतालिउल मसर्रात–102)*

और हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने मस्ऊद رضی اللہ عنہ से रिवायत है :–

"كُنْتُ اُصَلِّىْ وَالنَّبِىُّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمْ وَاَبُوْبَكْرٍ وَّعُمَرُ مَعَهٗ فَلَمَّا جَلَسْتُ بَدَأْتُ بِالثَّنَاءِ عَلَى اللّٰهِ تَعَالٰى ثُمَّ صَلٰوةً عَلَى النَّبِىِّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ ثُمَّ دَعَوْتُ لِنَفْسِىْ فَقَالَ النَّبِىُّ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمْ سَلْ تُعْطٰى سَلْ تُعْطٰى"

मैं नमाज़ पढ़ रहा था और नबी करीम ﷺ और अबू बकर व उमर رضی اللہ عنہما आपके साथ थे। जब मैं बैठा तो हम्द से इब्तेदा की, फिर नबी करीम ﷺ पर दुरूद शरीफ़ पढ़ा, फिर मैंने अपने लिये दुआ की तो नबी करीम ﷺ ने फ़रमाया, मांग! दिया जायेगा! मांग दिया जायेगा! *(तिमिज़ी शरीफ़)*

★ ऐ नमाज़ी मांग ! ★

रिवायत है हज़रत फज़ाला बिन उबैद رضی اللہ عنہ से, वह फ़रमाते हैं कि रसूले अकरम ﷺ तशरीफ़ फ़रमा थे कि एक आदमी आया उसने नमाज़ पढ़ी फिर कहा, इलाही! मुझे बख़्श दे और मुझ पर रहम कर! सरकारे दो आलम ﷺ ने फ़रमाया, ऐ नमाज़ी! तूने जल्दी की। जब तू नमाज़ पढ़ कर बैठे तो अल्लाह की हम्द कर जिसके वह लाइक़ है और मुझ पर दुरूद भेज फिर दुआ कर। फ़रमाते हैं कि उसके बाद दूसरे शख़्स ने नमाज़ पढ़ी फिर अल्लाह की हम्द की नबी करीम ﷺ पर दुरूद भेजा तो नबी करीम ﷺ ने फ़रमाया, ऐ नमाज़ी !

मांग क़बूल होगी। *(मिश्क़ात शरीफ)*

इस हदीष से मालूम हुआ कि कोई दुआ बग़ैर सलात के क़बूल नहीं होती है यह दोनों क़बूलियते दुआ की शर्ते हैं।

★ दुआ के पर ★

सरकार मुस्तफ़ा ﷺ ने फ़रमाया, वह दुआएं आसमान की तरफ़ परवाज़ करती हैं जिन दुआओं के साथ दुरूद के पर होंगे वह बारगाहे इलाही में पहुंचेगी। *(मआरिजुन्नबुव्वत, जिल्द–1, सफा–333)*

★ वरना दुआ वापस ★

दुआ के वक़्त ज़रूरी है कि हम्द के बाद नबी करीम ﷺ और आले नबी ﷺ पर दुरूद पढ़ें। हदीष शरीफ़ में है कि :–

"مَامِنْ دُعَاءٍ اِلَّابَيْنَهٗ وَبَيْنَ اللّٰهِ حِجَابٌ حَتّٰى يُصَلِّيَ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى آلِ مُحَمَّدٍ فَاِذَا فَعَلَ ذٰلِكَ اِنْفَرَقَ الْحِجَابُ وَدَخَلَ الدُّعَاءُ وَاِذَا لَمْ يَفْعَلْ ذٰلِكَ رَجَعَ الدُّعَاءُ"

जब तक मुहम्मद ﷺ व मुहम्मद ﷺ की आल पर दुरूदे शरीफा न पढ़ा जाये उस वक़्त तक बंदे की दुआ और अल्लाह तआला के दर्मियान हिजाब रहता है। जब मुहम्मद ﷺ और उनकी आल पर दुरूद शरीफ़ पढ़ा जाता है तो वह हिजाब फट जाता है और क़बूलियते हक़ में दुआ दाख़िल हो जाती है, वरना दुआ वापस आ जाती है।

हज़रत अबू सुलैमान رضی اللہ عنہ फ़रमाते हैं, जिस दुआ के अव्वल व आख़िर दुरूद होता है वह जनाबे इलाही में मक़बूल होती है। दूसरे नेक आमाल जो मक़बूले बारगाहे इलाही हों या न हों मगर दुरूदे पाक ऐसी चीज़ है जो हर हाल में मक़बूले बारगाह होती है। क़ाज़ी अयाज़ ने लिखा है, दुरूदों के दर्मियान दुआ कभी रद्द नहीं होती। *(शिफाउल क़ुलूब–116)*

★ दुरूद कैसे पढ़ें ? ★

सरकारे दो आलम ﷺ ने फ़रमाया :–

"اِذَا صَلَّيْتُمْ عَلَيَّ فَاَحْسِنُوْا عَلَيَّ الصَّلٰوةَ فَاِنَّكُمْ تُعْرَضُوْنَ عَلَيَّ بِاَسْمَآئِكُمْ وَاَسْمَاءِ اٰبَائِكُمْ وَعَشَائِرِكُمْ وَاَعْمَالِكُمْ"

जब तुम दुरूद शरीफ़ पढ़ो तो हसीन व जमील सूरत में पढ़ो, इसलिये कि तुम मेरे सामने अपने अस्मा और अपने आबा के अस्मा और क़बाइल व आमाल के अस्मा के साथ पेश किये जाते हो।

फ़ायदा : हसीन व जमील का माअना यह है कि हुज़ूर ﷺ की महब्बत में दिल की गहराईयों से दुरूद पढ़ा जाये। *(रूहुल बयान, जिल्द–11, सफा–181)*

★ मच्छर के बराबर भी नहीं ★

दुरूद पढ़ने से क़ल्ब हबीबे ख़ुदा ﷺ की महब्बत व अज़मत दिल में पैदा करें क्यों कि जो दिल महब्बत व अज़मत से ख़ाली है उसके दुरूद पढ़ने का वज़न मच्छर के बराबर नहीं है। बाज़ रिवायात में आता है :–

"ثَلَاثَةُ اَشْيَاءٍ لَّا تَزِنُ عِنْدَ اللّٰهِ جَنَاحَ بَعُوْضَةٍ اَحَدُهَا الصَّلٰوةُ بِغَيْرِ خُضُوْعٍ وَّخُشُوْعٍ وَالثَّانِى الذِّكْرُ بِالْغَفْلَةِ لِاَنَّ اللّٰهَ تَعَالٰى لَا يَسْتَجِيْبُ دُعَاءَ قَلْبٍ غَافِلٍ وَالثَّالِثُ الصَّلٰوةُ عَلَى النَّبِيِّ ا مِنْ غَيْرِ حُرْمَةٍ وَّنِيَّةٍ"

तीन चीज़ों की ख़ुदा के नज़दीक कोई हैसियत नहीं :–

पहला : खुशूअ और खुज़ूअ के बग़ैर नमाज़ पढ़ना यानी बग़ैर तवज्जोह के।

दूसरा : ग़फ़लत के साथ ज़िक्र, यानी ख़ुदाए तआला की याद महज़ ज़बान से करना।

तीसरा : अज़मत व खुलूस के बग़ैर सरकार ﷺ पर दुरूद पढ़ना। *(दुर्रतुन्नासिहीन, 68)*

अदब से क़ल्ब को हाज़िर करके दुरूद शरीफ़ पढ़ना चाहिये, इस दौरान ग़फ़लत और सुस्ती को क़रीब न आने दें बल्कि यूं तसव्वुर करें कि हुज़ूरपुर नूर ﷺ मजलिस में हाज़िर हैं और सरकार ﷺ की अज़मत को सामने रखे हत्ता कि नमाज़ में दुरुद के वक़्त यही कैफ़ियत हो।

★ हुज़ूर ﷺ दिल में हाज़िर ★

हुज्जतुल इस्लाम हज़रत इमाम ग़ज़ाली رحمۃ اللہ علیہ इस मक़ाम पर यूं दादे तहक़ीक़ देते हैं जिस वक़्त तू अत्तहिय्यातके बाद यह अर्ज़ करे **"اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا النَّبِيُّ"** उस वक़्त नबी करीम ﷺ को अपने दिल में

हाज़िर कर और हुजूर की ज़ाते अक़दस को पेशे नज़र रखते हुए यह अर्ज़ कर, ऐ नबी करीम ! ﷺ आप पर अल्लाह की रहमतें और बरकतें हों इस नाचीज़ की तरफ़ से यह सलाम अक़ीदत पेश है। ज़बान से यह कहे और दिल में यह यक़ीने कामिल रखे कि तेरा यह सलाम हुजूर ﷺ की ख़िदमत में पेश किया जा रहा है और वह अपनी शायाने शान तुम्हें इस सलाम का जवाब इरशाद फ़रमायेंगे। *(बहवाला सीरते ज़ियाउन्नबी, 5/924)*

बाज़ मशाइख़ ने फ़रमाया है कि सरकारे दो आलम ﷺ पर दुरूद व सलाम ताअत व कुर्बत वसीला व इस्तजाबत है। जब बंदा सरकारे दो आलम ﷺ की तक़रीर व वसीला की नियत से पढ़ता है तो उसे सरकार ﷺ की कुरबत नसीब होती है जैसे चांद के कुर्ब से सूरज का कुर्ब हासिल होता है क्योंकि चांद का सूरज आईना है और सूरज के अन्वार चांद पर चमकते हैं।

★ नियाज़मंदाना तरीक़ा ★

हज़रत वासेती رحمۃ اللہ علیہ ने फ़रमाया कि हुजूर ﷺ पर दुरूद निहायत नियाज़मंदाना तरीक़े से पढ़ा जाए। इसमें गिनती को दख़ल न दिया जाए इस लिये कि आक़ा ﷺ के साथ हिसाब कैसा? (मगर इस नियत से गिनती कि मुतऐय्यिना अदद से कम न हुई मज़ाऐक़ा नहीं) और साथ में यह याद रहे कि दिल में कभी यह तसव्वुर भी न लाये कि इस तरह मैं अपने आक़ा ﷺ का हक़ अदा कर रहा हूं बल्कि तसव्वुर करे कि उसके सदक़े में रहमत से मालामाल हो जाऊंगा। *(मुलख़्ख़स अज़ रूहुल बयान, जिल्द–11)*

★ हुजूरीए क़ल्ब के साथ दुरूद पढ़ने का अज्र ★

दुरूद शरीफ़ ऐसी इबादत है जो बग़ैर हुजूरे क़ल्ब से पढ़े तब भी मक़बूल है, जैसा कि हज़रत अबू मवाहिब शाज़ली رحمۃ اللہ علیہ ने सरकारे दो आलम ﷺ को ख़्वाब में देखा तो अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह! अल्लाह तआला उस शख़्स पर दस बार सलात भेजता है जो आप पर एक बार दुरूद भेजे। क्या यह उस शख़्स के लिये है जो हुजूरे क़ल्ब से भेजे ? फ़रमाया, नहीं। यह हर उस शख़्स के लिये है जो सलात भेजे, ख़्वाह ! गफ़लत के साथ हो और अल्लाह तआला पहाड़ों की मानिंद मलायका अता करता है जो उसके लिये दुआ मांगते और इस्तिग़फ़ार करते हैं। लेकिन जब वह हुजूरे क़ल्ब से दुरूद भेजे तो उसके अज्र

को अल्लाह के सिवा कोई नहीं जानता। *(अफ़ज़लुस्सलवात अला सैयिदिस्सादात–150)*

लेकिन अगर हुजूरे क़ल्ब से सरकार ﷺ की अज़मत व मुहब्बत ज़ेहन व दिमाग़ में बसाकर नियाज़मंदाना अंदाज़ में दुरूदे पाक पढ़ें तो ख़ुदावंद यक़ीनन! झूम झूम कर बरसेगी। सरकार ﷺ आपकी तरफ़ ख़ुसूसी तवज्जोह फ़रमायेंगे।

★ सैयदना का इज़ाफ़ा ★

इमाम शमसुद्दीन रमलीने फ़रमाया कि लफ़्ज़ सैयद के साथ पढ़ना अफ़ज़ल है, इसमें हुक्म की तामील और अदब है। इमाम अहमद बिन हजर عَلَيْهِ الرَّحْمَةُ وَ الرِّضْوَانُ ने कहा है कि लफ़्ज़ मुहम्मद ﷺ से पहले सैयदना के बढ़ाने से कोई हर्ज नहीं बल्कि हुजूर रहमते आलम ﷺ के साथ अदब है अगर चे फ़र्ज़ नमाज़ में हो। *(अफज़लुस्सलवात अला सैयेदिस्सादात, सफा–73)*

रददुल मुहतार में अल्लामा शामी رحمۃ اللہ علیہ ने भी इसको जाइज़ क़रार दिया है। हज़रत शैख़ अयाशी رحمۃ اللہ علیہ फ़रमाते हैं कि नमाज़ में हुजूर के नाम नामी के साथ लफ़्ज़ सैय्यदना बढ़ा देना रहमते ख़ुदावंदी को अपनी तरफ़ मुतावज्जेह करना है। *(शिफाउल कुलूब, 100)*

और दर्रे मुख़्तार में है कि सैय्यदना के लफ़्ज़ का इज़ाफ़ा करना मुस्तहब है। उसकी दलील बुख़ारी और मुस्लिम की हदीष से है। सरकार ﷺ ने इरशाद फ़रमाया : **"اَنَا سَيِّدُ النَّاسِ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ"** क़यामत के दिन मैं तमाम इंसानों का सरदार हूं। **"اَنَاسَيِّدُ وَلَدِ آدَمَ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَلَا فَخْرَ"** यानी क़यामत के दिन मैं आदम علیہ السلام की तमाम औलाद का सरदार हूं, मैं यह फ़ख़ नहीं कर रहा हूं बल्कि इज़्हारे हक़ीक़त कर रहा हूं। *(सीरते ज़ियाउन्नबी, सफा–925, जिल्द–5)*

★ तमाम इबादात से अफज़ल ★

दुरूद शरीफ़ तमाम नफ़ली इबादतों से अफज़ल है। *(जज़्बुल कुलूब)* हज़रत अब्दुल अज़ीज़ दब्बाग़ رحمۃ اللہ علیہ फ़रमाते हैं कि नबी करीम ﷺ पर दुरूद क़तई तौर पर क़बूल है। इसमें कोई शक व शुबह नहीं है कि नबी पाक पर दुरूद तमाम आमाल से अफज़ल है जो जन्नत के अतराफ़ रहते हैं। *(अफज़लुस्सलवात, 14)*

हज़रत अबुल लैष समरक़ंदी رضی اللہ عنہ ने फ़रमाया, अगर तुम मालूम करना चाहो कि दुरूद शरीफ़ बाक़ी इबादात से अफ़ज़ल है तो इस आयत पर ग़ौर करो :—

"اِنَّ اللّٰهَ وَمَلٰٓئِكَتَهٗ يُصَلُّوْنَ عَلَى النَّبِيِّ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا صَلُّوْا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوْا تَسْلِيْمًا ہ"

बाक़ी इबादात का अल्लाह तआला ने बंदों को हुक्म दिया लेकिन दुरूद शरीफ़ पहले ख़ूद भेजा फिर फ़रिश्ते को हुक्म दिया फिर तमाम ईमान वालों को नबी करीम ﷺ पर दुरूद शरीफ़ भेजने का हुक्म दिया। *(मतालिउल मसरात—78)*

हज़रत अल्लामा हाफ़िज़ सख़ावी رحمۃ اللہ علیہ हज़रत इमाम फ़ाकहानी رحمۃ اللہ علیہ से नक़ल करते हैं कि अगर आक़िल से कहा जाये कि तुझे कौन सी चीज़ ज़्यादा पसंद है, तमाम मख़लूक़ात की नेकियां तेरे नामए आमाल में हों या अल्लाह तआला की तरफ़ से तुझ पर सलात (रहमत) ? तो वह अल्लाह तआला से सलात के अलावा किसी चीज़ को पसंद नहीं करेगा। *(अफ़ज़लुस्सलवात—32)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! वह अमल जिसके करने पर रहमते खुदावंदी झूम झूम कर बरसे वह भी एक के बदले दस और फ़रिश्ते इस फ़ेअल में मुन्हिमक होने वाले पर मग्फ़िरत की दुआएं करें, यक़ीनन ! वह तमाम इबादात से अफ़ज़ल है।

★ ज़िक्रे इलाही से अफ़ज़ल ★

रियाज़ुल हसन में है दुरूद शरीफ़ ज़िक्रे इलाही से भी आला है। उसकी दलील यह है कि ज़िक्रे खुदावंदी के बारे में फ़रमाया गया **"فَاذْكُرُوْنِىْ اَذْكُرْكُمْ"** "तुम मुझे याद करो मैं तुम्हारा चर्चा करूंगा।" मगर दुरूदे पाक के मामले में फ़रमाया गया, तुम एक बार दुरूदे पाक पढ़ो मैं दस बार दुरूद पाक पढ़ूंगा। यानी अगर तुम मेरी हम्द व षना करोगे तो मैं भी तुम्हारी एक बार हम्द करूंगा लेकिन अगर तुम मेरे हबीब की हम्द व षना करोगे तो मैं तुम्हारी दस बार हम्द व षना करूंगा क्योंकि महबूब का नाम मुबारक मुहिब्ब के पास लेना और उसके औसाफ़ बयान करना नअत व षना पढ़ना, दुरूद भेजना, मरातिब में कहीं ज़्यादा

हैं इस बात से कि ख़ूद उसकी ज़ात की तारीफ़ की जाए। क्यों कि महबूब की तारीफ़ मुहिब्ब की बनिस्बत ज़्यादा पसंदीदा हुआ करती है। *(मआरिजुन्नबुव्वत, जिल्द—1, सफा—326)*

★ एक मुर्शिदे कामिल ★

शैख़े कामिल इमाम अली मुत्तक़ी ने हकीमुल कबीर में शैख़ुल मदयन मूसा सूफ़ी से नक़ल किया है कि जिस ज़माना में औलिया मुरशिद मिलें तो तरीक़े सुलूक व मअरेफ़त से क़ुर्बे इलाही हासिल करने की सूरत यह है कि इत्तेबाए शरीअत करते हुए मुदावमते ज़िक्र व कषरते दुरूद शरीफ़ करें और दुरूद शरीफ़ से बातिन में एक अज़ीम नूर पैदा होगा और सरकार ﷺ से बिला वास्ता फ़ैज़ हासिल होगा। *(जज़्बुल क़ुलूब—26)*

शैख़ सनूसी رحمۃ اللہ علیہ सग़रावी में फ़रमाते हैं, **मैंने बाज़ ऐसे सूफ़िया देखे जिन्हें मुर्शिदे कामिल न मिल सका मगर ऐसे सूफ़िया ने कषरते दुरूद से मक़ाम हासिल कर लिया जो मुर्शिद की रहनुमाई में हासिल होते हैं।** *(शिफ़ाउल क़ुलूब—200)*

★ क़रीब तरीन रास्ता ★

हज़रत अल्लामा यूसुफ़ नबहानी رحمۃ اللہ علیہ फ़रमाते हैं, बारगाहे ख़ुदावंदी में पहुंचने का क़रीब तरीन रास्ता नबी करीम ﷺ पर दुरूद भेजना है। जिस शख़्स ने ख़ुसूसियत के साथ सरकार ﷺ पर दुरूद नहीं भेजा और उसके बावजूद बारगाहे ख़ुदावंदी में दाख़िल होना चाहता है तो दुरूद न पढ़ने की वजह से बारगाहे ख़ुदावंदी का हिजाब उस बंदे को दाख़िल नहीं होने देता। *(अफ़ज़लुस्सलवात, 41)*

★ झोलियां भरते हैं ★

हज़रत अब्दुल हक़ मुहद्दिष देहलवी ने रिवायत की है कि एक बुज़ुर्ग ने बयान किया कि **"اللّٰهم"** से लेकर **"وَآلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ"** तक दुरूदे पाक एक ऐसा समंदर है जिसका कोई किनारा नहीं है। जिसमें अहले महब्बत ग़ौताज़नी करके लअल व जवाहिरात से झोलियां भरते रहते हैं। उस दरयाए रहमत में जिस क़द्र ज़्यादा गहराई में जायेगा उतना ही दौलते रूहानियत हासिल होगी। *(शिफ़ाउल क़ुलूब—357)*

★ एक वाक़िया ★

अबू ज़ैद मुहक़्क़िक़ رحمۃ اللہ علیہ इमाम जलालुद्दीन सियूती رحمۃ اللہ علیہ से एक वाक़िआ नक़ल करते हैं कि मैंने एक रात ख़्वाब में नबीए करीम صلی اللہ علیہ وسلم को देखा। मैंने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह! صلی اللہ علیہ وسلم इमाम ग़ज़ाली, बू अली सीना और इब्ने ख़तीब किस किस मक़ाम पर हैं? आप صلی اللہ علیہ وسلم ने फ़रमाया, इब्ने ख़तीब तो अज़ाब में और बू अली सीना परेशान है। यह लोग मेरे बग़ैर ही अल्लाह के क़ुर्ब की तलाश में रहे, मेरे वसीले के बग़ैर कोई शख़्स मंज़िले मक़सूद नहीं पा सका। हुज़ूर صلی اللہ علیہ وسلم ने इमाम ग़ज़ाली की बेहद तारीफ़ फ़रमाई और इस वाक़िआ को वज़ाहत के साथ बयान किया गया है। क़रतबी ने अपनी "शरहे दलील" में भी इस वाक़िया को बयान किया है। *(शिफाउल कुलूब–201)*

हज़रत आरिफ़ सावी رحمۃ اللہ علیہ फ़रमाते हैं कि दुरूदे पाक इंसान को बग़ैर मुरशिद के अल्लाह तआला तक पहुंचा देता है क्योंकि बाक़ी अज़कार में शैतान दख़ल अंदाज़ी कर लेता है इसलिये मुरशिद के बग़ैर चारा नहीं लेकिन दुरूदे पाक में मुरशिद ख़ूद सैयदे आलम صلی اللہ علیہ وسلم हैं लिहाज़ा शैतान दख़ल अंदाज़ी नहीं कर सकता। *(सआदतुद्दारैन बहवाला आबे कौषर–28)*

★ रहमत के सत्तर दरवाज़े ★

इमाम सख़ावी رحمۃ اللہ علیہ शैख़ मुजद्दिदीन फ़िरोज़ाबादी से सहीह सनद से नक़ल करते हैं। इमाम समरक़ंदी رحمۃ اللہ علیہ फ़रमाते हैं कि मैंने ख़िज़र और इल्यास अला नबीय्यिना عَلَيْهِمَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ से सुना कि फ़रमाते थे कि हम ने रसूलुल्लाह صلی اللہ علیہ وسلم से सुना कि मोमिन **"صلی اللہ علی محمد"** कहेगा लोग उसे दोस्त रखेंगे अगरचे वह उससे बुग़्ज़ रखते हों। और अल्लाह की क़सम! लोग उसे दोस्त नहीं रखेंगे जब तक अल्लाह तआला उसे दोस्त न रखे। और हमने रसूलुल्लाह صلی اللہ علیہ وسلم को मिम्बर पर यह कहते हुए सुना कि जिस शख़्स ने **"صلی اللہ علی محمد"** कहा उसने अपने नफ़्स पर रहमत के सत्तर दरवाज़े खोले। *(अफज़लुस्सलवात, सफा–80)*

★ दुरूद ग़ीबत से बचाता है ★

और इसी सनद से है कि नबी करीम صلی اللہ علیہ وسلم ने फ़रमाया, जो शख़्स किसी

मजलिस में बैठे और कहे **" بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ وَصَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّدٍ "** तो हक़ तआला एक फ़रिश्ता को इस बात पर मोअक्कल करता है कि वह तुम को ग़ीबत से बाज़ रखे। और वह शख़्स जब मजलिस से उठे तो कहे **" بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ وَصَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّدٍ "** तो हक़ तआला लोगों को उसकी ग़ीबत से मना कर देता है।

★ सरकार के दीदार से मुशर्रफ़ होगा ★

हज़रत ख़िज़्र व इल्यास عَلَيْهِمَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ ने फ़रमाया कि एक आदमी रसूलुल्लाह صلی اللہ علیہ وسلم की ख़िदमत में मुल्के शाम से आया और अर्ज़ किया कि या रसूलल्लाह! صلی اللہ علیہ وسلم मेरा बाप बूढ़ा है और ज़ईफ़ होकर नाबीना भी हो गया है, चलने की कुव्वत नहीं जो यहां आये, और उसकी दिली ख़्वाहिश है कि वह आपके दीदाद से मुशर्रफ़ हो। हुज़ूर صلی اللہ علیہ وسلم ने फ़रमाया कि उससे कह देना शब को एक हफ़्ता तक **صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّدٍ** कहा करे। हमें ख़्वाब में देख लेगा। और कहा कि मुझसे इस हदीष को रिवायत करे। उसने ऐसा ही किया और हुज़ूर صلی اللہ علیہ وسلم को ख़्वाब में देखा। *(जज़्बुल कुलूब–268)*

★ तूफ़ान से बचाता है ★

शिफ़ाउस् सिक़ाम में है कि हज़रत नाकहानी अपनी किताब फ़ज्रे मुनीर में शैख़ अबू मूसा ज़रीर رحمۃ اللہ علیہ से नक़ल करके लिखते हैं कि हम एक जमाअत के साथ कश्ती में बैठे थे, अचानक बादे मुख़ालिफ़ जो निहायत तेज़ और सख़्त आंधी की शक्ल में थी चली जिसने कश्ती को तह व बाला कर दिया। मल्लाहों ने ऐलान कर दिया कि बचने की सूरत मुश्किल है। कश्ती वालों से आह व फ़िग़ा का शोर उठा और सबने मौत के मुंह में जाने की तैयारी शुरू कर दी। मुझे उसी असना में नींद आ गयी। ख़्वाब में सरकार صلی اللہ علیہ وسلم की ज़ियारत का शर्फ़ मिला और मुझे फ़रमाया कि ऐ अबू मूसा! कश्ती वालों से कहिये कि दुरूदे मज़कूरा को हज़ार बार पढ़ें नजात मिल जायेगी। मैंने बेदार होकर कश्ती वालों से कहा तो सबने पढ़ना शुरू कर दिया। अभी तीन सौ बार ही पढ़ा था कि हवा ठहर गयी और कश्ती ब–सलामत किनारे लगी। :–

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰی آلِ سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ وَّسَلِّمْ صَلٰوۃً تُنَجِّیْنَا بِھَا

مِنْ جَمِيْعِ الْاَ هْوَالِ وَالْآفَاتِ وَتَقْضِىْ لَنَا بِهَا جَمِيْعَ الْحَاجَاتِ وَتُطَهِّرُنَا بِهَا مِنْ جَمِيْعِ السَّيِّئَآتِ وَتَرْفَعُنَا بِهَا عِنْدَكَ اَعْلٰى الدَّرَجَاتِ وَتُبَلِّغُنَا بِهَا اَقْصٰى الْغَايَاتِ مِنْ جَمِيْعِ الْخَيْرَاتِ فِى الْحَيَاتِ وَبَعْدَ الْمَمَاتِ۔

(रूहुल बयान, सफा–213, मआरिजुन्नबुव्वत, जिल्द–1, सफा–332)

★ एक रिक़्क़त अंगेज़ वाक़िआ ★

इमाम तबरानी ने एक निहायत रिक़्क़त अंगेज़ वाक़िआ नक़ल किया है जो हुज़ूर ﷺ के मशहूर सहाबी हज़रत ज़ैद इब्ने षाबित رضی اللہ عنہ से मन्कूल है।

वह बयान करते हैं कि एक दिन सुबह के वक़्त हम हुज़ूर ﷺ के हमराह घर से निकले। जब मदीने के एक चौराहे पर पहुंचे तो देखा कि एक देहाती अपनी ऊंट की महार थामे हुए सामने से चला आ रहा है। जब वह हुज़ूर ﷺ के क़रीब पहुंचा तो इस तरह सलाम अर्ज़ किया :–

"اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَااَيُّهَا النَّبِىُّ وَ رَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهٗ" हुज़ूर ﷺ ने उसके सलाम का जवाब मर्हमत फ़रमाया। उसी दर्मियान एक शख़्स दौड़ता हुआ आया और हुज़ूर ﷺ के सामने खड़े होकर अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह! ﷺ यह देहाती मेरा ऊंट चुराकर लिये जा रहा है। इस पर ऊंट ने अपने मुंह से आवाज़ निकाली जिसे सुनते ही आपने इरशाद फ़रमाया कि तू मेरे सामने से दफ़ा हो जा, ऊंट ख़ूद गवाही दे रहा है कि तू झूठा है। जब वह चला गया तो हुज़ूर ﷺ ने उस देहाती से फ़रमाया कि जिस वक़्त तू मेरी तरफ़ आ रहा था उस वक़्त तू क्या पढ़ रहा था? उसने अर्ज़ किया, मेरे मां बाप आप पर कुरबान हों! उस वक़्त में यह दुरूद शरीफ़ पढ़ रहा था :–

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ حَتّٰى لَا تَبْقٰى مِنَ الصَّلٰوةِ شَىْءٌ
اَللّٰهُمَّ سَلِّمْ عَلٰى مُحَمَّدٍ حَتّٰى لَا يَبْقٰى مِنَ السَّلَامِ شَىْءٌ
اَللّٰهُمَّ بَارِكْ عَلٰى مُحَمَّدٍ حَتّٰى لَا تَبْقٰى مِنَ الْبَرَكَةِ شَىْءٌ
اَللّٰهُمَّ ارْحَمْ عَلٰى مُحَمَّدٍ حَتّٰى لَا تَبْقٰى مِنَ الرَّحْمَةِ شَىْءٌ

यह सुनकर हुज़ूर ﷺ ने इरशाद फ़रमाया कि मैंने देखा कि तेरे मुंह से निकले हुए दुरूद के अल्फ़ाज़ वसूल करने के लिये आसमानों से इतने फ़रिश्ते

नाज़िल हुए कि मदीना के आसमान का सारा उफ़क़ फ़रिश्तों से भर गया। *(अन्वारे अहमदी, सफा–68)*

★ हाजत रवाई के लिये ★

इमाम मुस्तग़फ़री हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह رضی اللہ عنہ से रावी हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया, जिसने मुझ पर हर दिन रात में सौ मर्तबा दुरूद शरीफ़ भेजा उसकी सौ हाजतें पूरी की जाएगी, तीस दुन्या की और बाक़ी आखेरत की। *(मतालिउल मसरात, सफा–140)*

★ खड़े होने से पहले बख़्शिश ★

शरहे है दलाइल में है, उस्ताज़ अबू बकर मुहम्मद जबर رحمۃ اللہ علیہ ने हज़रत अनस बिन मालिक رضی اللہ عنہ से रिवायत किया है कि जनाबे रिसालत मआब ﷺ ने फ़रमाया, जिस शख़्स ने **"اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى آلِهٖ وَسَلِّمْ"** कहा और वह खड़ा था तो बैठने से पहले और बैठा था तो खड़े होने से पहले उसके गुनाह माफ़ कर दिये जायेंगे। *(बहवाला फ़ज़ाइले दुरूद, सफा–81, मआरिजुन्नबुव्वत, जिल्द–1, सफा–301)*

★ क़लम टूट जायेगा ★

एक दिन हज़रत रिसालत मआब ﷺ मस्जिद में तशरीफ़ फरमा थे, अस्हाबे इकराम और अहबाबे अेज़ाम رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْنَ इर्द गिर्द हलक़ा बनाए बैठे थे कि एक अअ्राबी आया और आते ही सलाम कहा :–

"اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ يَااَهْلَ الْقُرٰى الْمَشَائِخُ وَالْكِرَامُ السَّاذِجُ"

हुज़ूर ﷺ ने उस आने वाले को हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ رضی اللہ عنہ पर तरजीह देते हुए अपने पास बिठाया। हज़रत सिद्दीक़ अकबर رضی اللہ عنہ ने कहा, या रसूलल्लाह! ﷺ मुझे यह यक़ीन है कि आप तमाम रुए ज़मीन पर मुझे सबसे अज़ीज़ रखते हैं मगर आज आपने उस शख़्स को अपने क़रीब बिठा लिया है इस तक़दीम व तरजीह की क्या वजह है? हुज़ूर ﷺ ने बताया कि ऐ अबू बकर! अभी हज़रत जिब्रईल علیہ السلام ने ख़बर दी है कि यह अअ्राबी मुझ पर दुरूद व सलाम भेजता रहता है और उन अल्फ़ाज़ में दुरूद पढ़ता है कि आज तक किसी दूसरे ने नहीं इस्तेमाल किये थे। हज़रत अबू बकर رضی اللہ عنہ ने दर्याफ़्त

किया, या रसूलल्लाह ! ﷺ वह कौन सा दुरूद पाक है ? आपने फ़रमाया :

''اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّعَلٰی آلِ مُحَمَّدٍ فِی الْاَوَّلِیْنَ وَالْآخِرِیْنَ وَ فِی الْمَلٰئِکَۃِ الْاَعْلٰی اِلٰی یَوْمِ الدِّیْنِ''

हज़रत अबू बकर رضی اللہ عنہ ने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह ! ﷺ मुझे इस दुरूदे पाक के षवाब के बारे में इरशाद फ़रमायें। आपने फ़रमाया, अगर दुन्या भर के तमाम समंदर स्याही बन जायें, दुन्या के तमाम दरख़्त क़लम बन जायें, तमाम मलाइका कातिब बन जायें, समंदर ख़ाली हो जायेंगे, क़लम टूट जायेंगे, मगर इस दुरूदे पाक का षवाब लिखा न जा सकेगा। *(मआरिजुन्नबुव्वत, जिल्द–1, सफ़ा–305, 306)*

★ साठ हज़ार दुरूद का षवाब ★

हज़रत सुल्तान महमूद ग़ज़नवी قدس سرہٗ की ख़िदमत में एक शख़्स हाज़िर हुआ और अर्ज़ कि, मैं अर्सए दराज़ से हुज़ूर सरवरे आलम ﷺ की ज़ियारत का इश्तेयाक़ रखता था और ख़्वाहिश थी कि कभी ख़्वाब में ज़ियारत हो और दिल के तमाम दर्द सुनाऊं। तमाम रात उन्होंने आंखें बंद रखीं इस उम्मीद पर कि मुम्किन है कि दीदार हो जाए, क़ज़ाए इलाही से मुझे सआदत मिली कि गुज़श्ता शब दीदारे हबीबे ख़ुदा ﷺ से मुशर्रफ़ हुआ हूं। उस रुख़सारे जहां आरा को देखा जो चौदहवीं की रात और लैलतुल क़द्र की रूह की मानिंद था। हुज़ूर ﷺ को मसरूर पाकर मैंने अर्ज़ किया, या रसूलुल्लाह ! ﷺ मैं हज़ारों दिरहम का मक़रूज़ हूं उसकी अदायगी से आजिज़ हूं, डरता हूं अगर मौत आ जाए तो वह क़र्ज़ मेरी गर्दन पर होगा। हुज़ूर ﷺ ने फ़रमाया, महमूद सुबुकतगीन के पास जाओ, वह तुम्हारा क़र्ज़ उतार देगा। मैंने अर्ज़ की, वह कब एतेमाद करते हैं इनके लिये कोई निशानी दीजिये। आप ﷺ ने फ़रमाया, उसे जाकर कहो, ऐ महमूद! तुम रात के अव्वल हिस्से में तीस हज़ार बार दुरूद पढ़ते हो और फिर बेदार होकर रात के आख़री हिस्से में तीस हज़ार बार पढ़ते हो। इस निशानी के बताने से वह तुम्हारा क़र्ज़ उतार देगा।

महमूद ने जब यह पैग़ाम सुना तो रोने लगे और तस्दीक़ करते हुए उसका क़र्ज़ उतार दिया और हज़ार दिरहम और पेश किया। अरकाने दौलत मुताज्जिब हुए कि इस शख़्स ने एक मुहाल अम्र सुनाया है लेकिन आपने उसकी तस्दीक़

कर दी, हालां कि हम आपकी ख़िदमत में हम हाज़िर होते हैं, आपने कभी इतनी मिक़दार में दुरूद शरीफ़ नहीं पढ़ा और न ही कोई रात में इतनी बार दुरूद शरीफ़ पढ़ सकता है। सुल्तान महमूद ने फ़रमाया, तुम सच कहते हो लेकिन मैंने उलमा से सुना है कि जो शख़्स मज़कूरा ज़ैल दुरूद शरीफ़ एक बार पढ़ता है तो गोया वह हज़ार बार दुरूद शरीफ़ पढ़ता है। मैं अव्वल शब में इस दुरूद शरीफ़ को तीन बार पढ़ लेता हूं और आख़िर शब में भी तीन बार पढ़ा लेता हूं। इस तरह से मेरा गुमान था कि गोया मैंने रात को साठ हज़ार बार दुरूद शरीफ़ पढ़ा। जब इस शख़्स ने हुज़ूर ﷺ का पैग़ाम पहुंचाया है मुझे इस दुरूद की तस्दीक़ हो गयी और उलमा का फ़रमान भी सही षाबित हुआ। वो दुरूदे पाक यह है :–

''اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ مَّا اخْتَلَفَ الْمَلْوَانِ وَتَعَاقَبَ الْعَصْرَانِ وَکَرَّ الْجَدِیْدَانِ وَاسْتَقَلَّ الْفَرْقَدَانِ وَبَلِّغْ رُوْحَہٗ وَاَرْوَاحَ اَھْلِ بَیْتِہٖ مِنَّا التَّحِیَّۃَ وَالسَّلَامُ وَبَارِکْ وَسَلِّمْ عَلَیْہِ کَثِیْراً''

★ कब दुरूद भेजना मुस्तहब ? ★

बाज़ मवाक़ेअ ऐसे हैं जिन में दुरूदे पाक मुस्तहब होने के बारे में नस वारिद है, इनमें से चंद यह हैं :–

जुम्आ का दिन और जुमआ की रात। बाज़ ने हफ़्ता, इतवार और जुमेरात का इज़ाफ़ा किया, कि इन तीनों के बारे में नस वारिद है, सुबह और शाम के वक़्त, मस्जिद में दाख़िल होते वक़्त और ख़ारिज होते वक़्त, रौज़ए मुबारक की ज़ियारत के वक़्त, सफ़ा और मरवा पर, पहले अत्तहिय्यात में, क्यों कि उसमें नबी करीम ﷺ का ज़िक्र है। लिहाज़ा दुरूद शरीफ़ मुस्तहब है या वाजिब। हज़राते शाफ़इय्या ने इसकी तस्रीह की है और मालिकिया के नज़दीक आख़री अत्तहिय्यात से पहले, ख़ुत्बए जुम्आ और दूसरे ख़ुत्बों में, मोअज़्ज़िन की इजाबत (मोअज़्ज़िन के साथ वही कलिमात कहने) के बाद, इक़ामत के वक़्त, दुआ की इब्तेदा, दर्मियान नमाज़े जनाज़ा में, शाफ़इय्या के नज़दीक दुआए क़ुनूत के बाद और तकबीराते ईदैन के दर्मियान, नमाज़े जनाज़ा में, तलबिया से फ़ारिग़ होकर, मुलाक़ात के वक़्त, रुख़सत होते वक़्त, वुज़ू करते वक़्त, जब कोई चीज़ भूल जाये। एक क़ौल के मुताबिक़ छींक आने पर, वअज़ और तब्लीग़े इल्म के

वक़्त, हदीष शरीफ़ पढ़ने से पहले और बाद में, इस्तिफता और उसका जवाब लिखते वक़्त, हर मुसन्निफ़ मुदर्रिस, दर्स देने वाले, ख़तीब, पैग़ामे निकाह देने वाले, शादी करने वाले और निकाह पढ़ाने वाले के लिये, रसाइल में बिस्मिल्लाह शरीफ़ के बाद, बाज़ हज़रात किताब को ख़त्म भी दुरूद शरीफ़ ही पर करते हैं, तमाम अहम उमूर से पहले, नबी करीम ﷺ का ज़िक्र करने या ज़िक्र शरीफ़ सुनने के वक़्त या लिखने के वक़्त, उन हज़रात के नज़दीक जो इस वक़्त वाजिब क़रार नहीं देते। हज़रत इमाम हसन बसरी, इमाम शअबी और इमाम अहमद बिन हंबल के नज़दीक नफ़ली नमाज़ में आपका ज़िक्र शरीफ़ हो तो दुरूद शरीफ़ मुस्तहब है। नबी अकरम ﷺ के ज़िक्र शरीफ़ के वक़्त दुरूद शरीफ़ पढ़ने के बारे में बहुत हदीषें वारिद हैं। इमाम बुख़ारी ने कहा, अज़हर यह है। कवाशी ने फ़रमाया कि अदब और एहतियात का तक़ाज़ा यह है कि जब भी नबी करीम ﷺ का ज़िक्र किया जाये तो दुरूद पाक पढ़ा जाये। *(जमालिउल मसरात–83, 84)*

★ सरकार ﷺ ने ताज़ीम दी ! ★

दुरूद शरीफ़ के वह अल्फ़ाज़ जो अहादीष में आये हैं कोई शक नहीं है कि इनका पढ़ना इस एतेबार से कि वह अल्फ़ाज़ नबी ﷺ की ज़बाने अक़दस से निकले हुए हैं अफज़ल है। बाज़ उलमा ने कहा कि तमाम दुरूदों में अफज़ल वह दुरूद है जो अत्तहिय्यात के बाद नमाज़ में पढ़ा जाता है और वह दुरूद सहीह हदीषों में मखसूस कैफ़ियतों के साथ आया है। हर मक़सद के हुसूल के लिये काफ़ी है। सब से मशहूर यह दुरूद शरीफ़ है :–

"اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰی آلِ مُحَمَّدٍ کَمَا صَلَّیْتَ عَلٰی اِبْرَاھِیْمَ وَ عَلٰی آلِ اِبْرَاھِیْمَ اِنَّکَ حَمِیْدٌ مَّجِیْدٌ ۝ اَللّٰھُمَّ بَارِکْ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰی آلِ مُحَمَّدٍ کَمَا بَارَکْتَ عَلٰی اِبْرَاھِیْمَ وَ عَلٰی آلِ اِبْرَاھِیْمَ اِنَّکَ حَمِیْدٌ مَّجِیْدٌ"

और यही दुरूद शरीफ़ जो मुख़्तलिफ़ अल्फ़ाज़ के साथ मुख़्तलिफ़ रिवायतों में आया है इनको हज़रत इमाम नदवी رحمۃ اللہ علیہ ने एक जगह जमा फ़रमाया है जिनकी तालीम सरकारे दो आलम ﷺ ने दी है, लिहाज़ा इन तमाम दुरूदों को भी ज़रूर पढ़ना चाहिये क्यों कि यह सरकार की ज़बाने अक़दस से निकले हुए अल्फ़ाज़ हैं :–

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ عَبْدِکَ وَرَسُوْلِکَ النَّبِیِّ الْاُمِّیِّ وَ عَلٰی اٰلِ مُحَمَّدٍ وَّاَزْوَاجِهٖ اُمَّهَاتِ الْمُؤْمِنِیْنَ وَذُرِّیَّتِهٖ وَاَهْلِ بَیْتِهٖ کَمَا صَلَّیْتَ عَلٰی اِبْرَاهِیْمَ وَعَلٰی اٰلِ اِبْرَاهِیْمَ فِی الْعَالَمِیْنَ اِنَّکَ حَمِیْدٌ مَّجِیْدٌ ۝

اَللّٰھُمَّ بَارِکْ عَلٰی مُحَمَّدٍ عَبْدِکَ وَرَسُوْلِکَ النَّبِیِّ الْاُمِّیِّ وَ عَلٰی اٰلِ مُحَمَّدٍ وَّاَزْوَاجِهٖ اُمَّهَاتِ الْمُؤْمِنِیْنَ وَذُرِّیَّتِهٖ وَاَهْلِ بَیْتِهٖ کَمَا بَارَکْتَ عَلٰی اِبْرَاهِیْمَ وَعَلٰی اٰلِ اِبْرَاهِیْمَ فِی الْعَالَمِیْنَ اِنَّکَ حَمِیْدٌ مَّجِیْدٌ وَّکَمَا یَلِیْقُ بِعَظْمَتِهٖ وَ شَرَفِهٖ وَکَمَا لِهٖ وَرِضَاکَ عَنْهُ وَکَمَا تُحِبُّ وَتَرْضٰی لَهٗ عَدَدَ مَعْلُوْمَاتِکَ وَمِدَادَ کَلِمَاتِکَ وَرِضٰی نَفُسَاتِ وَزِنَةَ عَرْشِکَ اَفْضَلَ صَلٰوةً وَّاَکْمَلَهَا وَ اَتَمَّهَا کُلَّمَا ذَکَرَکَ الذَّاکِرُوْنَ وَغَفَلَ عَنْ ذِکْرِکَ الْغَافِلُوْنَ وَسَلِّمْ تَسْلِیْمًا کَذَالِکَ وَعَلَیْنَامَعَهُمْ (जज़्बुल कुलूब–277)

★ ज़रूरी हिदायात ★

बेहतर यह है कि जब दुरूद शरीफ़ पढ़े लफ़्ज़ **صَلٰوة** के साथ लफ़्ज़े **سلام** भी ज़रूर पढ़े, खुसूसन उस आयत की तिलावत के बाद कि जिसमें दुरूद व सलाम पढ़ने का हुक्म है। हज़रत इब्राहीम नसफ़ी कहते हैं कि मैंने नबी करीम ﷺ की ख़्वाब में ज़ियारत की तो मैंने हुज़ूर नबी करीम ﷺ को अपने से नाराज़ पाया। मैंने जल्दी से हाथ बढ़ाकर नबी करीम ﷺ के दस्ते मुबारक को बोसा दिया और अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह ! ﷺ मैं तो हदीष के ख़िदमतगारों में से हूं, अहले सुन्नत से हूं, मुसाफ़िर हूं ! हुज़ूर ﷺ ने तबस्सुम फ़रमाया, और यह इरशाद फ़रमाया कि जब तू मुझ पर दुरूद भेजता है तो सलाम क्यों नहीं भेजता? हज़रत इब्राहीम नसफ़ी رحمۃ اللہ علیہ कहते है कि इसके बाद से मेरा मामूल हो गया कि दुरूद शरीफ़ में सलात के साथ सलाम भी लिखने लगा यानी **صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّمَ** ।

कुछ और अल्फाज़े दुरूद मअ फज़ाइले दुरूदे रज़विय्यह

صَلَّى اللّٰهُ عَلَى النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ وَاٰلِهٖ

صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

صَلٰوةً وَّسَلَامًا عَلَيْكَ يَارَسُوْلَ اللّٰهِ

★ फज़ाइले दुरूदे रज़विय्यह ★

इसके चालीस फ़ायदे हैं जो सहीह और मोअतबर हदीषों से षाबित हैं। यहां मुश्ते नमूना चंद ज़िक्र किये जाते हैं। जो शख़्स रसूलुल्लाह ﷺ से महब्बत रखेगा, जो उनकी अज़मत तमाम जहां से ज़्यादा दिल में रखेगा, जो उनकी शान घटाने वालों से, उनके ज़िक्रे पाक मिटाने वालों से दूर रहेगा, दिल से बेज़ार होगा, ऐसा कोई मुसलमान इस दुरूद शरीफ़ को पढ़ेगा, अल्लाह तआला तीन हज़ार नेअमतें उस पर उतारता रहेगा।

- उस पर दो हज़ार बार अपना सलाम भेजेगा।
- पांच हज़ार नेकियां उसके नामए आमाल में लिख देगा।
- उसके पांच हज़ार गुनाह माफ़ फ़रमायेगा।
- क़यामत में रसूलुल्लाह ﷺ उससे मुसाफ़ह करेंगे।
- उसके माथे पर यह लिख देगा कि यह मुनाफ़िक़ नहीं।
- उसके माथे पर तहरीर फ़रमा देगा यह दौज़ख़ से आज़ाद है।
- अल्लाह तआला उसे क़यामत के दिन शहीदों के साथ रखेगा।
- उसके माल में तरक़्क़ी देगा।
- उसकी औलाद और औलाद की औलाद में बरकत देगा।
- दुश्मनों पर ग़ल्बा देगा।

- दिलों में उसकी मुहब्बत रखेगा।
- किसी दिन ख़्वाब में बरकते ज़ियारते अक़दससे मुशर्रफ़ होगा।
- ईमान पर ख़ात्मा होगा।
- क़यामत में रसूलुल्लाह ﷺ की शफ़ाअत उसके लिये होगी।
- अल्लाह ﷻ उससे ऐसा राज़ी होगा कि कभी उससे नाराज़ न होगा।
- इस दुरूद शरीफ़ की तमाम सुन्नियों को इजाज़त फ़रमाई है ब शर्त यह कि बदमज़हबों से बचें।

★ दुरूदे रज़विय्यह पढ़ने का तरीक़ा ★

इस दुरूदे मक़बूल को अक्सर हज़रात दुरूदे जुम्आ भी कहते हैं, बाद नमाज़े जुम्आ मदीना मुनव्वरा की जानिब मुंह करके दस्त बस्ता खड़े होकर सौ बार पढ़ें, बेहतर है दो चार दस बीस हज़रात मिलकर पढ़ें। यह एक दुरूद दस के बराबर है और हर दुरूद शरीफ़ का षवाब दस गुना है, गोया जो इस दुरूद को एक बार पढ़े सौ दुरूद का सवाब पाये इसी तरह दस अफ़राद मिलकर एक बार पढ़ें तो हर एक फ़र्द एक हज़ार का षवाब पाये, एक हज़ार गुनाह मिटें, एक हज़ार नेकियां मिलें, एक हज़ार बार उस पर रहमत हो। यह तो सिर्फ़ एक बार पढ़ने का षमरा है इसी तरह हर एक ने सौ सौ बार पढ़ा तो कितना अज्र मिलेगा!

जिन हज़रात तक यह ख़बर पहुंचे उन्हें चाहिये कि अपने दोस्त व अहबाब, रिश्तेदारों और नमाज़े जुम्आ पढ़ने वाले हमराहियों को भी इस तरफ़ तवज्जोह दिलायें ता कि दुरूद पढ़ने वालों की भी जमाअत कषीर हो जाया करे, क्यों कि जितने ज़्यादा अफ़राद शामिल होंगे उनका दस गुना सवाब हर एक को मिलेगा। और जो तवज्जोह दिलायेगा उसको इन सब का दस गुना होकर उस तन्हा को षवाब मिलेगा और पढ़ने वालों के षवाब से कुछ कम न होगा।

इसको यूं समझिये कि दस अफ़राद ने शामिल होकर एक एक बार पढ़ा तो हर एक को एक हज़ार का षवाब मिला और जिसने दूसरों को तवज्जोह दिलाई उसको इन सब का दस गुना होकर दस हज़ार का षवाब मिलेगा। मौला तआला तौफ़ीक़ बख़्शे। आमीन।

जब दुरूद ख़त्म करे तो दुआ के लिये जिस तरह हाथ उठाए जाते हैं उठाकर

दुआए शजरा मन्ज़ूम इमाम या कोई एक फर्द पढ़े और सब आमीन कहें। इसके बाद फ़ातेहा पढ़कर हुजूर सैय्यदे आलम ﷺ व सहाबाए किराम व दीगर बुजुर्गाने दीन की रूह को सवाब बख़्शें, उसके बाद मुनाजात मन्ज़ूम पढ़ें और अपने लिये दुआ करें, साथ में तमाम सुन्नी मुसलमानों के लिए भी ईमान पर ख़ात्मा और बख़्शिश की दुआ करें।

मदीना मुनव्वरा का रुख़ यहां से मग़्रिब और शुमाल के दर्मियान पड़ता है इसलिये क़िब्ला से दाहिने हाथ तिरछे होकर खड़ें हों तो आपका रुख़ मदीना मुनव्वरा की जानिब हो जायेगा।

★ दुरूदे शिफा शरीफ़ ★

"اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ طِبِّ الْقُلُوْبِ وَدَوَآئِهَا وَعَافِيَةِ الْاَبْدَانِ وَشِفَآئِهَا وَنُوْرِ الْاَبْصَارِ وَضِيَآئِهَا وَعَلٰٓى اٰلِهٖ وَصَحْبِهٖ وَسَلِّمْ"

तर्जुमा : या अल्लाह ! दुरूद भेज हमारे सरदार हज़रत मुहम्मद ﷺ पर जो दिलों के तबीब और उनकी दवा हैं और जिस्म की आफ़ियत और उनकी शिफ़ा हैं और आंखों का नूर और उनकी चमक हैं।और आप की आल व अस्हाब पर दुरूद व सलाम भेज। *(जवाहिरूल बिहार, जिल्द–3, सफा–40)*

फ़ज़ीलतः जिस्मानी व रूहानी बीमारियों से शिफ़ा हासिल होती है।

★ सलात हल्लिल मुश्किलात ★

"اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِكْ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدٍ قَدْ ضَاقَتْ حِيْلَتِىْ اَدْرِكْنِىْ يَارَسُوْلَ اللّٰهِ"

तर्जुमा : या अल्लाह ! हमारे सरदार हज़रत मुहम्मद ﷺ पर दुरूद व सलाम और बरकतें भेज ! या रसूलल्लाह ! ﷺ दस्तगीरी कीजिये मेरा हीला और कोशिश तंग आ चुके हैं।

★ फ़ज़ीलत ★

मुफ़्तीए दमिश्क़ हामिद आफ़ंदी رحمۃ اللہ علیہ एक दफ़ा सख़्त मुश्किलात में गिरफ़्तार हो गये। वहां का वज़ीर उनका सख़्त दुश्मन हो गया, वह रात को निहायत दर्जा कर्ब व बला में थे कि आंख लग गयी। नबी अकरम ﷺ तशरीफ़

लाए, तसल्ली दी और यह दुरूद शरीफ़ सिखाया कि जब तू इसको पढ़ेगा अल्लाह करीम तेरी मुश्किल हल फ़रमा देगा। आंख खुल गयी, यह दुरूद शरीफ़ पढ़ा तो मुश्किल हल हो गयी।

अकाबिरीने मिल्लत ने अक्सर मुश्किलात में इसको पढ़ा है। फ़तावा शामी के मुअल्लिफ़ अल्लामा सैय्यद इब्ने आबिदीन رحمۃ اللہ علیہ के षबत में इसकी बाज़ाब्ता सनद मौजूद है।

★ पढ़ने का तरीक़ा ★

इसके पढ़ने का तरीक़ा यह है कि ईशा की नमाज़ के बाद ताज़ा वुजू करके दो रकअत नमाज़ नफ़्ल पढ़े, पहली रकअत में **الحمد** शरीफ़ के बाद सूरए **قل يايها الكافرون** और दूसरी रकअत में बाद **الحمد** सूरए इख़्लास पढ़े। फ़ारिग़ होकर क़िब्ला रू ऐसी जगह बैठे जहां सो जाना हो और सिद्क़ दिल से तौबा करते हुए एक हज़ार बार **اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ الْعَظِيْمَ** पढ़े, उसके बाद दो ज़ानू मोअद्दबाना बैठकर तसव्वुर बांध ले कि रसूले करीम ﷺ के हुजूर में हाज़िर हूं और अर्ज़ कर रहा हूं, सौ बार, दो सौ बार, तीन सौ बार, ग़र्ज़ यह कि पढ़ता जाये, जब नींद का ग़ल्बा हो तो उसी जगह दायें करवट पर क़िब्ला की तरफ़ मुंह करके सो जाये। जब पिछली रात जागे तो फिर उसी जगह मोअद्दबाना बैठकर सुबह की नमाज़ तक दुरूद शरीफ़ पढ़ता रहे, पढ़ते वक़्त अपनी हाजत या हल्ले मुश्किलात का तसव्वुर रखे, **انشاء الله تعالى** ! एक रात में या तीन रातों में मुराद बर आयेगी। आख़िरी रात जुम्आ की हो तो बेहतर है।

★ सलाते कमालिया ★

"اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِكْ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدِنِ النَّبِىِّ الْكَامِلِ وَعَلٰٓى اٰلِهٖ كَمَا لَانِهَايَةَ لِكَمَالِكَ وَعَدَدَ كَمَالِهٖ" (अफज़लुस्सलवात–191)

★ फ़ज़ीलत ★

- एक बार पढ़ने से सत्तर हज़ार मर्तबा दुरूद शरीफ़ पढ़ने का षवाब है।
- अगर किसी को निस्यान की बीमारी हो तो नमाज़े मग़्रिब और ईशा के दर्मियान बिला तादाद इस दुरूद शरीफ़ को पढ़ा करे, **انشاء الله** यह बीमारी दूर हो जाएगी और हाफ़िज़ा बढ़ जाएगा।

★ सलातुस्सआदियह ★

"اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ
عَدَدَ مَافِیْ عِلْمِ اللّٰہِ صَلٰوۃً
دَآئِمَۃً بِدَوَامِ مُلْکِ اللّٰہِ"

या अल्लाह ! दुरूद भेज हमारे सरदार मुहम्मद ﷺ पर उस तादाद के मुताबिक़ जो अल्लाह के इल्म में है, ऐसा दुरूद जो अल्लाह तआला के दाइमी मुल्क के साथ दवामी हो।

फ़ज़ीलतः

इमाम सियूती رحمۃ اللہ علیہ ने लिखा है कि इस दुरूद शरीफ़ को एक बार पढ़ा जाये तो छः लाख बार दुरूद शरीफ़ पढने का सवाब मिलता है। *(अफज़लुस्सलवात–149)*

हम ग़रीबों के आक़ा पे बेहद दुरूद।
हम फ़क़ीरों की षरवत पर लाखों सलाम।

अम्र बिल् मअ्रूफ व नही अनिल् मुन्कर

وَلْتَکُنْ مِّنْکُمْ اُمَّۃٌ یَّدْعُوْنَ اِلَی الْخَیْرِ وَیَأْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَیَنْھَوْنَ عَنِ الْمُنْکَرِ وَاُولٰٓئِکَ ھُمُ الْمُفْلِحُوْنَ

तर्जुमा : **और तुम में से एक ऐसा गिरोह होना चाहिये कि भलाई की तरफ़ बुलाए और अच्छी बात का हुक्म दे और बुरी बात से मना करे । और यही लोग फ़लाह पाने वाले हैं।**

सुन्नी दावते इस्लामी की दावत हर सू आम करें
सुन्नत को घर घर फैलाऐं तब्लीगे इस्लाम करें

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللّٰهِ ﷺ

وَعَلٰى آلِكَ وَاَصْحَابِكَ يَا حَبِيْبَ اللّٰهِ ﷺ

अम्र बिल मअरूफ व नही अनिल मुन्कर

अल्लाह तआला इर्शाद फर्माता है :–

" وَلْتَكُنْ مِّنْكُمْ اُمَّةٌ يَّدْعُوْنَ اِلَى الْخَيْرِ وَيَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ "

तर्जुमा : और तुम में से एक ऐसा गिरोह होना चाहिये कि भलाई की तरफ़ बुलाए और अच्छी बात का हुक्म दे और बुरी बात से मना करे । और यही लोग फ़लाह पाने वाले हैं। *(पारा–4, रूकूअ–2)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! यह दीने इस्लाम जिसने आलमे बशीरत की तक़दीर बदल दी, उसकी तबलीग़ व इशाअत एक अहम तरीन फ़रीज़ा है। अगर इस मिल्लत में ऐसे अफ़राद न हों जो इस पैग़ामे रहमत को दुन्या के गोशे गोशे तक पहूंचाने लिए अपने आपको वक़्फ कर दें तो ये आलमगीर पैग़ामे हिदायत चंद मुल्कों में महदूद होकर रह जायेगा और यह पैग़ाम से भी ना इंसाफ़ी होगी और उन क़ौमों पर भी जुल्म होगा जो घुप अंधेरों में भटक रही हैं जिनकी ज़िन्दगी की तारीक रातें किसी रौशन चिराग़ के लिये तरस रही हैं। नीज़ वह क़ौम और मुल्क जिस ने इस दीन को क़बूल कर लिया है उसके आइने दिल पर भी ग़फ़लत की गर्द पड़ सकती है, उनकी गर्मीए अमल भी सुस्ती का शिकार हो सकती है। उसके लिये जिस बड़ी से बड़ी माली कुरबानी, ईमानी फ़रासत, क़ल्बी बसीरत, रूहानी तर्बियत की ज़रूरत है वह पूरी होनी चाहिये, अगर मिल्लत अपने इस अहम तरीन फ़रीज़ा को अदा न

करेगी वह अल्लाह तआला की जनाब में अपनी इस कोताही के लिये जवाबदेह होगी।

तारीख़ शाहिद है कि जब तक ऐसे अफ़राद तैयार होते रहे गुलशने इस्लाम में फ़स्ले बहार रही, जब तक मदारिसे इस्लामिया ग़ज़ाली, राज़ी, सअदी और बैज़ावी और ख़ानक़ाहें रूमी, हिजवेरी, अजमेरी, ज़करिया या मुलतानी, शैख़ सर हिन्दी **رضی الله عنهم وعن مشائخهم و خلفائهم وا مثالهم** ऐसी फ़ख़्रे रोज़गार हस्तियां तैयार करती रहीं कुफ़्र के ज़ुल्मत कदे इस्लाम के नूर से रौशन होते रहे, हक़ बातिल के क़िलों को मुसख़्ख़र करता रहा। लेकिन अब मौजूदा हाल इतना दर्द अंगेज़ है कि न मुझ में बयान करने की हिम्मत और न आप में सुनने की ताब ! और ऐ अल्लाह ! हम पर रहम फ़रमा ! ऐ गुबंद ख़िज़्रा के मकीन ! चारा साज़ी फ़रमाइए ! अल्लाह तआला हम सबको अम्र बिल मअ़रूफ़ की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये। **آمین بجاہ النبی الکریم علیه افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔**

★ उम्मत की ज़िम्मेदारी ★

अल्लाह तआला फ़रमाता है :–

كُنْتُمْ خَيْرَ اُمَّةٍ اُخْرِجَتْ لِلنَّاسِ تَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَ تَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَ تُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ

तर्जुमा : तुम बेहतर हो उन सब उम्मतों में जो लोगों में ज़ाहिर हुईं, भलाई का हुक्म देते हो और बुराई से मना करते हो और अल्लाह पर ईमान रखते हो। *(पारा–4, रूकूअ–3)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! मज़कूरा आयाते करीमा की रौशनी में यह बात समझ में आयी कि उम्मते मुहम्मदिया अला साहिबिहिस्सलातु वस्सलाम को किसी ख़ास मक़सद के लिये मबउष फ़रमाया गया, वह ख़ास मक़सद भलाई का हुक्म देना और बुराई से रोकना है। आज इस मक़सद की तकमील यह उम्मत करती नज़र नहीं आती बल्कि भलाई से नफ़रत और बुराई से महब्बत इस उम्मत में नज़र आती है, लिहाजा हमारी ज़िम्मेदारी है कि हम अपने बअषत के मक़सद को समझें और भलाई का हुक्म देने और बुराई से रोकने की कोशिश करें, वरना जो क़ौम अपने मक़सद को भूल जाती है वह क़ौम भूला दी जाती है। आज हमारा जो हाल है उसमें अम्र बिल मअरूफ़ से ग़फ़लत का भरपूर दख़ल है, लिहाज़ा हमें चाहिये कि हम अपने मक़सदे बअषत को पेशे

नज़र रखते हुए भलाई का हुक्म देते रहें और बुराई से रोकते रहें। परवर्दिगार ﷻ हम पर ज़रूर करम की नज़र फ़रमायेगा और दोनों जहां में सुर्ख़रूइ अता फ़रमाएगा। अल्लाह ﷻ सबको दावते इलल खैर की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

★ हज़रते लुक़मान की नसीहत ★

एक और मक़ाम पर अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है :–

“يٰبُنَيَّ اَقِمِ الصَّلٰوةَ وَأْمُرْ بِالْمَعْرُوْفِ وَانْهَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَاصْبِرْ عَلٰى مَا اَصَابَكَ اِنَّ ذٰلِكَ مِنْ عَزْمِ الْاُمُوْرِ”

(लुक़मान ने अपने बेटे से कहा) ऐ मेरे बेटे ! नमाज़ क़ायम रख और अच्छी बात का हुक्म दे और बुरी बात से मना कर ! और जो उफताद तुझ पर पड़े उस पर सब्र कर, बेशक ! यह हिम्मत के काम हैं। *(पारा–21, रूकूअ–11, कन्जुल इमान)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! मज़कूरा आयते करीमा में हज़रत लुक़मान عليه السلام के बारे में मज़कूर है कि आपने अपने बेटे से इरशाद फ़रमाया, नमाज़ क़ायम रख, अच्छी बात का हुक्म दे और बुरी बात से मना कर। पता चला कि बहैसियते बाप अपने बेटे को हक़ कामों के लिये आमादा करना चाहिये और पाबंद करना चाहिये जिसमें नमाज़ क़ायम करना और भलाई का हुक्म देना वग़ैरह शामिल है।

लेकिन अफ़सोस सद अफ़सोस ! आज अगर बेटा दीन के रास्ते पर चलता है तो मां बाप को अच्छा नहीं लगता ! दीन की दावत लोगों को पेश करने लग जाए तो भी अच्छा नहीं लगता, आज हालात इतने ख़राब हो गए हैं कि अल्लाह रहम व करम फ़रमाए। कुछ मां बाप कुरआने मुक़द्दस की तिलावत तो करते हैं लेकिन औलाद को इस बात का पाबंद बनाने की कोशिश भी नहीं करते, जिससे बच्चा अपनी मनमानी करने लगता है और आख़िरकार वालिदैन को शर्मिन्दगी उठानी पड़ती है। अल्लाह ﷻ हम सबको अपनी औलाद की तर्बियत कुरआन के फ़र्मूदात की रौशनी में करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

★ ख़ूद को भूलते हो ★

अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है :–

“اَ تَاْمُرُوْنَ النَّاسَ بِالْبِرِّ وَتَنْسَوْنَ اَنْفُسَكُمْ وَاَنْتُمْ تَتْلُوْنَ الْكِتٰبَ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ”

और लोगों को भलाई का हुक्म देते हो और अपनी जानों को भूलते हो हालांकि तुम किताब पढ़ते हो तो क्या तुम्हें अक़्ल नहीं ? *(पारा–1, रूकूअ–5, कन्जुल इमान)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! मज़कूरा आयते करीमा से हम को यह सबक़ मिला कि हम हक़ बातों का लोगों को हुक्म दें और उसके मुताबिक़ ख़ूद भी अमल करें, अवाम को नसीहत करने से पहले ख़ूद को नसीहत करें, अवाम की आख़ेरत का फ़ाइदा सोचने के साथ अपने अंजाम पर भी ग़ौर करना चाहिये। आम तौर पर हमारा हाल यह है कि हम लोगों को नसीहत करते वक़्त ख़ूद को भूल जाते हैं।

आयते करीमा से इशारतन मालूम होता है कि वह शख़्स बहुत कम अक़्ल है जो दुन्या के गोशा गोशा में लोगों को दावते दीन देता फिरे लेकिन ख़ूद अपनी इस्लाह की जानिब तवज्जोह न दे।

अल्लाह तआला हम को हुज़ूर ﷺ के सदक़ा व तुफ़ैल कुरआन मुक़द्दस पर अमल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

★ मुसलमान मर्द व औरत की ज़िम्मेदारी ★

फ़रमाने बारी तआला है :–

“وَالْمُؤْمِنُوْنَ وَالْمُؤْمِنٰتُ بَعْضُهُمْ اَوْلِيَآءُ بَعْضٍ يَّاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَيُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَيُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَيُطِيْعُوْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ اُولٰٓئِكَ سَيَرْحَمُهُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ”

और मुसलमान मर्द और औरतें एक दूसरे के रफ़ीक़ हैं, भलाई का हुक्म दें और बुराई से मना करें और नमाज़ क़ायम रखें और ज़कात दें और अल्लाह व रसूल का हुक्म मानें, यही हैं जिन पर अनक़रीब अल्लाह रहम फ़रमाएगा। *(पारा–10, रूकूअ–15)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! एक मुसलमान की दूसरे मुसलमान से दोस्ती सिर्फ़ ज़बानी जमा ख़र्च का मामला नहीं होना चाहिये बल्कि मोमिनीन व मोमिनात इश्क़े रसूल ﷺ का मुज़ाहिरा अपने अमल से करते हैं कि वह इंसानों को अच्छाई की तरफ़ बुलाना अपना फ़र्ज़े मन्सबी समझते हैं और मुआशरे से बुराई को जड़ से उखाड़ फेंकना अपना मक़सदे ज़ीस्त मानते हैं और हर एक को भलाई का पैकर देखना चाहते हैं, ख़्वाह उसके लिए लोगों से हज़ारहा मुसीबतों को झेलना पड़े ! क्यों कि ताजदारे मदीना ﷺ की तमन्ना यही थी। हुजूर ﷺ से महब्बत करने वाला अपने आक़ा ﷺ की ख़ूशी को अपनी कुल काइनात समझता है और उसको हासिल करने के लिये जान तक कुरबान कर देता है। क्या इमाम हुसैन رضی اللہ عنہ ने बुराई के ख़ात्मे के लिये अपना घर बार कुरबान नहीं किया? और जान दे कर दुन्या वालों के सामने हक़ व बातिल को उजागर नहीं किया? काश ! हम भी उनके नक़्शे क़दम पर चलते और हमारी ज़िन्दगी अच्छाईयों का हुक्म देने और बुराईयों से रोकने में गुज़रती।

अल्लाह ﷻ की बारगाह में दुआ है कि वह अपने प्यारे महबूब ﷺ के सदक़ा व तुफ़ैल हम सबको अच्छाई का हुक्म देने और बुराई से रोकने की कुव्वत, हौसला और तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

★ बुरे काम ★

अल्लाह तआला इरशाद फ़रमाता है :—

"كَانُوْا لَا يَتَنَاهَوْنَ عَنْ مُّنْكَرٍ فَعَلُوْهُ لَبِئْسَ مَا كَانُوْا يَفْعَلُوْنَ"

तर्जुमा : जो बुरी बात करते आपस में एक दूसरे को न रोकते ज़रूर बहुत ही बुरे काम करते थे। *(पारा—6, रूकूअ—14, तर्जुमा : कन्जुल इमान)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! आज मर्द हों या औरत इल्ला माशाअल्लाह जहां जमा हुए, ग़लत बातें, गंदी बातें, ख़िलाफ़े शरीअत बातें करते थकते नहीं। अब एक मोमिन की ज़िम्मेदारी यह है कि बुरी बात करने वालों को रोके इन्हें समझाए। इनको अल्लाह ﷻ का ख़ौफ़ दिलाये ता कि वह बुरी बातों से बाज़ आएं। अगर रोकने के बजाए ख़ूद इस में शामिल हो गया तो वह भी बुरी बात करने वाले की तरह हो जायेगा। अल्लाह ﷻ हम सबको कुरआने मुक़द्दस

के बताए हुए रास्ते पर चलने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

★ कमज़ोर तरीन ईमान ★

नबी अकरम ﷺ ने इरशाद फ़रमाया, तुम में से जो कोई बुराई देखे उसे चाहिये कि कुव्वते बाज़ू से मिटा दे और अगर उसकी ताक़त न हो तो जुबान से रोके अगर यह भी न हो सके तो उसे दिल से बुरा समझे और यह कमज़ोर तरीन ईमान है। *(मुस्लिम शरीफ़)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! ताजदारे काइनात ﷺ का मन्शा यह है कि मुआशरे पर अम्न रहे। मुआशरे में जितनी भी परेशानियां हों और झगड़े और फ़साद पैदा होते हैं वह सबके सब बुराईयों के सबब से ही होते हैं इसलिये कि कभी कभी ऐसा भी होता है कि किसी आलिम की नसीहत से कोई बुराई नहीं छोड़ता लेकिन अगर कोई ताक़तवर, सरमाएदार कह दे तो बात मान लेता है, और अपने दामन को बुराई से बचा लेता है। बहरहाल बाजूओं की कुव्वत हो या जुबान की चाशनी, जिस तरह से मुमकिन हो बुराई से रोकना हर मोमिन की ज़िम्मेदारी है बल्कि यह कहूं तो बेजा न होगा कि इसी में ईमान की बक़ा और इत्ला तहफ़्फ़ुज़ है। अगर कुव्वते बाज़ू और ज़बानसे कोइ बुराइ नहीं रोक सकता इतना तो कर सकते हो कि दिल से बुरा जानो, इस लिये कि एक कमज़ोर इंसान मज़कूरा दोनों तरीक़ों से जब बुराई न रोक सकेगा या उसकी ताक़त नहीं तो डर है कि कहीं वह ख़ूद भी बुराई में मुलव्विस न हो जाये, इसलिये फ़रमाया गया कि कम से कम तुम ख़ूद इसको बुरा जानो कि यह ईमान का सबसे कमज़ोर तरीन दर्जा है।

आज हम मुआशरे का जाइज़ा लें तो कमज़ोर ईमान वालों की तादाद भी बराए नाम नज़र आती है ! क्या यह सच नहीं है कि लोग बुराई को दिल से बुरा भी नहीं जानते, बल्कि यह कहते नज़र आते हैं कि सब चलता है ! **معاذ اللہ** या कह देते हैं कि अल्लाह माफ़ फ़रमा देगा। ख़ुदारा ! अपने हाले ज़ार पर रहम करो और अपने ईमान के तहफ़्फ़ुज़ के लिए बुराईयों को दिल से बुरा जानो। अल्लाह ﷻ हम सबको बुराईयों को रोकने और बुराईयों से बचने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये और नेकी का हुक्म देने और नेकी की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

★ गुनाह नहीं लिखे जायेंगे ★

हज़रत सैय्यदना अबू उबैदा बिन जर्राह رضی اللہ عنہ कहते हैं कि मैंने सरकारे दो आलम ﷺ से पूछा, या रसूलल्लाह ! ﷺ खुदाए ज़ुल जलाल की बारगाह में कौन से शहीद की इज्ज़त ज़्यादा है ? प्यारे आक़ा ﷺ ने इरशाद फ़रमायाः वह जवान जो ज़ालिम हाकिम के सामने गया और उसे नेकी का हुक्म दिया और बुराई से रोका और इसी पादाश में उसे क़त्ल कर दिया गया और अगर उसे नहीं क़त्ल किया गया तो वह जब तक ज़िन्दा रहेगा उसके गुनाह नहीं लिखे जायेंगे।

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! ज़ालिम हुक्मरां अपनी ताक़त के नशे में डूब कर जो चाहे करता है, ग़रीबों पर जुल्म नीज़ हराम व हलाल का इम्तेयाज़ ख़त्म कर देता है, बल्कि एक क़िस्म का गुरूर उसके दिल में होता है कि हाकिम हूं ! अपनी मर्ज़ी चलाऊंगा और ख़्वाहिशाते नफ़्स पूरी करूंगा। उसके ग़लत काम की वजह से और ताक़त व इक़्तेदा की वजह से कोई उसे बुराई पर, जुल्म पर रोकता नहीं कि कहीं वह क़त्ल न कर डाले, सख्त से सख़्त सज़ा में गिरफ़्तार न कर दे या कहीं मुलाज़मत से बरतरफ़ न कर दे और रियासतें छीन न ले। लिहाज़ा हर कोई ख़ौफ़ज़दा रहता है। लेकिन हाकिम के बहक जाने का नुक़सान यह होता है कि रिआया के भी बहकने के इम्कानात होते हैं और पूरा मुआशरा तबाह व बर्बाद हो सकता है, इसलिये फ़रमाया गया : लोग अपने बादशाह के दीन पर होंगे अगर बादशाह में बुराई होगी तो रिआया में भी बुराई होगी।अगर कोई बंदाए मोमिन ज़ालिम हाकिम के जुल्म की परवाह किये बग़ैर उसके सामने हक़ बात कह दे और नेकी का हुक्म दे और बुराईयों से रोकने के लिये कहे, क़तए नज़र इससे कि अंजाम क्या होगा, तो फ़रमाया गया कि नेकी का हुक्म देने और बुराई से रोकने के बदल उसे क़त्ल किया जाये या क़त्ल न किया जाये तो जब तक वह ज़िन्दा रहेगा उसके गुनाह नहीं लिखे जायेंगे।यानी अगर गुनाह ना दानिस्ता हो जाये तो अल्लाह तआला उसे माफ़ फ़रमा देगा।

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! इसका मतलब यह नहीं है कि एक बार ज़ालिम व जाबिर हाकिम को नसीहत करके पूरी ज़िन्दगी गुनाह में गुज़ारो ! बल्कि नासेह को भी अपने आपको गुनाह से बचाना होगा।अल्लाह عزوجل हम सब

पर करम की नज़र फ़रमाये और गुनाह से अपने आपको बचाने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये। آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

★ बे रहम हाकिम ★

सहाबीए रसूल हज़रत अबू दाऊद رضی اللہ عنہ से मरवी है कि उन्होंने कहा, नेकी का हुक्म देते रहना और बुराई से रोकते रहना, नहीं तो अल्लाह तआला तुम पर ऐसा हाकिम मुक़र्रर कर देगा जो तुम्हारे बुजुर्गों का एहतेराम नहीं करेगा, तुम्हारे बच्चों पर रहम नहीं करेगा, तुम्हारे बड़े बुलायेंगे लेकिन उनकी बात नहीं मानी जायेगी, वह मददगार तलब करेंगे लेकिन उनकी मदद नहीं की जायेगी, वह बख़्शिश तलब करें मगर इन्हें बख़्शा नहीं जायेगा। *(मुकाशफतुल कुलूब)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! आज दुन्या भर के मुसलमान मसाइब व आलाम के भंवर में फंसे हुए हैं, कहीं जायदाद व ममालिक तबाह हो रहे हैं तो कहीं माल व औलाद, ग़र्ज़ यह कि दुन्या भर के मुसलमानों को कहीं भी इत्मिनान की दौलत हासिल नहीं हो रही है, उसकी वाहिद वजह यह है कि हमें यह याद ही न रहा कि हमारा मक़सदे ज़ीस्त क्या है ? और हम यह फ़रामोश कर चुके हैं कि हमें क्यों पैदा किया गया? आज भी अगर हम भलाई का हुकम देना और बुराई से रोकना शुरू कर दें तो परवर्दिगार हम को खोया हुआ वक़ार दोबारा अता फ़रमा देगा और फिर से हम इत्मिनान व सुकून की ज़िन्दगी गुज़ारने लगेंगे। अल्लाह جل جلالہ हम सबको भलाई का हुक्म देने और बुराई से रोकने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

★ सबसे अफज़ल शहीद ★

हज़रत सैय्यदना हसन बसरी رحمۃ اللہ علیہ फ़रमाते हैं कि महबूबे ख़ुदा ﷺ ने फ़रमाया, मेरी उम्मत में सबसे अफज़ल शहीद वह शख़्स है जो ज़ालिम हाकिम के सामने गया, उसे नेकी का हुक्म दिया और बुराई से रोका और इसी वजह से शहीद कर दिया गया तो ऐसे शहीद का ठिकाना जन्नत में हज़रत सैय्यदना हम्ज़ा और हज़रत सैय्यदना इमाम जाफ़र رضی اللہ عنہما के दर्मियान होगा। *(मुकाशफतुल कुलूब)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! ज़ालिम व जाबिर हुक्मरां के सामने कलिमए हक़ कह देना यह कोई मामूली काम नहीं है ! और न ही हर कस व नाकस के बस की बात है। इसी वजह से इसका सिला भी बहुत अज़ीम रखा गया है। अल्लाह के नेक बंदे किसी की परवाह नहीं करते और हक़ बात कहने में ख़ौफ़ महसूस नहीं करते, जैसा कि हमारे अस्लाफ़ की ज़िन्दगी इस बात पर गवाह है। अल्लाह ﷻ हम सबको हक़ कहने, हक़ सुनने और हक़ का साथ देने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये। **آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔**

★ मोमिन पर फ़र्ज़ है ★

प्यारे आक़ा मुस्तफ़ा जाने रहमत ﷺ इरशाद फ़रमाते हैं कि जो भी रसूल दुन्या में तशरीफ़ लाये उनके हव्वारी यानी अस्हाब होते थे जो उस रसूल के बाद अल्लाह ﷻ की किताब और उसके रसूल علیہ السلام की सुन्नत के मुताबिक़ काम करते थे, यहाँ तक कि उन अस्हाब के बाद ऐसे लोग आये जो मिम्बरों पर बैठकर नेक और अच्छी बात तो करते थे लेकिन ख़ूद बुरे मामलात किया करते थे, तो उस वक़्त हर मोमिन पर फ़र्ज़ है और उस पर हक़ है कि ऐसे लोगों के साथ हाथों से जिहाद करे और अगर हाथों से जिहाद न हो सके तो जबान से करे और अगर ज़बान से भी न हो सके तो कमज़ोर ईमान वाला है। *(कीमीयाए सआदत)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! ताजदारे कायनात ﷺ के मज़कूरा फ़रमान की रौशनी में यह बात समझ में आयी कि नेकियों की दावत देने वाला और बुराई से रोकने वाला अगर ख़ूद अपने दामन को नेकियों से नहीं बचाता है और बुराईयों से आलूदा करता है ता हम पर फर्ज़ है कि हम से जिस तरह मुमकिन हो उसकी इस्लाह करें। अगर हाथ से मुमकिन हो तो हाथ से और ज़बान से मुमकिन हो तो ज़बान से। क्योंकि अगर दाइ ख़ूद बे अमली का शिकार होगा तो लोग भी उसके नक़्शे क़दम पर चल पडेंगे और आख़िरकार मुआशरा बुराई के दलदल में फंस जायेगा। अगर दोनों तरीक़े से यानी हाथ और ज़बान से नहीं रोक सकते तो कम से कम उसकी हरकत को दिल से बुरा जाने, कि यह ईमान का सब से अदना दर्जा है। अल्लाह ﷻ की बारगाह में दुआ है कि मौला तबारक व तआला हम पर करम की नज़र फ़रमाये और नेकियों के फ़रोग़ और बुराईयों के सद्दे बाब की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

★ आपस में गाली गलोच ★

सैय्यदना हज़रत अबू हुरैरा رضی اللہ عنہ से मरवी है कि हुज़ूर रहमते आलम ﷺ ने इरशाद फ़रमाया कि जब मेरी उम्मत दुन्या को बड़ी चीज़ समझेगी तो इस्लाम की हैबत उनके दिलों से निकल जायेगी और जब अम्र बिल मअ्रूफ़ को छोड़ देगी तो वही की बरकात से महरूम हो जायेगी और जब आपस में गाली गलोच करेगी तो अल्लाह ﷻ की निगाह से गिर जायेगी। *(तिर्मिज़ी शरीफ)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! आज मुसलमानों में मज़कूरा तीनों ख़ामियां नज़र आती हैं, दुन्या से इतनी महब्बत पैदा हो गयी है कि दुन्या से बढ़कर किसी चीज़ को बड़ी समझते नहीं, बल्कि ऐसा लगता है कि दुन्या में हमेशा रहना है और दुन्या से जाना ही नहीं है ! सारी कुव्वत व तवानाई तलबे दुन्या के पीछे ख़र्च करते हैं। और आख़ेरत फ़रामोशी का हाल तो यह है कि मरने का तसव्वुर और मरकर जवाब देने का तसव्वुर तक दिल से निकल चुका है। आप रोज़ मर्रा की ज़िन्दगी में नुमायां तौर पर यह चीज़ देख रहे होंगे, इसी तरह किसी को बुराई करते देखकर न रोकना और किसी को भलाई की तरफ़ न बुलाना और न भलाई का हुक्म देना यह भी हमारी क़ौम की आदत बन चुकी है और आपस में गाली गलोच भी हमारी पहचान है, बल्कि हमारे बच्चे और औरतें तक गाली गलोच के आदी हैं ! **الا ماشاء اللہ** जिसकी वजह से अल्लाह तआला ने अपनी नज़रों से गिरा दिया है और जब अल्लाह तआला किसी को अपनी नज़रों से गिरा देता है तो फिर कोई उठा नहीं सकता।

आज दुन्या को बड़ी चीज़ समझने की वजह से इस्लाम की हैबत हमारे दिल से निकल गयी है और अम्र बिल मअ्रूफ़ से कोताही की वजह से क़ुरआने मुक़द्दस की बरकतों से महरूम हो गये और गाली गलोच आम होने की वजह से अल्लाह तआला की नज़रों से गिर गये। ख़ुदारा! मज़कूरा तीनों कोताहियों को दूर करें और अपने मुस्तक़बिल को बेहतर बनाने की कोशिश करें। अल्लाह तआला हम सबको तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

★ दुआ क़बूल न होगी ★

उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा رضی اللہ عنہا फ़रमाती हैं कि सरकारे

दो आलम ﷺ एक मर्तबा दौलत कदा पर तशरीफ़ लाये तो मैंने चेहराए अन्वर पर एक ख़ास अषर देखकर महसूस किया कि कोई अहम मामला पेश आया है। हुज़ूर ﷺ ने किसी से गुफ़्तगू न फ़रमाई और वुज़ू फ़रमाकर मस्जिद में तशरीफ़ ले गये। मैं हुजरे की दीवार से सुनने के लिये खड़ी हो गयी कि क्या इरशाद फ़रमाते हैं। आक़ाए दो जहां ﷺ मिम्बर पर तशरीफ़ फ़रमा हुए और हम्द व षना के बाद इरशाद फ़रमाया, **ऐ लोगो ! अल्लाह तआला का इरशाद है कि अम्र बिल मअरूफ़ नही अनिल मुन्किर करते रहो, मबादा वह वक़्त आ जाये कि तुम दुआ मांगो और दुआ कुबूल न हो, तुम मदद तलब करो और तुम्हारी मदद न की जाये।** हुज़ूर शफ़ीउल मुज़नबीन यह कलिमाते मुबारका इरशाद फ़रमाने के बाद मिम्बर से नीचे तशरीफ़ ले आये। *(सुनने इब्ने माजह)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! आज हम जिन मुसीबतों में भी घिरे हुए हैं वह हम सब पर अयां है, हम रोकर दुआएं कर रहे हैं लेकिन हमारी दुआ बाबे इजाबत से टकराती नहीं। हम नुस्रते इलाही का सवाल करते हैं लेकिन अल्लाह तआला की तरफ़ से मदद नहीं मिलती, आख़िर ऐसा क्यों? इस हदीष शरीफ़ में ताजदारे काइनात ﷺ ने उसकी वजह बयान फ़रमा दी है कि हम हक़ बातों का हुक्म और बुरी बातों से रोकने की ज़िम्मेदारी पूरी नहीं कर रहे हैं तो अल्लाह तआला हमारी दुआ क़बूल नहीं फ़रमाता। काश ! क़ौमे मुस्लिम का हर फ़र्द इस ज़िम्मेदारी को निभाने लग जाये तो मौला की रहमत को प्यार आ जाएगा, अल्लाह तआला हम सबकी दुआएं क़बूल भी फ़रमायेगा और ग़ैब से हमारी मदद भी फ़रमायेगा। अल्लाह ﷻ हम सबको तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

آمین بجاہ النبی الکریم علیه افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

★ नेकियों का हुक्म देते रहो ★

मशहूर सहाबीए रसूल हज़रत सैय्यदना अनस رضی اللہ عنہ से रिवायत है कि हमने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह ! ﷺ क्या हमें नेकी का उस वक़्त हुक्म करना चाहिये जब हम मुकम्मल तौर पर नेकियों पर अमल करें और बुराईयों से उस वक़्त रोकना चाहिये जब हम मुकम्मल तौर पर बुराईयों से किनाराकश हो जायें ? रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया, तुम नेकियों का हुक्म देते रहो अगर

चे मुकम्मल तौर पर अमल न कर सको और बुराईयों से रोकते रहो अगर चे तुम मुकम्मल तौर पर गुनाहों से किनारा कश न हो सके हो। *(मुकाशफतुल कुलूब)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! मज़कूरा हदीष शरीफ़ से यह बात समझ में आयी कि नेकी का हुक्म देते रहना चाहिये और बुराई से रोकते रहना चाहिये, इसलिये कि जब नेकी का हुक्म देते रहेंगे तो एक न एक दिन ज़रूर नेकी का ख़्याल भी पैदा होगा और बुराई से रोकते रहेंगे तो दिल ज़रूर बुराई से रूकने को कहेगा। लिहाज़ा हमें हर हाल में अपने दामन को बुराई से रोकना चाहिये और क़ौम को बुराई से रोकने की दावत देना चाहिये और नेकी का हुक्म देना चाहिये। अल्लाह ﷻ हम सबको नेकी का हुक्म देने और बुराई से रोकने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये। **آمین بجاہ النبی الکریم علیه افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔**

★ सब्र का आदी ★

एक नेक शख़्स ने अपने बेटे को नसीहत की कि जब तुम में से कोई नेकियों का हुक्म देना चाहे तो उसे चाहिये कि अपने नफ़्स को सब्र का आदी बनाये और अल्लाह तआला से षवाब की उम्मीद रखे, और जो शख़्स अल्लाह तआला पर एतेमाद करता है वह कभी तकलीफ़ों में मुब्तला नहीं होता। *(मुकाशफतुल कुलूब)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! मज़कूरा वाक़िआ से यह सबक़ हासिल हुआ कि नेकी का हुक्म देते वक़्त किसी भी क़िस्म की फ़िक्र न करें कि लोग क्या सोचेंगे, क्या बोलेंगे? ऐ मज़हबे इस्लाम के पासबानो! राहे दावत व तबलीग़ में आपको बे शुमार परेशानियों का सामना करना पड़ेगा, कभी अंदाज़े दावत का तमस्ख़ुर उड़ाया जायेगा तो कभी उसके मुताबिक़ अमल में कमी वग़ैरह से ताना सुनने की नौबत भी आयेगी, लिहाज़ा हर चीज़ को बर्दाश्त करने का जज़्बा अपने अंदर पैदा करें, सब्र का दामन थामे रखें, हर मुसीबत से अल्लाह महफ़ूज़ रखेगा नीज़ दोनों जहां की बरकतों से नवाज़ेगा, लेकिन ख़बरदार! लोगों के तअना सुनकर नेकी की दावत का काम बंद नहीं करना चाहिये बल्कि हर वक़्त तकलीफ़ को बर्दाश्त करके काम करते रहना है। दोनों जहां की सुर्ख़रूइ अल्लाह तआला अता करेगा। अल्लाह तआला हम सबको हिम्मत और सब्र अता फ़रमाये। **آمین بجاہ النبی الکریم علیه افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔**

★ जन्नत संवारी जाती है ★

हज़रत अबू ज़र ग़फ़ारी رضی اللہ عنہ कहते हैं हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ رضی اللہ عنہ ने सुल्ताने कोनैन صلی اللہ علیہ وسلم से दर्याफ़्त किया, या रसूलल्लाह ! صلی اللہ علیہ وسلم मुश्रेकीन से लड़ने के अलावा भी कोई जिहाद है ? हुज़ूरे अकरम صلی اللہ علیہ وسلم ने इरशाद फ़रमाया, ऐ अबू बकर ! رضی اللہ عنہ अल्लाह तआला की ज़मीन पर ऐसे मुजाहिदीन रहते हैं जो शोहदा से अफ़ज़ल हैं, ज़मीन पर चलते फिरते हैं, रिज़्क़ पाते हैं, अल्लाह तआला मलाइका में उन पर फ़ख़्र करता है, उनके लिये जन्नत संवारी जाती है, जैसे उम्मे सलमा رضی اللہ عنہا को नबी करीम صلی اللہ علیہ وسلم के लिये संवारा गया है। हज़रत सैय्यदना सिद्दीक़े अकबर رضی اللہ عنہ ने पूछा, या रसूलल्लाह ! صلی اللہ علیہ وسلم वह कौन लोग हैं ? शहंशाहे कोनैन صلی اللہ علیہ وسلم ने फ़रमाया, वह नेकी का हुक्म करने वाले, बुराईयों से रोकने वाले, अल्लाह तआला के लिये दुश्मनी और अल्लाह तआला के लिये महब्बत करने वाले हैं। *(मुकाशफतुल कुलूब)*

★ दरिया......और......क़तरा ★

यारेग़ार हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ رضی اللہ عنہ से मरवी है कि रसूले ख़ुदा صلی اللہ علیہ وسلم ने इरशाद फ़रमाया कि कोइ क़ौम ऐसी नहीं है जिसमें गुनाह न होता हो और वह इस बात का इंकार करें कि कोइ अल्लाह तआला उन पर ऐसा अज़ाब नाज़िल करने वाला है जो सब लोगों को अपनी लपेट में ले लेगा। हुज़ूरे अक़दस صلی اللہ علیہ وسلم ने यह भी फ़रमाया है कि तमाम नेक काम जिहाद के मुक़ाबला में ऐसे हैं जैसे बड़े दरया के सामने एक क़तरा और अम्र बिल मअ्रूफ़ (अच्छी बातों) का हुक्म देने के मुक़ाबले में ऐसा है जैसे दरयाए अज़ीम के मुक़ाबले में एक क़तरा। *(कीमीयाए सआदत)*

★ ख़लीफतुल्लाह ★

हज़रत अनस رضی اللہ عنہ फ़रमाते हैं कि जो अच्छी बातों का हुक्म दे, बुराईयों से रोके वह अल्लाह तआला का भी ख़लीफ़ा है और उसके महबूब صلی اللہ علیہ وسلم का भी और उसकी किताब का भी ख़लीफ़ा है। अगर मुसलमानों ने तबलीग़ छोड़ दी तो उन पर ज़ालिम बादशाह मुसल्लत होंगे और उनकी दुआएं क़बूल न होंगी। *(तफसीरे नइमी)*

मेरे प्यारे आक़ा صلی اللہ علیہ وسلم के प्यारे दीवानो! आज पूरी दुनिया में ज़ालिम हुक्मरानों का दौर दौरा है और मुसलमानों पर मुसल्लत होने वाले भी ज़ालिम हुक्मरां हैं। ज़ालिम हुक्मरां की वजह से दुन्या भर में मुसलमानों पर ज़ुल्म व ज़्यादती का तूफ़ान आया हुआ है और बेचारगी का शिकार मुसलमान मुसीबतों का मुक़ाबला अपनी ताक़त व बिसात के मुताबिक़ करता भी है और कहीं लाचार व बेबस होकर ज़ुल्म बर्दाश्त करता नज़र आता है। ज़ालिम हुक्मरानों के मुसल्लत होने की वजह मेरे आक़ा صلی اللہ علیہ وسلم ने जो बताई है वह यह है कि अच्छी बातों के हुक्म देने और बुरी बातों से रोकने की ज़िम्मेदारी से जब मुसलमान कोताही करेंगे तब ऐसा होगा। आज हम देख रहे हैं कि अम्र बिल मअ्रूफ़ से कोताही की वजह से ज़ालिमों के खिलौने बन गये, हमें चाहिये कि हम अम्र बिल मअ्रूफ़ के फ़रीज़ा को सहीह तौर पर अदा करने की कोशिश करें **! انشاء اللہ تعالی** ज़ालिम हुक्मरानों से रिहाई मिल जायेगी। अल्लाह हम सब पर करम की नज़र फ़रमाये। - **آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم**

★ बेहतरीन जिहाद ★

हज़रत सैय्यदना हज़रत अबू बकर رضی اللہ عنہ इरशाद फ़रमाते हैं कि ऐ लोगो! भलाई का हुक्म दो, बुराई से से मना करो, तुम्हारी ज़िन्दगी बख़ैर गुज़रेगी।

सैयेदेना हजरत अली इर्शाद फर्माते हैं कि तब्लीग़ बेहतरीन जेहाद है। *(तफसीरे कबीर)*

मेरे प्यारे आक़ा صلی اللہ علیہ وسلم के प्यारे दीवानो ! बेहतरीन ज़िन्दगी गुज़ारने के लिये सैय्यदना अबू बकर सिद्दीक़ رضی اللہ عنہ ने जो नुस्ख़ा अता फ़रमा दिया वह भलाई का हुक्म देना है और बुराई से रोकना है, यक़ीनन ! ऐसे इंसान की ज़िन्दगी बख़ैर गुज़रती है, क्योंकि लोगों का भला चाहना, उनको अच्छी बातों की तालीम देना और उनके अंदर से बुराईयों की महब्बत को निकालना, उसके लिये कोशिश करना, समझाना, उनकी वजह से लोगों में उस बंदे के लिये महब्बत पैदा होती है, और हर कोई उससे दिली लगाव रखता है, उसके हर काम को आसान करने की कोशिश करता है। आपने देखा होगा कि मुआशरे में ऐसे लोगों की बे पनाह इज्ज़त होती है और हर कोई उनकी ख़िदमत करने को सआदत मंदी समझता है, बशर्ते कि इख़लास से सारा काम करता हो। अल्लाह तआला हम सबको

दावत की ज़िम्मेदारी बहुस्न व ख़ूबी अंजाम देने की तौफ़ीक़ अता करे।

آمين بجاه النبی الكريم عليه افضل الصلوٰة والتسليم۔

★ तीन सौ हूरों से शादी ★

आक़ाए दो जहां ﷺ ने फ़रमाया :–

मुझे उस ज़ात की क़सम जिसके क़ब्ज़ाए कुदरत में मेरी जान है! ऐसा शख़्स (यानी नेकी का हुक्म करने और बुराई से रोकने वाला) जन्नत में तमाम बाला ख़ानों से ऊपर यहां तक कि शोहदा के बाला ख़ानों से भी ऊपर एक बाला ख़ाने में होगा जिस के ऊपर सब्ज़ ज़मरुद के तीन सौ दरवाज़े होंगे और हर दरवाज़ा नूर से मामूर होगा, और वहां पर तीन सो पाक दामन हूरों से उनकी शादी की जायेगी। जब वह किसी एक हूर की जानिब मुतवज्जेह होगा वह कहेगी, आपको वह दिन याद है जब आपने नेकी का हुक्म दिया था और बुराई से रोका था! दूसरी कहेगी, आपको वह जगह याद है जहां आपने अम्र बिल मअ्रूफ़ किया था! *(मुकाशफतुल कुलूब)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! नेकी का हुक्म देनेवाले के लिये अल्लाह तआला ने कितना बुलंद मक़ाम रखा है! शोहदा के बालाख़ानों से भी ऊपर उसके लिये बाला ख़ाना होगा **!سبحان الله** रहमते आलम ﷺ का फ़रमान हक़ है। दावत इललख़ैर के बदले में **! انشاء الله تعالى** जन्नत भी मिलेगी और वह भी बुलंद मक़ामात के साथ, जो भी वादा मेरे आक़ा ﷺ ने फ़रमाया है सब कुछ मिलेगा, आख़ेरत में जब यह सिला मिलेगा तो दुन्या में भी नेकी की दावत का सिला अल्लाह तआला ज़रूर अता करेगा। नेकी की दावत और नेकियों पर अमल और बुराई से नफ़रत और बुराई से रोकने का काम करके देखो! **انشاء الله تعالى** दारैन की इज़्ज़त ज़रूर हासिल होगी। अल्लाह ﷻ हम सबको तौफ़ीक़ अता करे। **آمين بجاه النبی الكريم عليه افضل الصلوٰة والتسليم۔**

★ भलाई की कुंजियां ★

हज़रत सहल बिन सअद رضی اللہ عنہ से रिवायत है कि हुजूर सरवरे कायनात ﷺ ने इरशाद फ़रमाया, यह ख़ैर के ख़ज़ाने हैं और इन ख़ज़ानों की कुंजियां इंसान हैं। उस बंदे को खुश ख़बरी हो जिसको अल्लाह तआला ने ख़ैर ख़्वाही

को खोलने की, बुराई को बंद करने की कुंजी बनाया है। और उस बंदे के लिये हलाकत है जिसको अल्लाह तआला ने बुराई को खोलने और भलाई को बंद करने की कुंजी बनाया है। *(इब्ने माजह)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! मज़कूरा हदीष शरीफ़ से यह बात समझ में आयी कि अगर कोई बंदा भलाई का हुक्म देता है तो गोया वह ख़ैर के ख़ज़ाने खोलता है और बुराई से रोकता है तो गोया उस बंदे को अल्लाह तआला ने बुराई बंद करने की कुंजी बना दिया है। परवर्दिगार ने जब हमको भलाई के ख़ज़ाने की कुंजी बना ही दिया है तो आओ! हम भलाई के ख़ज़ाने को खोलें और बुराई बंद कर दें। अल्लाह तआला हम सबको तौफ़ीक़ अता करे।

آمين بجاه النبی الكريم عليه افضل الصلوٰة والتسليم۔

★ एक साल की इबादत ★

हज़रत सैय्यदना मूसा कलीमुल्लाह عليه السلام ने अर्ज़ किया, ऐ रब! उस शख़्स का बदला क्या होगा जिसने अपने भाई को बुलाया, उसे नेकी का हुक्म दिया और बुराई से रोका? अल्लाह तआला ने इरशाद फ़रमाया कि **उसके हर कलमे के बदले एक साल की इबादत लिख दी जाती है और मेरी रहमत को उसे जहन्नम में जलाते हुए शर्म आती है।** *(मुकाशफतुल कुलूब)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! अल्लाह तआला का कितना करम और एहसान है कि **एक कलमे के एवज़ में एक साल की इबादत का सवाब और करम बालाए करम! ऐसे बंदे को जो भलाई का हुक्म दे और बुरी बातों से राके मौला की रहमत को उसे जहन्नम में जलाने पर शर्म आती है!** क्या अब भी षवाब हासिल करने और जहन्नम से बचने के लिये भलाई का हुक्म नहीं देंगे और बुराईयों से नहीं रोकेंगे? आओ! नियत करें कि **انشاء الله** ज़रूर आज ही से उसकी कोशिश करेंगे। अल्लाह तआला हम सबको तौफ़ीक़ अता करे। **آمين بجاه النبی الكريم عليه افضل الصلوٰة والتسليم۔**

★ पूरा सवाब ★

सैयदना हज़रत अबू हुरैरा رضی اللہ عنہ से मरवी है कि सरवरे कायनात ﷺ ने इरशाद फ़रमाया, हिदायत की तरफ़ बुलाने वाले के लिये उसकी पैरवी करने

वालों के बराबर षवाब मिलता है जब कि उसके षवाब में कुछ कमी नहीं होती, और बुराई की तरफ़ बुलाने वाले को इतना ही गुनाह है जितना उसकी पैरवी करने वालों को होता है जब कि उसके गुनाहों में कुछ कमी नहीं होती। *(मुस्लिम शरीफ)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! नेकी की दावत का फ़ायदा आपने मुलाहेज़ा फ़रमाया। अल्लाहु अक्बर! आपकी नसीहत पर अगर कोई अमल करता रहा, दूसरों तक आपसे सुना हुआ पैग़ाम पहुंचाता रहा और जो जो उस पर अमल करते रहेंगे उन सबका षवाब अल्लाह तआला आप को भी अता फ़रमायेगा। ऐसे ही बुराई के हवाले से फ़रमाया गया कि अगर कोई आपके कहने पर बुरा अमल करता रहा और जो भी उस पर अमल करते रहेंगे, आपको उन सबका गुनाह होगा। अल्लाह तआला हम सबको सिर्फ़ नेकी करने और नेकी का हुक्म देने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये और बुराई से बचने और दूसरों को बचाने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

آمین بجاہ النبی الکریم علیه افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

★ पचास के बराबर षवाब ! ★

अच्छी बात का हुक्म करो और बुरी बात से मना करो, यहां तक कि जब तुम यह देखो कि बुख़्ल की इताअत की जाती है और ख़्वाहिशे नफ़सानी की पैरवी की जाती है और दुन्या को दीन पर तरजीह दी जाती है और हर शख़्स अपनी राय पर घमंड करता है। और ऐसा अम्र देखो कि तुम्हें इससे चारा न हो तो अपने नफ़्स को लाज़िम कर लो यानी खूद को बुरी चीज़ों से बचाओ और अवाम के मामले को छोड़ो। (यानी ऐसे वक़्त में अम्र बिल मारूफ़ ज़रूरी नहीं) तुम्हारे आगे सब्र के दिन आयेंगे जिनमें सब्र करना ऐसा है जैसे मुट्ठी में अंगार लेना। अमल करने वाले के लिये उस ज़माने में अमल करने वाले पचास अश्ख़ास के बराबर अज्र है। लोगों ने अर्ज़ की, या रसूलल्लाह ! इनमें से पचास का अज्र उस एक को मिलेगा? फ़रमाया, मगर तुम में से पचास के बराबर मिलेगा। *(तिर्मिज़ी शरीफ, इब्ने माजह)*

★ अफ़ज़ल जिहाद ★

हज़रत सैयदना अबू सइद ख़ुदरी رضی اللہ عنہ से रिवायत है कि रसूले अकरम

ﷺ ने फ़रमाया **"اَفْضَلُ الْجِهَادِ كَلِمَةُ عَدْلٍ عِنْدَ سُلْطَانٍ جَائِرٍ"** यानी जाबिर हाकिम के सामने कलिमए हक़ बेहतरीन जिहाद है। *(तिर्मिज़ी शरीफ)*

★ रास्ते का हक़ ★

सैयदना अबू सईद खुदरी رضی اللہ عنہ ही से रिवायत है कि आक़ाए दो जहां ﷺ ने इरशाद फ़रमाया, रास्तों में बैठने से बचो ! सहाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن ने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह ! ﷺ हमारे लिये मजलिस क़ायम करना (बाज़ अवक़ात) जरूरी होता है जिसमें हम आपस में गुफ़्तगू करते हैं। रसूले अकरम ﷺ ने इरशाद फ़रमाया, अगर मजलिस क़ायम करना ज़रूरी ही है तो रास्ते का हक़ अदा करो ! सहाबाए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن ने अर्ज़ किया, ऐ अल्लाह के हबीब ! ﷺ रास्ते का क्या हक़ है? हुज़ूर नबी करीम ﷺ ने फ़रमाया, निगाह नीची रखना, लोगों को तकलीफ़ देने से बाज़ रहना, सलाम का जवाब देना और नेकी का हुक्म करना और बुराई से रोकना। *(बुखारी शरीफ)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! आज जहां देखो वहां नौजवानों का टोला नज़र आता है, चौराहे से लेकर स्कूल, कालिज वग़ैरह की सीढ़ियों तक और राहगीर को जुमले कसना, नीज़ औरतों को छेड़ना, आवारगी करना यह सब चीज़ें पायी जाती हैं। मेरे आक़ा ﷺ ने **जो रास्ता पर बैठते हैं उन्हें यह ज़िम्मेदारी बतायी कि अगर बैठना हो तो निगाहें नीचे रखें, लोगों को तकलीफ़ न दें, सलाम का जवाब दें, नेकी का हुक्म दें और बुराई से रोकें। यह रास्ता के हक़ हैं।** अल्लाह तआला हम सबको रास्ते का हक़ अदा करने की तौफ़ीक़ अता करे।

آمین بجاہ النبی الکریم علیه افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

★ बुराई दूर कर दे ★

हज़रत अबू हुरैरा رضی اللہ عنہ से मरवी है कि सरकारे दो जहां ﷺ ने फ़रमाया, तुम में से हर शख़्स अपने मुसलमान भाई का आईना है अगर उसमें कोई बुराई देखे तो उसको दूर कर दे। *(तिर्मिज़ी शरीफ)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! मुसलमान को देखकर इस्लाम की

तालीम का अंदाज़ा लगता है, अगर एक मुसलमान अच्छी तरह ज़िन्दगी गुज़ारे और क़ानूने इलाही का ख़याल रखे और रहमते आलम ﷺ के फ़रमान के मुताबिक़ अमल करे तो उसे देखकर दूसरे मुसलमान को भी संवरने और इस्लाम के उसूल व एहकाम की पाबंदी करने का जज़्बा पैदा होगा। इसलिये फ़रमाया गया कि एक मुसलमान दूसरे मुसलमान का आईना है, जिस तरह आईना पर दाग़ हो तो हम उसको फ़ौरन साफ़ कर देते हैं ता कि हमारा चेहरा साफ़ नज़र आये, ऐसे ही मुसलमान में अगर कोई कमी देखें तो उसको दूर करने की कोशिश करें। अल्लाह तआला हम सबको तौफ़ीक़ अता करे।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

★ सबको अज़ाब ★

चंद मख़सूस लोगों के अमल की वजह से अल्लाह तआला सब लोगों को अज़ाब नहीं करेगा मगर जब कि वहां बुरी बात की जाये और वह लोग मना करने पर क़ादिर हों और मना न करें, तो अब आम व ख़ास सबको अज़ाब होगा। *(शरहुस्सुन्नह)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! आज बहुत सारी जगहों पर हम बुराई रोकने पर क़ादिर होने के बावजूद रोकते नहीं, महज़ इस वजह से कि हमारे और उनके ताल्लुक़ात ख़राब न हों। ख़बरदार! ताजदारे कायनात ﷺ के फ़रमान की रौशनी में अज़ाबे इलाही का जब नुज़ूल होगा तो उसकी ज़द में सिर्फ़ गुनाहगार नहीं बल्कि वह नेको कार भी होंगे जो ताक़त रखने के बावजूद बुराई से रोकने की कोशिश नहीं करते थे। लिहाज़ा अज़ाबे इलाही से बचना हो तो इस्तेताअत के मुताबिक़ ज़रूर बुराई से रोकने की जद्दो जेहद करें। अल्लाह तआला हम सबको अज़ाब से बचाये और बुराई से रोकने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये। آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

★ मलऊन होने का सबब ★

बनी इस्राईल ने जब गुनाह किये तो उनके उलमा ने मना किया, मगर वह बाज़ न आये, फिर उलमा उनकी मजलिसों में बैठने लगे और उनके साथ खाने पीने लगे। उलमा के दिल भी उन्हीं के जैसे कर दिये। और हज़रत सैयदना

दाऊद, हज़रत सैयदना ईसा علیہ السلام की ज़बान से उन सब पर लानत की, इस वजह से कि उन्होंने नाफ़रमानी की और हद से तजावुज़ करते थे। उसके बाद **हुज़ूर ﷺ ने फ़रमाया, ख़ुदा की क़सम! तुम या तो अच्छी बात का हुक्म करोगे और बुरी बातों से रोकोगे और ज़ालिम के हाथ पकड़ लोगे और उनको हक़ पर रोकोगे और हक़ पर ठहराओगे, या अल्लाह तआला तुम सबके दिल एक तरह के कर देगा! फिर तुम सब पर लअ्नत कर देगा जिस तरह इन सब पर लअ्नत की।** *(अबू दाउद)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! लोगों को बुराई से रोकते रहो और अगर तुम्हारी नसीहत से कोई बुराई न छोड़े तो समझाने की कोशिश करो, इसके बावजूद न सुधरने पर उनकी दावतों से परहेज़ करना चाहिये, वरना दिल उनके जैसा ग़ाफ़िल हो जायेगा और ख़ुदा न ख़ास्ता उनकी तरह हम भी अल्लाह तआला की नाराज़गी के हक़दार हो जायेंगे। अल्लाह तआला हम सबको तौफ़ीक़ अता फ़रमाये। آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

★ शहर को ज़ेर व ज़बर कर दिया ★

हज़रत जाबिर رضی اللہ عنہ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया :—

”اَوۡحٰی اللّٰہُ عَزَّوَجَلَّ اِلٰی جِبۡرَئِیۡلَ عَلَیۡہِ السَّلَامُ اَنۡ اُقۡلُبۡ مَدِیۡنَۃً کَذَا بِاَھۡلِھَا فَقَالَ یَارَبِّیۡ اِنَّ فِیۡھِمۡ عَبۡدَکَ فُلَاناً لَمۡ یَعۡصِکَ طَرۡفَۃَ عَیۡنٍ قَالَ فَقَالَ اُقۡلُبۡھَا عَلَیۡہِ وَعَلَیۡھِمۡ فَاِنَّ وَجۡھَہٗ لَمۡ یَتَغَیَّرۡ فِیۡ سَاعَۃٍ قَطُّ“

अल्लाह तआला ने जिब्राईल علیہ السلام की तरफ़ वही की, फ़लां बस्ती को उसके बाशिन्दों पर उलट दो, अर्ज़ गुज़ार हुए कि ऐ रब! इसमें तो तेरा फ़लां बंदा भी है जिसने आंख झपकने की देर भी तेरी नाफ़रमानी नहीं की! फ़रमाया कि उस पर और दूसरे सब पर उलटा दो! क्यों कि मेरी ख़ातिर उसका चेहरा एक साअत भी मुतग़य्यिर नहीं हुआ था। *(बयहक़ी)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! अगर हम ख़ुद तो नेकियों के आदी हैं और लोगों को बुराई करते देखकर उन बुराईयों से घिन न करें और उसे रोकने की जद्दो जेहद अपनी इस्तेताअत के मुताबिक़ न करें तो अल्लाह तआला जो हश्र बुरे लोगों का फ़रमाएगा वही नेक बंदों का भी फ़रमाएगा। लिहाज़ा

हमारी ज़िम्मेदारी यह है कि सिर्फ़ ख़ूद ही नेक न रहें बल्कि अपने साथ साथ पूरे मुआशरे को नेकी के माहोल से आरास्ता करने की कोशिश करें। जैसा कि फ़रमाने बारी तआला है : **"يَا يُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا قُوا اَنْفُسَكُمْ وَ اَهْلِيْكُمْ نَاراً"** ऐ ईमान वालो ! अपनी जानों और अपने अहल व अयाल को जहन्नम की आग से बचाओ। अल्लाह तआला सबको अपनी ज़िम्मेदारी सहीह तौर पर अदा करने की तौफ़ीक़ अता करे। **آمين بجاه النبی الكريم عليه افضل الصلوٰة والتسليم۔**

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! जो ख़ुश बख़्त व ख़ुश नसीब और साहिबे अक़्ल अपनी ज़िन्दगी का मक़सद समझ लेते हैं और दावते दीन का फ़रीज़ा अंजाम देने के लिये कमर बस्ता हो जाते हैं ऐसे ख़ुश नसीब लोगों के लिये उनका पहला क़दम ख़ूद अपनी इस्लाह के लिये होना चाहिये, इसलिये कि जब तक ख़ूद उनके अंदर ख़ास ख़ूबियां और सुन्नते रसूल ﷺ का अमली तौर पर जज़्बा पैदा न होगा उस वक़्त तक उनसे इस बात की उम्मीद नहीं की जा सकती कि वह दूसरों के दिल और दूसरों की ज़िन्दगी बदलने में कामयाब हो सकेंगे। लिहाज़ा ज़रूरी है कि अपने आपकी इस्लाह पर तवज्जोह दी जाये।

एक कामयाब मुबल्लिग़ बनने के लिये ज़रूरी है कि जहां एक तरफ़ वह ज़ाती तौर पर सुन्नते रसूल ﷺ का पाबंद, बा किरदार और नेक हो, वहीं दूसरी तरफ़ उसके अंदर वह सिफ़ात भी मौजूद हों जो उसे इस क़ाबिल बनायें कि वह दूसरों के साथ रहकर इन नेक सिफ़ात को अपने किरदार के ज़रिये दूसरों में मुन्तक़िल कर सके। दावत के रास्ते में यह बहूत अहम ज़रूरत है, इसलिये कि वह शख़्स दावत व तब्लीग़ के मैदान में सहीह माअनों में क़दम नहीं रख सकता और न ही कामयाबी से हमकिनार हो सकता है जो ख़ूद अपने किरदार में अच्छा न हो।

आइये ! मालूम करें कि वह कौन कौन सी सिफ़ात और ख़ूबियां हैं जो दाईये इस्लाम की ज़िन्दगी और उसके किरदार में ऐसी जाज़्बियत और निखार पैदा कर दें कि अवाम उन्हें देखकर उनके साथ रहकर मुहब्बते रसूल और इताअते रसूल में दीवानें हो जाएं। मुलाहज़ा फ़रमाएं कि दाइ की सिफ़ात में एक बड़ी सिफ़्त इख़्लास है।

★ इख़्लास ★

इख़्लास से मुराद यह है कि हमारा उठने वाला हर क़दम महज़ अल्लाह

तआला और उसके हबीब ﷺ की ख़ुशनूदी के लिये हो, शोहरत की ख़्वाहिश, इज्ज़त की तमन्ना, इक़्तेदार की लालच और किसी ख़िताब के ख़्याल से दिल पाक हो। इरशादे रब्बानी है **"وَاللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ اَحَقُّ اَنْ يُّرْضُوْهُ"** और अल्लाह व रसूल का हक़ ज़ाइद था कि इसे राज़ी करते। *(पारा–10, रूकूअ–14, आयत–62, कन्जुल इमान)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! दुन्या तारीफ़ करे या गाली दे इससे बे नियाज़ होकर कि यह तसव्वुर दिल में जमा लें कि हमारा मरना, जीना सब कुछ रब्बे काबा के लिये है और दीने इस्लाम के ग़ल्बे के लिये है। अगर अल्लाह तआला अपने प्यारे हबीब ﷺ के सदक़ा व तुफ़ैल में कामयाबी से हमकिनार फ़रमाये और गुमगश्तगाने राहे हिदायत सही राह पर चल पड़ें और पिछले गुनाहों से ताइब हो जायें तो इसे अपनी ख़ूबी न समझें बल्कि यह अक़ीदा दिल में रहे कि दिलों का फेरने वाला तो ख़ुदाए अज़ीज़ो क़दीर ही है, यह तो उसका करम है कि उसने हमें पैग़ाम पहुंचाने का ज़रिया बनाया। सारी ख़ूबियां तो अल्लाह तआला के लिये लाइक़ हैं।

याद रखें कि कामयाबी और नाकामी मिन जाबिने अल्लाह है, कामयाबी पर अल्लाह तआला का शुक्र अदा करें, नाकामी पर मज़ीद मेहनत और कोशिश करें और नाकामी के असबाब भी तलाश करें, इख़्लास में कमी, अमल में कोताही, मक़सद फ़रामोशी, इबादत में सुस्ती, नाकामी से हमकिनार करने वाली चीज़ें हैं, वरना अल्लाह तआला तो किसी की कोशिश को रायगां नहीं फ़रमाता, चुनांचे उसी का फ़रमान है **"وَاَنْ لَّيْسَ لِلْاِنْسَانِ اِلَّا مَاسَعٰى"** और यह कि आदमी न पायेगा मगर अपनी कोशिश।

नाकामी पर बद दिल या मायूस होना मोमिन का शेवा नहीं ! **انشاء اللّٰه تعالى** ख़ालिक़े कायनात ज़रूर जल्द या देर कामयाबी से हमकिनार फ़रमायेगा, उसका वादा हक़ है **"وَاَنْتُمُ الْاَعْلَوْنَ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ"** तुम्हीं ग़ालिब आओगे अगर ईमान रखते हो। *(पारा–4, सूरए इम्रान–138)*

हम ख़ालिस अल्लाह व रसूल عَزَّوَجَلَّ وَصَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ की रज़ा व ख़ुशनूदी के लिये "सुन्नी दावते इस्लामी" के लिये सरगर्म रहें और सइए पैहम व जहदे मुसलसल से इसे आम व फाइज़ुल् मराम करें। अल्लाह तआला की रज़ा के

अलावा और कुछ हमारा मतलूब व मक़सूद न हो। कुरआन मुक़द्दस में इताअत शिआरी ही के बारे में फ़रमाया गया है : "مُخلِصِينَ له الدين" *(सूरए बैयिनह, आयत–4, पारा–30)*

मालूम हुआ कि हमारा हर अमल अपने मअबूदे बर हक़ के लिये हो, ज़ाहिरी या बातनी तौर पर किसी भी चीज़ का दख़ल न हो, यानी ख़ुदाए बरतर की ज़ात की ख़ुशनूदी के सिवा कोई ग़र्ज़ न हो।

अंबिया عَلَيْهِمُ السَّلَام ने अपनी दावत और तब्लीग़ के सिलसिले में हमेशा यही ऐलान फ़रमाया है कि हम जो कुछ कर रहे हैं उससे हम को कोई दुन्यावी ग़र्ज़ और ज़ाती मुआवेज़ा मतलूब नहीं।

"وَمَا اَسْئَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍاِنْ اَجْرِىَ اِلَّا عَلٰى رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ" और मैं इस पर तुम से कोई अज्र नहीं चाहता मेरा अज्र तो उस पर है जो सारी दुन्या का परवर्दिगार है। हज़रत नूह علیہ السلام ने भी यही ऐलान फ़रमाया :–

"وَيٰقَوْمِ لَا اَسْئَلُكُمْ عَلَيْهِ مَالًا اِنْ اَجْرِىَ اِلَّا عَلَى اللّٰهِ" और ऐ मेरी क़ौम ! में तुम से इस दौलत का ख़्वाहां नहीं मेरी जज़ा तो ख़ुदा ही पर है। *(पारा–12, सूरए हूद, आयत–28, रूकूअ–3)*

हमारे हुज़ूर ताजदारे कायनात صلی اللہ علیہ وسلم जिनके सदक़ा व तुफ़ैल हमें दाइए दीन होने की इज्ज़त अता की गयी, उनकी क़ल्बी कैफ़ियत को बयान करने का हुक्म अल्लाह तआला ने ख़ूद उन्हें फ़रमाया :–

"قُلْ مَا سَاَلْتُكُمْ مِنْ اَجْرٍ فَهُوَ لَكُمْ اِنْ اَجْرِىَ اِلَّا عَلَى اللّٰهِ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ شَهِيْدٌ"

तुम फ़रमाओ ! मैंने तुम से इस पर कुछ अज्र मांगा हो तो वो तुम्हीं को, मेरा अज्र तो अल्लाह ही पर है और वह हर चीज़ पर गवाह है। *(पारा–22, सबा–6, आयत–47)*

यानी वह अहकमुल हाकिमीन जो आलिमुल ग़ैब व श्शहादह है, वह मेरी नियतों को भी जानता है कि मेरी कोशिश बे ग़र्ज़ और सिर्फ़ अल्लाह के लिये है।

इसी तरह एक और मक़ाम पर मुहसिने आज़म صلی اللہ علیہ وسلم को लोगों को दावते इलाही के मक़सद की वजह बता देने का हुक्म दिया गया :–

"قُلْ مَا اَسْئَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ اِلَّا مَنْ شَآءَ اَنْ يَّتَّخِذَ اِلٰى رَبِّهٖ سَبِيْلًا" यानी तुम फ़रमाओ ! इस पर मैं तुम से कुछ उजरत नहीं मांगता मगर जो चाहे कि अपने रब की तरफ़ राह ले। *(पारा–19, आयत–57, फुर्कान, कन्जुल इमान)*

यानी मेरी इस काविश, जद्दो जेहद की वजह अगर तुम जानना चाहें तो जान लो कि इसके सिवा कुछ नहीं कि तुम लोग हक़ को क़बूल कर लो।

मेरे प्यारे आक़ा صلی اللہ علیہ وسلم के प्यारे दीवानो! मज़कूरा आयतों की रौशनी में यह बात अच्छी तरह ज़ेहन में बैठ गयी होगी कि दावत के काम में इख़्लास सबसे ज़्यादा ज़रूरी है, दुन्या में भी इख़्लास ही कामयाबी की बुनियाद है, कोई बज़ाहिर कितना ही बड़ा नेकी का काम कर ले, लेकिन अगर उस्की नियत के मुताल्लिक़ यह मालूम हो जाये कि उसका मक़सद ज़ाती मुन्फ़अत या शोहरत या नुमाईश था तो उस काम की क़दर व क़ीमत फ़ौरन निगाहों से गिर जायेगी। हमें सैयदी सरकार आला हज़रत, इमामे इश्क़ो महब्बत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी رحمۃ اللہ علیہ का यह शेअर :–

काम वह ले लीजिये तुमको जो राज़ी करे।
ठीक हो नामे रज़ा तुम पे करोड़ों दुरूद।

हमेशा दिल व दिमाग़ में बसाए रखना चाहिये। अल्लाह तआला अपने हबीब صلی اللہ علیہ وسلم के सदक़ा व तुफ़ैल इख़्लास की दौलत से मालामाल फ़रमाये और दावते दीन का जज़्बा अता फ़रमाये। **آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔**

★ फ़िक्रे इस्लामी ★

मेरे प्यारे आक़ा صلی اللہ علیہ وسلم के प्यारे दीवानो ! मुबल्लिग़ के लिये यह भी ज़रूरी है कि लोगों को दीन की बातें समझाते हुए यह बात बताये कि दीन महज़ चंद रसूमात के मजमूआ का नाम नहीं है, बल्कि मुबल्लिग़ को चाहिये कि वह अपनी गुफ़्तगू में इस्लाम का ऐसा तआरुफ़ पेश करे कि सामेईन के दिलों में इस्लाम का तसव्वुर पूरे निज़ामे ज़िन्दगी की हैसियत से बैठ जाये, हमारी फ़िक्र ख़ालिस इस्लामी फ़िक्र हो, हमारी फ़िक्र व सोच में कहीं से ग़ैर इस्लामी फ़िक्र दाख़िल न होने पाये। हमें हर वक़्त इस बात का ख़्याल रखना चाहिये कि इस्लाम एक मुकम्मल निज़ामे हयात है, ज़िन्दगी का कोई गोशा उसके दायरे से ख़ारिज नहीं, वह अख़लाक़ संवारने का पैग़ाम भी देता है और अद्ल व इन्साफ़ का

क़ानून भी फ़राहम करता है, वह रिज़्क़े हलाल हासिल करने के तरीक़े भी बताता है और उसके उसूल भी मुहय्या करता है। इस्लाम इन्सानी ज़िन्दगी के हर गोशे को सैराब करता है, किसी गोशे को तिश्ना नहीं छोड़ता।

अहकामे इस्लामी की मालूमात फ़राहम करने के लिये कुरआने हकीम और हदीषे रसूलुल्लाह ﷺ से ताल्लुक़ को मज़बूत करना होगा। हमारा मज़हब वहम व गुमान का मज़हब नहीं! अगर अल्लाह तआला ने फ़हम व बसीरत अता फ़रमाई है कि अपने मसाइल ख़ूद कुरआन व हदीष से हल कर सकें तो اَلْحَمْدُ لِلّٰہ ! वरना अल्लाह तआला ने जिन ख़ुश नसीबों को मअरेफ़ते कुरआन व हदीष की दौलत अता फ़रमाई है उनसे इस्तेफ़ादा करें।

फ़िक्रे इस्लामी तिजारत की मंडी से लेकर घरेलू ज़िन्दगी तक छाई हुई रहनी चाहिये और इस पर सद फ़ीसद इत्मिनान होना चाहिये। और इस्लामी फ़िक्र को हर जानिब मुसल्लत करने की तग व दू करनी चाहिये। फ़िक्रे इस्लाम को अमली जामा पहनाने के लिये उलमाए रब्बानिय्यीन से मुलाक़ात, ज़ाहिदीन की हमनशीनी नीज़ इन हज़रात का एहतेराम और उनकी ख़ूबियों की तारीफ़ निहायत ही कार आमद षाबित होगी। औलिया अल्लाह के आस्तानों पर हाज़री और उनके हालाते ज़िन्दगी का मुतालिआ कामयाबी का ज़ीना साबित होगा। انشاء اللّٰہ تعالی !

दुन्या के किसी भी ख़ित्ते में मुसलमान और इस्लाम की सर बुलंदी के लिये क्या होना चाहिये ? या वहां पर मुस्लिम सरगर्मियां क्या हैं? और इस्लाम के लिये क्या हो रहा है ? इसकी मालूमात फ़राहम करने की कोशिश करें। नीज़ तहरीक के इफ़्कार व नज़रियात को लोगों तक पहुंचाने की फ़िक्र हमेशा दामनगीर रहना चाहिये। इसलिये कि हम जिस तहरीक से वाबस्ता हैं उसके ज़रिये इस वक़्त आलमी सतह पर अहयाए सुन्नत और इत्तेबा रसूल ﷺ की तब्लीग़ का काम शुरू हो चुका है। दुन्या के मुख़्तलिफ़ मुमालिक आज भी बेताबी से दाइयाने दीन का इंतेज़ार कर रहे हैं। فَالْحَمْدُ لِلّٰہِ عَلٰی ذٰلِکَ ! याद रखें! अगर हमने अपने से क़रीब होने वाले मुसलमान भाईयों के इज़हान व कुलूब को इस्लामी फ़िक्र से मुज़य्यन नहीं किया तो इन्दल्लाह ज़रूर हम से मवाख़ेज़ा होगा। लिहाज़ा हम हर आने वाले को संवारने की कोशिश करें, नीज़

इसे अच्छी तरह तहरीक को समझने का मौक़ा दें। पहली मुलाक़ात में न आप उसे मुकम्मल समझ सकते हैं और न वह आपको। वह जितना आप से क़रीब होगा उसके दिल में इस्लाम की महब्बत पुख़्ता होती चली जायेगी और मआसी व मनाही से नफ़रत पैदा होती चली जायेगी।

इस तरह साथियों में इज़ाफ़ा होगा और फिर तिश्नगाने दीन को महब्बते रसूल ﷺ के जाम से सैराब भी किया जा सकेगा और यह उसी वक़्त मुमकिन है जब हम ख़ूद अपनी दावत का अमली नमूना बन जायें।

"सबसे अच्छा इंसान वह है जिसकी नज़र अपने ऐबों पर हो और उन्हें दूर करने की कोशिश करे।"

हम एक तबीब के फ़राइज़ अंजाम दें कि तबीब मरीज़ से नहीं मर्ज़ से नफ़रत करता है। अगर मुआशरे में कोई मुसलमान बुराईयों में ज़िन्दगी गुज़ार रहा है उसकी दुन्या और आख़ेरत संवारने के लिये कोशां हो जायें और वह कैसा भी है, प्यारे आक़ा ﷺ का उम्मती तो है!

अगर आपकी नसीहत से उसकी इस्लाह हो जाये तो जब तक वह दीवानगीए इश्क़े रसूल ﷺ में जियेगा, आपके लिये बख़्शिश की दुआयें करता रहेगा।

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! इस्लाम अपने मानने वालों को यही सबक़ देता है कि तुम अपने भाई के लिये वही पसंद करो जो अपने लिये पसंद करते हो। हम सोचते हैं कि जन्नत के हक़दार बन जायेंगे तो अपने इन इस्लामी भाईयों को भी इश्क़ की राह पर गामज़न करने की कोशिश करें जो बुराईयों में मुब्तला हैं। और अगर अल्लाह तआला ने कुछ इबादत की तौफ़ीक़ दी है तो इस पर नाज़ां न हों बल्कि ख़ुदा का शुक्र अदा करें।

★ ईषार ★

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! क्या सहाबाए किराम के ईषार और कुरबानी के वाक़िआत आपकी निगाहों के समाने हैं? क्या उन पाक बाज़ लोगों ने अपनी जान, माल और औलाद को जरूरत पड़ने पर राहे ख़ुदा में कुरबान नहीं किया? ग़ौर फ़रमाइये! ख़लीफ़ए अव्वल हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ رضی اللہ عنہ के ईषार व कुरबानी के जज़्बए सादिक़ पर कि एक मर्तबा अल्लाह के प्यारे हबीब

ﷺ ने सहाबा से माल की कुरबानी तलब फ़रमाई तो यारे ग़ार हज़रत सिद्दीक़ अपने घर की सारी जायदाद लेकर हाज़िर हो गये ! सरकार ﷺ ने पूछा, अबू बकर ! क्या छोड़ कर आये हो? सिद्दीक़े अकबर رضی اللہ عنہ के जवाब पर कुरबान जाओ ! अर्ज़ करते हैं कि घर में अल्लाह और रसूल को छोड़ आया हूं। गोया आप यूं फ़रमा रहे थे :

परवाने को चिराग़ बुलबुल को फूल बस।
सिद्दीक़ के लिये है ख़ुदा का रसूल बस।

लिहाज़ा एक मुबल्लिग़ की बावक़ार ज़िन्दगी के लिये ज़रूरी है कि बवक़्ते ज़रूरत ईषारो कुरबानी पेश करने में सुस्ती न करें। इससे मालूम हुआ कि मुबल्लिग़ की बहुत सी सिफ़्तों में एक अहम सिफ़्त ईषार व कुरबानी भी है।

याद रखें : दुन्या में कोई भी निज़ाम बग़ैर ईषार व कुरबानी के क़ाइम न हो सका ।अगर हम ऐशकदों में बैठकर इस्लाम काइम करना चाहते हैं तो ऐसा हरगिज़ नहीं हो सकता। दीन की राह में जान, माल और वक़्त की कुरबानी देना दीन पर कोई एहसान नहीं बल्कि उस कुरबानी को कुबूल करना रब तआला का हम बंदों पर एहसान है, इसलिये की ख़ुदा की ज़ात बेएब है और हम उसकी बारगाह में अपनी जानिब से ऐबदार नज़राना पेश करते हैं, क्यों कि हम तो सरासर ख़ताकार हैं, फिर भी उसका अज़ीम एहसान है कि अपने दीन के काम के लिये उसने हमें तौफ़ीक़ मरहमत फ़रमाई और इस राह में आने वाली मुसीबतों का हमने खंदा पेशानी से इस्तक़बाल किया और सब्र व शुक्र की राह पर गामज़न रहे, यहां तक कि वक़्त आने पर हमने अपनी जान आफ़रीं के सुपुर्द कर दी तो यह हमारी ज़िन्दगी की मेअराज होगी। इस लिये कि जो बिस्तर पर मरते हैं वो मर जाते रहें, और जो उस्की राहमें जान देते हैं वो जान देकर भी ज़िन्दा रहते हैं और दाइमी अज्र के हक़दार होते हैं। यह बात ज़ेहन में रहे कि राहे ख़ुदा में दी गयी कुरबानी के ज़ाएअ् होने का तो सवाल ही नहीं होता, यहां तो अज्र ही अज्र है।

बल्कि हक़ीक़त तो यह है कि हमारी जान और हमारा माल सब कुछ तो अहकमुल हाकिमीन की अमानत है। जैसा कि रब तआला कुरआन मजीद में इरशाद फ़रमाता है :–

"اِنَّ اللّٰهَ اشۡتَرٰی مِنَ الۡمُؤۡمِنِیۡنَ اَنۡفُسَهُمۡ وَاَمۡوَالَهُمۡ بِاَنَّ لَهُمُ الۡجَنَّةَ"

यानी बेशक ! अल्लाह ने मुसलमानों से उनके माल और जान ख़रीद लिये उसके बदले पर उनके लिये जन्नत है। *(सूरए तौबा)*

हम तो दर हक़ीक़त इन दोनों चीज़ों (जान व माल) की निगरानी के लिये हैं, जहां जहां के लिये हमें उनके इस्तेमाल का हुक्म मिला है वहां वहां इनको इस्तेमाल करें ता कि यौमे हिसाब शरमिन्दगी न हो, रुसवाई न हो। अगर हम अमानते इलाही की ज़िम्मेदारी को बहुस्न व ख़ूबी अंजाम दे चुके तो ख़ालिक़े जन्नत के वादे के मुताबिक़ जन्नत के हक़दार बन जायेंगे।

★ इल्म ★

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! मुबल्लिग़ दावते दीन के अज़ीम जज़्बे को लेकर अपनी और अपने इस्लामी भाईयों की इस्लाह का अज़ीम काम अंजाम देने में हर तरह की कुरबानियां दे रहा हो और दाइ की बहुत सी सिफ़ात का पाबंद भी हो गया हो तो मुबल्लिग़ को दावत के निज़ाम को आगे बढ़ाने के लिये एक अहम ज़रूरत इल्म की भी है। रहमते आलम ﷺ के फ़रमान के मुताबिक़ इल्मे दीन हमारा बेहतरीन साथी है, इरशादे रिसालत है **"عَلَیۡکُمۡ بِالۡعِلۡمِ فَاِنَّ الۡعِلۡمَ خَلِیۡلُ الۡمُومِنِ"** इल्म को अपने ऊपर लाज़िम कर लो कि इल्म बेहतरीन दोस्त है।

इल्म ऐसा दोस्त है जो क़ब्र की तारीक वादी में फ़रिश्तों के लिये भी काम आता है, दाई से मुख़ातब की काफ़ी उम्मीदें वाबस्ता होती हैं। सामईन अपनी मुख़्तलिफ़ परेशानियों का हल दीन के दायरे में चाहते हैं ।अगर उनकी परेशानियों का ईलाज कुरआन व हदीष की रौशनी में न किया गया तो वह तश्ना चले जायेंगे, इस तरह अज्र से महरूमी होगी, लिहाज़ा मुबल्लिग़ को हमेशा तहसीले इल्म में सरगर्दा रहना चाहिये ।कभी अपने आपको मुकम्मल न समझे कि हमारे और आपके आक़ा व मौला ﷺ का फ़रमान है :–

"اُطۡلُبُوا الۡعِلۡمَ مِنَ الۡمَهۡدِ اِلَی اللَّحۡدِ" मां की गोद से लेकर क़ब्र की गोद तक इल्म हासिल करते रहो।

हमारा दफ़्तर हो या मकान उसकी ज़ीनत दीनी किताबों से हो, न कि क़ीमती

शो पीस से, और यह किताबें बराए ज़ीनत न हों बल्कि बराए मुतालिआ हों, और मुतालिआ बराए मुतालिआ न हो बल्कि बराए अमल हो। यही तक़ाज़ाए दीने मतीन व मन्शाए शरअे मुबीन है।

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! रोज़ मर्रा के मामूलात में से कुछ वक़्त मख़सूस कर लो जो तहसीले इल्म या मुतालिआ के लिये हो और इल्मे नाफ़ेअ के लिये दुआ करो। और ताजदारे कायनात ﷺ की सुन्नत समझ कर इल्म में इज़ाफ़ा की दुआ करते रहो और अर्ज़ करो कि ऐ मेरे रब! मुझे इल्म ज़्यादा दे! **انشاء اللہ تعالی!** रहमते आलम ﷺ का सदक़ा मिल जायेगा। फ़राइज़ की अदायगी के बाद इबादात में सबसे बेहतरीन इबादत इल्म हासिल करना है।

हुज़ूर हाफ़िज़े मिल्लत अल्लामा अब्दुल अज़ीज़ मुहद्दिषे मुरादाबादी عَلَيْهِ الرَّحْمَةُ وَ الرِّضْوَانُ इरशाद फ़रमाते हैं कि दाइयाने दीन के लिये बेहतरीन वज़ीफ़ा किताबों का मुताला है। और हुज़ूर सैयद आले मुस्तफ़ा इरशाद फ़रमाते हैं कि दाइयाने दीन को रोज़ कम से कम दीनी किताबों के दो सौ सफ़हात का मुतालिआ करना चाहिये।

याद रहे! कुरआन व सुन्नत की रौशनी में इल्म के बग़ैर दावत का काम भटकना और भटकाना है। कुरआने हकीम का तर्जुमा कंजुल ईमान, कुतुबे अहादीष व तफ़सीर, तारीख़े इस्लाम, सीरते ताजदारे कायनात ﷺ उलमाए अहले सुन्नत बिल ख़ुसूस आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा मुहद्दिषे बरैलवी عَلَيْهِ الرَّحْمَةُ وَ الرِّضْوَانُ की तस्नीफ़ करदा किताबों का मुतालिआ ज़रूर करें। बुज़ुर्गों की सीरत और उनके वाक़िआत और उनकी किताबों का भी मुतालिआ करें। याद रहे कि कुरआन मुक़द्दस की रौशनी में बुज़ुर्ग तर वही है जो साहिबे तक़्वा हो। चुनांचे रब तआला का फ़रमान है **"اِنّ اَکرَمکُمْ عِندَاللّٰہِ اَتْقٰکُمْ"** बेशक! अल्लाह के यहां तुम में ज़्यादा इज्ज़त वाला वह जो तुम में ज़्यादा परहेज़गार है। *(कन्ज़ुल इमान, सूरए हुजुरात, पारा–26, रूकूअ–14, आयत–12)*

और तक़्वा बग़ैर इल्म के नहीं हो सकता, चाहे वह दर्सगाह से मिले या मिन जानिब अल्लाह मिले या बुज़ुर्गों की नज़र से मिले। अपनी ज़िन्दगी इस राह में लगा दो ता कि इल्म की रौशनी के ज़रिआ दुन्या को उजाले में ला सको।

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! इल्म की अहम ज़रूरत को पूरा

करने के लिये आपकी सहूलत के पेशे नज़र हम मन्दर्जा ज़ैल किताबों की फ़ेहरिस्त बता रहे हैं जिनके मुतालिए से न सिर्फ़ इल्म बढ़ेगा बल्कि अक़ीदा और ईमान भी मज़बूत होता चला जायेगा। अल्लाह तआला अपने हबीब ﷺ के सदक़ा व तुफ़ैल हमारे दिलों में मुतालिआ का शौक़ पैदा फ़रमाए और हमें इल्मे नाफ़ेअ अता फ़रमाये। **آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم**-

★ बराए मुता लिआ ★

- **कंजुल ईमान**.................... ज़रूरी
- **बहारे शरीअत हिस्सा अव्वल**.................... ज़रूरी
- **तम्हीदे ईमान**.................... ज़रूरी
- **क़ानूने शरीअत**.................... ज़रूरी
- **तजल्लीउल यक़ीन**.................... ज़रूरी
- **सुरूरुल कुलूब**.................... ज़रूरी
- **जज़्बुल कुलूब**.................... ज़रूरी
- **बहारे शरीअत हिस्सा १६**.................... ज़रूरी
- **अख़बारुल अख़्यार मुतरजिम**.................... ज़रूरी
- **तकमीलुल ईमान**.................... ज़रूरी
- **तहक़ीक़ात अव्लव व दोम**.................... ज़रूरी
- **फ़तावा अफ़्रीक़ा**.................... ज़रूरी
- **सीरते रसूल (अरबी)**
- **सीरतुल मुस्तफ़ा**
- **मुबारक रातें**
- **मुकाशफतुल कुलूब**
- **कीमियाए सआदत**
- **नफ़हातुल् उन्स, बज़्मे औलिया**
- **अज़्मते वालिदैन**
- **जन्नती ज़ेवर (बराए ख़्वातीन)**

★ अमल ★

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! दाइए दीन के अवसाफ़ में बहुत नुमायां वस्फ़ उस का अपना ज़ाती अमल है और यही वस्फ़ दावत की राह में मुआविन होता है। मुबल्लिग़ का अमल ख़ूद एक दावत है इसलिये कि इल्म बग़ैर अमल के ऐसे ही है जैसे दरख़्त बग़ैर फल के। यह कितनी बड़ी मुनाफ़िक़त होगी कि हम कहें कुछ और करें कुछ ! ख़ालिक़े कायनात ﷻ ने इरशाद फ़रमाया, "اَتَأْمُرُوْنَ النَّاسَ بِالْبِرِّ وَتَنْسَوْنَ اَنْفُسَكُمْ" यानी क्या लोगों को भलाई का हुक्म देते हो और अपनी जानों को भूलते हो !

हमारे लिये ज़रूरी है कि हम जो दावत लोगों को दें उस दावत का अव्वलीन मुख़ातब अपनी ज़ात को बनाएं। अपने वजूद को मुकम्मल इस्लामी वजूद में रंग डालें, हमारा एक एक अमल इस्लाम के दायरे में हो। अगर हमने अपनी ज़ात को दावत से महरूम रखा और सारी कायनात में दीन की दावत पहुंचाने में सर गरदां रहे तो यह अपनी दावत का मज़ाक़ उड़ाना नहीं तो और क्या है? और खुली हुई मुनाफ़िक़त नहीं तो और क्या है? और ऐसा करने में दारैन में रुसवाई के अलावा और क्या हाथ आयेगा ?

दाइ का किरदार क़ौम के लिये नमूनाए अमल होता है। दाइ की बे अमली और सुस्ती को दलील बनाकर अगर कोई जाहिल बे अमल का शिकार हो गया तो अंजाम कितना ख़तरनाक होगा उसका अंदाज़ा बख़ूबी लगाया जा सकता है। अल्लाह तआला हम सबको अपने हबीब ﷺ के सदक़ा व तुफ़ैल में दारैन की रुसवाई से बचाये। - آمین بجاہ النبی الکریم علیه افضل الصلوٰۃ والتسلیم

★ अच्छी सोहबत ★

अल्लाह ﷻ कुरआन मजीद में इरशाद फ़रमाता है :–

"يٰاَيُّهَاالَّذِيْنَ اٰمَنُوااتَّقُوااللّٰهَ وَكُوْ نُوَامَعَ الصّٰدِقِيْنَ"

अय ईमानवालो ! अल्लाह से डरो और सच्चों के साथ हो जाओ। *(सूरए तौबा, पारा–11, रूकूअ–4, आयत–118, कन्ज़ुल इमान)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! दाइ के लिये ज़िन्दगी में यह वस्फ़ जिसको हम अच्छी सोहबत कहते हैं बे पनाह ज़रूरी है, क्यों कि दाइ को देखने वाले लोग उसके माहोल को, कुर्ब व जवार को यानी दाइ के साथ उठने बैठने

वाली सोहबत पर गहरी निगाह रखते हैं, अगर उनकी निगाहों को दाइ सोहबत में रहने वाले नेक, पारसा, बा किरदार, अफ़राद हैं तो ख़ूद बख़ूद अवाम पर ऐसे दाइ की दावत का अषर नुमायां होने लगता है। और यही दीन का मक़सूद भी है। इल्म पर अमल की तरफ़ उभारने वाली चीज़ सालेहीन की सोहबत है, अच्छी सोहबत की बुनियाद पर अच्छा जज़्बा पैदा होता है। तहरीक के कामयाब और ज़्यादा बा अमल साथियों की तरफ़ नज़र होनी चाहिये और उनकी सोहबत से इस्तेफादा करना चाहिये। ता कि कुजरवी, कोताही और नफ़्स की शरारतों से बचने का हुनर पैदा हो सके। हक़ बात और अच्छाई को कुबूल करने में ताम्मुल नहीं करना चाहिये कि यह सआदतमंदों की निशानी है बे जा ज़िद, हठधर्मी, तबाही का पेश ख़ेमा है।

चंद साअत सोहबते बा औलिया
बेहतर अज़ सद साला ताअते बे रिया

उलमाए बा अमल की सोहबत से ज़रूर इस्तेफ़ादा करना चाहिये और उनके दर्स में शिर्कत के लिये वक़्त निकालना चाहिये ता कि कुरआन व हदीष के रमूज़ व अस्रार से वाक़िफ़ियत हासिल हो, इसलिये कि हिकमत व दानाई की एक बात कभी अर्साए दराज़ के लगे हुए ज़ंग को दूर करने का सबब बन जाती है। ऐसी महफ़िलों से इज्तेनाब करें जहां ज़मीर को जगाने के बजाए सुलाया जाता हो ता कि तज़ीओ अवक़ात करने वालों में शुमार न हो और दिल मुर्दा न हो।

याद रखें ! दर्स और महफ़िल से मुराद उलमाए हक़ अहले सुन्नत की महफ़िल और दर्स है, वरना वो लोग जिनके दिल का दिया बुझ चुका हो ऐसों की ज़बान से क़ील व क़ाल बे मक़सद होगा, इसलिये कि अंधेरों का मुसाफ़िर उजाला नहीं दे सकता।

★ इस्तेक़ामत ★

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! दावते दीन की राह में इस्तेक़ामत भी एक अहम वस्फ़ है, दाइ की ज़िन्दगी में कामयाब दावत की बुनियाद मुबल्लिग़ के काम में दिलचस्पी के साथ साथ इस्तेक़ामत ही मंज़िले मक़सूद तक पहुंचाने में मददगार होती है। इस राह में हज़ार तकलीफ़ हो फिर भी दावत

का काम किसी सूरत से न रुके न सुस्त हो, क्यों कि दीन की राह में आज़माईश व इबतेला से भी गुज़रना पड़ता है, कभी आलाम व मसाइब के पहाड़ टूट पड़ते हैं। और कभी अपने पराये की तअना ज़नी क़ल्ब व जिगर में लरज़ा पैदा कर देती है, कभी दाइयाने दीन को ख़रीदने की कोशिश की जाती है, कभी मकर व फ़रेब के जाले इस तरह बुन दिये जाते हैं कि आदमी उसको समझ तक नहीं सकता। कभी मुसलसल तग व दू के बावजूद ख़ातिर ख़्वाह कामयाबी न मिलने पर तबीयत में इन्तेशार पैदा हो जाता है। ग़र्ज़ कि मुख़्तलिफ़ तरीक़ों से दाइए दीन आज़माया जाता है, लेकिन कामयाब वही दाइए दीन हो सकता है जिसके पाए सिबात में लग्ज़िश न आये बल्कि तूफ़ान अपना रुख़ मोड़ दे, तअना देने वाले सोचने पर मजबूर हो जायें कि इसे दावत से किसी सूरत में नहीं रोका जा सकता। इस्तेक़ामत का मुज़ाहिरा करने वाले को ! انشاء الله تعالى अहकमुल हाकिमीन की मदद मिलेगी।

अल्लाह तआला का वादा है "وَكَانَ حَقّاً عَلَيْنَا نَصْرُ الْمُؤْمِنِيْنَ" हमारे ज़िम्मे करम पर है मुसलमानों की मदद फ़रमाना। *(सूरए रूम, पारा–21, रुकूअ–8, आयत–47, कन्ज़ुल इमान)*

और आप देखेंगे कि जो मुख़ालफ़त के पहाड़ तोड़ रहे थे वही दस्त व बाज़ू बन कर दीन को फ़रोग़ देने में मुआविन षाबित होंगे, कोई भी तहरीक बग़ैर इस्तेक़ामत के कामयाबी से हमकिनार नहीं हो सकती।

★ मुहब्बते रसूल ★

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! यह वस्फ़ ईमान का कमाल है। आम मोमिन की ज़िन्दगी में यह वस्फ़ पाया जाना ज़िन्दा रुह की अलामत है क्यों कि इस वस्फ़ का तअल्लुक़ ईमान से है। तो अगर आम मोमिन की ज़िन्दगी में इस वस्फ़ का होना ज़रूरी है तो दाइ की ज़िन्दगी में आम आदमी के मुक़ाबले में यह वस्फ़ बदर्जाए उत्तम होना लाज़मी है। यह वस्फ़ जितना ज़्यादा पाया जायेगा दावत में उतना ही दर्द, निखार और ताषीर पैदा होती जायेगी और असल बात तो यह कि इस्लाम का बुनियादी मक़सद भी यही है कि मोमिन का दिल महब्बते रसूल का ख़ज़ाना होना चाहिये। चुनांचे ज़ाते रिसालते मआब ﷺ से महब्बत किस हद तक होनी चाहिये। ख़ुद पैग़म्बरे

इस्लाम ﷺ की ज़बाने फ़ैज़ तर्जमान से सुनिये। इरशाद फ़रमाते हैं "لا يُؤْمِنُ اَحَدُكُمْ حَتّٰى اَكُوْنَ اَحَبَّ اِلَيْهِ مِنْ وَّالِدِهٖ وَوَلَدِهٖ وَالنَّاسِ اَجْمَعِيْنَ" तुम में से कोई शख़्स मोमिन नहीं हो सकता जब तक कि मैं उसके मां बाप, उस की औलाद और बक़िया तमाम इंसानों के मुक़ाबले में उसके नज़दीक ज़्यादा महबूब न हो जाऊं।

सहाबाए किराम और औलियाए किराम عليهم الرضوان मे इताअते इलाही व इताअते रसूल ﷺ का जो अज़ीम जज़्बा था उसकी वजह क्या थी ? उसकी सबसे बड़ी वजह यह थी कि आप अपने प्यारे आक़ा ﷺ से बे पनाह मुहब्बत करते थे और उन्हें हमेशा यह ख़ौफ़ अमन गीर रहता कि महब्बत रुसवा न होने पाये। कोई यह न कहे कि आशिक़े रसूल ﷺ ऐसा कर रहा है। लिहाज़ा रसूले आज़म ﷺ की महब्बत को ख़ूब ख़ूब अपने दिल में जा गज़ीं कर लो और यह महब्बत ज़िक्रे रसूल ﷺ से पैदा होती है। महब्बते रसूल ﷺ में इज़ाफ़ा के लिये मोजिज़ात व कमालाते हुज़ूरे अकरम ﷺ का मुतालिआ करें और उनका ज़िक्र करें। नीज़ ख़ालिक़े कायनात ने जिस तरह क़ुरआन मजीद में अपने प्यारे महबूब ﷺ की शान बयान की है और जो आदाबे बारगाहे रसूले अकरम ﷺ के बयान फ़रमाये हैं उन्हें अच्छी तरह से पढ़ें। आला हज़रत का रिसाला तजल्लियुल यकीन और शयख अब्दुल हक़्क़ मुहद्दिष दहेल्वी की किताब जज़्बुल क़ुलूब का मुतालिआ भी इसके लिये बहुत मुफीद है।

इसी तरह इश्क़े रसूल ﷺ में मज़ीद इज़ाफ़ा व पुख़्तगी के लिये नअते पाक बेहतरीन ज़रिया है। महब्बते रसूल ﷺ हमारे दिल में किस क़दर है इसको जांचने का बेहतरीन आला यह है कि जब कोई काम अहकामे रसूल ﷺ से टकराता हो या हुज़ूर ﷺ की नाराज़गी का सबब बनता हो अगर चे इस में माल की फ़रावानी, ज़ाहिरी इज्ज़त व शोहरत व बुलंदी हासिल होती हो, उसकी तरफ़ क़दम बढ़ने से रुक जायें तो सज्दए शुक्र बजा लायें कि अल्लाह तआला ने अपने महबूब ﷺ की महब्बत से आपके सीने को मुनव्वर कर दिया है और अगर क़दम फिसल जायें तो डरना चाहिये कि जिस महब्बत का तक़ाज़ा हम से अल्लाह तआला और उसके हबीब ﷺ ने किया है वह महब्बत तकमील तक नही पहुंची।

आइये चंद सहाबाए किराम رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْنَ की कैफ़ियते महब्बते रसूल ﷺ को पढ़ें ता कि दावत की राह में हमारे हौसले बुलंद हों और हुसूले महब्बते रसूल ﷺ आसान हो जायें।

हज़रत ज़ैद बिन ख़ालिद رضی اللہ عنہ रिवायत करते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फ़रमाते सुना कि अगर मुझे अपनी उम्मत के मशक़्क़त में पड़ने का अंदेशा न होता तो मैं लोगों को हर नमाज़ के वक़्त मिस्वाक का हुक्म देता। उसके बाद हज़रत ज़ैद बिन ख़ालिद رضی اللہ عنہ का मामूल हो गया कि जब नमाज़ के लिये मस्जिद में आते तो उनके कान पर मिस्वाक होती जिस तरह कि लिखने वाला क़लम को कान पर रख लेता है। जब नमाज़ का इरादा फ़रमाते तो मिस्वाक दांतों में घुमा लेते और फिर उसे अपनी जगह पर रख लेते। *(तिर्मिज़ी शरीफ़, अबू दाउद)*

हज़रत ज़ैद बिन ख़ालिद رضی اللہ عنہ को रहमते आलम ﷺ ने मिस्वाक का हुक्म नहीं दिया था बल्कि अपनी पसंद का इज़हार फ़रमाया था तो हज़रत ज़ैद رضی اللہ عنہ ने अपने महबूब ﷺ की पसंद को ज़िन्दगी भर के लिये महबूब बनाये रखा ता कि रज़ाए महबूब हासिल हो जाये। यह कैफ़ियत हज़रत ज़ैद رضی اللہ عنہ ही की नहीं बल्कि हर सहाबीए रसूल رضی اللہ عنہ का यही हाल था।अल्लाह तआला हमें भी उन उश्शाक़ाने रसूल का सदक़ा अता फ़रमाये।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

हज़रत इब्ने हन्ज़ला रिवायत करते हैं कि एक मौक़ा पर हुज़ूरे अकरम ﷺ ने फ़रमाया कि ख़ज़ीम असदी رضی اللہ عنہ क्या ख़ूब ही आदमी हैं! सिवा दो बातों के, कि उनके गेसू बहुत लंबे हैं और तेहबंद घसिटता है।

हज़रत खज़ीम رضی اللہ عنہ को जब यह बात मालूम हुइ तो उन्होंने उस्तरा लिया और गेसू काट कार कान के बराबर कर लिए और तेहबंद पिंडली तक चढ़ा दी। *(अबू दाउद)*

महब्बते रसूल का जो षबूत सहाबाए किराम رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْنَ ने पेश किया है कोई पैरोकार किसी मुक़्तदा के लिये पेश नहीं कर सकता। और यही वजह थी कि अहले बातिल सहाबए किराम رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْنَ की दीवानगीए इश्क़े रसूल ﷺ के आगे सर ख़मीदा नज़र आते या मैदान छोड़कर

भाग जाते।

लिहाज़ा हर दाइए दीन के लिये ज़रूरी है कि महब्बते रसूल ﷺ को अपने दिल में ख़ूब ख़ूब जा गर्जी कर ले और जैसा कि पहले बयान हुआ कि महब्बते रसूल ﷺ ज़िक्रे रसूल व नअते रसूल ﷺ से पैदा होती है। और फिर बात भी सही है कि जो जिससे ज़्यादा महब्बत करता है उसी का ज़िक्र ज़्यादा करता है। हम रसूलुल्लाह ﷺ से दावाए महब्बत करते हैं तो हमें भी आप ही का ज़िक्र कषरत से करना होगा।

वारफ़तगी और शेफ़तगी की ज़रूरत है, महब्बते रसूल में मर मिटने की ज़रूरत है, हां! ज़िक्रे रसूल से फ़िक्रे रसूल ﷺ की तरफ़ क़दम बढ़ाइये! फ़िक्रे रसूल से सुन्नते रसूल ﷺ की तरफ़ क़दम बढ़ाइये, सुन्नते रसूल ﷺ से अज़मते रसूल ﷺ की तरफ़ क़दम बढ़ाइये, क़दम बढ़ाते रहिये और फिर सारे आलम पर छा जाइये।

★ क्या ऐसा हो सकता है ? ★

हां! हो सकता है और हुआ भी है। जागने की ज़रूरत है, बेदार होने की ज़रूरत है। सुलाने वालों के हाथ झटकने की ज़रूरत है, सब तौक़ गले से निकाल कर रहमते आलम ﷺ की गुलामी का तौक़ डालने की ज़रूरत है।

फिर देखिये टाट पर बैठकर भी शाही की जा सकती है। बस, आक़ाए कोनैन ﷺ के बन जाइये, सारा जहां आपका बन जायेगा।

★ बद मज़हबों से.....दूरी ★

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! आज कल कई एक बद मज़हब फ़िर्के पाये जाते हैं, जैसे देवबंदी, वहाबी, सुलेह कुल्ली वग़ैरह ग़ैर मुक़ल्लिद, जमाअते इस्लामी, तबलीग़ी जमाअत, राफ़ज़ी, क़ादयानी, मुन्केरीने हदीष इन से घिन करें और इनको अपने से दूर रखें, हदीष पाक में है कि हुज़ूरे अक़दस ﷺ ने इरशाद फ़रमाया: **"اِيَّاكُمْ وَاِيَّاهُمْ لَا يُضِلُّوْنَكُمْ وَلَا يُفْتِنُوْنَكُمْ"** "उनसे दूर रहो और उन्हें अपने से दूर रखो, कहीं यह तुम्हें गुमराह न कर दें और कहीं यह तुम्हें फ़ित्ने में न डाल दें।

एक दूसरी हदीषे पाक में है कि न उनके साथ खाओ, न पियो, न बैठो, न शादी

ब्याह करो, न उनके साथ नमाज़ पढ़ो, न उनके जनाज़ा की नमाज़ पढ़ो, उनकी सोहबत ईमान व अक़ीदा के लिये ज़हरे क़ातिल है। लिहाज़ा उनसे दूर रहना ज़रूरी है। यूं ही झूठ, चुग़ली, ग़ीबत, हसद, बुग़्ज़, कीना, हिर्स व तमअ, लड़ाई झगड़ा वग़ैरह से लाज़मी तौर पर इज्तेनाब करें। अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त की बारगाह में दुआ है कि अल्लाह तआला हमें बुराईयों के साथ साथ बद मज़हबों की सोहबत से बचने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

★ बाहमी उख़ुव्वत ★

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! यूं तो जुम्ला मोमिनीन आपस में भाई भाई हैं लेकिन चूं कि आपकी ज़िम्मेदारी मोमिन भाई से बढ़कर है और चूं कि आप इस तहरीक से वाबस्ता हैं जिसकी दावत का मक़सद बाहमी उख़ुव्वत है इसलिये एक ही तहरीक के साथ होने की वजह से यह भाईचारगी का रिश्ता और ज़्यादा क़वी है, तहरीक के साथियों में भाईचारगी के निज़ाम को क़ायम करें। एक दूसरे की ख़ुशी और एक दूसरे के ग़म में शरीक हों। अपने साथियों की ख़ूबी बयान करें और कमी को दूर करें, एक दूसरे की ऐबजोई के बजाए ऐबपोशी करें। रिश्तए उख़ुव्वत को तोड़ने की हज़ार कोशिशें की जायें लेकिन सीसा पिलाई दीवार की तरह खड़े हो जायें। अगर किसी साथी से दिल आज़ारी हुई हो तो अफ़्व व दरगुज़र की आदत इख़्तेयार करें। अपने कामयाब साथियों के लिये दिल में महब्बत पैदा करें और उनकी ख़ूबियों को अपनाकर ख़ूद भी कामयाबी की राह के मुसाफ़िर बनें। यह न हो कि शैतानी वसाविस के शिकार होकर दिल में कीना रखें। अपने हर भाई की तकलीफ़ व राहत का ख़्याल रखें। तहरीकी मफ़ाद पर अपनी ज़ाती मफ़ाद को कुरबान करें और हज़ार कामयाबी की मंज़िलों को छू लेने के बावजूद अपने रवैया में कहीं से कोई भी तकब्बुर या अपने दीगर साथियों को हक़ीर समझने का जज़्बा पैदा न होने दें।

और यह बात हमेशा दिल व दिमाग़ में रहे कि कोई भी शख़्स अगर महब्बत व एतेमाद करता है तो दीन की वजह से करता है, वरना हम में और आम इंसान में कोई फ़र्क़ नहीं। लिहाज़ा ख़ात्मा बिलख़ैर से पहले अपने आपको कामयाब तसव्वुर करना यह सरासर बेवकूफ़ी है। अल्लाह तआला हम सबको शैतानी

शरारतों से महफ़ूज़ रखें और इख़्लास व भाईचारगी के साथ दीने मतीन की ख़िदमत की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

बाहमी उख़ुव्वत को पारा पारा करने वाली चीज़ तमस्ख़ुर है जिसकी मज़म्मत कुरआन व हदीष में सराहत के साथ मौजूद है। लिहाज़ा इससे परहेज़ करें।

★ ख़ुश तबई ★

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! एक साफ सुथरे मुआशरे के लिये ख़ुश मिज़ाजी व ख़ुश तबई ज़रूरी है, लिहाज़ा कभी कभी अच्छा मज़ाह कर लिया करें इससे साथियों में महब्बत व उख़ुव्वत पैदा होगी। ख़ुश मिज़ाज बनें, सबसे अच्छी तरह पेश आयें। एक दाइ के लिये इसकी भी ज़रूरत है, मगर याद रहे! मज़ाह की गुंजाईश कहीं हमें बे अदब न बना दे। लिहाज़ा उसके सिलसिले में भी सुन्नते रसूल को मद्दे नज़र रखना दाइ के लिये ज़रूरी है। हुज़ूरे अकरम ﷺ के मज़ाह व मलाअेबत के आषार व बरकात हद व शुमार से बाहर हैं इनका शुमार व हस्र ना मुमकिन है।

एक मर्तबा हज़रत उम्मे सलमा رضی اللہ عنہا की साहबज़ादी जो कि हुज़ूर की रबीबा (सौतेली बेटी)थीं वह हुज़ूर के पास आइं। आप गुस्ल फ़रमाकर तशरीफ़ लाये ही थे, आपने मज़ाहन उनके चेहरे पर पानी की छीटें मारीं उसकी बरकत से आपके चेहरे पर वह हुस्न व जमाल रू नुमा हुआ जो कभी न ढला। शबाब का आलम हमेशा बर क़रार रहा।

हुज़ूरे अकरम ﷺ के मज़ाही वाक़ियात में से एक वाक़िया यह भी है कि देहातों में एक शख़्स ज़ाहिर नाम का था कभी कभी वह हुज़ूर ﷺ की ख़िदमत में देहात की ऐसी तरकारियां हदिया में लाया करता जो हुज़ूर को पसंद थीं। और हुज़ूर ﷺ उसकी वापसी पर शहर की चीज़ें मषलन कपड़ा वग़ैरह इनायत फ़रमाया करते थे और हुज़ूर उसको दोस्त रखते थे। फ़रमाते थे कि ज़ाहिर से हमारा दोस्ताना है, हम उसके शहरी दोस्त हैं। एक रोज़ हुज़ूर बाज़ार तशरीफ़ ले गये तो ज़ाहिर को खड़ा देखा। हुज़ूर ने उसकी पुश्त पर अपना दस्त मुबारक उसकी आंखों पर रखकर उसे अपनी जानिब खींचा और लिपटा लिया। सीना मुबारक उसकी पुश्त से मिला दिया। वह हुज़ूर को नहीं देख सका था, कहने लगा यह कौन है? और जब पहचान लिया कि हुज़ूर हैं तो अपनी पुश्त

को हुज़ूर के सीनए मुबारक से और मिला दिया और नहीं चाहा कि जुदा हो। फिर हुज़ूर ने फ़रमाया कि कोई है जो इस गुलाम को ख़रीदे। ज़ाहिर ने कहा, या रसूलल्लाह! ﷺ आपने मुझे खोटा और कम क़ीमत माल तसव्वुर किया है। फ़रमाया, तुम ख़ुदा के नज़दीक तो खोटे नहीं हो बल्कि गिरां बहा हो।

★ फ़िक्रे आख़ेरत ★

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! इख़लास व लिल्लाहियत के साथ मिल्लते इस्लामिया को दीन की क़दरों से आशना करने के साथ साथ फ़िक्रे आख़ेरत का जज़्बा भी दिलों में पैदा करना चाहिये इसलिये कि जब दाई के दिल व दिमाग़ पर आख़ेरत की फ़िक्र छाई हुई होगी तो वह अपने हर अमल की जज़ा व सज़ा क्या मिलेगी उसका ख़्याल रखेंगे बल्कि आला दर्जा के मुख़लिस दाइ के दिल व दिमाग़ पर अज्र का तसव्वुर नहीं रहता बल्कि हमेशा मौला की रज़ा और अपने गुनाहों पर नज़र रहती है।

अजिल्ला सहाबाए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْنَ फ़िक्रे आख़ेरत में लरज़ां व तरसां रहते। हुज़ूर सैयदना अबू बकर सिद्दीक़ رضی اللہ عنہ इरशाद फ़रमाते हैं कि अगर अहकमुल हाकिमीन क़यामत में यह इरशाद फ़रमाये कि मैंने सबको बख़्श दिया सिवाए एक के, तो मैं सोचूंगा कि वह एक मैं ही हूं। और अगर क़यामत में रब इरशाद फ़रमाये कि सबको जहन्नम में डाल दो सिवाए एक के तो मैं सोचूंगा कि वह एक में ही हों।

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! आप अंदाज़ा लगा सकते हैं बाद अज़ अंबिया सब से अफज़ल व आला ज़ात की फ़िक्रे आख़ेरत का? अगर हमें अपने मक़सद में कामयाब होना है तो कामयाब दाइयों की राहों और तरीक़ों पर ही चलना होगा, अच्छों के सदक़े में अल्लाह جل جلالہ हमें अच्छा और कामयाब बना देगा। آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

★ इताअते अमीर ★

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! इताअते अमीर यह वस्फ़ भी दाइ की कामयाबी की अलामत है। तहरीक के हर साथी को अपने अमीर पर कामिल एतेमाद हो, उसकी सलाहियतों पर भी भरोसा हो और इख़्लास व दिल सोज़ी

की तरफ़ से भी इत्मिनान हो, उसकी इज़्ज़त व एहतेराम के जज़्बे से सीना सरशार हो।

याद रहे कि अमीर पर एतेमाद के बग़ैर तहरीक का कारवां मंज़िल की तरफ़ रवां दवां होने के बजाए थककर रास्ते ही मैं बिखर जाता है। माज़ी की सैकड़ों तहरीकें इस बात की शाहिद हैं जो अदमे एतेमाद की वजह से कामयाबी से नाकामी में तबदील हो गयीं, दीन और शरीअत के मामले में अमीर की इताअत लाज़मी है।

अमीर की तरफ़ से सादिर होने वाले अहकाम को फ़ैसलाकुन जाने। उन में बहष व मुबाहेषा या नुक्ताचीनी की ज़रा भी गुंजाईश न समझे। और ख़ैर ख़्वाही में कोई दक़िका फ़र व गुज़ाश्त न करे, अगर कोई फ़ैसला नज़रे षानी के लाइक़ हो तो मश्वरा ज़रूर दे और अपनी राय से ज़रूर मुतल्लअ करे, लेकिन अदब और इख़्लास का दामन हाथों से न छूटने पाये।

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के दीवानो! याद रखें! अमीर और दावत के सिपाहियों के दर्मियान एतेमाद और इत्मिनान की जितनी उम्दा और खुशगवार फ़ज़ा क़ायम होगी तहरीक का निज़ाम उतना ही मज़बूत होगा। इसलिये कि मोहसिने आज़म ﷺ ने इरशाद फ़रमाया :—

"اِنْ اُمِرَعَلَیْکُمْ عَبدٌ مُجدَعٌ یَقُوْدُ کُمْ بِکِتَابِ اللّٰہِ فاسْمَعُوالَہٗ وَاَ طِیعُوْا"

अगर कोई नकटा गुलाम भी अमीर बना दिया जाये जो तुम्हें किताबुल्लाह के मुताबिक़ ले चले तो तुम उसकी बात सुनो और इसकी इताअत करो। *(मुस्लिम शरीफ)*

एक और मक़ाम पर रसूले आज़म ﷺ ने इरशाद फ़रमाया :—

"اِسْمَعُوا وَ اَطِیْعُوا وَاِنْ تُعُمِّلَ عَلَیْکُمْ عبدٌ حَبْشِیٌّ کَانَ رَأْ سُہٗ زَبِیْبَۃً"

सुनो और इताअत करो अगर चे एक हबशी गुलाम भी तुम्हारा ज़िम्मेदार बना दिया जाये जिसका सर किशमिश की मानिंद छोटा और बदनुमा हों।

मज़कूरा बाला अहादीष की रौशनी में पता चला कि अगर इंसानों की सर बराही की ज़िम्मेदारी किसी ऐसे शख़्स के सुपुर्द हो जो किसी वजह से जचता न हो। बहुत से लोग उसे अपने से कमतर और हक़ीर समझते हैं, उसके बावजूद जो दावत की इज्तेमाइयत और उसके वसीअ तर मफ़ाद के पेशे नज़र ऐसा

शख़्स भी अमीर मुक़र्रर किया गया हो तो उसकी इताअत को लाज़िम क़रार दिया गया। यही नहीं बल्कि अगर अमीर की तरफ़ से किसी ऐसे रवैये का इज़हार हो और वह कोई ऐसा तर्ज़े अमल इख़्तेयार करे जो आदमी को ना पसंद हो ऐसी हालत में भी अमीर की इताअत से हाथ खींचना रवा नहीं है। यह कि वह रवैया ख़िलाफ़े शरअ हो तो उस पर तंबीह का हर मुसलमान को हक़ है।

जो शख़्स अमीर का मुतीअ व फ़र्मांबर्दार न रहा और मर गया तो ऐसे शख़्स की मौत हुज़ूर ﷺ ने जहालत की मौत फ़रमाया है। इरशादे रिसालत है : जो कोई अपने अमीर की तरफ़ से कोई ऐसी चीज़ देखे जो उसे नापसंद हो तो चाहिये कि सब्र करे इसलिये कि जो कोई जमाअत से एक बालिश्त दूरी भी इख़्तेयार करता है और उसको उसी हालत में मौत आ जाती है तो उसकी मौत जाहिलयत की मौत होती है। यह चंद अवसाफ़ जिनका अब तक ज़िक्र हुआ हर दाइए दीन की ज़िन्दगी में, किरदार में, अमल में बे पनाह ज़रूरी हैं। इन अवसाफ़ के अेलावा भी कुछ और अवसाफ़ हैं जो तफ़सील तलब हैं। हमने इसी पर इक्तेफ़ा किया है। रब्बे क़दीर हमारे ज़ाहिर व बातिन को एक फ़रमा दे और दाइ की ज़िन्दगी में सहाबाए किराम की ज़िन्दगी का सदक़ा अता फ़र्माए।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

बुजुर्गों की नसीहतें

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! बुजुर्गाने दीन के अक़्वाल, अफ़आल हमारे लिये नमूनाए अमल होते हैं और उन्हीं की रौशनी में हम मंज़िले मक़सूद तक पहुंच सकते हैं, इसलिये हम चंद बुजुर्गाने दीन के अक़्वाले ज़र्री पेश करते हैं, मुलाहज़ा हों :—

बाबे मदीनतुल इल्म हज़रत अली کرم اللہ تعالیٰ وجہہ الکریم **के अक़्वाले ज़र्री :-**

01. किसी हरीस को अपना मुशीर न बनाओ क्यों कि वह तुम से वुस्अते क़ल्ब और इस्तिग़ना छीन लेगा।
02. किसी जाह पसंद को अपना मुशीर न बनाओ क्यों कि वह तुम्हारे अंदर हिर्स व हवस पैदा करके तुम्हें ज़ालिम व आमिर बना देगा।

03. तंगदिली, बुज़दिली और हिर्स इंसान से उस का ईमान सलब कर लेती है।
04. ऐसे मुशीर बेहतर हैं जिन्हें ख़ुदा ने ज़हानत व बसीरत दी जिनके दामन दाग़े गुनाह और किसी जुल्म की इआनत से पाक हो।
05. कारख़ानए क़ुदरत में फ़िक्र करना भी इबादत है।
06. ज़माने के लम्हे लम्हे में आफ़ात पोशीदा हैं, मौत एक बेख़बर साथी है
07. नदामत गुनाहों को मिटा देती है और गुरूर नेकियों को।
08. जल्द माफ़ करना इंतेहाई शराफ़त, और इंतक़ाम में जल्दी इंतेहाई रज़ालत है।
09. बुरा आदमी किसी के साथ नेक गुमान नहीं करता कि वह हर एक को अपनी तरह समझता है।
10. मीज़ाने आमाल को ख़ैरात के वज़न से भारी करो।
11. जो लोग मुरदार दुन्या के सबब भाई बंद बने ऐसी भाई बंदी दुन्या की हिर्स में एक दूसरे पर हमले करने से मानेअ नहीं होती।
12. जो शख़्स अपने अक़्वाल में हयादार है वह अपने अफ़आल में भी हयादार है।
13. जिसके अपने ख़यालात ख़राब होते हैं वह दूसरों के हक़ में ज़्यादा बदज़न होता है।
14. दुन्यादारों की दोस्ती मामूली और अदना बात पर टूट जाती है।
15. नेक काम में किसी के पीछे होना बुरे काम की पेशवाई से बेहतर है।
16. क़दर मिले या न मिले तू अपनी नेकी बंद न कर।

इमामे आज़मे अबू हनीफ़ा رضی اللہ عنہ **की अनमोल नसीहतें :-**

जिन पर दाइए दीन अगर अमल करे तो दारैन में सुर्ख़रूई हासिल हो सकती है।

01. तुम बादशाह से ऐसा अमल रखो जैसे आग से रखते हो, कि उससे दूर रहते हुए फ़ायदा उठाओ, बहुत क़रीब न जाओ।
02. अवाम के सामने सिर्फ़ उसी बारे में बात करो जिस के बारे में तुमसे सवाल किया जाये, उनके सामने न हंसो न मुस्कुराओ।

03. बाज़ारों में ज़्यादा न जाओ और दूसरों की दुकानों में न बैठो, और न रास्तों मे ठहरो।

04. घर के अलावा किसी जगह बैठना चाहो तो मस्जिद में जाकर बैठो।

05. ससुराल में बीवी के साथ रिहाईश इख़्तेयार न करो, और दो बीवियों को एक घर में जमा न करना।

06. हक़ गोई में किसी की परवाह न करना ख़्वाह बादशाहे वक़्त क्यों न हो।

07. ख़ूद को अवाम और अपने गिर्द व पेश वालों से ज़्यादा इबादत गुज़ार बनाओ।

08. अहले इल्म के शहर में जाओ तो आमी बन कर जाओ ता कि वहां के अहले इल्म तुम को अपना हक़ मारने वाला न समझ लें और न उनकी मौजूदगी में मस्अला बताओ न उन्के असातज़ा पर तअन करो।

09. ज़्यादा हंसने और औरतों के साथ ज़्यादा बातें करने से दिल मुर्दा होता है।

10. रास्ते चलने में वक़ार व तमानियत इख़्तेयार करो। कामों में जल्दी न करो और जो शख़्स तुम्हें पीछे से पुकारे उस पर तवज्जोह न दो।

11. गुफ़्तगू में ज़्यादा चीख़ पुकार न करो, लोगों के दर्मियान अल्लाह ﷻ का ज़िक्र करो ता कि लोग सीखें।

12. नमाज़ों के बाद अपने लिये कुछ विर्द मुक़र्रर कर लो, हर माह चंद दिन रोज़े के लिये ख़ास कर लो और अपने नफ़्स की निगरानी करो।

13. जब तुम्हें किसी की बुराई का इल्म हो तो उस पर तज़किरा न करो। उसकी कोई अच्छाई तलाश करो और उसी से उसका ज़िक्र करो।

14. कुरआने मुक़द्दस की तिलावत, कुबूरे मशाइख़ और मुबारक मक़ामात की ज़ियारत कषरत से करो।

15. बुख़्ल से गुरेज़ करना, क्योंकि बुख़्ल इंसान को रुसवा करता है और न लालची और झूठा बनना, बल्कि अपनी मुरव्वत हर मामले में महफ़ूज़ रखना।

16. बड़ों के होते हुए उस वक़्त तक नशिस्त में बरतरी इख़्तेयार न करो जब तक वह तुम्हें ख़ूद पेश कश न करें।

मज़कूरा नसीहतें उन सौ नसीहतों में से हैं जो इमामे आज़म अबू हनीफ़ा رضی اللہ عنہ ने इमाम अबू यूसुफ़ رضی اللہ عنہ को इरशाद फ़रमाई थीं।

सैयदना ग़ौषे आज़म शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी رضی اللہ عنہ के अक़्वाले ज़र्री :-

01. महब्बते दुन्या के अलावा अगर हमारा और कोई गुनाह न भी हो फिर भी हम दौज़ख़ के हक़दार हैं।

02. दुन्यादार दुन्या के पीछे दौड़ रहे हैं और दुन्या अहलुल्लाह के पीछे।

03. रहने के लिये मकान, पहनने के लिये लिबास और पेट भरने के लिये रोटी और बीवी दुन्यादारी नहीं, दुन्यादारी यह है कि दुन्या ही की तरफ़ मुंह हो और अल्लाह की तरफ़ पीठ।

04. मख़्लूक़ तीन तरह की हैं : फ़रिश्ता, शैतान और इंसान। फ़रिश्ता ख़ैर ही ख़ैर है और शैतान शर ही शर है, इंसान महफ़ूज़ है जिसमें ख़ैर व शर दोनों हैं, जिस पर ख़ैर का ग़ल्बा होता है वह फ़रिश्तों में मिल जाता है और जिस पर शर का ग़ल्बा हो वह शैतान से।

05. मोमिन अपनी अहल व अयाल को अल्लाह पर छोड़ता है और मुनाफ़िक़ ज़र व माल पर।

06. अपनी मुसीबत को छुपाओ अल्लाह तआला की कुरबत नसीब होगी।

07. ज़िक्र जब क़ल्ब में जगह बना लेता है तो बंदा अल्लाह तआला की याद में दाइमी मश्गूल हो जाता है चाहे उसकी ज़बान ख़ामोश हो।

08. तंहाई में ख़ामोश रहना बहादुरी नहीं। मजलिस में ख़ामोश रहने की कोशिश करो।

09. बेहतरीन अमल, लोगों को देना है, लोगों से लेना नहीं।

10. लोगों के सामने मोअज़्ज़ज़ रहो, अगर अपना इफ़लास ज़ाहिर करो तो लोगों की निगाहों से गिर जाओगे।

11. मयाना रवी निस्फ़ रिज़्क़ है और अच्छे अख़लाक़ निस्फ़ दीन।

12. वह इंसान कितना कम नसीब है जिसके दिल में जानदारों पर रहम की आदत नहीं।

13. तेरे सब से बड़े दुश्मन तेरे बुरे हम नशीन हैं।

14. तमाम अच्छाईयों का मजमूआ अमल सीखना, अमल करना और दूसरों को सिखाना है।

15. जो अल्लाह तआला से आशना हुआ उसने ख़ल्के़ ख़ुदा के साथ तवाज़ोअ का बर्ताव किया।

16. जब अमल में तुझे ह़लावत न मिले, यूं समझ तूने उसे किया ही नहीं।

17. जब तक तेरा इतराना और गुस्सा करना बाक़ी है ख़ूद को अहले इल्म में शुमार न कर।

18. ज़ालिम अपने जुल्म से मज़लूम की दुन्या ख़राब करता है और अपनी आख़ेरत।

19. अक़्लमंद पहले क़ल्ब से मश्वरा करता है फिर ज़बान से बोलता है।

20. इस बात की कोशिश कर कि गुफ़्तगू का आग़ाज़ तेरी जानिब से न हो, तू सिर्फ़ जवाब देने वाला रहे।

21. जिसे कोइ ईज़ा न पहुंचे उसमें कोई ख़ूबी नहीं है।

22. बे अदब ख़ालिक़ व मख़लूक़ दोनों का मअतूब व मग़ज़ूब है।

23. मुस्तहिक़ साइल अल्लाह तआला का हदिया है जो बंदे की तरफ़ भेजा जाता है।

24. तू नफ़्स की तमन्ना पूरी करने में लगा है और नफ़्स तुझे बर्बाद करने में।

25. जो नफ़्स को दुरुस्त करना चाहे वह इसे सुकूत और हुस्ने अदब की लगाम दे।

26. मैं ऐसे मशाइख़ की सोहबत में रहा हूं कि इनमें से किसी एक के दांत की सफ़ेदी भी नहीं देखी।

27. बदगुमानी तमाम फ़ायदों के रास्ते को बंद कर देती है।

28. इल्म का तक़ाज़ा अमल है अगर तुम इल्म पर अमल करते तो दुन्या से भागते। क्यों कि इल्म में कोई चीज़ नहीं जो हुब्बे दुन्या पर दलालत करे।

29. अहलुल्लाह के नज़दीक मख़लूक़ की हैसियत औलाद जैसी है।

★ चंद और गुज़ारिशात ★

01. फ़राइज़ व सनन की पाबंदी इनके वक़्तों पर करो।

02. रोज़ाना तिलावते कुरआने मुक़द्दस के लिये कुछ हिस्सा मुतअय्यन कर लो, कोशिश करो कि ख़त्मे कुरआने मुक़द्दस तीन माह से ज़्यादा और तीन दिन से कम न हो।

03. कुरआन की कुछ आयतों का तर्जुमा कंजुल ईमान ज़रूर रोज़ाना पढ़ें साथ ही उसका तफ़सीरी हाशिया भी पढ़ें।

04. ज़बान से सच के अलावा कोई बात न निकले, कभी भूल से भी झूठ न बोलो।

05. वादे के पक्के बनो, हालात कैसे ही क्यों न हों वादा ख़िलाफ़ी से परहेज़ करो।

06. बावक़ार बनो, संजीदगी का दामन हाथों से कभी छूटने न पाये। हां ! दिल आवेज़ तबस्सुम और संजीदा तफ़रीह पर वक़ारे मतानत के ख़िलाफ़ नहीं। अलबत्ता कषरते मज़ाह वक़ार व इज्ज़त को गिरा देता है नीज़ साथियों में बुअद पैदा करता है।

07. हस्सास बनो ! अच्छाई और बुराई का अषर लो (अच्छाई से ख़ुशी और बुराई से रंज हो) तवाज़ोअ और इन्केसारी का दामन हाथों से न छूटे। अलबत्ता चापलूसी और बेग़ैरती से परहेज़ करें।

08. गुस्से में भी सही फ़ैसले की आदत इख़्तेयार करो। किसी की अच्छाईयों को अदावत की निगाह से न देखो चाहे उसकी ज़ात से तुम्हें कितनी ही अज़ीयत पहुंची हो। और न महब्बत में किसी की बुराईयों को अच्छाईयों के तराजू में रखो।

09. हक़ गो बनो चाहे उसकी ज़द तुम्हारी ज़ात या तुमसे मुताल्लिक़ तुम्हारे अज़ीज़ पर ही क्यों न पड़ रही हो।

10. मख़लूक़े ख़ुदा की ख़िदमत में बढ़ चढ़कर हिस्सा लो। ख़िदमत के मौक़े को ग़नीमत जानो। इस पर अल्लाह ﷻ का शुक्र अदा करो। मरीज़ की अयादत करो, परेशान हाल के साथ हमदर्दी करो। और याद रखो ! किये गये एहसान का तज़किरा भी न करो कि रहमते आलम ﷺ के फ़रमान

का मफ़हूम है कि एहसान जताने वाले पर ख़ुदावंदे कुद्दूस क़यामत के दिन रहमत की नज़र न फ़रमायेगा।

11. अफ़्व व दरगुज़र की आदत इख़्तेयार करो, इन्सान और हैवान सबके साथ शफ़क़त करो।

12. इस्लाम के इजतेमाई आदाब का हमेशा खयाल रखो, छोटों पर शफ़क़त और बड़ों की ताज़ीम करो। ऐबजोई से परहेज़ करो। ग़ीबत से ज़बान की हिफ़ाज़त करो, सबसे बेहतर इन्सान वह है जो अपने ऐब तलाश करे।

13. बेहतर से बेहतर लिखने पढ़ने की कोशिश करो, रोज़ाना अख़बार का मुतालिआ नीज़ आलमी हालात का ख़बरों के ज़रिये तर्जुबा करो।

14. मुस्तक़िल तौर पर मआशी जद्दो जेहद जारी रखो अगरचे तुम बे एहतेयाज हो ता कि तुम्हारी ज़ात से लोगों को फ़ायदा पहुंचे और तुम बे सहारों का सहारा बन सको।

15. तुम्हारे अंदर यह जज़्बा ज़रूर हो कि अपनी ड्यूटी निहायत ख़ुश अस्लुबी से अंजाम दे सको। कोताही और ख़िलाफ़ वर्ज़ी से परहेज़ करो।

16. हलाल व जाइज़ पेशे के अलावा कोई नाजाइज़ व हराम पेशे का तसव्वुर भी दिल व दिमाग़ में न आने पाये। ख़्वाह उसके पीछे कितना ही पाकीज़ा मक़सद पोशीदा हो।

17. हुक़ूक़ुल एबाद की अदायगी में हद दर्जा एहतेयात रखो। वालिदैन, अहल व अयाल और रिश्तेदारों के हुक़ूक़ की अदायगी में कोताही दारैन में शर्मिन्दगी का सबब बन जाती है।

18. कारोबार हो या मुलाज़मत अपने माल का कुछ हिस्सा तहरीक के फ़रोग़ के लिये ख़ास करो और गुरबा व मसाकीन के लिये भी मुतअय्यन करो। ख़्वाह तुम्हारी आमदनी थोड़ी ही क्यों न हो।

19. इस्लामी अख़लाक़ के अहया के लिये भरपूर मेहनत करो। हमारा अख़लाक़ बातिल मज़हब वालों से हमें मुमताज़ कर दे और इस्लाम की महब्बत और सच्चाई का यक़ीन लोगों के दिलों में जागुज़ीं हो जाये। अंदाज़े सलाम व कलाम से लेकर तअम व मनाम तक इस्लामी रंग नुमायां हो।

20. आख़ेरत की तैयारी और सज़ा व जज़ा के तसव्वुर को हमेशा अपने ज़ेहन में रखो। याद रखो! दिल में छुपी हुई हर बात को अहकमुल हाकिमीन जानता है। कोई अमल उससे पोशीदा नहीं, चाहे घर की तारीक कोठरी में किया हो या दिन के उजाले में।

21. सेहत का भरपूर ख़्याल रखो। कसल व लाग़िरी से बचने के लिये तिब्बी मुआइना कराओ, हमेशा चाक़ व चौबंद रहने की कोशिश करो, उसके लिये वक़्त पर आराम व तआम अच्छे मुआविन साबित होंगे। और तेज़ मशरूबात से परहेज़ भी मुआविन साबित होंगे। तम्बाकू नोशी, गुटखा, तम्बाकू वाले पान, बकषरत चाये सहत के लिये ज़रर रसां हैं, इन सबसे बचना ज़रूरी है।

22. ताजदारे कायनात ﷺ के एहसानात को हमेशा याद रखो और महब्बते रसूल ﷺ में जीने और मरने का अज़्म रखो।

23. अदायगीए सलात में ज़ौक़ व शौक़ व इत्मिनान का ख़्याल रखो और उम्मत का भरपूर ख़्याल रखो। जमाअत की पाबंदी का भी ख़्याल रखो। जिहाद का जज़्बा ज़रूर रखो ता कि वक़्ते जिहाद राहे ख़ुदा में नज़रानए जां पेश करके कामयाब हो सको।

24. बकषरत तौबा व इस्तिग़फ़ार व दुरूद शरीफ़ का विर्द करो, कबाइर गुनाह तो बहुत दूर है सग़ाइर से भी इज्तेनाब करो। सोने से पहले इह्तेसाब ज़रूर कर लिया करो ता कि दिन भर की अच्छाईयां और बुराईयां सामने आ जायें।

25. वक़्त की क़दर करो इसलिये कि गया वक़्त फिर हाथ नहीं आता। चंद लम्हात भी रायगां न जायें उसका ख़्याल रखो।

26. ज़्यादातर बा वुज़ू रहने की आदत बनाओ कि इससे गुनाहों से बचने और नेकियों को करने का जज़्बा पैदा होता है।

27. बुरे दोस्तों और मआसियत की जगहों के क़रीब तक न जाओ।

28. ज़मीन के एक एक गोशे में तहरीक के काम के लिये कोशां रहो, क़यादत की रहनुमाई में ही क़दम आगे बढ़ाओ। अपने जुम्ला हालात की इत्तेला तहरीक के क़ाइद को देते रहो, उनकी इजाज़त के बग़ैर कोई ऐसा क़दम न उठाओ जो बुन्यादी तौर पर तुम्हारे हालात के साथ साथ तुम्हारे लिये

भी नुक़्सानदेह रहो। तुम्हारी हैसियत एक फ़ौजी सी हो जो बेताबी से अपने कमांडर के हुक्म का इंतेज़ार कर रहा हो। हुक्मे अदूली और क़यादत पर शुब्हा व तहद्दुद तहरीक को बेजान कर देगी और शीराज़ा मुन्तशिर हो जाएगा।

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ ! यह चंद गुज़ारिशात मक्का मुकर्रमा में बैठकर अपने मुख़लिस साथियों के लिये सिर्फ़ रज़ाए इलाही व रज़ाए रसूल ﷺ के लिये तरतीब दी गई है। ता कि तोशए आख़ेरत भी बन जाये और इस्लाम की अज़मत से दुन्या आशना हो सके।

फ़ज़ाइले इल्म व उलमा

اِنَّمَا يَخْشَى اللّٰهَ مِنْ عِبَادِهِ الْعُلَمٰٓؤُا

तर्जुमा : बेशक ! अल्लाह से उसके बंदों में वही डरते हैं जो इल्म वाले हैं।

رَضِينَا قِسْمَةَ الْجَبَّارِ فِينَا ۔ لَنَا عِلْمٌ وَّلِلْجُهَّالِ مَالٌ
فَاِنَّ الْمَالَ يُفْنٰى عَنْ قَرِيْبٍ ۔ وَّاِنَّ الْعِلْمَ بَاقٍ لَّا يَزَالٌ

(हज़रत अली كرم اللہ تعالیٰ وجہہ الکریم ***)***

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَیْکَ یَا رَسُوْلَ اللّٰہِ ﷺ
وَعَلٰی آلِکَ وَاَصْحَابِکَ یَا حَبِیْبَ اللّٰہِ ﷺ

फ़ज़ाइले इल्म

نَحْمَدُہٗ وَنُصَلِّیْ وَنُسَلِّمُ عَلٰی رَسُوْلِہِ الْکَرِیْم

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! इल्म ख़ुदा की एक ऐसी अज़ीम नेअमत है कि जिस नेअमत के होते हुए बंदा नुक़्तए उरूज को पहुंचता है और यही वह इल्म है जो आवारा पेशानी को मअबूदे हक़ीक़ी की बारगाह में बंदगी का अंदाज़ा सिखाता है और फिर इल्म की बुनियाद पर इंसान अपने रब की ऐसी मअ्रेफ़त और ख़शीयत हासिल करता है जिसका ज़िक्र ख़ूद अल्लाह तआला अपने बंदों के हवाले से इरशाद फ़रमाता है :–

"اِنَّمَا یَخْشَی اللّٰہَ مِنْ عِبَادِہِ الْعُلَمٰٓؤُا" "अल्लाह से उसके बंदों में वही डरते हैं जो इल्म वाले हैं।" *(तर्जुमा : कन्जुल इमान)*

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ ! रब के फ़ज़्ल और प्यारे आक़ा ﷺ की अता ने बंदे को इल्म के सबब वह मक़ाम अता फ़रमाया कि बंदा इसी इल्म की दौलत आने वाली नसलों तक पहुंचाने का अलम बरदार बना दिया गया और इस ज़िम्मेदारी को निभाने वाले को तक़र्रुबे इलाही नीज़ नयाबते रसूल ﷺ के अज़ीम मन्सब से नवाज़ा गया। इल्म के हवाले से कुरआन में बे शुमार आयतें मौजूद हैं जो हमारी ज़िन्दगी को हिदायत के नूर से रौशन कर रही हैं। हम चंद आयतों का ज़िक्र मुनासिब समझ रहे हैं।

★ मोअल्लिमे इंसानियत ★

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! दुन्या में इन्सानों की रूश्द व

हिदायत के लिये ख़ालिक़े काइनात ने मोहसिने इंसानियत, सरकारे दो आलम ﷺ को अपना नाइबे मुत्लक़ बनाकर मब्ऊष फ़रमाया ता कि भटकी हुई क़ौम को इल्म व इरफ़ान के ज़रिआ राहे हिदायत मिल सके। चुनांचे कुरआने पाक ख़ूद इरशाद फ़रमाता है :–

"رَبَّنَا وَ ابْعَثْ فِیْھِمْ رَسُوْلًا مِّنْھُمْ یَتْلُوْا عَلَیْھِمْ آیٰتِکَ وَ یُعَلِّمُھُمُ الْکِتٰبَ وَ الْحِکْمَۃَ وَ یُزَکِّیْھِمْ اِنَّکَ اَنْتَ الْعَزِیْزُ الْحَکِیْمُ"

तर्जुमा : ऐ रब हमारे ! और भेज उनमें एक रसूल उन्हीं में से कि उन पर तेरी आयतें तिलावत फ़रमाए और उन्हें तेरी किताब और पुख़्ता इल्म सिखाए। और उन्हें ख़ूब सुथरा फ़रमा दे। बेशक ! तू ही है ग़ालिब हिकमत वाला। *(सूरए बकरह, आयत–129, पारा–1, कन्जुल इमान)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! इस आयते करीमा में इस बात की वज़ाहत कर दी गयी है कि नबी आख़िरुज़्ज़मा ﷺ के बअषत के तीन मक़ासिद हैं :–

1. कलामुल्लाह की तिलावत फ़रमाकर तौहीद व रिसालत की तब्लीग़ फ़रमाना। 2. इल्म व हिकमत की तालीम फ़रमाना। 3. नुफ़ूसे इंसानिया को गुनाहों और बुराईयों से पाक फ़रमाना। मालूम हुआ कि इल्मे दीन भी वह अज़ीम मक़सद है जिसकी तकमील के लिये ख़ालिक़े काइनात ने अपने महबूबे मुकर्रम ﷺ को दुन्या में मब्ऊष फ़रमाया। लेकिन अफ़सोस सद अफ़सोस ! हम इल्मे दीन से किस क़दर दूर होते जा रहे हैं। हम अपने बच्चों को दुन्यावी उलूम से आरास्ता करने की फ़िक्र तो करते हैं लेकिन नहीं सोचते कि उन्हें उलूमे दीनिया से कैसे आरास्ता किया जाये। अल्लाह तआला हम को इल्मे दीन हासिल करने और बच्चों को दीनी इल्म से आरास्ता करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

★ एक अज़ीम दौलत ★

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! ख़ालिक़े काइनात साहिबे इल्म ही को ज़मीन के लिये मुन्तख़ब फ़रमाता है, इल्म के ज़रिये इंसान को बे शुमार कमालात व मनासिब हासिल होते हैं ता कि वह ज़मीन में पेश आने वाले मसाइल को बख़ूबी हल कर सके। चुनांचे बनी इस्राईल के एक हुक्मरां हज़रत तालूत

का तज़किरा फ़रमाते हुए रब्बे क़दीर ने यूं ज़िक्र फ़रमाया :–

"وَ قَالَ لَهُمْ نَبِيُّهُمْ اِنَّ اللّٰهَ قَدْ بَعَثَ لَكُمْ طَالُوْتَ مَلِكًا۔ قَالُوْا اَنّٰى يَكُوْنُ لَهُ الْمُلْكُ عَلَيْنَا وَ نَحْنُ اَحَقُّ بِالْمُلْكِ مِنْهُ وَ لَمْ يُؤْتَ سَعَةً مِّنَ الْمَالِ۔ قَالَ اِنَّ اللّٰهَ اصْطَفٰهُ عَلَيْكُمْ وَ زَادَهٗ بَسْطَةً فِى الْعِلْمِ وَ الْجِسْمِ۔ وَ اللّٰهُ يُؤْتِىْ مُلْكَهٗ مَنْ يَّشَآءُ وَ اللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ۔"

तर्जुमा : और उनके नबी ने फ़रमाया, बेशक ! अल्लाह ने तालूत को तुम्हारा बादशाह बनाकर भेजा है। बोले, उससे हम पर बादशाही क्यों कर होगी और हम उससे ज़्यादा सल्तनत के मुस्तहिक़ हैं और उसे माल में भी वुस्अत नहीं दी गयी। फ़रमाया, उसे अल्लाह ने तुम पर चुन लिया और उसे इल्म और जिस्म में कुशादगी ज़्यादा दी। और अल्लाह अपना मुल्क जिसे चाहे दे और अल्लाह वुस्अत वाला इल्म वाला है। *(सूरए बकरह, आयत–247, पारा–2, कन्जुल इमान)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! आप ग़ौर करें ! हज़रते तालूत जो कि मामूली कारोबार करते थे, अल्लाह तआला ने उन्हें बनी इस्राईल का बादशाह बना दिया, उन्हें यह अेअ्ज़ाज़ क्यों अता किया गया? क्या उनके पास माल की फ़रावानी थी ? क्या वह बहुत ही आला हसब व नसब वाले थे ? हरगिज़ नही ! बल्कि अल्लाह तआला ने उन्हें सलतनत के लिये मुन्तख़ब फ़रमाया तो उसकी वजह यही है कि उनके अंदर इल्म की अज़ीम दौलत मौजूद थी। वह तबह्हुरे इल्मी से फ़ैज़याब थे जैसा कि मज़कूरा आयते करीमा से वाज़ेह है। यहीं से यह दर्स मिल जाता है कि दुन्या की अज़ीम नेअमत भी इल्म के सदक़े में अता कर दी जाती है। इल्म वह अज़ीम सरमाया है कि जिसके सबब बादशाहतें अता की जाती हैं। आप सोचें ! जो ख़ालिक़े काइनात इल्म की बुनियाद पर सल्तनत अता कर सकता है, क्या वह इल्मे दीन हासिल करने वालों को रोज़गार से महरूम रखेगा? हरगिज़ नहीं ! जो लोग यह सोच रखते हैं उन्हें अपनी फ़िक्र पर नज़रे षानी कर लेनी चाहिये और अल्लाह तआला और उसके रसूल ﷺ की रज़ा की ख़ातिर इल्मे दीन के हुसूल में कोशिश करनी चाहिए। अल्लाह तआला अपने महबूब ﷺ के सदक़ा में हमें तमाम उम्र इल्मे दीन के हुसूल में कोशिश करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

آمین بجاہ النبی الکریم علیه افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

★ फ़ज़्ले अज़ीम ★

अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त इरशाद फ़रमाता है :–

"وَ اَنْزَلَ اللّٰهُ عَلَيْكَ الْكِتٰبَ وَ الْحِكْمَةَ وَ عَلَّمَكَ مَا لَمْ تَكُنْ تَعْلَمُ وَ كَانَ فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكَ عَظِيْماً"

तर्जुमा : और अल्लाह ने तुम पर किताब और हिकमत उतारी और तुम्हें सिखा दिया है कि जो कुछ तुम न जानते थे, और अल्लाह का तुम पर बड़ा फ़ज़्ल है। *(सूरए निसाअ, पारा–5, आयत–113, कन्जुल इमान)*

हज़रत अल्लामा इब्ने राज़ी رحمۃ اللہ علیہ इस आयत की तफ़सीर में फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआला ने फ़रमाया, "और तुम्हें सिखा दिया है कि जो कुछ तुम न जानते थे, और अल्लाह का तुम पर बड़ा फ़ज़्ल है।"

तो अल्लाह ने इल्म को अज़ीम फ़ज़्ल फ़रमाया। *(आयते करीमा* "وَ مَنْ يُّؤْتَ الْحِكْمَةَ فَقَدْ اُوْتِىَ خَيْراً كَثِيْراً" *पारा–3, रुकूअ–5 में)* हिकमत को ख़ैरे कषीर फ़रमाया, और हिकमते इल्म ही हैं। और यह भी फ़रमाया कि रहमान ने अपने महबूब को कुरआन सिखाया। *(पारा–27, रुकूअ–11)* तो ख़ुदाए तआला ने इस नेअमत को सारी नेअमतों पर मुक़द्दम फ़रमाया। जिससे षाबित हुआ कि इल्म सबसे अफ़ज़ल है।

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! अल्लाह तआला ने अपने महबूबे मुकर्रम ﷺ को तमाम उलूम अता फ़रमाये और इस अता को फ़ज़्ले अज़ीम से ताबीर फ़रमाया। ग़ौर करने का मक़ाम है कि दुन्यामें जिसकी वुस्अतों का कोई इंसान अेहाता नहीं कर सकता, जिसकी नेअमतों का कोई अंदाज़ा नहीं कर सकता, उसके तअल्लुक़ से तो अल्लाह तआला फ़रमाता है "مَتَاعُ الدُّنْيَا قَلِيْلٌ" कि दुन्या की दौलत क़लील है, लेकिन जब अताए इल्म की बात आती है तो उसने फ़ज़्ले अज़ीम फ़रमाया। अब जब हम अल्लाह की क़लील (दुन्यावी) नेअमतों को शुमार नहीं कर सकते तो फिर अल्लाह की अज़ीम नेअमत (इल्म) का कैसे अंदाज़ा लगा सकते हैं? पता चला कि कोई इंसान इल्म की बरकतों और वुस्अतों को अपने इदराक व तसव्वुर में नहीं ला सकता। अल्लाह तआला से दुआ है कि वह अपने हबीबे पाक ﷺ के सदक़ा में हमें इल्म की बरकतें अता फ़रमाये। آمین بجاہ النبی الکریم علیه افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

★ ख़ौफ़े ख़ुदा और उलमा ★

अल्लाह तआला ने कुरआन मजीद में इरशाद फ़रमाया :—

"اِنَّمَا يَخۡشَى اللّٰهَ مِنۡ عِبَادِهِ الۡعُلَمٰٓؤُا اِنَّ اللّٰهَ عَزِيۡزٌ غَفُوۡرٌ"

तर्जुमा : अल्लाह से उसके बंदो में वही डरते हैं जो इल्मवाले हैं, बेशक ! अल्लाह बख़्शने वाला इज्ज़त वाला है। *(सूरए फातिर, आयत–28, पारा–22)*

हज़रत इमाम राज़ी عَلَيۡهِ الرَّحۡمَةُ وَ الرِّضۡوَانُ से आयत :—

اِنَّمَا يَخۡشَى اللّٰهَ مِنۡ عِبَادِهِ الۡعُلَمٰٓؤُا "बेशक ! अल्लाह से उसके बंदों में से कमा हक़्क़हू उलमा ही डरते हैं।" कि तहत फ़रमाते हैं कि इस आयते मुबारका में इस बात पर दलालत है कि उलमा जन्नती हैं। *(तफसीरे कबीर, जिल्द–1, सफा–279)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! यह आयते मुबारका भी इल्म व उलमा की फ़ज़ीलत पर वाज़ेह तौर पर दलालत करती है, आप देखें ! ख़ौफ़े इलाही जो तमाम नेकियों की अस्ल और गुनाहों से बचने का सबसे बड़ा ज़रिया है, जो किसी के दिल में जगह बना ले तो सारी दुन्या उससे ख़ाइफ़ हो जाए। उसी के ताल्लुक़ से रब तआला फ़रमाता है कि उसके बंदों में से अगर सहीह माअना में किसी को यह अज़ीम दौलत हासिल है तो वह अहले इल्म हैं जो हक़ीक़तन ख़शय्यिते इलाही के पैकर होते हैं। यही तो वजह है कि जब कभी उम्मत सिराते मुस्तक़ीम से हटकर दूसरी राह पर चलने की कोशिश करती है तो वह उलमा ही तो होते हैं जो ख़ूद भी ख़ौफ़ करते हैं और सारी क़ौम के दिलों में ख़ौफ़े इलाही पैदा करते हैं। अल्लाह तआला अपने हबीबे पाक ﷺ के सदक़ा में इल्मे दीन का एक अज़ीम हिस्सा अता फ़रमाकर हमें ख़ाशिइन व ख़ाइफ़ीन में से बनाये।

★ इल्म ज़्यादा अता फ़रमा ★

एक मक़ाम पर और इरशाद हुआ :—

"فَتَعَلَى اللّٰهُ الۡمَلِكُ الۡحَقُّ وَ لَا تَعۡجَلۡ بِالۡقُرۡآنِ مِنۡ قَبۡلِ اَنۡ يُّقۡضٰى اِلَيۡكَ وَحۡيُهٗ وَ قُلۡ رَّبِّ زِدۡنِىۡ عِلۡماً"

तर्जुमा : "तो सबसे बुलंद है अल्लाह सच्चा बादशाह। और कुरआन में

जल्दी न करो जब तक उसकी वही तुम्हें पूरी न हो ले। और अर्ज़ करो कि ऐ मेरे रब ! मुझे इल्म ज़्यादा दे।" *(सूरए ताहा, आयत–114, पारा–16)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! इस आयते करीमा में अल्लाह तआला ने हुज़ूर ताजदारे मदीना ﷺ को यह हुक्म फ़रमाया कि ऐ महबूब ! आप बावजूद आलिमे उलूमे कषीरा होने के यह दुआ करते रहें कि ऐ मेरे रब ! मुझे मज़ीद इल्म अता फ़रमा। यहां से यह दर्स दिया जा रहा है कि कोई चाहे कितना बड़ा आलिम क्यों न हो जाए उस पर यह ज़रूरी है कि अपने ख़ालिक़ व मालिक से यह दुआ करता रहे कि अल्लाह मेरे इल्म में बरकतें अता फ़रमा। मुझे इल्म में ज़यादती अता फ़रमा। क्यों कि इल्म बहरे नापैदा किनार है। इल्म चाहे कोई कितना ही हासिल कर ले वह ख़त्म होने वाला नहीं।

चुनांचे इस आयते करीमा के नुज़ूल के बाद हुज़ूर रहमते आलम ﷺ अक्षर यह दुआ मांगा करते थे :—

"اَللّٰهُمَّ انۡفَعۡنِىۡ بِمَا عَلَّمۡتَنِىۡ وَ عَلِّمۡنِىۡ مَا يَنۡفَعُنِىۡ وَ زِدۡنِىۡ عِلۡمًا" ऐ अल्लाह ! तूने मुझे जो इल्म अता फ़रमाया है उससे मुझे नफ़अ पहुंचा और मुझे उस चीज़ का इल्म दे जो मुझे नफ़ा दे और मेरे इल्म में इज़ाफ़ा फ़रमा।

★ अहले इल्म के दर्जात ★

"يٰاَيُّهَا الَّذِيۡنَ آمَنُوۡا اِذَا قِيۡلَ لَكُمۡ تَفَسَّحُوۡا فِى الۡمَجَالِسِ فَافۡسَحُوۡا يَفۡسَحِ اللّٰهُ لَكُمۡ وَاِذَا قِيۡلَ انۡشُزُوۡا فَانۡشُزُوۡا يَرۡفَعِ اللّٰهُ الَّذِيۡنَ آمَنُوۡا مِنۡكُمۡ وَ الَّذِيۡنَ اُوۡتُوا الۡعِلۡمَ دَرَجٰتٍ ۔ وَّ اللّٰهُ بِمَا تَعۡمَلُوۡنَ خَبِيۡرٌ"

तर्जुमा : ऐ ईमान वालो ! जब तुम से कहा जाये मजलिस में जगह दो तो उठ खड़े हो, अल्लाह तुम्हारे ईमान वाले के और उनके जिन को इल्म दिया गया दर्जे बुलंद फ़रमायेगा और अल्लाह तआला को तुम्हारे कामों की ख़बर है। *(सूरए मुजादिला, आयत–11, पारा–28, कन्जुल इमान)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! इस आयते करीमा में अल्लाह तआला ने इस बात की वज़ाहत फ़रमा दी है कि अहले इल्म हज़रात को उसने दीगर तमाम लोगों पर फ़ौक़ियत अता फ़रमाई है बल्कि अहले इल्म को कई दर्जो बुलंद किया। कितना बुलंद किया? कितने मरातिब अता किये ? यह

अल्लाह तआला और उसके प्यारे रसूल ﷺ बेहतर जानते हैं। आज दुन्या वाले मालदारों को दीगर लोगों की निस्बत अहमियत देते हैं लेकिन कुरबान जाओ अहले इल्म हज़रात पर कि उन्हें दीगर लोगों पर अज़मत अता करने वाला कोई और नहीं बल्कि ख़ालिक़े कायनात है। जो लोग अहले इल्म को हक़ीर समझते हैं उन्हें इस आयते करीमा से सबक़ हासिल करना चाहिये। इसी तरह एक दूसरी आयते करीमा से भी यही मफ़हूम समझ में आता है। इरशादे खुदावंदी है **"هَلْ يَسْتَوِى الَّذِيْنَ يَعْلَمُوْنَ وَ الَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ"** इल्म वाले और बे इल्म वाले कैसे बराबर हो सकते हैं? इसमें यही बताया जा रहा है कि इल्म वाले और बे इल्म कभी बराबर नहीं हो सकते। उनका मक़ाम व मर्तबा इनसे कई दर्जा अफ़ज़ल हैं। आप ख़ूद सोचें इल्म वह अज़ीम दौलत है कि जिसमें बक़ा है, जिसके लिये ज़वाल नहीं है तो फिर वह शख़्स जिसके पास यह अज़ीम सरमाया नहीं है वह उस शख़्स के बराबर कैसे हो सकता है? जिसके क़ल्ब में इस बाक़ी और ला ज़वाल नेअमत का चिराग़ जगमगा रहा हो। अल्लाह तआला हमारे कुलूब को नूरे इलाही से मुनव्वर फ़रमाये और जुल्मते जहालत से महफ़ूज़ रखे। **آمین بجاه النبی الکریم علیه افضل الصلوٰة والتسلیم۔**

★ इल्म और कुरआन ★

फ़रमाने बारी तआला है :–

"اِقْرَاْ بِاسْمِ رَبِّكَ الَّذِىْ خَلَقَ خَلَقَ الْاِنْسَانَ مِنْ عَلَقٍ اِقْرَاْ وَ رَبُّكَ الْاَكْرَمُ الَّذِىْ عَلَّمَ بِالْقَلَمِ عَلَّمَ الْاِنْسَانَ مَالَمْ يَعْلَمْ"

तर्जुमा : पढ़ो अपने रब के नाम से जिसने पैदा किया, आदमी को ख़ून की फटक से बनाया, पढ़ो और तुम्हारा रब ही सबसे बड़ा करीम, जिसने क़लम से लिखना सिखाया। आदमी को सिखाया जो न जानता था। *(सूरए नूर, आयत–1, 5, पारा–30, कन्जुल इमान)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! हम सब को मालूम है कि सूरए इकरा की जो आयतें सब से पहले नाज़िल हुईं उन्हीं में **"عَلَّمَ الْاِنْسَانَ مَالَمْ يَعْلَمْ"** भी है, कुरआन की सबसे पहले नाज़िल होने वाली इन आयात में इल्म का ज़िक्र करके रब्बे काइनात ने यह वाज़ेह फ़रमा दिया कि इस्लाम तालीम व तअल्लुम का मज़हब है, इस्लाम तालीम व तर्बियत का दीन है और जो लोग मुसलमान

होकर भी इल्म से दूर हैं वह इस्लामी मक़ासिद के खिलाफ़ ज़िन्दगी गुज़ार रहे हैं। हालांकि तालीम के सबसे ज़्यादा हक़दार हम ही हैं, लिहाज़ा मुसलमानों को चाहिये कि जहालत की तारीकियों को छोड़कर अब इल्म के उजाले में आ जायें। अल्लाह तआला तमाम मुसलमानों को इल्म की दौलत से मालामाल फ़रमाये। **آمین بجاه النبی الکریم علیه افضل الصلوٰة والتسلیم۔**

★ इल्म और फ़ज़ीलत ★

وَلَقَدْ آتَيْنَا دَاوٗدَ وَ سُلَيْمٰنَ عِلْماً وَّ قَالَا الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ فَضَّلَنَا عَلٰى كَثِيْرٍ مِّنْ عِبَادِهِ الْمُؤْمِنِيْنَ۔

तर्जुमा : और बेशक ! हमने दाऊद और सुलेमान को बड़ा इल्म अता फ़रमाया। और दोनों ने कहा, सब ख़ूबियां अल्लाह को जिस ने हमें अपने बहुत से ईमान वाले बंदों पर फ़ज़ीलत बख़्शी। *(सूरए नम्ल, पारा–19, आयत–15, कन्जुल इमान)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! इस आयते करीमा से भी इल्म की फ़ज़ीलत बिल्कुल अयां है कि हज़रत सुलेमान علیہ السلام को पूरी दुन्या की बादशाही अता की गयी लेकिन उन्होंने इस सल्तनत का ज़िक्र नहीं किया बल्कि यही फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने हमें जो इल्म अता फ़रमाया है उसी इल्म की बुनियाद पर हम दीगर लोगों से अफ़ज़ल हैं और हक़ीक़त भी यही है, क्यों कि दुन्या के लिये फ़ना है, लेकिन इल्म के लिये ज़वाल नहीं है। इसलिये फ़ानी दुन्या के मुक़ाबले में इल्म अफ़ज़ल है लिहाज़ा मुसलमानों को चाहिये कि फ़ानी दुन्या के सिलसिले में कम और इल्म के सिलसिले में ज़्यादा मुतफ़क्किर रहें क्यों कि फ़ानी दुन्या को हासिल करने के पीछे ही पड़ जाना कोई अक़्लमंदी नहीं है। अल्लाह तआला हमें ज़िन्दगी की आख़री सांस तक इल्म हासिल करने में जुस्तजू मेहनत करते रहने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

آمین بجاه النبی الکریم علیه افضل الصلوٰة والتسلیم۔

★ सब्र वाले ★

"فَخَرَجَ عَلٰى قَوْمِهٖ فِىْ زِيْنَتِهٖ قَالَ الَّذِيْنَ يُرِيْدُوْنَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا يٰلَيْتَ لَنَا مِثْلَ مَا اُوْتِىَ قَارُوْنُ اِنَّهٗ لَذُوْ حَظٍّ عَظِيْمٍ وَّ قَالَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ وَيْلَكُمْ ثَوَابُ اللّٰهِ خَيْرٌ لِّمَنْ آمَنَ وَ عَمِلَ صَالِحاً وَّلَا يُلَقّٰهَا اِلَّا الصّٰبِرُوْنَ"

तर्जुमा : तू अपनी क़ौम पर निकला अपनी आराईश में बोले वह जो दुन्या की ज़िन्दगी चाहते हैं, किसी तरह हम को भी ऐसा मिलता जैसा क़ारून को मिला। बेशक ! उसका बड़ा नसीब है। और बोले वह जिन्हें इल्म दिया गया, ख़राबी हो तुम्हारी! अल्लाह का षवाब बेहतर है उसके लिये जो ईमान लाए और अच्छे काम करे, और यह उन्हीं को मिलता है जो सब्र वाले हैं।

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! क़ारून जब अपने शाही रोब व दबदबे के साथ रिआया के सामने आया तो दौलते दुन्या के हरीस यह कह उठे कि ऐ काश ! क़ारून की तरह हमारे पास भी दौलत होती ! लेकिन अहले इल्म को यहां पर भी उनका इल्म काम आ गया और वह इल्म की बरकत से जान गये कि दौलते दुन्या बज़ाहिर तो बहुत मुताष्षिर करती है लेकिन इसमें ख़सारा है, ज़िल्लत ही ज़िल्लत है। उन्होंने यह षाबित कर दिखाया है कि अहले इल्म के नज़दीक मताऐ दुन्या की कोई अहमियत नहीं बल्कि उनके यहां अहमियत षवाब और जज़ाए हसन की है जो उन्हें अल्लाह के यहां मिलेगा। आज जो लोग इल्म हासिल करते हैं अगर दुन्यादार उन्हें हक़ारत की निगाह से देखते हैं तो उन्हें मायूस नहीं होना चाहिये, क्यों कि अगर दुन्या वालों की अदालत में माल व मताअ वाले बा इज्ज़त हैं तो अल्लाह तआला की अदालत में अहले इल्म ही क़दर व मंज़िलत वाले हैं। अल्लाह तआला हमें इल्म व अहले इल्म की क़द्र और एहतेराम करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

हज़रत अल्लामा इमाम फख़रुद्दीन राज़ी عَلَیْہِ الرَّحْمَۃُ وَ الرِّضْوَانُ इस आयत **"یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْۤا اَطِیْعُوا اللّٰهَ وَ اَطِیْعُوا الرَّسُوْلَ وَ اُولِی الْاَمْرِ مِنْكُمْ"** यानी ऐ ईमान वालो! अल्लाह की इताअत करो और रसूल की इताअत करो और तुम में जो हुक्म वाले हैं उनकी इताअत करो। कि तहत तहरीर फ़रमाते हैं :–

"اَلْمُرَادُ مِنْ اُولِی الْاَمْرِ الْعُلَمَاءُ فِیْ اَصَحِّ الْاَقْوَالِ، لِاَنَّ الْمُلُوْكَ یَجِبُ عَلَیْهِمْ طَاعَةُ الْعُلَمَاءِ وَ لَا یَتَعَكَّسُ"

यानी **"اولی الامر"** से मुराद उलमा हैं, इसलिये कि बादशाहों पर उलमा की फ़रमाबरदारी वाजिब है और उलमा पर बादशाहों की ताबेदारी वाजिब नहीं। *(तफसीरे कबीर, जिल्द–1, सफा–274)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! मज़कूरा आयते मुबारका की तफ़सीर में हज़रत इमाम राज़ी عَلَیْہِ الرَّحْمَۃُ وَ الرِّضْوَانُ उलमा को जन्नती फ़रमाते है। इसलिये कि मज़कूरा आयाते करीमा अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से डरने वाले बंदों में सिर्फ़ उलमा को बताया है। और दूसरे मक़ाम पर रब ने इरशाद फ़रमाया **"وَلِمَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهٖ جَنَّتٰنِ"** जो अपने रब के सामने खड़े होने से डरे उसे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ दो जन्नतें अता फ़रमायेगा। लिहाज़ा उलमा जन्नती हुए। अल्लाह तआला हम सबको उलमा के ज़ुमरे में शामिल फ़रमाये और इल्मे नाफ़ेअ की दौलत से सरफ़राज़ फ़रमाये। **آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔**

★ बरकाते इल्म अहादीष की रौशनी में ★

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! मज़हबे इस्लाम ने अपने आग़ाज़ ही से अपनी पहली दावत में दुन्या वालों को इल्म से आरास्ता होने का पैग़ाम दिया। चुनांचे अगर कुरआन की आयतों पर सरसरी नज़र डालें तो आप यह महसूस करेंगे कि उसकी पहली आयत में ही **"اِقْرَاْ بِاسْمِ رَبِّكَ الَّذِیْ خَلَقَ"** पढ़ो अपने रब के नाम से जिसने पैदा किया। कह कर पूरी दुन्या को पढ़ने की तरफ़ तवज्जोह दिलाई और इसी तरह कुरआन नीज़ अहादीष का पूरा ज़ख़ीरा इल्म की अहमियत को उजागर करता है। चुनांचे मुलाहज़ा फ़रमायें।

★ अल्लाह का ईनाम ★

सैयदे आलम ﷺ फ़रमाते हैं **"مَنْ یُّرِدِ اللّٰهُ بِهٖ خَیْراً یُّفَقِّهْهُ فِی الدِّیْنِ"** यानी अल्लाह तआला जिसके साथ भलाई का इरादा फ़रमाता है उसे दीन की समझ अता फ़रमा देता है। *(बुखारी शरीफ, मुस्लिम शरीफ, मिश्क़ात शरीफ)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! याद रखें जिसके पास इल्म नहीं वह यक़ीनन ! ख़सारे में है और जिसको अल्लाह جَلَّ جَلَالُهٗ ने इल्म की दौलत अता फ़रमा दी, मुबारक हो ! अल्लाह तआला ने उससे भलाई का इरादा फ़रमाया। अल्लाह तआला हम सबको इल्मे नाफ़ेअ की दौलत से मालामाल फ़रमाये।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

हुज़ूर सैयदे आज़म ﷺ फ़रमाते हैं, जिसे ख़ुदा ने इल्म से नवाज़ा गोया कि अल्लाह ने उसे जन्नत अता फ़रमा दी।

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! जिसे जन्नती को देखना हो वह आलिमे दीन को देखे। इसलिये कि आलिमे बा अमल को देखना हुज़ूर ﷺ को देखना है। और आलमे दीन को देखना भी इबादत है। ज़ाहिर सी बात है कि जिसे देखने पर मौला इबादत का सवाब अता फ़रमाये वह जन्नती नहीं होगा तो कौन होगा ? अल्लाह तआला हम सबको इन उलमा का दीदार अता फ़रमाये और आलिमे दीन बनने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

आمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

★ इस्लाम की ज़िन्दगी ★

हज़रत इब्ने अब्बास رضی اللہ عنہما से रिवायत है कि :—

"اَلْعِلْمُ حَیٰوۃُ الْاِسْلَامِ وَ عِمَادُ الدِّیْنِ" इल्म इस्लाम की ज़िन्दगी है और **दीन का सुतून** है।

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! रसूले आज़म ﷺ के मज़कूरा फ़रमाने आलीशान से यह बात वाज़ेह होती है कि इस्लाम को ज़िन्दा रखना हो तो इल्म हासिल करना चाहिये। हम नमाज़ रोज़ा वग़ैरह से ख़ूद को आबिद तो बना सकते हैं लेकिन इल्म को ग़ालिब नहीं कर सकते। ग़लबए इस्लाम इल्म से होगा। आज बातिल क़ौम भूक, प्यास बर्दाश्त करके भी इल्म हासिल कर रही है लेकिन क़ौमे मुस्लिम जहालत की वादियों में भटक रही है। दुन्या आज क़वानीने इस्लाम और आयाते कुर्आनिया पर एतेराज़ात के अंबार लगा रही है और हमने उसके जवाब में कोई मोअष्षिर क़दम नहीं उठाया कि जिसके ज़रिआ हम तहफ़्फ़ुज़े इस्लाम की ज़िम्मेदारी पूरी करें। आओ ! मिल्लत के नौजवानो ! उठो ! और शम्अए इल्म को अपने अपने इलाक़ों में रौशन करो ता कि हमारा मुआशरा इस्लाम के मुकम्मल ज़ाब्ते से रौशनास हो सके। अल्लाह तआला की बारगाहे में दुआ है कि मौला तआला हम सबको हुज़ूर ﷺ की वरासत अता फ़रमाए। آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

★ इबादत से बेहतर ★

हज़रत उबादा رضی اللہ عنہ से मरवी है कि इल्म इबादत से बेहतर है।

इसी तरह हज़रत अबू हुरैरा رضی اللہ عنہ से रिवायत है कि बेहतरीन इबादत इल्म

का हासिल करना है। *(कन्ज़ुल उम्माल, जिल्द–1, सफ़ा–90)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! इबादत से आबिद को फ़ायदा पहुंचता है और इल्म से बंदगाने ख़ुदा को फ़ायदा पहुंचता है। "इल्म इबादत से बेहतर है।" से मुराद नफ़्ल कामों में मसरूफ़ रहने से बेहतर है कि इल्म हासिल करने में लगा रहे। इसलिये कि इल्म के सबब से इंसान को अल्लाह का ख़ौफ़, हलाल व हराम की तमीज़ पैदा होती है जो इबादत की हिफ़ाज़त का सबब है। अल्लाह तआला हम सबको हुसूले इल्म की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

उम्मुल मोमिनीन हज़रत आइशा सिद्दीक़ा رضی اللہ عنہا ने फ़रमाया कि मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को फ़रमाते हुए सुना कि इल्म की ज़्यादती इबादत की ज़्यादती से बेहतर है और दीन की अस्ल परहेज़गारी है। *(मिश्कात, सफ़ा–36)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! फ़राइज़ के बाद जितना वक़्त मिले कोशिश करें कि वह ज़ाअेअ् न हो बल्कि इल्म हासिल करने में गुज़ारें। क्योंकि इल्म के सबब से परहेज़गारी भी पैदा होती है और इज़्ज़त भी मैयस्सर होती है। आज के दौर में वही कामयाब है जिसके पास सरमायाए इल्म है और जो हुसूले इल्म में मसरूफ़ है। जाहिलों की न कल कोई इज्ज़त थी और न आज। अपने वक़्त की क़द्र करो और हुसूले इल्म में मसरूफ़ हो जाओ। उन किताबों का मुतालिआ करो जिन किताबों को पढ़ने से दिल व दिमाग़ रौशन हो। उन किताबों के पढ़ने से गुरेज़ करो जिनकी वजह से दिल व दिमाग़ तारीक हो जायें। आइये हम अहद करें कि **انشاء اللہ !** अपनी रोज़ाना की ज़िम्मेदारी में कुछ न कुछ हुसूले इल्म की महफ़िल सजायेंगे। अल्लाह तआला अपने हबीब ﷺ के सदक़ा व तुफ़ैल इल्मे नाफ़ेअ की दौलत नसीब फ़रमाये।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

★ अंबिया की वराषत ★

हज़रत उम्मे हानी رضی اللہ عنہا से रिवायत है कि सरकारे अक़दस ﷺ ने इरशाद फ़रमाया **"اَلْعِلْمُ مِیْرَاثِیْ وَ مِیْرَاثُ الْاَنْبِیَاءِ قَبْلِیْ"** इल्म मेरी मीराष है और मुझ से पहले जो अंबिया गुज़रे हैं उनकी भी मीराष है। *(कन्ज़ुल उम्माल, सफ़ा–77)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! हुजूर रहमते आलम ﷺ और आप ﷺ से पहले जितने भी अंबियाए किराम तशरीफ़ लाये सबने इस दारे फ़ानी से ज़ाहिरी तौर पर पर्दा फ़रमाने से पहले इल्म को अपने पीछे छोड़ा, न कि माल को। लिहाज़ा जो इल्म हासिल करता है वह गोया अंबियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام की वराषत को पा लेता है।

★ इल्म और जहालत में फ़र्क़ ★

हज़रत अनस رضی اللہ عنہ से मरवी है कि सरकारे कोनैन ﷺ ने इरशाद फ़रमाया, थोड़ा अमल इल्म के साथ फ़ायदा देता है और ज़्यादा अमल जहालत के साथ फ़ायदा नहीं देता। *(कन्ज़ुल उम्माल, सफ़ा–88)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! आज नमाज़ी बे हयाई और बुरी बातों से क्यों नहीं रुक पाता है? इसलिये कि वुज़ू, शराइते नमाज़ व मसाइले नमाज़ का जिस तरह लिहाज़ रखना चाहिये इस तरह इंसान ख़्याल नहीं रख पाता। लिहाज़ा इल्म की तरफ़ नवाफ़िल की बनिस्बत ज़्यादा तवज्जोह दो। रब्बे करीम हम सबको तौफ़ीक़ दे। آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

हज़रत अनस رضی اللہ عنہ से मरवी है कि अल्लाह तआला की ज़ात व सिफ़ात का इल्म बेहतरीन इल्म है । इल्म के साथ अमल तुझे थोड़ा भी हो तो ज़्यादा फ़ायदा देगा। और जहालत के साथ न थोड़ा अमल फ़ायदा देगा और न ज़्यादा।

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के दीवानो ! अल्लाह तआला की ज़ात व सिफ़ात का इल्म बहुत ज़रूरी है इसलिये कि उसकी वजह से शक व शुब्हा वग़ैरह से बंदे का दामन बच जाता है जो सबसे बेहतरीन अमल है। आज अल्लाह तआला के लिये कम इल्मी की वजह से मुसलमान ऐसी ऐसी बातें अपनी ज़बान से निकालते हैं जो अल्लाह तआला की शान के लायक़ नहीं होती। इस तरह गुनाहगार होते हैं और बाज़ अवक़ात काफ़िर हो जाते हैं, लिहाज़ा अल्लाह तआला की ज़ात व सिफ़ात का इल्म हासिल करने की कोशिश करो। अल्लाह तआला हम सबको तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

★ इल्म और सल्तनत ★

हज़रत इब्ने अब्बास رَضِیَ اللہُ عَنْہُمَا से रिवायत है कि सरकार ﷺ ने फ़रमाया, हज़रत सुलेमान علیہ السلام माले सल्तनत और इल्म के दर्मियान इख़्तेयार दिये गये तो उन्होंने इल्म को पसंद फ़रमाया। तो इल्म को इख़्तेयार करने के सबब सल्तनत और माल से भी सरफ़राज़ किये गये। *(कन्ज़ुल उम्माल, सफ़ा–87)*

★ मोमिन का दोस्त ★

हज़रत इब्ने अब्बास رَضِیَ اللہُ عَنْہُمَا से रिवायत है कि सरवरे कोनैन ﷺ ने इरशाद फ़रमाया **"عَلَیْکُمْ بِالعِلْمِ فَاِنَّ العِلْمَ خَلِیْلُ المُؤْمِنِ"** इल्म को लाज़िम पकड़ो इस लिये कि इल्म मोमिन का गहरा दोस्त है।

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! आपने देखा होगा कि मुसीबत के वक़्त अच्छे अच्छे दोस्त साथ छोड़ देते हैं यहां तक कि जिस माल को हासिल करने में हम रात व दिन एक कर देते हैं वह भी साथ छोड़ देता है। लेकिन मेरे प्यारे आक़ा ﷺ फ़रमाते हैं कि इल्म मोमिन का गहरा दोस्त है, यह कभी साथ नहीं छोड़ता। ज़मीन के ऊपर भी साथ देता है और क़ब्र में भी साथ देगा। लिहाज़ा आज से इल्म को दोस्त बनाओ ता कि उसकी दोस्ती क़ब्र व हश्र हर जगह हमें काम आये। अल्लाह तआला हम सबको इल्म हासिल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये। آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

★ इल्म या इबादत की ज़्यादती ★

हज़रत अबू सईद खुदरी رضی اللہ عنہ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इरशाद फ़रमाया **"فَضْلُ العِلْمِ اَحَبُّ اِلَیَّ مِنْ فَضْلِ العِبَادَاتِ"** इल्म की ज़्यादती मुझे इबादत की ज़्यादती से बहुत महबूब है। *(कन्ज़ुल उम्माल–88)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! हज़रत अबू सईद खुदरी رضی اللہ عنہ के क़ौल को ग़ौर से पढ़ो और सुनो कि इल्म की ज़्यादती मुझे इबादत की ज़्यादती से बहुत महबूब है। आज अगर कोई किताबों का मुतालिआ कर रहा हो, दर्स व तदरीस में मसरूफ़ हो, किताब लिखने पढ़ने में लगा हो तो जाहिल इबादत गुज़ार इन लिखने पढ़ने वालों को हिक़ारत से देखता है। उसे यह मालूम नहीं कि जिसे वह हक़ीर जानता है वही सहाबीए रसूल के नज़दीक

इज्ज़त वाला है। इज्ज़त वाला बनना है तो इल्म की जानिब क़दम बढ़ाओ। अल्लाह तआला ऐसे लोगों को अक़्ल सलीम अता फ़रमाये।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

★ जन्नत का रास्ता ★

हज़रत इब्ने उमर رضی اللہ عنہ से रिवायत है कि :–

"لِكُلِّ شَيْئٍ طَرِيْقٌ وَّ طَرِيْقُ الجَنَّةِ العِلْمُ" हर चीज़ का रास्ता है और जन्नत का रास्ता इल्म है। *(कन्जुल उम्माल–89)*

हज़रत मुल्ला अली क़ारी رحمۃ اللہ علیہ तहरीर फ़रमाते हैं कि इस हदीष शरीफ़ यानी :–

"مَنْ سَلَكَ طَرِيقاً يَطْلُبُ فِيْهِ عِلْماً سَلَكَ اللّٰهُ بِهٖ طَرِيقاً مِّنْ طُرُقِ الْجَنَّةِ وَ اِنَّ الْمَلٰئِكَةَ لَتَضَعُ اَجْنِحَتَهَا رِضاً لِّطَالِبِ الْعِلْمِ"

"जो शख़्स इल्म की तलाश में रास्ता चलता है अल्लाह तआला उसको जन्नत की राह चलाता है। और तालिबे इल्म की रज़ा हासिल करने के लिये फ़रिश्ते अपने पर को बिछा देते हैं।" मैं इस बात की जानिब इशारा है कि जन्नत के रास्ते इल्म के रास्तों में महदूद हैं। इसलिये कि नेक अमल बग़ैर इल्म के मतवस्सिर नहीं। *((मिर्क़ात, जिल्द–1, 229)*

मेरे प्यारे आक़ा صلی اللہ علیہ وسلم के प्यारे दीवानो **سبحان الله!** मुझे बताओ ! कौन जन्नत में जाना नहीं चाहता? हर कोई जन्नत में जाना चाहता है, लेकिन क्या वह जन्नत के रास्ते पर चलता है? जन्नत के रास्ते पर चलोगे नहीं तो जन्नत में जाओगे कैसे? लिहाज़ा आओ ! दुआ करें कि मौला हम सबको जन्नत के रास्ते पर दिन रात चलने यानी इल्म हासिल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

★ इल्म वाला मरता नहीं ★

हुज़ूर सैयदे आलम صلی اللہ علیہ وسلم इरशाद फ़रमाते हैं :–

"مَنْ صَارَ بِالعِلْمِ حَيًّا لَمْ يَمُتْ اَبَداً" "जो इल्म से ज़िन्दा होगा वह कभी नहीं मरेगा।"

मेरे प्यारे आक़ा صلی اللہ علیہ وسلم के प्यारे दीवानो ! आज लाखों उलमा और दानिश्वराने

क़ौम इस दुन्या से चले गये, सदियां गुज़र गयीं लेकिन उनकी किताबों में आज भी मौजूद हैं, जिन से एक आलम फ़ैज़ हासिल करता है और अपनी प्यास को बुझाकर ख़िराजे अक़ीदत पेश करता है। जिस तरह उन की किताबें बाक़ी हैं वैसे ही उनका नाम भी बाक़ी है। यक़ीनन ! हुज़ूर صلی اللہ علیہ وسلم ने सच फ़रमाया कि जो इल्म से ज़िन्दा होगा वह कभी नहीं मरेगा।

इल्म व हुनर से पाती है इंसानियत फ़रोग़
इंसान ज़िन्दा लाश है तालीम के बग़ैर

अल्लाह हम सबको इल्म से ज़िन्दगी की आख़री सांस तक वाबस्ता रखे और ख़ात्मा बिल ख़ैर नसीब फ़रमाये।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

★ ज़िल्लत का सबब ★

हज़रत अबू हुरैरा رضی اللہ عنہ से मरवी है कि सरकारे दो आलम صلی اللہ علیہ وسلم ने फ़रमाया, अल्लाह तआला इल्म व अदब को बंदे पर रोक कर उसे ज़लील करता है। *(कन्जुल उम्माल, सफा–89)*

मेरे प्यारे आक़ा صلی اللہ علیہ وسلم के प्यारे दीवानो ! अल्लाह तआला अगर किसी बंदे को ज़लील करना चाहे तो वह उस पर इल्म और अदब को रोक देता है। आप दुन्या में देखें कि बे अदब और बे इल्म को कभी वह इज्ज़त नहीं मिलती जो बा अदब और साहिबे इल्म को मिलती है। रब्बे क़दीर रहमते आलम صلی اللہ علیہ وسلم के सदक़ा व तुफ़ैल इल्मे नाफ़ेअ अता फ़रमाये।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

★ एक घड़ी इल्म ★

हज़रत इब्ने अब्बास رضی اللہ عنہما से रिवायत है कि सरकारे दो आलम صلی اللہ علیہ وسلم ने इरशाद फ़रमाया **"تدارس العلم ساعة من الليل خير من احيائها"** एक घड़ी इल्म हासिल करना पूरी रात जागने से बेहतर है। *(मिश्क़ात–36)*

हज़रत मुल्ला अली क़ारी رحمۃ اللہ علیہ तहरीर फ़रमाते हैं कि इस हदीष शरीफ़ का मतलब यह है कि एक साअत आपस में इल्म की तकरार करना, उस्ताद से पढ़ना, शार्गिदों को पढ़ाना, किताब तस्नीफ़ करना, या उनका मुतालिआ

करना रात भर की इबादत से बेहतर है। *(मिर्क़ात शरहे मिश्क़ात, जिल्द–1, सफा–251)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! आज घंटों टी.वी. के सामने बैठकर वक़्त ज़ाअेअ् किया जाता है या फिर चौराहे पर खड़े रहकर गप शप में वक़्त गुज़ारा जाता है। हफ़्ते की रात को ख़ास तौर पर लह्व व लइब और गुनाहों में गुज़ारने की कोशिश की जाती है। अगर कहा जाये, हफ़्ता वारी इज्तेमा में आओ ! तो बहानें बनाते हैं, काश ! कि रसूलुल्लाह ﷺ की मज़कूरा हदीश शरीफ़ पर अमल करने की जद्दो जेहद करते तो मौला पूरी शब इबादत करने का सवाब अता फ़रमा देता है। आओ ! और इरादा करो कि ! **انشاء الله تعالی** आज से हफ़्तावारी इज्तेमा में शरीक होकर इल्मे दीन हासिल करने की कोशिश करेंगे।

★ सबसे बड़ी दौलत ★

हज़रत मुस्अब बिन ज़ुबैर رضی اللہ عنہ इरशाद फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया, इल्म हासिल करो अगर तुम्हारे लिये माल भी होगा तो इल्म तुम्हारे लिये ख़ूबसूरत होगा और अगर तुम्हारे लिये माल नहीं होगा तो इल्म ही तुम्हारे लिये माल होगा। *(तफसीरे कबीर, जिल्द–1, सफा–275)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! इल्म सबसे बेहतरीन सरमाया है, हमने जहां में साहिबे इल्म को सबसे ज़्यादा इज्ज़त वाला पाया, इसलिये साहिबे इल्म का हर कोई मोहताज है, अगर इल्म के साथ माल भी हो तो बेहतर है वरना इल्म ही सबसे क़ीमती माल है। अल्लाह इल्मे नाफ़ेअ की दौलत व रिज़्क़े हलाल में वुसअत अता फ़रमाये।

آمین بجاہ النبی الکریم علیه افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

★ जन्नत साहिबे इल्म की तलाश में ★

हज़रत इब्ने अब्बास رضی اللہ عنہ से मरवी है कि जो शख़्स इल्म की तलाश में होगा जन्नत उसकी तलाश में होगी। और जो शख़्स गुनाह की खोज में होगा जहन्नम उसकी खोज में होगी। *(कन्जुल उम्माल, जिल्द–1, सफा–92)*

★ तालिबे इल्म की फज़ीलत ★

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! अल्लाह तआला ने सारी काइनात

में इंसान को जो फज़ीलत बख़्शी उसकी बहुत बड़ी वजह इल्म है, फ़रिश्तों के मुक़ाबले में हज़रत आदम علیہ السلام की जन्नत में जो फ़ज़ीलत साबित हुई उसका सबब भी इल्म है, और इल्म की राह में चलने वाले, उसके हासिल करने वाले पर अल्लाह तआला और उसके फ़रिश्ते रहमत का साया किये हुए रहते हैं। आम इंसान कामयाबी ढूंढता है लेकिन इल्म हासिल करने वाले को कामयाबी ढूंढती है। इल्म हासिल करने वाले की फज़ीलत में मेरे आक़ा रहमते आलम ﷺ की बे शुमार अहादीष मौजूद हैं जिनमें से चंद अहादीष मज़मून की मुनासिबत से पेश की जा रही हैं मुलाहज़ा हों।

★ अल्लाह के रास्ते में ★

हज़रत अनस رضی اللہ عنہ से मरवी है कि सरकारे दो आलम ﷺ ने फ़रमाया कि जो इल्म की तलाश में निकला तो वापसी तक अल्लाह तआला के रास्ते में है। *(मिश्क़ात, सफा–34)*

नोट: फ़तवा हासिल करने के लिये आलिमे दीन के घर जाना यह भी तलबे इल्म में दाख़िल है।

मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो ! अल्लाह के रास्ते से बेहतर भी कोई रास्ता है? कितने ताज्जुब की बात है कि आज का मुसलमान सुबह व शाम शैतान के रास्ते पर चलना चाहता है ! काश ! इल्म हासिल करने के लिये घर से निकलता और चलता तो मौला तआला के रास्ते पर चलने का शर्फ़ हासिल होता। अल्लाह तआला हमें अपने रास्ते का मुसाफ़िर बनाये।

हज़रत अबू हुरैरा से रिवायत है कि रसूले काइनात ने फ़रमाया कि जो शख़्स इल्म की तलाश में रास्ता चलता है तो उसकी बरकत से अल्लाह तआला उस पर जन्नत के रास्ते को आसान कर देता है और जब कोई क़ौम अल्लाह के घरों में से किसी घर में (यानी मस्जिद, मदरसा, ख़ानक़ाह में) जमा होती है और कुर्आन को पढती पढाती है तो उन पर खुदा सकीना नाज़िल फर्माता है, खुदाकी रहमत उन्को ढांप लेती है, फ़रिश्ते उनको घेर लेते हैं और अल्लाह तआला उन लोगों का ज़िक्र उन फ़रिश्तों में करता है जो उसके पास रहते हैं। *(मुस्लिम शरीफ, मिश्क़ात–33)*

हज़रत मुल्ला अली क़ारी तहरीर फ़रमाते हैं कि इस

हदीष शरीफ़ यानी :–

"مَنْ سَلَكَ طَرِيقاً يَطْلُبُ فِيهِ عِلماً سَلَكَ اللّٰهُ بِهِ طَرِيقاً مِنْ طُرُقِ الْجَنَّةِ وَ اِنَّ الْمَلٰئِكَةَ لَتَضَعُ اَجْنِحَتَهَا رِضاً لِطَالِبِ الْعِلْمِ"

"जो शख़्स इल्म की तलाश में रास्ता में चलता है तो अल्लाह तआला उसको जन्नत की राह चलाता है। और तालिबे इल्म की रज़ा हासिल करने के लिये फ़रिश्ते अपने पर को बिछा देते हैं।" मैं इस बात की जानिब इशारा है कि जन्नत के रास्ते इल्म के रास्तों में महदूद हैं, इसलिये कि नेक अमल बग़ैर इल्म के मुतसव्विर नहीं। *(मिर्क़ात)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! जन्नत का रास्ता बहुत ही भारी है लेकिन रब का करम देखा कि इल्म हासिल करने वाले के लिये जन्नत का रास्ता आसान फ़रमा देगा ! **سبحان الله!** इल्मे कुरआन हासिल करने वाले और पढ़ाने वाले पर अल्लाह तआला दौलते सुकून नाज़िल फ़रमाता है। और अल्लाह की रहमत उनको ढांप लेती है। कितनी बड़ी सआदत है कुरआन पढ़ाने वाले और इल्मे कुरआन हासिल करने वाले की ! लेकिन वाह रे मुसलमान! दुनियावी उलूम हासिल करने वाले और पढ़ाने वाले ही इज़्ज़त की निगाह से देखे जाते हैं और कुरआन पढ़ने वाले और पढ़ाने वालों को हक़ीर समझा जाता है ! ख़बरदार ! जिसे अल्लाह इज़्ज़त दे उसे तुम ज़लील न करो ! वरना ख़ुदा की क़सम ! ज़लील हो जाओगे ! आओ ! तौबा करें ! उलमा और तलबा की तहक़ीर से अल्लाह हम को माफ़ फ़रमाए और उनकी इज़्ज़त करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। **آمین بجاہ النبی الکریم علیه افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔**

★ इन्कार का अंजाम ★

हज़रत मुल्ला अली क़ारी عَلَيْهِ الرَّحْمَةُ وَ الرِّضْوَانُ फ़रमाते हैं कि अहमद बिन शोएब से रिवायत है कि उन्होंने बयान किया कि हमने शहरे बसरा में इस हदीष शरीफ़ यानी "जो शख़्स इल्म की तलाश में रास्ता चलता है अल्लाह तआला उसको जन्नत की राह चलाता है। और तालिबे इल्म की रज़ा हासिल करने के लिये फ़रिश्ते अपने पर को बिछा देते हैं।" को एक मुहद्दिष से बयान किया। जब कि उस मजलिस में एक बदमज़हब मोअतज़ली भी बैठा हुआ था जो इल्म हासिल करने के लिये आया था। उसने इस हदीष शरीफ़ का मज़ाक़ उड़ाते

हुए कहा, कल हम जूता पहन कर चलेंगे और उससे फ़रिश्तों के परों को रौंदेंगे ! जब अपने कहने के मुताबिक़ दूसरे दिन वह जूता पहनकर चला तो धड़ाम से गिर गया और उसके पैरों में मर्ज़े आकेला पैदा हो गया जिससे इसके दोनों पैर सड़ गये। *(मिर्क़ात शरहे मिश्क़ात, जिल्द अव्वल, सफ़ा–922)*

मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो ! जो कुछ रसूल ने फ़रमा दिया वह हक़ है। अल्लाह तआला बद अक़ीदगी से हम सबकी हिफ़ाज़त फ़रमाये। न उनसे इल्म हासिल करो और न उनको इल्म सिखाओ। न उनके साथ तअल्लुक़ रखो और न उनसे दोस्ती करो। अल्लाह तआला गुस्ताख़ों के मकर व फ़रेब से हम सबको बचाये।

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! हुज़ूर ﷺ के फ़रमान पर शक करके मज़ाक उड़ाना चाहा तो अंजाम आपने सुन लिया। लिहाज़ा जो भी हुज़ूर ﷺ का फ़रमान पढ़ें या सुनें उसके हवाले से अपने दिल में कोई शक व तरद्दुद पैदा न करें वरना अंजाम बहुत ही भयानक होगा। मौला तआला हम सब पर करम फ़रमाए और आक़ाए दो जहां ﷺ पर कुरबान होने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये। **آمین بجاہ النبی الکریم علیه افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔**

तिबरानी ने कहा कि मैंने इब्ने यहया साजी से सुना वह बयान करते थे कि हम एक मुहद्दिष के यहां जाने के लिये बसरा शहर की गलियों में गुज़र रहे थे तो हमारे साथ एक मस्ख़रा आदमी था जो अपने दीन में मुत्तहिम था। उसने कहा, **"اِرْفَعُوا اَرْجُلَكُمْ عَنْ اَجْنِحَةِ الْمَلٰئِكَةِ وَ لَا تُكَسِّرُوْهَا"** अपने पैरों को फ़रिश्तों के परों से उठा लो इन्हें न तोड़ो। यानी इस हदीष शरीफ़ का मज़ाक़ उड़ाया तो उसी जगह पर उसके पैरों ने उसको पछाड़ दिया और वह धड़ाम से ज़मीन पर गिर गया।

سبحان الله! मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! अल्लाह तआला ऐसे गुस्ताख़ों को ऐसी ही सज़ा अता करे बल्कि इससे भी सख़्त। मेरे सरकार फख़्रे कायनात ﷺ का हर फ़र्मान हक़ है। आक़ा ﷺ अपनी मर्ज़ी से कुछ फ़रमाते ही नहीं बल्कि जो मौला वही फ़रमाता है वही फ़रमाते हैं। नादान कम अक़्ल और गुस्ताख़ अपने आपको ज़रूरत से ज़्यादा होशियार समझते हैं इसलिये हुज़ूर ﷺ के फ़रमान का मज़ाक़ उड़ाते हैं, वह भूल जाते हैं कि रसूले आज़म

का मक़ाम अल्लाह तआला के नजदीक़ अरफ़अ् व आला है। सरकारे दो आलम ﷺ के गुलामो ! खुदारा ! कभी भी हुज़ूर ﷺ के किसी फ़रमान को हल्का न समझना। जितना फ़रमान का एहतेराम करोगे उतने ही मोहतरम और इज्ज़त वाले हो जाओगे। रब अपने महबूब ﷺ के सच्चे आशिक़ों के सदक़े हम सब को सच्चा और पक्का आशिक़े रसूल बनाये।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

★ गुनाहों का कफ़्फ़ारा ★

हज़रत संजरह अज़्दी رضی اللہ عنہ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया, जिसने इल्म हासिल किया तो यह हासिल करना उसके पिछले गुनाहों का कफ़्फ़ारा हो गया।

سبحان اللہ! मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! हम सब गुनाहगार हैं, आक़ाए कायनात ﷺ ने गुनाहों से नजात का आसान तरीक़ा अता फ़रमा दिया। क्या अब भी हम इल्म हासिल न करेंगे? आओ दीवानो ! आज से रोज़ाना कुछ वक़्त इल्म हासिल करने के लिये निकालें। **انشاء اللہ !** गुनाहों का कफ़्फ़ारा भी हो जायेगा और अल्लाह तआला की खुशी भी हासिल होगी। रब्बे क़दीर सब पर करम की नज़र फ़रमाये। **آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔**

★ इल्म का भूका सैर नहीं होता ★

हज़रत अनस رضی اللہ عنہ से मरवी है कि नबी करीम ﷺ ने इरशाद फ़रमाया, दो भूके सैर नहीं होते हैं : एक इल्म का भूका इल्म से सैर नहीं होता, दूसरा दुन्या का भूका दुन्या से सैर नही होता। *(बयहकी, मिश्क़ात, सफा–37)*

हज़रत औन رضی اللہ عنہ से रिवायत है कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद رضی اللہ عنہ ने फ़रमाया, दो भूके कभी सैर नहीं होते, इल्म वाला और दुनियादार, मगर दोनों बराबर नहीं कि इल्म वाला ख़ुदाए तआला की खुशनूदी बढ़ाता है और दुनियादार सरकशी में बढ़ जाता है। फिर हज़रत अब्दुल्लाह ने यह आयत पढ़ी **"كَلَّآ اِنَّ الْاِنْسَانَ لَيَطْغٰى اَنْ رَّاٰهُ اسْتَغْنٰى"** यानी ख़बरदार हो ! बेशक ! इन्सान सरकशी करता है जब अपने आपको बे नियाज़ समझता है।

रावी ने कहा कि हज़रत अब्दुल्लाह ने दूसरे के लिये यह आयत करीमा पढ़ी

यानी अल्लाह से उसके बंदों में उलमा ही डरते हैं। *(पारा–23, आयत–16, मिश्क़ात शरीफ–37)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! नबी करीम ﷺ ने सच फ़रमाया है, इल्म और दुन्या का तालिब कभी सैर नहीं होता लेकिन आज ज़्यादातर तालिबे दुन्या ही नज़र आते हैं। नसलों की नसलें इत्मिनान से जी सकें इतना होने के बावजूद भी पेट नहीं भरता। इसी तरह इल्म का बे पनाह हिस्सा अल्लाह जिसे अता फ़रमाए उसका भी यही हाल होता है कि वह अपने आपको तिश्ना महसूस करता है और मज़ीद तलब में अपनी ज़िन्दगी खपाता है। अल्लाह तआला हम सबको इल्म का प्यासा बनाये और उसके तलब की तड़प अता फ़रमाये।

हज़रत अबू सईद رضی اللہ عنہ से मरवी है कि हुज़ूर सैयद आज़म ﷺ ने इरशाद फ़रमाया, ख़ैर यानी इल्म की बातें सुनने से मोमिन कभी सैर नहीं होगा यहां तक कि जन्नत में पहुंच जायेगा। *(तिर्मिज़ी शरीफ, मिश्क़ात शरीफ–34)*

हज़रत इब्ने उमर رضی اللہ عنہ से रिवायत है, तालिबे इल्म लोगों में सबसे ज़्यादा भूका है और इनमें से जिस का पेट भरा है वह इल्म को तलाश नहीं करता। *(कन्जुल उम्माल)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! इल्म से बेहतर ख़ैर कोई चीज़ नहीं और जिस मोमिन को यह शौक़ लग जाए वह कभी सैर नहीं होता बल्कि ज़िन्दगी की आख़री सांस तक इल्म की बातें सुनने सुनाने में मस्रूफ़ रहता है। और जब रूह निकलती है तो जन्नत का राही बन जाता है। अल्लाह तआला हम सबको वैसे ही मोमिनों में शामिल करे।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

★ इल्मे दीन की तलाश ★

हज़रत वाषिला رضی اللہ عنہ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इरशाद फ़रमाया, जिसने इल्मे दीन तलाश किया और उसे पा लिया तो उसके लिये षवाब का दोहरा हिस्सा है और जिसने उसको नहीं पाया तो उसके लिये एक हिस्सा है।

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! हम किसी आलिमे दीन से कुछ मस्अला पूछने की ग़र्ज़ से गये मगर वह आलिमे दीन न मिले और हम यूं ही आ

गये तो एक नेकी, लेकिन वह मिल गये और मस्अला का हल भी हो गया तो अल्लाह तआला दोहरा सवाब अता फ़रमाता है। कितना करम है तालिबे इल्म पर! काश! हम तालिबे इल्म का जज़्बा अपने अंदर पैदा करें। अल्लाह तआला हम सबको तालिबे इल्म का जज़्बाए सादिक़ अता फ़रमाये।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

★ शहादत की मौत ★

हज़रत अबू ज़र رضی اللہ عنہ और हज़रत अबू हुरैरा رضی اللہ عنہ से रिवायत है कि जब तालिबे इल्म को मौत आ जाये और वह तालिबे इल्म की हालत पर मरे तो वह शहीद है। *(कन्ज़ुल उम्माल, जिल्द–1, सफा–79)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो **!سبحان اللہ** वह शहादत का अज़ीम रुत्बा जिसको हासिल करने के लिये ज़िन्दगी कुरबान करना ज़रूरी है, मगर इल्मे दीन के तलब करने में मौत आने पर तालिबे इल्म को शहादत का दर्जा अता किया जा रहा है। आप अंदाज़ा लगायें कि सरकारे दो आलम ﷺ ने इल्म हासिल करने की कितनी फ़ज़ीलत बयान फ़रमाई है। अल्लाह तआला हमें हमेशा इल्म तलब करने वाला और उस पर अमल करने वाला बनाये रखे।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

★ रोज़ी अल्लाह के ज़िम्मे करम पर ★

हज़रत ज़ियाद बिन हारिष رضی اللہ عنہ से रिवायत है :–

"مَنْ طَلَبَ الْعِلْمَ تَكَفَّلَ اللّٰهُ لَهٗ بِرِزْقِهٖ" यानी जिसने इल्मे दीन हासिल किया, अल्लाह तआला ने उसकी रोज़ी को अपने ज़िम्मे करम पर ले लिया।

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! अल्लाह तआला इल्म हासिल करने वालों पर कितनी करम की नज़र फ़रमाता है कि उसकी रोज़ी और कफ़ालत को अपने ज़िम्मे करम पर ले लेता है। वैसे तो अल्लाह ही सबको रोज़ी अता फ़रमाता है लेकिन जिसने इल्म हासिल किया उससे रब इतना ख़ुश होता है कि उसे तसल्ली दी जा रही है कि तू फ़िक्र न कर, तेरा मौला तेरी कफ़ालत का ज़िम्मा अपने करम पर ले लेता है। लिहाज़ा तू सिर्फ़ इल्म हासिल करने पर तवज्जोह दे और फ़िक्र न कर। अल्लाह हम सबकी औलाद को भी इल्म हासिल

करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये। آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

★ ज़िन्दा मुर्दों के बीच ★

हज़रत हस्सान رضی اللہ عنہ से मरवी है कि इल्म का हासिल करने वाला जाहिलों के दर्मियान ऐसा है जैसे ज़िन्दा मुर्दों के दर्मियान। *(कन्ज़ुल उम्माल, जिल्द–1, सफा–81)*

हज़रत अनस رضی اللہ عنہ से मरवी है, तालिबे इल्म अल्लाह तआला के नज़दीक मुजाहिद फ़ी सबीलिल्लाह से अफ़ज़ल है। *(कन्ज़ुल उम्माल, जिल्द–1, सफा–81)*

★ किसी भी उम्र में इल्म.... ★

हज़रत अनस رضی اللہ عنہ से रिवायत है कि जिसने बचपन में इल्म नहीं हासिल किया तो बड़ी उम्र का होकर उसको हासिल किया फिर मर गया तो वह शहीद मरा। *(कन्ज़ुल उम्माल, जिल्द–1, सफा–92)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! हुसूले इल्म के लिये उम्र की कोई क़ैद नहीं। बचपन में अगर किसी वजह से इल्म हासिल न कर सके तो अब हासिल करो। अगर इसी आलम में मौत वाक़ेअ होगी तो शहादत का मर्तबा मौला अता फ़रमायेगा। लिहाज़ा उम्र की परवा किए बग़ैर इल्म हासिल करने की तरफ़ क़दम बढ़ाना चाहिये। अल्लाह तआला हम सबको तौफ़ीक़ अता फ़रमाये। آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

★ अंबिया के साथ ★

हज़रत अबू अय्यूब رضی اللہ عنہ से मरवी है कि **एक दीनी मस्अला कि मुसलमान उसको सीखे, एक साल की इबादत से बेहतर है।** और हज़रत इस्माईल علیہ السلام की औलाद के गुलाम को आज़ाद करने से बेहतर है। और बेशक! तालिबे इल्म और वह औरत जो अपने शौहर की फ़रमाबर्दार है और वह लड़का कि अपने मां बाप के साथ भलाई करता है, यह सब अंबियाए किराम के साथ बे हिसाब जन्नत में दाख़िल होंगे। *(कन्ज़ुल उम्माल, जिल्द–1, सफा–91)*

★ जन्नत में शहर ★

हज़रत अनस رضی اللہ عنہ से रिवायत है कि हुज़ूर ﷺ ने इरशाद फ़रमाया, जो

शख़्स जहन्नम से अल्लाह के आज़ाद किये हुए लोगों को देखना पसंद करे तो वह तालिबे इल्मों को देखे। क़सम है उस ज़ात की जिसके क़ब्ज़े कुदरत में मेरी जान है ! **कोई तालिबे इल्म जब किसी आलिम के दरवाज़े पर आता जाता है तो अल्लाह तआला उसके हर क़दम के बदले जन्नत में एक शहर तैयार करता है। और वह ज़मीन पर इस हाल में चल के ज़मीन उस्के लिए मगफिरत तलब करती है।** और सुब्ह व शाम उस हालमें करता है कि बख़्शा हुआ होता है और मलाइका तालिबे इल्मों के लिये गवाही देते हैं कि वह जहन्नम से अल्लाह के आज़ाद किये हुए हैं। *(तफसीरे कबीर, जिल्द–1, सफा–275)*

★ जहन्नम हराम ★

हुजूर सैयदे आलम ﷺ ने इरशाद फ़रमाया, जिस शख़्स के क़दम इल्म की तलब में गर्द आलूद हों अल्लाह तआला उसके जिस्म को जहन्नम पर हराम फ़रमायेगा और ख़ुदाए तआला के फ़रिश्ते उसके लिये मग्फ़िरत तलब करेंगे। और अगर इल्म की तलब में मर गया तो शहीद हुआ और उसकी क़ब्र जन्नत के बाग़ों में से एक बाग़ होगी और उसकी क़ब्र ताहद्दे निगाह कुशादा कर दी जायेगी। और उसके पड़ौसियों पर रौशन कर दी जायेगी। चालीस क़ब्रे इसके दाहिने चालीस उसके बायें, चालीस उसके पीछे और चालीस क़ब्रे उसके आगे। *(सफा–281)*

★ उलमाए किराम की फ़ज़ीलत ★

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! उलमा की फ़ज़ीलत के हवाले से हम कुछ बयान करें यह मुमकिन नहीं, इन नायबीन रसूल ﷺ की अज़मत व फ़ज़ीलत सरवरे कोनैन ﷺ ने बयान फ़रमाई है, इसी सिलसिले में चंद अहादीष हम पेश कर रहे हैं। मुलाहज़ा हो :

★ फ़रिश्ते का ऐलान ★

नबी करीम ﷺ से हज़रत अनस رضی اللہ عنہ रिवायत करते हैं कि अल्लाह तआला ने अर्श के नीचे एक निहायत ख़ूबसूरत शहर तख़लीक़ फ़रमाया है जिसके दरवाज़े पर फ़रिश्ता ऐलान करता रहता है कि लोगो! सुन लो ! जिसने

आलिम की ज़ियारत की उसने अंबिया की ज़ियारत की। जिसने नबी की ज़ियारत की गोया उसने ख़ालिक़ की ज़ियारत पाई, और जिसने रब की ज़ियारत की वह जन्नत का मुस्तहिक़ है। *(नुज़हतुल मजालिस, सफा–298, 299)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! आज मग़रबी ताक़तें उलमाए किराम का एहतेराम दिल से निकालकर इस्लाम की अज़्मत दिल से निकालना चाहती हैं और किसी हद तक वह कामयाब भी हो चुके हैं । जाहिल अवाम चौराहे पर खड़े होकर उलमा की हिज्जू और बुराईयों में सरगर्म नज़र आती है और ख़ूद को चंद इबादात का पाबंद बनाकर उनको हक़ीर समझती है। ख़ुदारा ! मज़कूरा हदीष शरीफ़ से उलमा की इज़्ज़त समझो और उलमा की क़द्र करो। साथ ही साथ साहिबे इल्म को भी लाज़िम है कि वह अपने इल्म की क़दर करते हुए नयाबते रसूल का हक़ अदा करने की कोशिश करें। अल्लाह तआला हम सबकी इस्लाह फ़रमाये। **آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔**

★ हुज़ूर ﷺ से मुलाक़ात ★

नबी करीम ﷺ ने फ़रमाया, जिसने आलिम की ज़ियारत की गोया उसने मेरी ज़ियारत की, जो आलिम की महफ़िल में बैठा गोया कि वह मेरे पास बैठा, जिसने मेरी हमनशीनी का अेअ्ज़ाज़ हासिल किया वह जन्नत में भी मेरा हमनशीन होगा।

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के दीवानो **!سبحان اللہ** हम में कौन होगा जो रसूले आज़म ﷺ का हमनशीं बनना न चाहता हो ? जब हम सबकी यह ख़्वाहिश है तो बस उलमाए बा अमल की सोहबत को लाज़िम पकड़ें **! انشاء اللہ** रहमते आलम ﷺ की हमनशीनी का शर्फ़ अल्लाह अता फ़रमायेगा। अल्लाह हम सबको तौफ़ीक़ अता फ़रमाये। **آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔**

★ आलिम और आबिद में फ़र्क़ ★

हुजूर सैयदे आलम नबी करीम ﷺ ने फ़रमाया, मामूली इल्म रखने वाला भी बकषरत इबादत करने वाले आबिद से अच्छा है। *(नुज़हतुल मजालिस, सफा–201)*

قُلُوبُ الْعَالِمِينَ عَلَى الْمَعَالِى وَاَيَّامُ الْوَرىٰ شِبْهُ اللَّيَالِىٰ यानी अहले इल्म

के दिन बुलंदियों पर हैं और मख़लूक़ के दिन शब तारीक बन गये। *(नुज़हतुल मजालिस, सफा–301)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! मज़कूरा हदीषे मुबारका से यह मालूम हुआ कि इल्म इबादत से अफज़ल है। अब हम लोगों को चाहिये जिसने हुज़ूर ﷺ को बेहतर फ़रमाया हम उसको इख़्तियार करने की कोशिश में लगे रहें मगर जो फ़राइज़ हम पर अल्लाह ने रखे हैं उसकी अदायगी में भी कोताही न करें। अल्लाह तआला हम सबको तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

★ वरना तू हलाक ★

नबी करीम ﷺ ने फ़रमाया, **तू आलिम बन या तालिबे इल्म बन, या इल्म की मजलिस में शामिल हो या उलमा से महब्बत करने वाला बन, वरना तू हलाक हो जायेगा।** *(नुज़हतुल मजालिस–302)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! आज मुसलमान क्यों हलाक हो रहे हैं इसकी वजह मज़कूरा हदीष शरीफ़ से वाज़ेह हो गयी है, बे शुमार मुसलमान इल्म, उलमा, उनके दर्स और उनसे महब्बत से दामन बचाये हुए हैं। ज़रूरत इस बात की है कि **अपने आपको हलाकत से बचाना हो तो इल्म हासिल करो, इल्म की मजलिस में शामिल हो उलमा और तलबा से महब्बत करो ! انشاءاللہ हलाकत से बच जाओगे।** अल्लाह तआला हम सबको तौफ़ीक़ अता फ़रमाये। **آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔**

★ हर क़दम पर गुलाम आज़ाद ★

हुज़ूर ﷺ ने फ़रमाया, जिस किसी के सहारे से आलिम चलेगा अल्लाह तआला उसे एक एक क़दम पर गुलाम आज़ाद करने का षवाब अता फ़रमायेगा। और जो ताज़ीम व तकरीम के पेशे नज़र आलिम के सर का बोसा लेता है उसके एक एक बाल के बदले नेकी लिखी जाती है। *(नुज़हतुल मजालिस, सफा–302)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! मज़कूरा हदीष शरीफ़ से उलमा का मक़ाम वाज़ेह हुआ। अब हमारी ज़िम्मेदारी है कि हम उनकी क़दर करें और उनके एहतेराम में कोताही न करें। अलबत्ता आलिम को अपने दिल में यह बात

न रखनी चाहिये कि लोग उसका एतेराम करेंगे और वह साहिबे इल्म व अमल हैं तो ! **انشاءاللہ** उनकी महब्बत अल्लाह तआला लोगों के दिलों में पैदा फ़रमा देगा। अल्लाह तआला हम सबको उसकी तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

★ 999 रहमतें ★

नबी करीम ﷺ ने फ़रमाया, शब व रोज़ 999 रहमतें अल्लाह तआला और तलबा पर नाज़िल फ़रमाता है और बाक़ी लोगों पर एक उलूमे दीनिया के हुसूल में जिसे मौत ने आ लिया उसके और अंबियाए के दर्मियान दर्जाए नुबुव्वत के अलावा कोई चीज़ हाइल नहीं होगी। *(नुज़हतुल मजालिस, सफा–302)*

سبحان اللہ! मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! तालिबे उलूमे दीनिया और उलेमा पर अल्लाह तआला की करम नवाज़ी की बारिशें तो देखो कि सब पर एक रहमत और तालिबे इल्म व उलमा पर 999 रहमतें नाज़िल फ़रमाता है। लिहाज़ा तालिबे इल्म व उलमा की सोहबत इख़्तेयार करो ! **انشاءاللہ** कुछ रहमतें हम पर भी बरस जायेंगी। परवर्दिगार हम सब को उलेमा की सोहबत से इस्तेफ़ादा की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

★ उलमा उम्मत के चिराग़ ★

नबी करीम ﷺ ने जिब्रईल علیہ السلام से उलमा की शान दर्याफ़्त की तो उन्होंने कहा, उलमाए किराम आपकी उम्मत के दुन्या व आख़ेरत में चिराग़ हैं। और वह ख़ुशनसीब है जो उनकी क़द्र व मंज़िलत को पहचानता है। और उनसे महब्बत रखता है और वह बड़ा बदनसीब है जो इनसे मख़ासेमत रखता है।

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! रहमते आलम ﷺ ने जिब्रईल अमीन علیہ السلام से सवाल करके उलमा के बारे में क्या राय है वह हम तक पहुंचाई। अब अगर उसके बावजूद हम उलमाए अहले सुन्नत की क़द्र न करें तो हम से बढ़कर कम नसीब कौन होगा? **याद रखें, उलमा से मुराद उलमाए अहले सुन्नत हैं लिहाज़ा गुस्ताख़ उलमा का एहतेराम नहीं करना चाहिये बल्कि उनसे दूर रहकर अपने ईमान की हिफ़ाज़त करनी चाहिये।**

अल्लाह हम सबको तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

★ ख़ुलफ़ा की इज़्ज़त ★

नबी करीम ﷺ ने फ़रमाया, मेरे ख़ुलफ़ा की इज़्ज़त किया करना। अर्ज़ किया, वह कौन है? फ़रमाया, जो मेरी अहादीष का दर्स देंगे और मेरी उम्मत को मेरी बातें पहुंचायेंगे। और जो जुम्आ के दिन मेरी अहादीष में ग़ौर व ख़ोज़ करके उससे उम्दा मसाइल का इस्तिंबात करेगा सत्तर हज़ार गुलामों के आज़ाद करने के बराबर सवाब अता होगा। नीज़ उसे अल्लाह तआला की रज़ा और ख़ुशनूदी हासिल होगी। और उसकी मग्फ़िरत यक़ीनी है। *(नुज़हतुल मजालिस, सफ़ा–306)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! मज़कूरा फ़रमाने रिसालत मआब ﷺ से उन उलमा का मक़ाम वाज़ेह हुआ जिनको रब्बे क़दीर ने फ़न्ने हदीष में महारत अता फ़रमाई है। अल्लाह तआला इन मुहद्देषीन के सदक़ा व तुफ़ैल में हम सबको इल्मे हदीष की दौलत अता फ़रमाये और उनके सदक़ा व तुफ़ैल हम सबकी बख़्शिश फ़रमाये। آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

★ उम्मत के सूरज ★

नबी करीम ﷺ ने हज़रत जिब्राईल علیہ السلام से साहिबे इल्म की शान दर्याफ़्त फ़रमाई तो उन्होंने कहा, आलिम आप की उम्मत के सूरज हैं, जो आलिम की क़द्र व मंज़िलत को पहचानता है और इज़्ज़त बजा लाता है उसके लिये जन्नत की बशारत है और जो इनकी मअरेफ़त और शनासाई से एअराज़ करता है और दुश्मनी रखता है उसके लिये तबाही व बर्बादी है।

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! मज़कूरा हदीषे मुबारका की रौशनी में आलिम से दिल में बुग़्ज़ नहीं रखना चाहिये वरना बर्बादी का सामना करना पड़ेगा, उनका एहतेराम और उनकी इज़्ज़त करके जन्नत का हक़दार बनें न कि तौहीन करके बर्बादी को दावत दें। अल्लाह तआला हम सबको उलमाए इस्लाम की इज़्ज़त करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

★ मंज़िले शराफ़त ★

नबी करीम ने फ़रमाया, जो उलूमे शरइय्या हासिल करे और मेरी उम्मत को सिखाये, आजिज़ी व इंकेसारी इख़्तेयार करे वह जन्नत में इतना षवाब पायेगा कि कोई उससे अफ़ज़ल नज़र नहीं आयेगा। जन्नत में उस की मंज़िल का नाम मंज़िले शराफ़त होगा और जन्नत में हर मक़ाम से हज़्ज़े वाफिर पायेगा। *(नुज़हतुल मजालिस–307)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! तिश्नगाने उलूम की प्यास बुझाना कितनी बड़ी नेकी है और उसका अज्र कितना बुलंद है। मज़कूरा हदीषे मुबारका में आपने सुना। साथ ही साथ मोअल्लिमे इंसानियत, बाइषे तख़्लीक़े कायनात ﷺ की अज़ीम सुन्नत आजिज़ी इंकेसारी को अगर मोअल्लिम इख़्तेयार करे तो उसको मंज़िले शराफ़त से नवाज़ा जायेगा। काश! हम इन चीज़ों को समझते और इस पर अमल करने की कोशिश करते। अल्लाह عزوجل हम सबको तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

★ मर्तबए नुबुव्वत से क़रीब ★

नबी करीम ﷺ ने इरशाद फ़रमाया कि सब लोगों से अफ़ज़ल मोमिन आलिम है कि जब उसकी तरफ़ रुजूअ की जाये तो नफ़ा दे और जब उससे बे नियाज़ी बरती जाये तो वह भी बे नियाज़ हो जाये। नीज़ इरशाद फ़रमाया कि मर्तबए नुबुव्वत से सबसे ज़्यादा क़रीब आलिम और मुहाजिद हैं। उलमा इसलिये कि उन्होंने रसूलों के पैग़ामात लोगों तक पहुंचाये और मुजाहिद इसलिये कि उन्होंने अंबियाए किराम के अहकामात को बज़ोरे शमशेर पूरा किया। और उनके अहकामात की पैरवी की। मज़ीद इरशाद है कि पूरे क़बीले की मौत एक आलिम की मौत से आसान है। और फ़रमाया कि क़यामत के दिन उलमा की स्याही की बूंदें शोहदा के ख़ून के बराबर तोली जायेंगी। *(मकाशिफतुल कुलूब–586)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! मज़कूरा हदीष शरीफ़ में यह बताया गया है कि क़बीले की मौत से भी ज़्यादा एक आलिम की मौत बाइसे तकलीफ़ है। एक आलिम की हयात आलम की हयात का सबब है और एक आलिम की

मौत आलम की मौत का सबब है। आज उलमा उठते जा रहे हैं, अच्छे अच्छे उलमा अब इस दारे फ़ानी से कूच कर रहे हैं। आओ! उनसे इस्तेफ़ादा करें और अपने दामन को इल्म से भर लें और आख़ेरत में सुर्खरुइ हासिल करने का सामान मुहय्या करें। अल्लाह तआला हम सबको नेकी की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये। **آمین بجاہ النبی الکریم علیه افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔**

★ दो चीज़ों में हलाकत ★

हुजूर ﷺ का फ़रमान है कि आलिम इल्म से कभी सैर नहीं होता यहां तक कि जन्नत में पहुंच जाता है। मज़ीद फ़रमाया कि मेरी उम्मत की हलाकत दो चीज़ों में है : इल्म का छोड़ देना, और माल का जमा करना। *(मुकाशफतुल कुलूब–586)*

الله اكبر! मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! आज हम अपनी हलाकत के असबाब पर ग़ौर करते हैं और वजह तलाश करते हैं लेकिन आक़ाए दो जहां ﷺ ने वजह बयान फ़रमा दी है। यक़ीनन! आज मुसलमान जेहालत के अंधेरे में गुम हो चुका है और माल की लालच में अंधा हो चुका है जिस ने हमें तबाह व बर्बाद कर दिया है। अल्लाह तआला हम सबको इल्म के हुसूल की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। **آمین بجاہ النبی الکریم علیه افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔**

★ चेहरा देखना इबादत ★

हज़रत अबू हुरैरा رضی اللہ عنہ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इरशाद फ़रमाया, पांच चीज़ें इबादत से हैं : कम खाना, मस्जिद में बैठना, काबा देखना, मुस्हफ़ को देखना और आलिम का चेहरा देखना। *(फतावा रज़विय्यह, 4/616, जामिउल अहादिष–72)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! हम को चाहिये कि हम उलमा के चेहरे की ज़ियारत करके अपने दामन में इबादत का षवाब जमा कर लें। अल्लाह हम सबको तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

آمین بجاہ النبی الکریم علیه افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

हज़रत अबू हुरैरा رضی اللہ عنہ से रिवायत है कि नबी करीम ﷺ ने इरशाद फ़रमाया, पांच चीज़ें इबादत से हैं : मुस्हफ़ को देखना, काबा को देखना, मां बाप

को देखना, ज़मज़म के अंदर नज़र करना और इससे गुनाह उतरते हैं और आलिम का चेहरा देखना। *(फतावा रज़विय्यह, 4/616)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! मज़कूरा पांच चीज़ों को देखने का षवाब आपने समाअत फ़रमाया लिहाज़ा इस इबादत के षवाब को हासिल करने के लिये ज़रूर बिज़् ज़रूर पांच चीज़ों को देखते रहें। अल्लाह हम सबको तौफ़ीक़ अता फ़रमाये। **آمین بجاہ النبی الکریم علیه افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔**

★ शैतान पर भारी ★

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास رضی اللہ عنہ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इरशाद फ़रमाया, दीन की समझ रखने वाला एक शख़्स (आलिम) शैतान पर एक हज़ार आबिदों के मुक़ाबला में ज़्यादा भारी है। *(जामिउल अहादीष, सफा–173)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! एक आबिद ख़ूद अपनी ज़ात को अपनी इबादत से फ़ायदा पहुंचाते हैं और कभी कभी रिया वग़ैरह के ज़रिये इस इबादत को ज़ाएअ भी कर लेते हैं लेकिन आलिम ख़ूद भी इबादत करता है और शैतान के मकर व फ़रेब से बचता है और दूसरों को भी ज़ौक़े इबादत के साथ शैतान के मकर व फ़रेब से आगाह करता है। अल्लाह तआला हम सबको इल्म की दौलत अता फ़रमाए। **آمین بجاہ النبی الکریم علیه افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔**

★ बड़ा हिस्सा पाया ★

हज़रत अबू दरदा رضی اللہ عنہ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इरशाद फ़रमाया, उलमा वारिषे अंबिया हैं, अंबिया ने दिरहम व दीनार तरका में न छोड़े, इल्म अपना वरषा छोड़ा है। जिसने इल्म पाया उसने बड़ा हिस्सा पाया। *(जामिउल अहादीष–173)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! आओ अल्लाह की बारगाह में दुआ करें, मौला हम सबको अंबिया का वरषा अता फ़रमाये।

آمین بجاہ النبی الکریم علیه افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

★ ग़लती एक गुनाह दो! ★

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास رضی اللہ عنہما से रिवायत है कि रसूलुल्लाह

ने इरशाद फ़रमाया, **आलिम का गुनाह एक और जाहिल का गुनाह दो। किसी ने अर्ज़ किया, या रसूलुल्लाह ﷺ किस लिए ? फ़रमाया, आलिम पर वबाल उसी का है कि गुनाह क्यों किया? और जाहिल पर एक अज़ाब गुनाह का और दूसरा न सीखने का।** *(फ़तावा रज़विय्यह, 1/74, जामिउल अहादीष–176)*

★ क़ब्र में नेकिया जारी ★

हज़रत अबू हुरैरा رضی اللہ عنہ से रिवायत है कि उन्होंने कहा कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया, **जब इन्सान मर जाता है तो उससे उसका अमल कट जाता है मगर तीन चीज़ों का षवाब बराबर जारी रहता है : सदक़ा जारिया, इल्म जिससे नफ़ा हासिल किया जाये या नेक औलाद जो उसके लिये दुआ करे।** *(मुस्लिम , मिश्क़ात–32)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! माल व ज़र सब कुछ ज़मीन के ऊपर रह जायेंगे। आज हम दौलत जमा करने में कोई कोताही नहीं करते जब कि यह सब ज़मीन पर ही रह जायेगी, लेकिन हमने अगर इल्म के फ़रोग़ के लिये कुछ काम किया या ख़ूद हमने कुछ शागिर्दों को तैयार कर दिया तो ! **انشاء اللہ** मरने के बाद भी सबका षवाब हम को मिलता रहेगा। अल्लाह हम सबको तौफ़ीक़ अता फ़रमाये। **آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔**

★ क्या हसद जाइज़ है ? ★

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद رضی اللہ عنہ से मरवी है कि उन्होंने कहा कि नबी करीम ﷺ ने इरशाद फ़रमाया, दो चीज़ों के सिवा किसी में हसद जाइज़ नहीं, एक वह शख़्स जिसे अल्लाह ने माल दिया और वह उसे राहे हक़ में ख़र्च करे। और दूसरा वह शख़्स जिसको अल्लाह ने दीन का इल्म अता फ़रमाया तो वह उसके मुताबिक़ फ़ैसला करता है और उसकी तालीम देता है। *(बुख़ारी शरीफ़, जिल्द अव्वल, सफ़ा–17)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! हसद बंदे की फ़ितरत में शामिल है, बंदा किसी को माल व जाह, शोहरत व बुलंदी पर देखकर उसके ज़वाल की तमन्ना दिल में पैदा करता है और दिल ही दिल में यह चाहता है कि यह नेअ्मत

उससे ज़ाइल होकर मुझे हासिल हो और इसी का नाम हसद है। बंदे को चाहिये कि ऐसी तमन्ना कभी भी अपने दिल में न लाये कि इस क़िस्म की तमन्ना से उसकी सारी नेकियां तबाह हो जाती हैं। हां ! यह तमन्ना ज़रूर कर सकता है कि ऐ अल्लाह ! जो नेअमत तूने उसे अता फ़रमाई है वह नेअ्मत अपने फ़ज़्ल व करम से मुझे भी अता फ़रमा। लेकिन किसी के पास इल्म की दौलत देखकर यह दुआ करना कि ऐ मौला ! जितना इल्म तूने उसको अता फ़रमाया है उससे ज़्यादा इल्मे नाफ़ेअ की दौलत मुझे अता फ़रमा। नीज़ किसी को राहे ख़ुदा में माल ख़र्च करता हुआ देखे तो उसके मुक़ाबले में अपना माल ज़्यादा ख़र्च करने की तमन्ना या दुआ करना जाइज़ है और इस पर कोई मवाख़ेज़ा भी नहीं इसलिये कि यह हसद में दाख़िल भी नहीं है। मौला करीम हमें अपने करम से इल्मे नाफ़ेअ की दौलत से मालामाल भी फ़रमा देगा और नीज़ राहे ख़ुदा में ख़र्च करने का जज़्बा पैदा फ़रमा देगा। अल्लाह हम सबको इल्मे नाफ़ेअ् की दौलत अता फ़रमाये। **آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔**

★ फ़र्मांबर्दार रहो ★

हज़रत इमाम ग़ज़ाली رحمۃ اللہ علیہ फ़रमाते हैं कि अगर आलिम मुत्तक़ी और परहेज़गार हो और उलमाए सलफ़ का मुत्तबेअ और फ़र्मांबर्दार हो और ऐसे उलूम पढ़ता हो जिस्में दुन्या के गुरूर और फ़रेब से डरने का बयान हो तो ऐसे आलिम से पढ़ना कैसा ? उसकी सोहबत बाइषे मुन्फ़अत है बल्कि उसकी ज़ियारत भी मूजिबे सआदत। आदमी अगर वह इल्म सीखे जो मुफ़ीद होता तो **!سبحان اللہ** यह सब कामों से बेहतर है। और मुफ़ीद वह उलूम हैं जिनसे दुन्या की हिक़ारत और उक़बा की अज़मत के हालात मालूम हों और जिन से आदमी आख़ेरत के मुन्किरों और दुन्यादारों की नादानी और हिमाक़त को जानता है। *(कीमियाए सआदत–132)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! आज **! اَلْحَمْدُ لِلّٰہ** उलमा की कमी नहीं, जो मुत्तबअे सुन्नत भी हैं, दुन्या को हक़ीर भी समझते हैं। अल्बत्ता उनकी तलाश मुश्किल है। आज ऐसे बे शुमार उलमा हैं जो दुन्या और दुन्यादारों की तरफ़ किसी क़िस्म की ललचाई हुई निगाह नहीं डालते बल्कि उन्की नज़र हमेशा रज़ाए इलाही व रज़ाए रसूल ही पर रहती है। ऐसे बा अमल उलमा की

सोहबत में बैठने से दिल भी ज़िन्दा होता है और आख़ेरत की तैयारी का जज़्बा व शौक़ बेदार होता है लिहाज़ा ऐसे उलमा की सोहबत में ज़रूर बैठें। अल्लाह तआला उलमा की सोहबत से इस्तेफ़ादा की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

★ अज़ाब उठा लिया जाता है ★

हज़रत इमाम तफ़ताज़ानी رحمۃ اللہ علیہ शरहे अक़ायद में बयान फरमाते हैं कि नबी करीम ﷺ ने फ़रमाया, **जब किसी आलिम का किसी शहर या बस्ती से गुज़र होता है तो चालीस दिन तक वहां के क़ब्रस्तान से अज़ाब उठा लिया जाता है।** *(नुज़हतुल मजालिस–300)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! जब आलिम के किसी शहर या बस्ती से गुज़रने पर क़ब्रस्तान वालों पर इतना करम हो जाता है तो जहां उनका क़याम हो, जिनसे उनकी सोहबत और दोस्ती हो और जो उनकी ख़िदमत में लगे हों उन पर मौला का कितना करम होगा? लिहाज़ा आलिम की ख़िदमत करते रहो **انشاء اللہ !** दोनों जहां में उस का फ़ायदा हासिल होगा। अल्लाह तआला हम सबको आलिम से महब्बत और उनकी ख़िदमत करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

★ ज़मीन व आसमान को संवारा गया ★

रबीउल अबरार में है कि अल्लाह तआला ने आसमान को तीन चीज़ों से मुज़ैयन फ़रमाया : आफ़ताब व महताब और तारों से, और ज़मीन को भी तीन चीज़ों से ज़ीनत अता फ़रमाई : उलमा से, बारिश से और अदल व इन्साफ़ के पैकर बादशाह से। *(नुज़हतुल मजालिस–300)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! आसमान की ज़ीनत आफ़ताब व महताब और तारों से। आप समझ सकते हैं कि बग़ैर आफ़ताब व महताब और तारों के आसमान क्यों कर ख़ूबसूरत नज़र आ सकता है? बिल्कुल इसी तरह अगर ज़मीन पर बारिश न हो तो ज़मीन के ख़ज़ाने बाहर नहीं आ सकते। इसी तरह अगर रुए ज़मीन पर उलमाए किराम की मुक़द्दस जमाअत न हो तो मुआशरा तबाह व बर्बाद हो जायेगा, क्यों कि उलमाए किराम अम्र बिल मअरूफ़ और नही अनिल मुन्किर करते रहते हैं जिसकी वजह से ज़मीन पर फ़सादात,

ख़ूंरेज़ियां, हुक़ूक़ की पामाली वग़ैरह बुरे काम नहीं होते। इसलिये यह उलमा ज़मीन की ज़ीनत हैं। लिहाज़ा उलमा की क़द्र करो और उन से फ़ायदा हासिल करो। अल्लाह हम सबको तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

★ हौज़े कौषर का पानी ★

हज़रत नक़ी अली عَلَیْہِ الرَّحْمَۃُ وَ الرِّضْوَانُ फ़रमाते हैं कि इबादत गुज़ार हौज़े कौषर से ख़ूद पानी हासिल करेंगे मगर उलमाए किराम को यह सआदत नसीब होगी कि साहिबे हौज़े कौषर नबीए मुकर्रम ﷺ अपने दस्ते मुबारक से भर भर कर प्याला पिलायेंगे। *(ज़हरूर्रियाज़, नुज़हतुल मजालिस–300)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! मज़कूरा फ़रमान से आप अच्छी तरह जान गये कि उलमा का मर्तबा रहमते आलम ﷺ के नज़दीक क्या है? कि रसूले गिरामी ﷺ अपने मुक़द्दस हाथों से उन्हें सैराब फ़रमायेंगे। नीज़ उलमा की फ़ज़ीलत के हवाले से फ़रमाया गया कि उलमा की पैरवी की जाती है उनके अफ़आल व आमाल की इक़्तेदा होती है, उनकी राय हतमी समझी जाती है, फ़रिश्ते उनकी रिफ़ाक़त चाहते हैं और इस्तेराहत के वक़्त अपने बाज़ूओं से सहलाते हैं, कायनात की हर चीज़ सेहरा और दरया की मख़लूक़, यहां तक कि समंदर में मछलियां, ख़ुश्की पर कीड़े, मकोड़े, दरिन्दे, परिन्दे सभी आलिम के लिये दुआऐं मांगते रहते हैं। *(नुज़हतुल मजालिस–301, 302)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! मज़कूरा फ़रमान से आपने जान लिया कि उलमा के लिये इस तरह से अल्लाह की मख़लूक़ क्यों ख़िदमत में लगी रहती है और मासूम फ़रिश्तों से लेकर समंदर की मछलियां क्यों मग्फ़िरत की दुआऐं करती हैं? तो मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! वजह यह है कि अल्लाह तआला की मख़लूक़ के हुक़ूक़ उलमा ही बताते हैं, अगर उलमा मख़लूक़े ख़ुदा के हुक़ूक़ न बताते तो आज किसे ख़बर होती कि कौन सी मख़लूक़ का क्या हक़ है! लिहाज़ा सब उनके लिये दुआ भी करते हैं और उनसे इस्तेफ़ादा भी? रब्बे क़दीर उलमाए अहले सुन्नत की उम्र में बरकत अता फ़रमाये। **آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔**

★ दो दुश्मन ★

हज़रत अल्लामा शैख़ सअदी رحمۃ اللہ علیہ फ़रमाते हैं कि दो इन्सान मुल्क और दीन के दुश्मन हैं : एक वह बादशाह जो बुर्दबारी से ख़ाली हो और दूसरा वह आबिद जो इल्म से ख़ाली है। *(गुलिस्ताने सअदी–248)*

मेरे प्यारे आक़ा صلی اللہ علیہ وسلم के प्यारे दीवानो ! **आज जाहिल आबिदों का ज़ोर दिन ब दिन बढ़ता जा रहा है । हम देख रहे हैं कि मुआशरे में साहिबे इल्म को कोई अहमियत नहीं दी जाती है लेकिन अगर चंद मामूलात का पाबंद कोई आबिद हो भले उसका कुरआन शरीफ़ पढ़ना भी दुरुस्त न हो, उसको अत्तहिय्यात व दुरूदे इब्राहीम वग़ैरह भी ज़्यादा मालूम न हों बल्कि मसाइले शरइय्यह से बिल्कुल वाक़फ़ियत न हो ऐसे शख़्स को लोग आलिमे दीन से ज़्यादा फ़ौक़ियत देते हैं।** हक़ीक़त में देखा जाये तो ऐसा शख़्स दीन का दुश्मन है जो जाहिल हो और ज़ुहद पर ज़ोर दे रहा हो और इल्म हासिल करने की कोशिश न कर रहा हो। ऐसा बादशाह जो इल्म से ख़ाली हो वो मुल्क का दुश्मन है उससे मुल्क तबाह होता है और वह आबिद जो इल्म से ख़ाली हो वह दीन का दुश्मन है। लिहाज़ा हम दुआ करें कि अल्लाह तआला हम सबको इल्म व हिल्म की दौलत से मालामाल फ़रमाये। **آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔**

★ अहमियते इल्म ★

हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम رضی اللہ عنہ ने हज़रत कअब رضی اللہ عنہ से पूछा कि उलमा के इल्म हासिल कर लेने के बाद कौन सी चीज़ उनके दिलों से निकाल लेती है? हज़रत कअब رضی اللہ عنہ ने कहा लालच, हिर्स और लोगों के सामने हाथ फैलाना।

किसी शख़्स ने हज़रत फ़ुज़ैल عَلَیْہِ الرَّحْمَۃُ وَ الرِّضْوَانُ से इस क़ौल की तशरीह चाही तो उन्होंने जवाब दिया कि इन्सान लालच में जब किसी चीज़ को अपना मतलब व मक़सूद बना लेता है तो उसका दीन रुख़सत हो जाता है। हिर्स यह है कि इन्सान कभी इस चीज़ की और कभी उस चीज़ की तलब में रहता है, यहां तक कि वह सब कुछ हासिल करना चाहता है और कभी इस मक़सद के हुसूल के लिये तेरा साबिक़ा मुख़्तलिफ़ लोगों से पड़ेगा जब वह तेरी ज़रूरतें पूरी करेंगे

तो तेरी नाक में नकेल डालकर जहां चाहेंगे ले जायेंगे। वह तुझ से अपनी इज़्ज़त चाहेंगे और तू रुसवा हो जायेगा। और इसी महब्बते दुन्या के बाइष जब भी तू उनके सामने से गुज़रेगा उन्हें सलाम करेगा। और जब वह बीमार होंगे तो अयादत को जायेगा और यह तेरे तमाम अफ़आल ख़ुदा की रज़ा के लिये नहीं होंगे। तेरे लिये बहुत अच्छा होता अगर तू उनका मोहताज न होता। *(मुकाशफ़तुल कुलूब, सफ़ा–259, 260)*

मेरे प्यारे आक़ा صلی اللہ علیہ وسلم के प्यारे दीवानो ! आओ ! हम दुआ करें कि अल्लाह तआला हम सबको अपने और अपने प्यारे महबूब صلی اللہ علیہ وسلم के अलावा किसी का मोहताज न करे और उलमाए किराम को भी किसी दुन्यादार के दरवाज़े का गदा न बनाये बल्कि मख़्लूक़े ख़ुदा उलमा के दरवाज़े पर आकर अपनी झोलियों को भर कर लायें और किसी का मोहताज कभी न करे और दोनों जहां में इज़्ज़त व सरबुलंदी अता फ़रमाये और हम सबको उनकी ख़िदमत की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये। **آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔**

हज़रत बहज़ीन हकीम رضی اللہ عنہ से रिवायत है कि हुज़ूर صلی اللہ علیہ وسلم ने इरशाद फ़रमाया कि जिसने आलिमों का इस्तिक़बाल किया तहक़ीक़ उसने मेरा इस्तिक़बाल किया। और जो आलिमों की मुलाक़ात के लिये गया तो यक़ीनन ! वह मेरी मुलाक़ात के लिये आया। और जो आलिमों के साथ बैठा वह तहक़ीक़ मेरे साथ बैठा। और जो मेरे साथ बैठा वह यक़ीनन ! मेरे रब की बारगाह में बैठा। *(कन्ज़ुल उम्माल, जिल्द–1, सफ़ा–97)*

★ ताज़ीमे उलमा ★

हज़रत अबी इमामा رضی اللہ عنہ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صلی اللہ علیہ وسلم ने इरशाद फ़रमाया, उलमा के हक़ को हल्का न जानेगा मगर मुनाफ़िक़। *(जामिउल अहादीष, तिब्रानी)*

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह رضی اللہ عنہ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صلی اللہ علیہ وسلم ने इरशाद फ़रमाया कि उलमाके हक़ को हल्का न जानेगा मगर मुनाफ़िक़। *(जामिउल अहादीष, कन्ज़ुल उम्माल)*

मेरे प्यारे आक़ा صلی اللہ علیہ وسلم के प्यारे दीवानो ! मज़कूरा हदीष शरीफ़ से उलमा का मक़ाम वाज़ेह हो गया है लेकिन आज उलमा की क़द्र व क़ीमत अवामुन्नास

में क्या है ? सब पर अयां है। **याद रखें ! अगर उलमाए किराम को किसी ने हक़ीर जाना या उनके लिये दिल में एहतेराम का जज़्बा न रखा वह इस हदीष शरीफ़ की रौशनी में "मुनाफ़िक़" हैं ! الله اکبر !**

अल्लाह तआला हम सबको निफ़ाक़ से बचने और उलमाए किराम का एहतेराम करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

★ मेरी उम्मत से नहीं ★

हज़रत उबादा बिन सामत رضی اللہ عنہ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صلی اللہ علیہ وسلم ने इरशाद फ़रमाया, जिसने हमारे आलिम का हक़ न पहचाना वह मेरी उम्मत से नहीं। *(जामिउल अहादिष, मुस्नदे अहमद इब्ने हंबल)*

मेरे प्यारे आक़ा صلی اللہ علیہ وسلم के प्यारे दीवानो ! आलिमे दीन का मक़ाम और उनके रुत्बे जब तक हम नहीं समझेंगे उस वक़्त तक उनका हक़ अदा नहीं कर सकेंगे। याद रखें ! आलिमे दीन का हक़ यह है कि उनका एहतेराम करें, अदब बजा लायें, उनकी ज़रूरियात का ख़्याल रखें और उनकी ग़ीबत न करें, उनके अहकाम जो कुरआन व सुन्नत के मुताबिक़ हो बजा लायें, उनकी ख़िदमत में कोताही न करें। अगर आलिम का हक़ अदा न किया गया तो रहमते आलम صلی اللہ علیہ وسلم की नाराज़गी का बाइष है, लिहाज़ा है, हमे लाज़िम है कि हम उन के हुकूक़ की हमेशा अदायगी करते रहें कि अल्लाह व रसूल صلی اللہ علیہ وسلم की रहमत के मुस्तहिक़ बनें। अल्लाह तआला हम सबको इसकी तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

★ अंदेशए कुफ़्र ★

जिसने किसी आलिम से ज़ाहिरी वजह के बग़ैर बुग़्ज़ रखा उस पर कुफ़्र का अंदेशा है।

मेरे प्यारे आक़ा صلی اللہ علیہ وسلم के प्यारे दीवानो! हम ने बहुत सारे बुग़्ज़ रखने वालों और उलमाए किराम को सताने वालों का हाल देखा है **! الله اکبر** अल्लाह रहम व करम फ़रमाए, निहायत ही मुफ़लिसी में ज़िन्दगी गुज़ारते हैं और ज़िल्लत उनका मुक़द्दर बन गयी जाती है बल्कि उलमाए किराम से दुश्मनी व अदावत

व बुग़्ज़ की वजह से ईमान जैसी अज़ीम दौलत के चले जाने का अंदेशा है। लिहाज़ा कोशिश करें कि ऐसी ग़लती हमसे कभी न होने पाये। आइये अल्लाह से दुआ करें कि अल्लाह तआला हम सबको अपने बुजुर्गों का अदब व एहतेराम बजा लाने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

हज़रत अब्दुल्लाह رضی اللہ عنہ से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रत अली رضی اللہ عنہ कहीं तशरीफ़ फ़रमा हुए। साहिबे ख़ाना ने हज़रत के लिये मस्नद हाज़िर की, आप उस पर रौनक़ अफ़रोज़ हुए और फ़रमाया, कोई गधा ही इज्ज़त की बात क़बूल न करेगा। *(जामिउल अहादीष, मुस्नदे फ़िरदोस, जिल्द–5, सफ़ा–121)*

मेरे प्यारे आक़ा صلی اللہ علیہ وسلم के प्यारे दीवानो ! जब कोई इज्ज़त दे तो उसके क़ुबूल करने से इन्कार नहीं करना चाहिये। हां ! अगर उलमा मौजूद हों और कोई दूसरा मस्नद पेश करे तो चाहिये कि उसको क़बूल करके उलमाए किराम की ख़िदमत में पेश कर दिया जाए कि यह उनका ज़्यादा हक़ है। कि इस तरह अल्लाह तआला और उसके रसूल صلی اللہ علیہ وسلم और नाइबे रसूल भी इससे राज़ी हो जायेंगे और **! انشاء الله** इस ख़िदमत का सिला दोनों जहां में वह बंदा पायेगा। अल्लाह तआला हम सबको हुकूक़ की अदायगी की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

★ वह मुनाफ़िक़ है ★

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह رضی اللہ عنہ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صلی اللہ علیہ وسلم ने इरशाद फ़रमाया, तीन शख़्स हैं जिनके हक़ को हल्का न जानेगा मगर खुला मुनाफ़िक़। अज़ आं जुमला : एक बुढ़ा मुसलमान, दूसरा मुसलमान बादशाहे आदिल, तीसरा आलिम के मुसलमानों को नेक बात बताये। *(जामिउल अहादीष, मोअजमे कबीर, जिल्द–8, सफ़ा–202)*

मेरे प्यारे आक़ा صلی اللہ علیہ وسلم के दीवानो ! आइये, अल्लाह से दुआ करें कि अल्लाह तआला मज़कूरा तीन अश्ख़ास के हुकूक़ की अदायगी नीज़ उलमाए किराम के एहतेराम की हम सबको तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

अगर आलिम को इसलिये बुरा कहता है कि वह आलिम है जब तो सरीह

काफ़िर है, और अगर बवजहे इल्म उस की ताज़ीम फर्ज़ जानता है मगर अपनी किसी दुन्यावी खुसूमत कशे बाइष बुरा कहता है, गाली देता है, तहक़ीर करता है तो **सख़्त फ़ासिक़ व फ़ाजिर** है। और अगर बे सबब रंज रखता है मरीज़ुल क़ल्ब, हबीसुल बातिल है और उसके **कुफ़्र का अंदेशा** है।

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! यूं तो आम मोमिन बंदे के सिलसिले में दिल को साफ़ रखने का हुक्म फ़रमाया गया, ख़ुसूसन उलमा की इज़्ज़त और उनके लिये अपने दिल को साफ़ रखना और उनसे महब्बत करना यह ऐसे आमाल हैं कि **انشاء اللّٰہ !** उनसे हमारा ख़ात्मा बिल्ख़ैर होगा, अल्लाह तआला क़बूल फ़रमाए। **آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔**

★ आलिम....और.....जाहिल ★

आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी رحمۃ اللہ علیہ फ़रमाते हैं कि अल्लाह ﷻ ने उलमा व जुहला को बराबर न रखा तो मुसलमानों पर भी उनका इम्तेयाज़ लाज़िम है। इसी बाब से है उलमाए दीन को मजालिस में सदर मक़ाम व मस्नदे इकराम पर जगह देना कि सुल्फ़ा व ख़ुल्फ़ा, शाएअ व ज़ाएअ और शरअन व उर्फन मंदूब व मतलूब। हां! उलमा व सादात को यह नाजाइज़ व मम्नूअ है कि आप अपने लिये सबसे इम्तेयाज़ चाहे और अपने नफ़्स को मुसलामनों से बड़ा जाने कि यह तकब्बुर है और तकब्बुर मलिके जब्बार जल्लते अज़ीमा के सिवा किसी को लाइक़ नहीं। बंदा के हक़ में गुनाहे अकबर है। **"اَلَیسَ فِیۡ جَهَنَّمَ مَثۡوًی لِّلۡمُتَکَبِّرِیۡنَ"** "क्या जहन्नम में नहीं है ठिकाना तकब्बुर वालों का!" जब सब उलमा के आक़ा सब सादात के बाप, हुज़ूर पुरनूर सैयदे आलम ﷺ इंतेहाई दर्जा के तवाज़ोअ फ़रमाते हैं और मक़ाम व मजलिस, ख़ुरिश व रविश की अम्र में अपने बंदगाने बारगाह पर इम्तेयाज़ चाहते हैं तो दूसरों की क्या हक़ीक़त है? मगर मुसलमानों को यही हुक्म है कि सब से ज़ाइद उलमा व सादात का ऐअज़ाज़ व इम्तेयाज़ करें। यह ऐसा है कि किसी शख़्स को लोगों से अपने लिए तलबे क़ियाम होना मकरूह, और लोगों का अपने मोअज़्ज़म के लिए कियाम मन्दुब। फिर जब अहले इस्लाम के साथ इम्तेयाज़े ख़ास का बर्ताव करें तो उसका क़बूल इन्हें ममनूअ नहीं। *(जामिउल अहादीष, फतावा रज़विय्यह, जिल्द–10, सफा–140)*

★ क़यामत में रुसवाई ★

सैयदे आलम ﷺ ने इरशाद फ़रमाया, जिनसे आलिम की तौहीन की तहक़ीक़ उसने इल्मे दीन की तौहीन की और जिसने इल्मे दीन की तौहीन की, तहक़ीक़ उसने नबी ﷺ की तौहीन की, और जिनसे नबी करीम ﷺ की तौहीन की यक़ीनन! उसने जिब्राईल علیہ السلام की तौहीन की, और जिनसे जिब्राईल علیہ السلام की तौहीन की उसने अल्लाह की तौहीन की, और जिनसे अल्लाह तबारक व तआला की तौहीन की क़यामत के दिन अल्लाह तआला उसको ज़लील व रुसवा करेगा। *(तफसीरे कबीर, जिल्द–1, सफा–281)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो **! اللّٰہ اکبر** आइये! दुआ करें कि अल्लाह तआला हम सबको क़यामत के दिन ज़िल्लत व रुसवाई से बचाये और दोनों जहां में कामयाबी अता फ़रमाये।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

★ आलिम का हक़ ★

हज़रत अबू ज़र رضی اللہ عنہ से रिवायत है कि आलिम ज़मीन में अल्लाह तआला की दलील व हुज्जत हैं तो जिसने आलिम में ऐब निकाला वह हलाक हो गया। *(कन्जुल उम्माल, जिल्द–10, सफा–77)*

हज़रत उबादा बिन सामत رضی اللہ عنہ से रिवायत है कि सरकारे अक़दस ﷺ ने इरशाद फ़रमाया, जो हमारे आलिम का हक़ न पहचाने वह मेरी उम्मत से नहीं। *(फतावा रज़विय्यह, जिल्द–10)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! मज़कूरा हदीषे मुबारका से क़ौमे मुस्लिम की हलाकत की वजह भी ज़ाहिर हो गयी। आज जुहला उलमाए किराम में ऐब व नक़्स निकालते नज़र आते हैं। काश! वह जानते कि उलमा का मक़ाम व मर्तबा क्या है? ख़ुदारा! इस फ़ेअले क़बीह से अपने आपको बचायें और अपने ही ऐब व नक़्स पर नज़र रखें। अल्लाह तआला हम सबको इसकी तौफ़ीक़ अता फ़रमाये। **آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔**

★ अपना दीन हल्का किया ★

हज़रत अल्लामा इमाम फ़ख़रुद्दीन राज़ी رحمۃ اللہ علیہ फ़रमाते हैं कि जिसने

आलिम को हक़ीर समझा उसने अपने दीन को हल्का किया। *(तफ़सीरे कबीर, जिल्द–10, सफ़ा–282)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! इल्मे दीन ही की वजह से उलमा का मक़ाम व मर्तबा बुलंद है। अब अगर किसी ने आलिम को हक़ीर जाना या इल्मे दीन को हक़ीर जाना और जिसने ऐसा किया उसका ईमान कैसे महफ़ूज़ रहेगा? लिहाज़ा हमें लाज़िम है कि हम आलिम की क़द्र और दीन की क़द्र करें। अल्लाह तआला हम सबको हर एक की क़द्र करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

★ सख़्त फ़ासिक़ व फ़ाजिर ★

आला हज़रत पेशवाए अहले सुन्नत इमाम अहमद रज़ा ख़ां फ़ाज़िले बरेलवी عَلَیۡہِ الرَّحۡمَۃُ وَ الرِّضۡوَان तहरीर फ़रमाते हैं कि अगर आलिमे दीन को इसलिये बुरा कहता है कि वह आलिम है, जब तो **सरीह काफ़िर** है। और अगर बवजहे इल्म उसकी ताज़ीम फ़र्ज़ जानता है मगर अपनी किसी दुन्यावी ख़ुसूमत के बाइष बुरा कहता है, गाली देता है और तहक़ीर करता है तो **सख़्त फ़ासिक़ व फ़ाजिर** है, और अगर बे सबब रंज रखता है तो मरीज़ुल क़ल्ब और ख़बीबुल बातिन है और उसके **कुफ़्र का अंदेशा** है। ख़ुलासा में लिखा है :–

"من ابغض عالماً من غیری بسبب ظاهر خیف علیہ الکفر"

जो शख़्स किसी आलिम से सबबे ज़ाहिरी की बुनियाद पर बुग्ज़ रखता है उसके कुफ़्र का अंदेशा है। मन्हुरौंजिल अज़्हर में है : **"اَلظَّاهِرُ اَنَّهُ يَكَفُرُ"** ज़ाहिर है कि वह काफ़िर हो जायेगा। *(फ़तावा रज़विय्यह, जिल्द–10, सफ़ा–140)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! आप अंदाज़ा लगायें कि दिल में सिर्फ़ बुग्ज़ रखने पर ख़ौफ़े कुफ़्र है तो जो तौहीन करता हो उसका अंजाम क्या होगा ? **! اللہ اکبر** लिहाज़ा ख़ुदारा ! अपने दिल के आइने को आलिमे दीन के लिये साफ़ व शफ़्फ़ाफ़ रखें ता कि ईमान की हिफ़ाज़त हो। अल्लाह तआला हम सबको उसकी तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

★ बुलंद दर्जात ★

और तन्वीरुल अब्सार व दुर्रे मुख़्तार के हवाले से तहरीर फ़रमाते हैं कि

ख़ुदाए तआला ने इरशाद फ़रमाया : कि वह आलिमों के दर्जे बुलंद फ़रमायेगा। तो **आलिम को बुलंद करने वाला अल्लाह है तो जो शख़्स उस्को गिरायेगा अल्लाह उसको दौज़ख़ में गिरायेगा।** *(फ़तावा रज़विय्यह, जिल्द–10, सफ़ा–59)*

प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! ख़बरदार ! कभी भी आलिम को कमतर समझने की कोशिश न करें इसलिये कि इंसान के चाहे से कुछ नहीं होता, अल्लाह तआला जो चाहे वह होता है। जब अल्लाह तआला ने उलमाए किराम को बुलंद रुत्बा अता फ़रमाया है, अब जो उन्हें कम जानेगा वह बुलंद अल्लाह तआला के ग़ज़ब का शिकार होगा **! اللہ اکبر** लिहाज़ा हमें ज़रूरी है कि हम उलमाए किराम से वाबस्ता रहें **! انشاء اللہ** उनके सदक़ा में अल्लाह तआला हमारे भी दर्जात बुलंद फ़रमाएगा अल्लाह तआला हम सबको बुज़ुर्गों के मरातिब समझने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

★ आलिम की तहक़ीर कुफ़्र ★

और तहरीर फ़रमाते हैं कि मजमउल अन्हार में है, **जो शख़्स किसी आलिम को मोल्विया उसकी तहक़ीर के लिये कहे वह काफ़िर है।** *(फ़तावा रज़विय्यह, जिल्द–10, सफ़ा–359)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! सोचो ! आलिम के लिये तहक़ीर का लफ़्ज़ यानी मोल्विया इस्तेमाल करना ईमान को बर्बाद करता है ! क्या आज मुसलमान आलिमे दीन को इस क़िस्म के अल्फ़ाज़ से बुरा भला नहीं कहते? याद रखें ! अल्लाह से डरें और नाइबीने रसूल की तौहीन से अपनी ज़बान की हिफ़ाज़त करें। अल्लाह तआला हम सबको उलमाए दीन के एहतेराम की तौफ़ीक़ अता फ़रमायें। **آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔**

★ उलमा से दूरी ज़हर ★

और तहरीर फ़रमाते हैं कि आलिम की ख़तागीरी और उस पर एतेराज़ हराम है और उसके सबब रहनुमाए दीन से किनाराकश होना और इस्तेफ़ादाए मसाइल छोड़ देना उसके हक़ में ज़हर है। *(फ़तावा रज़विय्यह, जिल्द–10, सफ़ा–359)*

मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो ! आलिम से अपना तअल्लुक़ हर हाल में जोड़े रखना चाहिये, इसलिये के आलिमे दीन से ताल्लुक़, उनके पास आमद व रफ्त से अपने इल्म में इज़ाफ़ा नीज़ उनकी हिकमत भरी बातें सुनकर दिलों में नूर पैदा होता है और ग़फ़लत दूर होती है। अल्लाह तआला हम सबको सोहबते उलमा की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

हज़रत अल्लामा सदरुश शरीअह عَلَيْهِ الرَّحْمَةُ وَ الرِّضْوَانُ तहरीर फ़रमाते हैं कि इल्मे दीन और उलमा की तौहीन बे सबब यानी महज़ इस वजह से के आलिमे इल्मे दीन है, **कुफ़्र** है। *(बहारे शरीअत, हिस्सा–9, सफा–131)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! ख़ुदारा ! कभी भी तौहीने उलमा के मुर्तकिब न हों और दुन्यावी तालीम याफ़्ता के मुक़ाबले में उलमाए किराम के वक़ार को हल्का भी न जानें, वरना याद रखें कि ईमान की दौलत से महरूम हो जाओगे, अल्लाह तआला उलमाए किराम की नज़रे शफ़क़त के सदक़े हमारे ईमान की हिफ़ाज़त फ़रमाये। **آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔**

★ उलमा की मजलिस इबादत ★

हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास رضی اللہ عنہ से मरवी है **"مُجَالَسَةُ الْعُلَمَاءِ عِبَادَةٌ"** यानी आलिमों के साथ बैठना इबादत है। *(कन्जुल उम्माल, जिल्द–10, सफा–84)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! आज सोहबते उलमा से इस्तेफ़ादा का जज़्बा बिल्कुल ख़त्म हो चला है बल्कि थोड़े से अमल पर आज का मुसलमान अपने आपको सब कुछ समझ बैठता है। ख़ुदारा ! अपनी इस्लाह करें और आलिमे दीन की सोहबत इख़्तेयार करें। अल्लाह तआला सबको मजालिसे उलमा से इस्तेफ़ादा की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

★ जन्नत के बाग़ ★

हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने अब्बास رضی اللہ عنہما से मरवी है कि जब तुम जन्नत के बाग़ों से गुज़रो तो चर लिया करो। अर्ज़ किया गया कि जन्नत के बाग़ क्या हैं? फ़रमाया, आलिमों की मजलिस। *(कन्जुल उम्माल)*

मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो ! मज़कूरा हदीष शरीफ़ की रौशनी में आलिम की मजलिस में हाज़री और उनकी मजलिस का मक़ाम आपने समझ लिया, लिहाज़ा हमें चाहिये कि ज़रूर आलिमों की मजलिस में हाज़िरी दिया करें और उनकी मजलिस से इस्तेफ़ादा करें। अल्लाह तआला हम सबको तौफ़ीक़ अता फ़रमाये। **آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔**

★ साल भर की इबादत से बेहतर ★

हज़रत अबू हुरैरा ﷺ से रिवायत है कि शरीअत की एक बात का सुनना साल भर की इबादत से बेहतर है, और इल्मे दीन की गुफ़्तगू करने वालों के पास एक घड़ी बैठना गुलाम आज़ाद करने से बेहतर है। *(कन्जुल उम्माल, जिल्द–1, सफा–101)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! मज़कूरा हदीष शरीफ़ की रौशनी में इल्मे दीन के हवाले से गुफ़्तगू का षवाब आपने समाअत फ़रमाया, लिहाज़ा इल्मी गुफ़्तगू को इख़्तेयार करो और फ़ुज़ूल गोई से परहेज़ करो। अल्लाह हम सबको तौफ़ीक़ अता फ़रमाये। **آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔**

★ सबसे बड़ी मजलिस उलमा की ★

हज़रत उमर बिन ख़त्ताब رضی اللہ عنہ से मरवी है कि आलिमों की मजलिस से अलग न रहो, इसलिये कि अल्लाह तआला ने रुए ज़मीन पर आलिमों की मजलिस से बढ़कर किसी मिट्टी को नहीं पैदा फ़रमाया। *(तफसीरे कबीर, जिल्द–1, सफा–283)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! जब रुए ज़मीन पर **उलमा की महफ़िल से बढ़कर कोई महफ़िल नहीं** तो हमारे लिये ज़रूरी है कि हम उन महफ़िलों में शिर्कत की वजह से हम भी अज़ीम बन जायें। अल्लाह तआला हम सबको मजलिसे उलमा में शिर्कत की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

★ आलिम की सोहबत ★

ग़ौषे समदानी, क़ुत्बे रब्बानी हज़रत शैख़ अब्दुल क़ादिर जीलानी رضی اللہ عنہ तहरीर फ़रमाते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इरशाद फ़रमाया, ऐसे आलिम की

सोहबत में बैठो जो पांच चीज़ों को छुड़ाकर पांच चीज़ों की तर्ग़ीब दें। दुन्या की रग़बत निकालकर ज़ोहद की तर्ग़ीब दे, रिया से निकालकर इख़्लास की तालीम दे, गुरूर को छुड़ाकर तवाज़ोअ की तर्ग़ीब दे, काहिली से बचाकर वअज़ व नसीहत करने की तर्ग़ीब दे और जहालत से निकालकर इल्म की तर्ग़ीब दे। *(गुन्यतुत्तालिबीन, मुतर्जिम, 451)*

मेरे प्यारे आक़ा صلی اللہ علیہ وسلم के प्यारे दीवानो **!اَلْحَمْدُ لِلّٰہ** मज़कूरा ख़ूबियों के मालिक उलमाए किराम आज भी मौजूद हैं, लिहाज़ा उनकी सोहबत से इस्तेफ़ादा करें और उनके बताये हुए रास्ते पर चलने की कोशिश करें। अल्लाह तआला हम सबको उलमाए रब्बानिय्यीनसे फ़ाइदा उठाने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

★ सात ख़ूबियां ★

हज़रत फ़क़ीह अबुल लैष رحمۃ اللہ علیہ ने फ़रमाया कि जो शख़्स आलिम के पास बैठे और इल्म की बात याद न रख सके उसके लिये भी सात ख़ूबियां हैं :–

1. इल्म हासिल करने वालों का षवाब पायेगा।
2. जब तक आलिम के पास बैठा रहेगा गुनाह से बचेगा।
3. जब इल्म हासिल करने के लिये अपने घर से निकलेगा उस पर रहमत नाज़िल होगी।
4. जब इल्म के हल्क़े में बैठेगा और उन पर रहमत नाज़िल होगी तो उसका भी इसमें हिस्सा होगा।
5. जब तक दीन की बातें सुनेगा उसके लिये फ़रमांबर्दारी लिखी जायेगी।
6. जब कि वह सुनेगा और नहीं समझेगा तो इदराके इल्म से महरूमी के सबब उसका दिल तंग होगा। तो वह ग़म उसके लिये ख़ुदाए तआला की बारगाह का वसीला बन जायेगा। इसलिये कि अल्लाह तआला का इरशाद है **"اَنَا عِنْدَ الْمُنْكَسِرَةِ قُلُوْبُهُمْ لِاَجْلِىْ"** यानी मैं उन लोगों के पास हूं जिनके दिल मेरे लिये टूटने वाले है। *(हदीषे कुदसी)*
7. वह मुसलमानों से आलिमों की ताज़ीम और फ़ासिकों की तौहीन देखेगा तो उसका दिल फ़िस्क़ से नफ़रत करेगा और इल्मे दीन की तरफ़ माइल

होगा। इसी लिये नेक लोगों के साथ रसूलुल्लाह صلی اللہ علیہ وسلم ने बैठने का हुक्म फ़रमाया है। *(तफ़सीरे कबीर, जिल्द–1, सफ़ा–277)*

मेरे प्यारे आक़ा صلی اللہ علیہ وسلم के प्यारे दीवानो ! मज़कूरा वाक़िआ से यह सबक़ हासिल हुआ कि आलिम के पास बैठना भी फ़ैज़ से ख़ाली नहीं। लिहाज़ा उलमा से दीन के तमाम फ़वायद हासिल करने की कोशिश करें। अल्लाह तआला हम सबको फ़ैज़ाने उलमाए किराम की दौलत से मालामाल फ़रमाये।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

★ आठ क़िस्म के आदमी ★

हज़रत फ़क़ीह अबुल लैष رحمۃ اللہ علیہ फ़रमाते हैं कि जो शख़्स आठ क़िस्म के आदमियों के पास बैठेगा अल्लाह तआला उसमें आठ चीज़ें बढ़ा देगा :–

1. जो मालदारों के पास बैठेगा उसके दिल में दुन्या की महब्बत व रग़बत ज़्यादा होगी।
2. जो दुरवेशों के साथ बैठेगा उसके दिल में दुन्या की रग़बत व महब्बत ज़्यादा होगी।
3. जो बादशाह के पास बैठेगा उसमें सख़्ती व तकब्बुर ज़्यादा होगा।
4. जो औरतों के साथ बैठेगा उसमें शहवत व जहालत बढ़ेगी।
5. जो बच्चों के पास बैठेगा उसमें हंसी मज़ाक ज़्यादा होगा।
6. जो फ़ासिक़ों के पास बैठेगा उसमें गुनाहों पर जुर्अत बढ़ेगी।
7. जो नेकों के पास बैठेगा उसमें फ़रमांबर्दारी की रग़बत ज़्यादा होगी।
8. जो आलिमों के पास बैठेगा उसका इल्म और तक़्वा बढ़ जायेगा।

मेरे प्यारे आक़ा صلی اللہ علیہ وسلم के प्यारे दीवानो ! अफ़सोस ! आज जिन लोगों के पास नहीं बैठना चाहिये मुसलमान वहीं बैठता है। याद रखें ! उलमाए किराम के पास बैठें ता कि तक़्वा की दौलत हासिल हो और उन्हीं की महफ़िलों से इज़्ज़त हासिल हो सकती है। अल्लाह तआला हम सबको उलमा की मजलिस से इस्तेफ़ादा करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

★ ज़बान की रुकावट दूर ★

हज़रत हसन बिन अली का इरशाद है, जो शख़्स उलमा की महफ़िल में अक्षर हाज़िर होता है उसकी ज़बान की रुकावट दूर हो जाती है, ज़ेहन की उलझन खुल जाती है और जो कुछ हासिल करता है उसके लिये बाइषे मुसर्रत होता है। उसका इल्म उसके लिये एक विलायत है और फ़ायदा मंद होता है। *(मुकाशफतुल कुलूब, सफा—587)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! यक़ीनन ! उलमा की सोहबत में बैठने वाला कभी महरूम नहीं रहता, उसे हिकमत व नसीहत से भरपूर कलाम सुनना नसीब होता है और ऐसा शख़्स उलमाए किराम की सोहबत से ख़ूद भी क़ाबिले ताज़ीम व तौक़ीर हो जाता है। लिहाज़ा उलमाए किराम की सोहबत इख़्तेयार करे। अल्लाह हम सबको तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

★ कुरआन बग़ैर इल्म के ★

हज़रत अबू ज़र رضی اللہ عنہ से मरवी है कि हुज़ूर ﷺ ने फ़रमाया कि मजलिसे इल्मी में हाज़िर होना हज़ार रकअत पढ़ने और हज़ार बीमारों की अयादत करने और हज़ार जनाज़ों में शरीक होने से बेहतर है। किसी ने अर्ज़ किया कि तिलावते कुरआन से भी? आपने इरशाद फ़रमाया, कुरआन बग़ैर इल्म के कब मुफ़ीद है ? *(अहयाउल उलूम, जिल्द—1, सफा—53)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! आप अपने अवक़ात का कुछ हिस्सा फ़हमे कुरआन के लिये ख़ास कर लें, जिसके लिये तर्जुमा कुरआन कंजुल ईमान का पाबंदी के साथ मुतालिआ करना बहुत सूदमंद षाबित होगा। और उलमाए किराम की मजालिस में हाज़िरी को भी लाज़िम कर लो ! **انشاء اللہ تعالی** उसका फ़ायदा आपको दोनों जहां में नज़र आयेगा। रब्बे क़दीर हमें तौफ़ीक़ रफ़ीक़ बख़्शे। **آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔**

★ हुज़ूर ﷺ इल्म की मजलिस में ★

एक दिन हुज़ूरे अकरम ﷺ बाहर तशरीफ़ लाये और आपने मजलिसें देखीं तो एक तो अल्लाह तआला से दुआ मांगते और इस तरफ़ राग़िब थे, दूसरी

मजलिस वाले लोगों को इल्म सिखाते थे। आपने फ़रमाया कि मजलिसे अव्वल के लोग तो अल्लाह तआला से सवाल करते हैं अगर वह चाहें तो उनको दे और चाहे तो न दें, मगर दूसरी मजलिस वाले लोगों को तालीम करते हैं और मुझको भी अल्लाह तआला ने तालीम करने वाला ही भेजा है। फिर आप दूसरी मजलिस वालों के पास तशरीफ़ ले जाकर उनके पास बैठ गये और फ़रमाया, उसकी मिषाल जिसके साथ अल्लाह तआला ने मुझे मबऊष फ़रमाया है यानी हिदायत और इल्म की मिषाल बारिश जैसी है जो ज़मीन पर बरसती है, ज़मी का एक क़ित्आ ऐसा हो कि पानी जज़्ब करे और घास वग़ैरह बहुत उगाये और एक टुकड़ा ऐसा हो कि पानी रोक रखे। लोगों को अल्लाह तआला इससे नफ़ा दे कि जो पियें और खेती को सैराब करें और एक टुकड़ा ऐसा हो कि पानी रोक रखे लेकिन उसके लिये घास वग़ैरह न उगे। *(अहयाउल उलूम, जिल्द—1, सफा—56)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! इल्म की महफ़िल में तशरीफ़ ले जाकर सरकार ﷺ ने यह बात वाज़ेह फ़रमा दिया कि यह महफ़िल मुझे दूसरी तमाम महफ़िलों से ज़्यादा पसंद है, लिहाज़ा हम को भी चाहिये कि सरकार ﷺ की पसंदीदा महफ़िल यानी तालीम की महफ़िल में हाज़िर होते रहें। अल्लाह तआला हम सबको इसकी तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

★ हज़रत लुक़मान की वसीयत ★

हज़रत लुक़मान हकीम رحمۃ اللہ علیہ ने अपने साहबज़ादे को वसीयत की कि ऐ बेटे ! उलमा के पास बैठ और अपना ज़ानूं उनके ज़ानूं से मिला, इसलिये कि अल्लाह नूरे हिकमत से दिलों को ऐसा ज़िन्दा करता है जैसे ज़मीन को बारिश से सर सब्ज़ करता है। *(अहयाउल उलूम, जिल्द—1, सफा—52)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! हज़रत लुक़मान जैसी हिकमत व दानाई में मश्हूर हस्ती ने अपने बेटे को जब यह वसीयत फ़रमाई कि ऐ बेटे ! हमेशा उलमा की सोहबत में रहकर उनसे फ़ायदा हासिल करते रहो, लिहाज़ा हमें भी ज़रूरी है कि हम ख़ूद भी फ़ायदा उठायें और अपने बच्चों को उलमाए किराम की सोहबत से फ़ायदा उठाने की ताकीद करते रहें। अल्लाह हम सबको

इस की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये। آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

★ सत्तर मजलिसों का कफ़्फ़ारा ★

हज़रत अता رضی اللہ عنہ का क़ौल है कि एक मजलिसे इल्म की गुफ़्तगू सत्तर मजलिसों का कफ़्फ़ारा होती है। हज़रत उमर رضی اللہ عنہ फ़रमाते हैं, हज़ार शब बेदार रोज़ादार आबिदों का मर जाना ऐसे आलिम की मौत से कम है जो अल्लाह तआला के हलाल व हराम में माहिर हो। *(अहयाउल उलूम, जिल्द–1, सफ़ा–53)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो **!سبحان اللہ** हलाल व हराम की अहमियत इस्लाम में वाज़ेह है कि अगर कोई शख़्स हराम का एक लुक़्मा भी अपने हलक़ के नीचे उतार ले तो उसकी चालीस रोज़ की इबादत का षवाब ज़ाएअ् हो जाता है, लिहाज़ा इस नुक़सान से बचने के लिये इल्म की महफ़िल यानी उलमाए किराम की मजलिस में हाज़री देना ज़रूरी है। अल्लाह तआला उलमाए किराम के इल्म और उम्र में बरकतें अता फ़रमाये और उन सबको इस्तेफ़ादा की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

इल्म की अहमियत अस्लाफ़ की नज़र में

★ इल्म की कुंजी ★

हज़रत अली کرم اللہ تعالیٰ وجہہ الکریم से मरवी है कि इल्म ख़ज़ाने हैं और उनकी कुंजी सवाल करना है, सवाल करो ! अल्लाह तआला तुम पर रहम फ़रमायेगा। *(कन्जुल उम्माल, सफ़ा–76)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! कुरआने मुक़द्दस में अल्लाह तआला ने इरशाद फ़रमाया कि न जाननेवाले जानने वालों से पूछ लें। आज हम कोई मस्अला नहीं जानते तो पूछने में शर्म महसूस करते हैं। उलमा से मशाइख़ से मसाइल पूछते रहो। सवाल पूछने पर इज़्ज़त नहीं जायेगी बल्कि अल्लाह तआला रहम फ़रमायेगा। आज हर कोई चाहता है कि अल्लाह उस पर रहम करे तो उसका आसान तरीक़ा यह है कि उलमाए अहले सुन्नत के पास जाकर मसाइल पूछो और अपनी मालूमात में इज़ाफ़ा करो। और रब की बारगाह से

रहम के हक़दार भी बन जाओ। अल्लाह तआला हम सबको हुसूले इल्म की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये और रहम व करम की नज़र फ़रमाये।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

★ यतीम कौन ? ★

हज़रत अली کرم اللہ تعالیٰ وجہہ الکریم ने फ़रमाया :–

لَیْسَ الْجَمَالُ بِاَثْوَابٍ تُزَیِّنُنَا   اِنَّ الْجَمَالَ جَمَالُ الْعِلْمِ وَ الْاَدَبِ

لَیْسَ الْیَتِیْمُ الَّذِیْ قَدْ مَاتَ وَالِدُہٗ   بَلِ الْیَتِیْمُ یَتِیْمُ الْعِلْمِ وَ الْحَسَبِ

तर्जुमा :– जो कपड़े हमें ज़ीनत देते हैं उनसे हक़ीक़ी ख़ूबसूरती नहीं, बल्कि ख़ूबसूरती इल्म और अदब से है। जिस बच्चे के वालिद का इंतेक़ाल हो जाये वह हक़ीक़ी यतीम नहीं बल्कि इल्म और हसब से जो ख़ाली है वह हक़ीक़ी यतीम है।

मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो ! आज लिबास के ज़रिये आदमी अपने को ख़ूबसूरत ज़ाहिर करना चाहता है जब कि इंसान की ख़ूबसूरती इल्म और अदब से है। आदमी उसको यतीम समझता है जिसके वालिद का इंतेक़ाल हो जाता है लेकिन मौलाए कायनात رضی اللہ عنہ फ़रमाते हैं कि यतीम वह है जिसके पास इल्म व हसब नहीं। काश ! हम हज़रत अली शेरे ख़ुदा کرم اللہ تعالیٰ وجہہ الکریم के मज़कूरा इरशाद को सामने रखते। अल्लाह तआला हमें सही फ़िक्र और समझ अता फ़रमाये। **آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔**

★ माल फ़ानी, इल्म बाक़ी ★

हज़रत अली رضی اللہ عنہ ने फ़रमाया :–

رَضِیْنَا قِسْمَۃَ الْجَبَّارِ فِیْنَا   لَنَا عِلْمٌ وَّ لِلْجُھَّالِ مَالٌ

فَاِنَّ الْمَالَ یَفْنٰی عَنْ قَرِیْبٍ   وَاِنَّ الْعِلْمَ بَاقٍ لَّا یَزَالُ

"हम ख़ुदाए तआला के फ़ैसले पर राज़ी हैं कि हम को इल्म दिया और गंवारों को माल दिया क्यों कि माल अन क़रीब फ़ना हो जायेगा और इल्म बाक़ी रहेगा ख़त्म नहीं होगा।"

मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो ! मालदारों को ऐश व इशरत की ज़िन्दगी गुज़ारते देखकर सच्चे आलिमे दीन कभी अफ़सुर्दा नहीं होते। बल्कि मौलाए

कायनात كرم الله تعالى وجهه الكريم के फ़रमान की रौशनी में जिसे इल्म की दौलत अल्लाह से मिल जाये उसे ख़ुश हो जाना चाहिये कि अल्लाह तआला ने फ़ना हो जाने वाली चीज़ के बजाए बाक़ी रहने वाली चीज़ और दोनों जहां में फ़ायदा पहुंचाने वाली चीज़ अता फ़रमा दी। अल्लाह तआला इल्म की हिफ़ाज़त करने की हमें तौफ़ीक़ अता फ़रमाये। آمين بجاه النبی الکريم عليه افضل الصلوٰة والتسليم-

★ ताजे शाही ★

हज़रत अली كرم الله تعالى وجهه الكريم ने फ़रमाया :—

اَلْعِلْمُ فِی الصُّدُوْرِ مِثْلُ الشَّمْسِ فِی اُلفَلَكِ   وَ الْعَقْلُ لِلْمَرْءِ مِثْلُ التَّاجِ لِلْمَلَكِ

فَاشْدُدْ يَدَيْكَ بِحَبْلِ الْعِلْمِ مُعْتَصِما   فَالْعِلْمُ لِلْمَرْءِ مِثْلُ الْمَاءِ لِلسَّمَك

"इल्म दिलों में ऐसा है जैसे सूरज आसमान में और अक़्ल आदमी के लिये ऐसे है जैसे ताज बादशाह के लिये, तू अपने हाथ को इल्म की रस्सी से मज़बूती से बांध कि इल्म आदमी के लिये ऐसे है जैसे पानी मछली के लिये।"

मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो! मौलाए कायनात के क़ौल से यह बात समझ में आयी कि जिस तरह सूरज आसमान से ज़मीन को रौशन करता है वैसे ही साहिबे इल्म ज़मीन वालों के दिलों को रौशन करता है। सूरज सिर्फ़ ज़मीन को मुनव्वर कर सकता है दिलों को नहीं। लेकिन जिनके दिलों को अल्लाह तआला ने इल्म का मस्कन बनाया है वह इंसानों के मुर्दा क़ुलूब को इल्म की रौशनी से मुनव्वर व ज़िन्दा कर देते हैं। और इल्म के साथ अगर अल्लाह करीम ने अक़्ले सलीम भी अता फ़रमा दी तब तो हिकमत व दानाई के मौती बिखेरता चला जायेगा। और जैसे बादशाह के सर पर ताज उसके वक़ार को दोबाला कर देता है वैसे ही इल्म को अक़्ले सलीम भी बुलंदीए वक़ार की दौलत अता करती है। अल्लाह तआला इल्म व फ़हम व अमल की अज़ीम तरीन दौलत अता फ़रमाये। آمين بجاه النبی الکريم عليه افضل الصلوٰة والتسليم-

★ अच्छी ख़सलत ★

हज़रत अली كرم الله تعالى وجهه الكريم ने फ़रमाया :—

"اَلْعِلْمُ خَلِيْلُ الْمُؤْمِنِ وَ الْحِلْمُ وَزِيْرُهٗ وَ الْعَقْلُ دَلِيْلُهٗ وَ الْعَمَلُ قَائِدُهٗ وَ الرِّفْقُ وَالِدُهٗ وَ الصَّبْرُ اَمِيْرُ جُنُوْدِهٖ فَنَاهِيْكَ بِخَصْلَةٍ تَتَأَمَّرُ عَلٰى هٰذِهِ الْخَصْلَةِ الشَّرِيْفَةِ"

इल्म मोमिन का गहरा दोस्त है, बुर्दबारी उसका वज़ीर है, अक़्ल उसकी दलील है, अमल उसका पेशवा है, नर्मी उसका बाप है, सब्र उसके लश्कर का कमांडर है, तो अपने आपको इस ख़स्लत से रोको जो कि उस शरीफ़ ख़स्लत पर ग़ल्बा करे।

★ अफ़ज़ल दौलत ★

हज़रत अली رضی الله عنه ने फ़रमाया, माल से इल्म सात वजहों से अफ़ज़ल है :

1. इल्म अंबिया عليه السلام की मीराष है और माल फ़िरआन की मीराष है।
2. इल्म ख़र्च करने से नहीं घटता और माल घटता है।
3. माल हिफ़ाज़त का मोहताज होता है और इल्म आलिम की हिफ़ाज़त करता है।
4. जब आदमी मर जाता है तो उसका माल दुन्या में बाक़ी रहता है और इल्म उसके साथ क़ब्र में जाता है।
5. माल मोमिन और काफ़िर दोनों को हासिल होता है और इल्मे दीन सिर्फ़ मोमिन को हासिल होता है।
6. सब लोग अपने दीनी मामले में आलिम के मोहताज हैं और मालदार के मोहताज नहीं।
7. इल्म से पुल सिरात पर गुज़रने में कुव्वत हासिल होगी और माल उसमें रुकावट पैदा करेगा। *(तफसीरे कबीर, सफा—93)*

मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो! मौलाए कायनात كرم الله تعالى وجهه الكريم ने इल्म की फ़ज़ीलत निहायत ही उम्दा व आसान मिषालों के ज़रिये बता दी। क्या अब उसके बाद भी कोई इल्म हासिल करने में सुस्ती कर सकता है? आज हम अपनी अक़्ल से इज्ज़त हासिल करने निकल पड़े हैं और फिर समझते हैं कि हम से ज़्यादा कोई अक़्लमंद नही! क्या आज लोग नहीं कहते कि जिसके पास माल नहीं तो कुछ नहीं। मैं कहता हूं कि माल ज़रूरी है लेकिन वह इल्म से बेहतर नहीं, और क्यों बेहतर नहीं वह आप सुन चुके। मौलाए कायनात كرم الله تعالى وجهه الكريم से बेहतर फ़ायदामंद चीज़ के बारे में कौन बता सकता है? लिहाज़ा अपनी अक़्ल को दुरुस्त कर लें और इल्म को फ़ौक़ियत देने की कोशिश करें। अल्लाह तआला हम सबको मौला अली كرم الله تعالى وجهه الكريم के सदक़ा व तुफ़ैल इल्मे नाफ़ेअ की

दौलत अता करे।

★ यह सदक़ा है ★

हज़रत हसन बसरी से मरवी है कि यह बात सदक़ा से है कि आदमी इल्म सीखे तो उस पर अमल करे और दूसरे को सिखाये। *(कन्जुल उम्माल, जिल्द–1, सफा–89)*

★ इल्म और माल ★

हज़रत इब्ने अब्बास رضی اللہ عنہما से रिवायत है कि इल्म और माल हर ऐब को छुपाते हैं और जहालत व ग़रीबी हर ऐब को खोलते हैं। *(कन्जुल उम्माल, सफा–77)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! हमारे बुजुर्गाने दीन ज़ाहिरी ठाठ के साथ नहीं रहते बल्कि निहायत ही सादगी में रहते, लेकिन उनकी ज़बाने अक़दस से इल्म व हिकमत की बातें निकलतीं तो वक़्त के बड़े से बड़े ताजदार और मालदार भी ख़िराजे अक़ीदत पेश करते। इल्म की वजह से इंसान में मौजूद बेशुमार ऊयूब छुप जाते हैं और माली कोताहियों पर पर्दा पड़ जाता है लिहाज़ा इल्म और माल दोनों को नेक मक़सद के लिये हासिल करने की कोशिश करो। अल्लाह तआला तमाम को इस की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

★ इल्म की मिषाल ★

हज़रत अल्लामा इमाम फ़ख़रुद्दीन رحمۃ اللہ علیہ तहरीर फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआला के क़ौल :–

"اَنْزَلَ اللّٰہُ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَسَالَتْ اَوْدِیَۃٌ بِقَدَرِھَا فَاحْتَمَلَ السَّیْلُ زَبَداً رَّابِیاً"

यानी खुदाए عزوجل ने आसमान से पानी उतारा तो नाले अपने अपने लाइक़ बह निकले तो पानी की रव उस पर उभरे हुए झाग उठा लायी। *(पारा–3, रूकूअ–8)*

इसके बारे में बाज़ मुफ़स्सेरीन ने फ़रमाया कि **اَلسَّیْلُ** से मुराद यहां इल्म है। पांच वजह से कि इल्म को पानी से तश्बीह दी :–

1. जैसे बारिश आसमान से उतरती है वैसे ही इल्म भी आसमान से उतरता है।
2. ज़मीन की दुरुस्तगी बारिश से है तो मख़लूक़ की दुरुस्तगी इल्म से है।
3. जैसे खेती और हरयाली बग़ैर बारिश के नहीं पैदा होती वैसे ही आमाल व ताअत का वजूद बग़ैर इल्म के नही होता।
4. जैसे कि बारिश गरज और बिजली की फ़रअ है वैसे ही इल्म भी वादा और वईद की फ़रअ है।
5. जैसे बारिश नफ़अ व नुक़सान दोनों पहुंचाती है वैसे ही इल्म नफ़ा व नुक़्सान दोनों पहुंचाते हैं। जो इल्म पर अमल करे उसके लिये वह फ़ायदामंद है और जो उस पर अमल न करे उसके लिये नुक़सानदेह है। *(तफसीरे कबीर)*

★ मुर्दा दिल की ज़िन्दगी ★

हज़रत अल्लामा फखरुद्दीन رحمۃ اللہ علیہ तहरीर फ़रमाते हैं :–

"اَلْقَلْبُ مَیِّتٌ وَّ حَیَاتُہٗ بِالْعِلْمِ" दिल मुर्दा है और उसकी ज़िन्दगी इल्म से है।

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! आज ग़ीबत, कहकहा, चुग़ली, झूठ, बिस्यार ख़ोरी (ज़्यादा खाना) वग़ैरह की वजह से दिल मुर्दा हो जाता है। अब उसकी ज़िन्दगी इल्म से है। यानी दिल की स्याही और गुनाहों के अज़ाब का इल्म होगा तभी तौबा करके उसको दूर किया जा सकता है। और दिल को इल्म की महफ़िल में और उलमा की सोहबत और किताबों से फ़रहत और ताज़गी मिला करती हैं। लिहाज़ा दिल को ज़िन्दगी और ताज़गी फ़राहम करनी है तो उसे इल्म की ग़िज़ा फ़राहम करें। अल्लाह तआला हम सबको दिल ज़िन्दा अता फ़रमाये। **آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔**

हज़रत अल्लामा बिन हजर अस्क़लानी رحمۃ اللہ علیہ तहरीर फ़रमाते हैं कि जैसे बारिश मुर्दा शहर में ज़िन्दगी पैदा कर देती है ऐसे ही दीन के उलूम मुर्दा दिल में ज़िन्दगी डालते हैं। *(फत्हुल बारी)*

मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो! दिल भी शहर की तरह है फ़र्क़ इतना है कि शहर में इंसान और फ़ना होने वाली चीज़ों का बसेरा है और दिल रब्बे क़दीर की जलवागाह है। लिहाज़ा उसको ज़िन्दा रखना हो तो दीन के उलूम ही से ज़िन्दा रखा जा सकता है, जिस तरह बारिश से शहर में ज़िन्दगी पैदा हो जाती

है वैसे ही दीन के उलूम से क़ल्ब ज़िन्दा हो जाता है। अल्लाह तआला हम सबको हयाते क़ल्ब अता फ़रमाए।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

★ नुबुव्वत के बाद इल्म ★

हज़रत अलाई हज़रत इब्ने अैनिया رضی اللہ عنہ से रिवायत करते हैं, उन्होंने फ़रमाया कि अल्लाह तआला ने नुबुव्वत के बाद इल्म से ज़्यादा अफ़ज़ल किसी चीज़ को नहीं बनाया। अल्लाह तआला के इस फ़रमान :–

"وَ الَّذِیْ یُمِیْتُنِیْ ثُمَّ یُحْیِیْنِ" की तफ़सीर में फ़रमाते हैं कि मुझे जहालत से मौत और इल्म से ज़िन्दगी अता फ़रमाता है। नीज़ फ़र्माया :–

"اِنَّمَا یَخْشَی اللّٰہَ مِنْ عِبَادِہِ الْعُلَمٰٓؤُ" हक़ीक़त में ख़शिय्यते इलाही के पैकर उलमा ही हैं। हज़रत सहल बिन अब्दुल्लाह رضی اللہ عنہ इस आयत :–

"وَ مِنْھُمْ ظَالِمٌ لِّنَفْسِہٖ وَ مِنْھُمْ مُّقْتَصِدٌ وَّ مِنْھُمْ سَابِقٌ بِالْخَیْرَاتِ" की तफ़सीर में फ़रमाते हैं कि ज़ालिम से मुराद जाहिल और मुक्तसिद से मुराद मुतअल्लिम और साबिकुल् खैरात से आलिम मुराद हैं।

मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो! साहिबे इल्म और जाहिल दोनों बराबर नहीं हो सकते। आज अवाम के दिल में जो अल्लाह का डर नहीं है उसकी वजह यह है कि उनके पास इल्म की कमी है। अगर इल्म हो तो अल्लाह तआला का डर भी होगा। और अल्लाह तआला का डर होगा तो इज्ज़त भी मिलेगी। लिहाज़ा आयात को समझो और इल्म हासिल करके अल्लाह का डर दिल में पैदा करो। और इज़्ज़त के हक़दार बन जाओ। अल्लाह तआला हम सबको इल्म हासिल करने की तड़प अता फ़रमाये।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

★ अनपढ़ को.......सदक़ा ★

इल्म का तालिब करना अज़ ख़ूद इबादत है। इल्मी मुज़ाकिरे तस्बीह व तक़दीस की मानिंद है। इल्मी बहष जिहाद की तरह है। और अनपढ़ को पढ़ाना सदक़ा है। और अहल पर सर्फ़ करना अल्लाह तआला की कुरबत का बाइष है। इल्म से हलाल और हराम का पता चलता है।

मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो! कोई यह तसव्वुर न करे कि इल्म हासिल करने या उलमाए अहले सुन्नत की सोहबत इख़्तेयार करने और किताब के मुतालिआ से क्या फ़ायदा है? अरे नादान! यह भी अल्लाह की तस्बीह व ज़िक्र के मानिंद है और इल्मी बहष जेहाद की तरह है। यानी जिस तरह हक़ की सरबुलंदी के लिये सर धड़ की बाज़ी लगा देना और दुश्मने दीन से मुक़ाबला करना जेहाद है, वैसे ही आपस में इल्मी मज़ाकिरा और बहष भी जेहाद की तरह है। सिर्फ़ माल देना ही सदक़ा नहीं बल्कि अनपढ़ को पढ़ाना भी सदक़ा है। और सच्चे तालिबे इल्म पर मेहनत करना तक़र्रुबे इलाही का ज़रिया है। बताओ! कितना फ़ायदा है? लिहाज़ा जितना जानते हो सिखाओ और षवाब के हक़दार बनो। परवर्दिगार मुझे और आपको अपने करमे ख़ास से और रहमते आलम ﷺ के सदक़ा व तुफ़ैल इल्म पर अमल करने और उसे फ़रोग़ देने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये। آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

★ नेअमत से महरूम ★

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! दर्स व तदरीस शब बेदारी से बढ़ कर है। इल्म ही सिलाए रहमी का तहफ़्फ़ुज़ करता है, इल्म ही हराम व हलाल की शनाख़्त का वाहिद ज़रिया है और अमल उसका ताबेअ है। सुलहा को इलहाम से नवाज़ा जाता है, बदबख़्त इस नेअमत से महरूम कर दिये जाते हैं। *(नुज़हतुल मजालिस)*

मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो! आज इल्म न होने की वजह से हलाल व हराम की तमीज़ ख़त्म हो गयी है और इल्म न होने की वजह से रिश्तेदारों के जो हुक़ूक़ अल्लाह عزوجل और उसके प्यारे हबीब ﷺ ने फ़रमाए हैं अदा नहीं हो पाते, नतीजतन् घर घर फ़साद और बेचैनी हैं। लिहाज़ा इल्म हासिल करके हर परेशानी के दरवाज़े को बंद करो। अल्लाह हम सबको तौफ़ीक़ अता फ़रमाये। آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

★ कौन सी मजलिस बेहतर ? ★

सरकार कोनों मकां ﷺ ने एक मर्तबा सहाबा के झुरमुट में बैठे हुए इरशाद फ़रमाया, इल्मी मजालिस में शामिल होना हज़ार रकअत नवाफ़िल, हज़ार मरीज़ की अयादत और हज़ार जनाज़ों में शामिल होने से अफ़ज़ल है। अर्ज़

किया गया, या रसूलल्लाह ! ﷺ क्या कुरआने करीम पढ़ने से भी अफ़ज़ल? आपने फ़रमाया, कुरआन पढ़ना बिला इल्म होगा? कुरआन की तालीम अज़ ख़ूद इल्म है। *(नुज़हतुल मजालिस)*

मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो ! इल्म हासिल करने की फ़ज़ीलत आप ﷺ ने समाअत फ़रमाई। क्या कोई शख़्स हज़ार रकअत और हज़ार मरीज़ की अयादत आज के दौर में कर पाता है? तो आप कहेंगे कि नहीं। अब अगर इतना षवाब हासिल करना हो तो आज से इल्म हासिल करने के लिये कमर कस लो और आमाल नामा को नेकियों से भर लो ! अल्लाह तआला हम सबको तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। آمين بجاه النبى الكريم عليه افضل الصلوٰة والتسليم۔

अक़्वाले ज़र्री

★ हज़रत इमाम शाफ़ई رحمۃ اللہ علیہ ★

- जिसने कुरआन का इल्म सीखा उसकी क़ीमत बढ़ गयी।
- जिनसे इल्मे फ़िक़ह सीखा उसकी क़द्र बढ़ गयी।
- जिसने हदीष सीखा उसकी दलील क़वी हुई।
- जिनसे हिसाब सीखा उसकी अक़्ल पुख़्ता हुई।
- जिसने नादिर बातें सीखीं उसकी तबीअत नर्म हुई।
- जिसने अपनी इज्ज़त नहीं की उसे इल्म ने कोई फ़ायदा न दिया। *(मुकाशफतुल कुलूब)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! हज़रत इमाम शाफ़ई عَلَيْهِ الرَّحْمَةُ وَ الرِّضْوَانُ के क़ौल में कितनी जामिइय्यत है और मुख़्तसर जुम्लों में हज़रत इमाम ने इल्मे कुरआन, इल्मे फ़क़ीह, इल्मे हदीष, इल्मे रियाज़ी वग़ैरह के फ़ायदे बता दिये, लेकिन कम नसीबी यह है कि आज जिनके पास इल्मे कुरआन मौजूद है उनको दुन्या हक़ीर निगाह से देखती है और जिनके पास दुन्यवी उलूम है उनको इज़्ज़त की निगाह से देखती है। हम यह नहीं कहते कि दुन्यवी इल्म से दामन बचाया जाए ! बल्कि हम यह कहना चाहेंगे कि दीनी व

दुन्यवी दोनों उलूम हासिल करो। लेकिन जब इज़्ज़त व वक़ार की बात आये तो दोनों में आलिमे कुरआन को ज़्यादा इज्ज़त दी जाये ता कि साहिबे कुरआन भी ख़ुश हो जाए और दुन्यावी उलूम के माहिरीन को भी इज़्ज़त व एहतेराम से नवाज़ा जाए। अल्लाह तआला मज़कूरा नसीहत के मुताबिक़ हम सबको इल्मे कुरआन, इल्मे फ़िक़ह और इल्मे हदीष से मालामाल फ़रमाये।

★ मोमिन की छः ख़ूबियां ★

हज़रत अल्लामा इमाम फख़रुद्दीन राज़ी तहरीर फ़रमाते हैं कि मोमिन छः ख़ूबियों के सबब इल्म हासिल करता है :—

- अल्लाह तआला ने मुझे फ़राइज़ की अदायगी का हुक्म फ़रमाया है और मैं इल्म के बग़ैर उनकी अदायगी पर क़ादिर नहीं हो सकता।
- ख़ुदाए तआला ने मुझे गुनाहों से दूर रहने का हुक्म दिया है और मैं इल्म के बग़ैर उस से बच नहीं सकता।
- अल्लाह तआला ने अपनी नेअमतों का शुक्र मुझ पर लाज़िम फ़रमाया है और मैं इल्म के बग़ैर उनका शुक्र नहीं कर सकता।
- ख़ुदाए तआला ने मुझे मख़लूक़ के साथ इंसाफ़ करने का हुक्म दिया है और मैं इल्म के बग़ैर इंसाफ़ नहीं कर सकता।
- अल्लाह तआला ने मुझे बला पर सब्र करने का हुक्म दिया है और मैं इल्म के बग़ैर उस पर सब्र नहीं कर सकता।
- ख़ुदाए तआला ने मुझे शैतान से दुश्मनी करने का हुक्म दिया है और मैं इल्म के बग़ैर उससे दुश्मन नहीं कर सकता। *(तफसीरे कबीर, जिल्द–1, सफा–278)*

★ मुल्के चीन जाना ★

नबी करीम ने फ़रमाया, हज़रत अनस से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ने इरशाद फ़रमाया कि इल्म का हासिल करना हर मुसलमान मर्द व औरत पर फ़र्ज़ है और ना अहल को इल्म सिखाने वाला ऐसा है जैसे खिंज़ीर के गले में जवाहिरात, मोती और सोने का हार पहना दिया हो। *(इब्ने माजह, मिश्क़ात)*

हज़रत अनस से रिवायत है यानी इल्मे दीन हासिल करो अगर चे मुल्के चीन में हो। *(कन्जुल उम्माल, जिल्द–1, सफा–79)*

मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो ! इन हदीषों से इल्मे दीन की बे इंतेहा अहमियत षाबित होती है कि उस ज़माने में जब कि हवाई जहाज़, रेल और मोटर नहीं थे, अरब से मुल्के चीन पहुंचना मुश्किल काम था। मगर रहमते आलम इरशाद फ़रमा रहे हैं कि अगर चे तुम को अरब से मुल्के चीन जाना पड़े लेकिन इल्मे दीन ज़रूर हासिल करो, इससे ग़फ़लत हरगिज़ न बरतो।

★ नर्मी का बर्ताव ★

हज़रत अबू हुरैरा से मरवी है कि रसूलुल्लाह ने इरशाद फ़रमाया, इल्म हासिल करो और इल्म के लिये हैबत और वक़ार सीखो। और जो लोग कि तुमसे इल्म हासिल करें उनके साथ नर्मी से पेश आओ। *(तिब्रानी, कन्जुल उम्माल, जिल्द–1, सफा–80)*

मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो ! साहिबे इल्म के लिये ज़रूरी है कि वह अल्लाह की अज़ीम नेअमत की क़द्र करे। इसलिये कि इल्म के साथ वक़ार और मतानत न हो तो साहिबे इल्म के पास मौजूद लोगों को फ़ायदा न पहुंचेगा। लिहाज़ा साहिबे इल्म को चाहिये कि वह इल्मी वक़ार को मजरूह न होने दें और इल्म का रोब बे इल्मों पर रखें, इसके साथ ही तालिबे इल्मों पर शफ़क़त का भरपूर मुज़ाहेरा करें ता कि वह तालीम के लिये मुस्तअद रहें, तलबा पर जितनी ज़्यादा शफ़क़त होगी उतना ही ज़्यादा तलबा का शौक़ बढ़ेगा। अल्लाह तआला आदाबे इल्म से भी वाकिफ़ करे और अमल की तौफ़ीक़ भी दे।

★ हुसूले इल्म नमाज़ से बेहतर ! ★

हज़रत अबू ज़र से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ने फ़रमाया, जब कि तू इल्म का एक हिस्सा सीखे यह तेरे लिये इस बात से बेहतर है कि हज़ार रकअत नफ़्ल नमाज़ पढ़े जो मक़बूल हों। *(कन्जुल उम्माल, जिल्द–1, सफा–93)*

★ मौत के वक़्त.....कौन सा काम ? ★

हज़रत अल्लामा इमाम राज़ी तहरीर फ़रमाते हैं कि हुज़ूर सैयदे आलम एक सहाबी से गुफ़्तगू फ़रमा रहे थे तो अल्लाह तआला ने वही नाज़िल फ़रमाई कि यह शख़्स जो आपसे बात कर रहा है उसकी उम्र सिर्फ़ एक साअत और बाक़ी रह गयी है और वह अस्र का वक़्त था। हुज़ूर ने उस सहाबी को इस बात से आगाह फ़रमाया तो वह बेक़रार हो गये और अर्ज़ किया, या रसूलुल्लाह मुझे कोई ऐसा अमल बताइये जो इस वक़्त मेरे लिये ज़्यादा मुनासिब हो। हुज़ूर ने फ़रमाया, इल्म हासिल करने में मशगूल हो जाओ। तो वह इल्म हासिल करने में मशगूल हो गये और मग़रिब से पहले इंतेक़ाल कर गये। रावी ने कहा कि अगर इल्म से अफ़ज़ल कोई और चीज़ होती तो हुज़ूर उस वक़्त में उसके करने का हुक्म देते। *(तफसीरे कबीर, जिल्द–1, सफा–282)*

मेरे प्यारे आक़ा के दीवानो ! इल्म की फज़ीलत कितनी अज़ीम है कि रसूले आज़म ने अपने गुलाम को बता दिया कि अल्लाह और उसके रसूल के नज़दीक सबसे बेहतर अमल इल्म हासिल करना है और इल्म हासिल करते करते मौत आ जाये तो उसे सरकार ने पसंद फ़रमाया। अल्लाह तआला हम सबको आख़री सांस तक इल्म हासिल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

★ फरामीने मुहद्दिषे दहेलवी ★

हज़रत शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिष दहेलवी बुख़ारी तहरीर फ़रमाते हैं कि इल्म से मुराद वह इल्म है जिसकी मुसलमानों को वक़्त पर ज़रूरत पड़े :

- जब इस्लाम में दाख़िल हुआ तो उस पर ख़ुदाए तआला की ज़ात व सिफ़ात को पहचानना और सरकारे अक़दस की नुबुव्वत को जानना वाजिब हो गया और हर उस चीज़ का इल्म ज़रूरी हो गया जिसके बग़ैर ईमान सहीह नहीं।
- जब नमाज़ का वक़्त आ गया तो उस पर नमाज़ के अहकाम जानना वाजिब हो गया और जब माहे रमज़ान आ गया तो रोज़े के अहकाम का सीखना ज़रूरी हो गया।

- जब मालिके निसाब हो गया तो ज़कात के मसाइल का जानना वाजिब हो गया और अगर मालिके निसाब होने से पहले मर गया और ज़कात के मसाइल को न सीखा तो गुनाहगार न हुआ।
- जब औरत से निकाह किया तो हैज़ व निफ़ास वग़ैरह जितने मसाइल का मियां बीवी से ताल्लुक़ है मुसलमान पर जानना वाजिब हो जाता है। वग़ैरह। *(अश्अतुल् लम्आत, जिल्द–1, सफा–16)*

★ ताजिर को दुर्रे ★

हज़रत अल्लामा इमाम ग़ज़ाली رحمۃ اللہ علیہ तहरीर फ़रमाते हैं कि हज़रत उमर رضی اللہ عنہ दुकानदारों को दुर्रे मारकर इल्म सीखने भेजते थे। और फ़रमाते थे कि **जो शख़्स ख़रीद व फ़रोख़्त के अहकाम न जाने वह तिजारत न करे** कि ला इल्मी में सूद खायेगा और उसे ख़बर न होगी। इसी तरह हर पेशा का एक इल्म है, यहां तक कि अगर **हज्जाम है तो उस्को यह जानना ज़रूरी है कि आदमी के बदन से क्या चीज़ काटने के लायक़ है और क्या चीज़ काटने के लायक़ नहीं!** और यह उलूम हर शख़्स के हाल के मवाफ़िक़ होते हैं। लिहाज़ा बज़्ज़ाज़ (कपड़ा बेचने वाला) पर हजामत सीखना फ़र्ज़ नहीं। *(कीमियाए सआदत–129)*

★ इल्म और उलमा ★

फ़क़ीहे मिल्लत मुफ़्ती जलालुद्दीन अहमद अमजदी رحمۃ اللہ علیہ अपनी किताब व इल्म व उलमा में फ़रमाते हैं कि **कुरआन व हदीष से आलिमों की जो बहुत सी फ़ज़ीलतें षाबित हैं उनसे वह लोग मुराद हैं जो हक़ीक़त में इल्म वाले हैं। चाहे वह सनद याफ़्ता हों या न हों कि सनद कोई चीज़ नहीं। ख़ुसूसन इस ज़माने में जब कि जाहिलों को आलिम व फ़ाज़िल की सनद दी जाती रही है। आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा फ़ाज़िले बरैलवी رحمۃ اللہ علیہ तहरीर फ़रमाते हैं कि सनद कोई चीज़ नहीं कि बहुतेरे सनद याफ़्ता महज़ बे बहरा होते हैं।** *(फतावा रज़विय्यह, जिल्द–10, सफा–231)*

और तहरीर फ़रमाते हैं कि सनद हासिल करना तो कुछ ज़रूरी नहीं, हां!

बाक़ायदा तालीम पाना ज़रूरी है, मदरसा में हो या किसी आलिम के मकान पर। और नीम मुल्ला ख़तरए ईमान होगा।

★ इल्म से मुराद क्या है ? ★

हज़रत मुल्ला अली क़ारी رحمۃ اللہ علیہ लिखते हैं कि शारेहीने हदीष ने फ़रमाया कि इल्म से मुराद वह इल्मे मज़हब है जिसका हासिल करना बंदे के लिये ज़रूरी है। जैसे ख़ुदाए तआला को पहचानना, उसकी वहदानियत, उसके रसूल की नुबुव्वत की शनाख़्त और ज़रूरी मसाइल के साथ नमाज़ पढ़ने के तरीक़े जानना, मुसलमान के लिए इन चीज़ों का इल्म फर्ज़े ऐन है और फ़तावा, इज्तेहाद के मर्तबा को पहचानना फ़र्ज़े किफ़ाया है। *(मिर्क़ात शरहे मिश्कात, जिल्द अव्वल, सफा–233)*

फ़ज़ाइले तौबा

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيۡنَ آمَنُوۡا تُوۡبُوۡۤا اِلَى اللّٰهِ
تَوۡبَةً نَّصُوۡحاً

तर्जुमा : ऐ ईमान वालो ! अल्लाह की तरफ़ ऐसी तौबा करो जो आगे को नसीहत हो जाये।

दिल शरारे इश्क़ में जलने लगे
नारे इस्यां कर चुके गुलज़ार हम

मग्फ़िरत रब से मिलेगी बिल् यक़ीन
चलके कर लें दर पे इस्तिगफ़ार हम

(मौलाना मुहम्मद रफ़ीउद्दीन)

اَلصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلَيۡكَ يَا رَسُوۡلَ اللّٰهِ ﷺ
وَعَلٰى آلِكَ وَاَصۡحَابِكَ يَا حَبِيۡبَ اللّٰهِ ﷺ

फ़ज़ाइले तौबा

نَحۡمَدُهٗ وَنُصَلِّىۡ وَنُسَلِّمُ عَلٰى رَسُوۡلِهِ الۡكَرِيۡمِ

★ तौबाह नसीहा ★

ख़ालिक़े काइनात का फ़रमान है :–

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيۡنَ آمَنُوۡا تُوۡبُوۡۤا اِلَى اللّٰهِ تَوۡبَةً نَّصُوۡحاً "ऐ ईमान वालो ! अल्लाह की तरफ़ ऐसी तौबा करो जो आगे को नसीहत हो जाये।"

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! वैसे तो बहुत सारे लोग तौबा करते रहते हैं बल्कि गाल पर दो थप्पड़ लगा लेने को ही तौबा समझा जाता है ! और तौबा के हक़ीक़ी मफ़हूम से बहुत कम लोग आशना होते हैं। इसलिए रब्बे क़दीर ने इस आयते करीमा में इरशाद फ़रमाया, "ऐ ईमान वालो! ऐसी तौबा करो जिससे तुम्हें आगे नसीहत हासिल हो जाये।" इस आयत ने हम पर तौबा के हक़ीक़ी मफ़हूम को वाज़ेह कर दिया है कि हक़ीक़ी तौबा वह है जिसके बाद बंदा उस गुनाह के तसव्वुर से भी कांप जाए। मगर आज हमारा हाल यह है कि हम गुनाह पे गुनाह किये जा रहे हैं मगर कभी अल्लाह तआला की बारगाह में रुजूअ करने और अपने गुनाहों से तौबा करने का ख़्याल भी हमारे दिल में नहीं आता। और अगर कोई तौबा करता भी है तो महज़ चंद दिनों तक अपने तौबा पर क़ायम रह पाता है और फिर वही रफ़्तार बेढंगी इख़्तेयार कर बैठता है ! मुसलमानो ! इस आयत को समझो ! और सच्ची तौबा करो ! वरना चंद लम्हों

की लज़्ज़त और मज़ा आख़ेरत को बरबाद कर देगा।

जो लोग तौबा करने के बाद भी गुनाहों से परहेज़ नहीं करते उनके बारे में तफ़सीरे रूहुल बयान में यह रिवायत मज़कूर है कि जो शख़्स तौबा करने के बाद फिर उसी गुनाह पर मुस्सिर रहता है तो उसका तौबा के बाद का एक गुनाह क़ब्ल तौबा के सत्तर गुनाहों पर भारी हैं। **! الله اكبر** मुसलमानो ज़रा सोचो ! आज हम में से कितने लोग तौबा करने के बाद गुनाह से बचने की कोशिश करते हैं ? याद रखें ! इस दौर में नेकियां करना इतना मुश्किल काम नहीं है जितना गुनाह से बचना है। मगर कुरबान जाइये मौला के करम पर कि अगर कोई सच्चे दिल से तौबा करता है तो वह माफ़ भी फ़रमाता है और साथ ही साथ उसके गुनाहों को नेकियों में तबदील भी कर देता है। आज ही मौला की बारगाह में सच्चे दिल से तौबा कर लें और आइंदा गुनाहों से बचने का पक्का इरादा कर लें और अल्लाह की बारगाह में दुआ करें कि मौला हमें गुनाहों से बचने और तौबा करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये। - **آمین بجاہ النبی الکریم علیه افضل الصلوٰۃ والتسلیم**

★ ताइब पर रहमत ★

इरशाद रब्बानी है :–

” اِنَّمَا التَّوْبَةُ عَلَى اللّٰهِ لِلَّذِیْنَ یَعْمَلُوْنَ السُّوْءَ بِجَهَالَةٍ ثُمَّ یَتُوْبُوْنَ مِنْ قَرِیْبٍ فَاُولٰٓئِكَ یَتُوْبُ اللّٰهُ عَلَیْهِمْ وَ كَانَ اللّٰهُ عَلِیْمًا حَكِیْمًا“

तर्जुमा : वह तौबा जिसका कुबूल करना अल्लाह ने अपने फ़ज़्ल से लाज़िम कर लिया है वह उन्हीं की जो नादानी से बुराई कर बैठें, फिर थोड़ी देर में तौबा कर लें, ऐसों पर अल्लाह अपनी रहमत से रुजूअ करता है और अल्लाह इल्म व हिकमत वाला है। *(सूरए निसाअ, पारा–4, आयत–17)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! अल्लाह तआला का बे पनाह करम है कि उसने अज़ ख़ूद बंदे की तौबा क़बूल करना अपने ऊपर लाज़िम कर लिया है अगरचे उस पर कोई चीज़ किसी बंदे की तरफ़ से नहीं। यह उन लोगों पर जो बुरा अमल करते हैं ख़्वाह गुनाहे सग़ीरा हों या कबीरा, अल्लाह तआला का ख़ास करम है कि वह उनकी तौबा क़बूल फ़रमा लेता है। गुनाह करने वाला जहालत की वजह से गुनाह का मुर्तकिब होता है फिर मौत या सकरात के तारी होने से पहले जल्दी से तौबा कर लेता है, अल्लाह तआला ऐसों पर अपनी रहमत

से रुजूअ फ़रमाता है और उसकी तौबा कुबूल करके उस पर करम की बारिश नाज़िल फ़रमाता है। अल्लाह तआला हम सबको कब्ल अज़ मौत सच्ची तौबा करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये। - **آمین بجاہ النبی الکریم علیه افضل الصلوٰۃ والتسلیم**

★ वह तौबा नहीं ★

अल्लाह तआला फ़रमाता है :–

” وَلَیْسَتِ التَّوْبَةُ لِلَّذِیْنَ یَعْمَلُوْنَ السَّیِّاٰتِ حَتّٰۤى اِذَا حَضَرَتْ اَحَدَهُمُ الْمَوْتُ قَالَ اِنِّیْ تُبْتُ الْآنَ وَ لَا الَّذِیْنَ یَمُوْتُوْنَ وَ هُمْ كُفَّارٌ اُولٰٓئِكَ اَعْتَدْنَا لَهُمْ عَذَابًا اَلِیْمًا“

तर्जुमा : और वह तौबा उनकी नहीं जो गुनाहों में लगे रहते हैं यहां तक कि जब उनमें से किसी को मौत आये तो कहे अब मैंने तौबा की, और न उनकी जो काफ़िर मरें। उनके लिये हमने दर्दनाक अज़ाब तैयार कर रखा है। *(सूरए निसाअ, आयत–18, कन्ज़ुल इमान)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के दीवानो ! मज़कूरा आयते करीमा से उन गुनाहगारों को सबक़ हासिल करना चाहिये जो गुनाह करके बेबाकी से ज़िन्दगी गुज़ारते हैं और तौबा की तरफ़ माइल नहीं होते, उन्हें याद रखना चाहिये कि मौत के आषार नमूदार होने से पहले तौबा कर लेनी चाहिये वरना नज़अ के आलम में हज़ार मर्तबा भी यह कहे कि मैं अपने तमाम गुनाहों से तौबा करता हूं तो उस वक़्त उसकी तौबा क़बूल नहीं होगी, इसलिये कि यह तौबा इज़्तेराबी है इख़्तेयारी नहीं। लिहाज़ा गुनाहों पर मुस्सिर रहने कि बजाए तौबा पर उजलत करें, हमारा मौला करीम है वह ज़रूर तौबा क़बूल फ़रमायेगा। अल्लाह तआला हम सबको सच्ची तौबा की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये। - **آمین بجاہ النبی الکریم علیه افضل الصلوٰۃ والتسلیم**

★ तुम्हारे लिये बेहतर है ★

وَاِذْ قَالَ مُوْسٰى لِقَوْمِهٖ یٰقَوْمِ اِنَّكُمْ ظَلَمْتُمْ اَنْفُسَكُمْ بِاتِّخَاذِكُمُ الْعِجْلَ فَتُوْبُوْا اِلٰى بَارِئِكُمْ فَاقْتُلُوْا اَنْفُسَكُمْ ذٰلِكُمْ خَیْرٌ لَّكُمْ عِنْدَ بَارِئِكُمْ فَتَابَ عَلَیْكُمْ اِنَّهٗ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِیْمُ

और जब मूसाने अपनी कौमसे कहा, ऐ मेरी कौम ! तुमने बछणा बनाकर अपनी जानों पर जुल्म किया है। तो अपने पैदा करने वाले की तरफ़ रुजूअ

लाओ ! तो आपस में एक दूसरे को क़त्ल करो। यह तुम्हारे पैदा करने वाले के नज़दीक तुम्हारे लिये बेहतर है। तो उसने तुम्हारी तौबा क़बूल की। बेशक ! वही है बहुत तौबा क़बूल करने वाला मेहरबान। *(सूरए बकरह, पारा–1, आयत–53)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! हज़रत मूसा علیہ السلام ने अपनी क़ौम के उन पूजारियों से जो बछड़े की पूजा करते थे, फ़रमाया कि तुमने अपनी जानों पर जुल्म किया है। जानों पर जुल्म करने का मतलब यह है कि उन्होंने अज़ाब को वाजिब करके ख़ूद को ज़रर पहुंचाया है । और हज़रत मूसा علیہ السلام की ख़िदमत गुज़ारी के एवज़ जो षवाब नसीब होता था वह कम हो गया। हज़रत मूसा علیہ السلام के इस फ़रमान के बाद उन्होंने अर्ज़ की कि अब हम क्या करें? तो हज़रत मूसा علیہ السلام ने इरशाद फ़रमाया, तौबा का पुख़्ता इरादा कर लो क्योंकि जुल्म तौबा का सबब था, इसलिये कि जिसने तुम्हें पैदा किया है जो तमाम अुयूब व नक़ाइस से बरी है और तुम्हारे बअज़को बाज़ से मुख़्तलिफ़ शक्लों में मुमैयज़ किया उसको छोड़कर किसी दूसरे की इबादत करना कैसे रवा हो सकता है ? अब तुम्हारी तौबा का तरीक़ा यह है कि तुम में से जो बे गुनाह है वह शिर्क करने वाले को क़त्ल करके अल्लाह तआला के दरबार में तुम्हारी तौबा और क़त्ल नफ़अ पहुंचाने वाले हैं। तुम्हारे इस फ़ेअल से रुक जाने से जो सरासर अज़ाब है बस अब तुम उसके हुक्म को बजा लाओ। अल्लाह ने तुम्हारी तौबा क़बूल फ़रमाई और तुम से दरगुज़र फ़रमाया, बेशक ! अल्लाह बंदों की तौबा क़बूल फ़रमाने वाला है और रहम फ़रमाने वाला है।

आइये, बनी इस्राईल के तौबा का वाक़िया और साबिक़ा उम्मतों के मसाइल हम आपको बतायें :–

मरवी है कि जब अल्लाह तआला ने मूसा علیہ السلام को उनके क़त्ल का हुक्म फ़रमाया तो वह जंगल में निहायत ही आजिज़ी व इंकेसारी के साथ बैठ गये और उन्हें कहा कि जो भी अपने क़ातिल की तरफ़ हाथ बढ़ायेगा, उसे देखेगा या अपने हाथ या पावं से उसे हटाना चाहेगा मलऊन और मरदूदुत्तौबा होगा। फिर वह अपनी गर्दनों को ऊपर उठाते ता कि आसानी से मारने वाले गर्दन उड़ायें, लेकिन मारने वाले के सामने किसी का बेटा होता, किसी का बाप, किसी का भाई, किसी का दोस्त तो मारने से हाथ रुक जाते और मूसा علیہ السلام से उन लोगों ने अर्ज़ की, अब किया क्या जाये? उस पर अल्लाह ने स्याह बादल भेजा

ता कि एक दूसरे को न देख सकें, चुनांचे शाम तक उसी तरह क़त्ल करते रहे जब कुश्त व ख़ून बकषरत हुई तो मूसा علیہ السلام और हारून علیہ السلام ने रब से दुआ मांगी और गिरया व ज़ारी करते हुए अर्ज़ करने लगे, या अल्लाह ! बनी इस्राईल बहुत मारे गये, अब उन्हें कुछ तो बाक़ी रख। चुनांचे अल्लाह तआला ने बादल हटा लिया और तौबा क़बूल फ़रमाई और क़त्ल करने से उन्हें रोक दिया गया। उस वक़्त सत्तर हज़ार अफ़राद क़त्ल हो चुके थे, जो मर गये वह शहीद के हुक्म में और जो बच गये उनके गुनाह माफ़ कर दिये गये और वही भेजी कि क़ातिल व मकतूल दोनों बहिश्त में दाख़िल किये जायेंगे।

★ साबिक़ा उम्मतों के कुछ मसाइल ★

- अपनी जानों को क़त्ल करना यह एक निहायत ही सख़्त अम्र है उन्हें इस पर अमल करना लाज़िम था इसे ऐगलाल से ताबीर किया जाता है।
- जिस अज़्व से ख़ता हो जाती है उसे काटना ज़रूरी था।
- नमाज़ अदा करना सिवाए मस्जिद के किसी जगह जाइज़ न थी।
- पानी के बग़ैर उनकी तहारत नहीं हो सकती थी।
- रोज़ेदार को शाम के इफ़तार के बादे अगर नींद आ जाये तो फिर खाना उसके लिये हराम हो जाता।
- गुनाहों की वजह से बहुत सी पाक चीज़ें उन पर हराम हो गयीं इसी वजह से मन व सलवा की बंदिश भी हुई।
- ज़कात तमाम माल से चौथाई हिस्सा देना लाज़िम था।
- जो गुनाह उनसे रात के वक़्त सर ज़द होता तो सुबह के वक़्त उनके दरवाज़े पर लिख दिया जाता।
- मरवी है कि बनी इस्राईल जब नमाज़ के लिये खड़े होते तो ऊन का मोटा लिबास पहनते और अपने हाथों को गर्दनों से बांध लेते।
- यूं भी होता कि खोपड़ी में सुराख़ निकाल कर लोहे के जंज़ीर उस पर रखकर सुतून से बांध देते और उस हालत में इबादत करते थे।

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! लेकिन यह अल्लाह का बे इंतेहा फ़ज़्ल व अहसान है कि उसने हुज़ूर नबी करीम ﷺ के सदक़े यह तमाम उमूर

हम से उठा लिये। तौबा भी अल्लाह तआला की नेअमतों में से एक नेअमत है जो ख़ुदावंदे कुद्दूस ने सिर्फ़ उम्मते मुहम्मिदया को अता फ़रमाई वरना अगली उम्मतें इस तरह तौबा से महरूम रहीं। फिर तौबा के भी मरातिब हैं, यहां पर तौबा के चार मरातिब ज़िक्र किये जायेंगे :—

★ तौबा के चार मरातिब ★

★ पहले मर्तबा का नाम है तौबा और सालिक की यही पहली मंज़िल है और यह नफ़्से अम्मारा के लिये मुक़र्रर की गयी है और यह अवाम के लिये ही है। उसका तरीक़ा यह है कि तमाम बुराईयों से परहेज़ करके अहकामाते इलाहिया बजा लाने पर मुस्तअद हो जाए और फ़ौत शुदा नमाज़ वग़ैरह को अदा करे और जिनके हुकूक़ देने हैं उन्हें वापस लौटा दे, जिन लोगों को नाराज़ किया है उन्हें राज़ी कर ले और गुज़िश्ता बुरे आमाल पर अफ़सोस व नदामत करे और पुख़्ता इरादा करे कि आइंदा किसी बुराई के नज़दीक न जायेगा।

★ तौबा के दूसरे मर्तबा का नाम इनाबा है यानी अल्लाह की बारगाह में रुजूअ करना। यह नफ़्से लव्वामा के लिये है और है भी खवास मोमेनीन औलिया अल्लाह के लिये। इसका तरीक़ा यह है कि मुकम्मल तौर पर अल्लाह तआला की तरफ़ रुजूअ हो और दुन्या से रू गरदानी और उसके असबाब से बिल्कुल दूरी और आदाते संजीदा का इख़्तेयार और नफ़्स को बुरी आदत से बाज रख कर उसका तज़किया और उसकी ख़्वाहिशात की मुख़ालिफ़त और उसके साथ जेहाद करने पर मुदावमत करना, क्योंकि नफ़्स जब रुजूअ एलल्लाह का ख़ुगर हो जाता है तो क़ल्ब के हुक्म में और उसके अवसाफ़ से मौसूफ़ हो जाता है, क्योंकि रुजूअ एलल्लाह के क़ल्ब की सिफ़त है। चुनांचे अल्लाह तआला ने फ़रमाया : "وَجَاءَ رَبَّهُ بِقَلْبٍ مُّنِيبٍ"

★ तीसरे मर्तबा का नाम रौबा है यानी अल्लाह की जानिब रग़बत करना और यह मर्तबा ख़्वास औलिया का है और रग़बत एलल्लाह शौक़े लिक़ाए इलाही की अलामात से है। जब नफ़्स रग़बते एलल्लाह से तकमील पाता है तो रूह का मक़ाम हासिल कर लेता है। और राग़िब एलल्लाह मुश्ताक़े लिक़ाए इलाही की अलामात से एक अलामत यह है कि वह अपनी तबई आदत को

तंहाई का आदी करके और बज़ाहिर नशिस्त व बरख़ास्त दोस्तों से रखे, मख़लूक़ से दूर रहे और हक़ से उन्स पैदा करे और नफ़्स से कोनैन के ताल्लुक़ात क़तअ करने के लिये सख़्त जेहाद करे।

★ चौथा मर्तबा यह नफ़्से मुतमइन्ना का नसीब होता है और यह मक़ाम भी सादात हज़रात अंबियाए عَلَيْهِمُ السَّلَامُ और राख़िसुल ख़वा औलिया का है जैसा कि अल्लाह तआला ने फ़रमाया :—

"يَآ اَيَّتُهَا النَّفْسُ الْمُطْمَئِنَّةُ ارْجِعِی اِلٰی رَبِّكِ رَاضِيَةً مَّرْضِيَّةً"

यह एक जज़्बा इनायते रब्बानी है जो अंबियाए عَلَيْهِمُ السَّلَامُ और राख़िसुल ख़वास औलिया के नफ़ूसे कुद्देसिया को अनानियत से खींचकर अल्लाह के ख़ौफ़ की जानिब पहुंचाती है यानी उनके नफ़ूस ताअते इलाही में लिक़ाए रब्बानी के लिये मुतीअ रहते हैं फिर उन पर असीरे एलल्लाह की राह में चलने का मौक़ा मिलता है, गोया अपने नफ़ूसे कुद्देसिया को मुशाहिदे लिक़ाए रब्बानी में मिटाकर दुई का तसव्वुर ख़त्म करके दायमी लिक़ा हासिल कर लेते हैं। **سبحان الله!**

★ जिन्होंने तौबा की ★

"اِلَّا الَّذِيْنَ تَابُوْا وَ اَصْلَحُوْا وَ اعْتَصَمُوْا بِاللّٰهِ وَ اَخْلَصُوْا دِيْنَهُمْ لِلّٰهِ فَاُولٰٓئِكَ مَعَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَ سَوْفَ يُؤْتِ اللّٰهُ الْمُؤْمِنِيْنَ اَجْرًا عَظِيْمًا"

तर्जुमा : मगर वह जिन्होंने तौबा की और संवरे और अल्लाह की रस्सी मज़बूती से थामी और अपना दीन ख़ालिस अल्लाह के लिये कर लिया तो यह मुसलमानों के साथ हैं और अनक़रीब अल्लाह मुसलमानों को बड़ा षवाब देगा। *(सूरए निसाअ, आयत—145, कन्जुल इमान)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! मज़कूरा आयते करीमा में उन ख़ुश नसीब को बशारत दी गयी है जो मुनाफ़िक़त से तौबा करें और मुनाफ़िक़त की जितनी बातें पायी जाती हैं तमाम को तर्क करके ज़ाहिर और बातिनन् शरीअत की नेक बातों पर अमल करने लग जाये और अल्लाह तआला पर भरोसा और उसके दीन और तौहीद को मज़बूत पकड़े और दीन में ख़ुलूस सिर्फ़ अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रज़ा की ख़ातिर करे ऐसे लोगों के लिये अल्लाह तआला बहुत अज्र अता फ़रमायेगा।

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! अल्लाह न करे कि निफ़ाक़ की कोई अलामत हमारी ज़िन्दगी में हो, आज ही तौबा करके अपनी इस्लाह कर लें तो अल्लाह तआला माफ भी फर्मा देगा और अज्रे अज़ीम भी अता फर्माएगा। अल्लाह तआला हम सबको निफ़ाक़ से बचाये और मुत्तक़ीन के अवसाफ़ हमारी ज़िन्दगी में पैदा फ़रमाये।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

★ और उन्हें पकड़ो ★

"فَاِذَا انْسَلَخَ الْاَشْهُرُ الْحُرُمُ فَاقْتُلُوا الْمُشْرِكِيْنَ حَيْثُ وَجَدْتُّمُوْهُمْ وَ خُذُوْهُمْ وَ احْصُرُوْهُمْ وَ اقْعُدُوْا لَهُمْ كُلَّ مَرْصَدٍ فَاِنْ تَابُوا وَ اَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَ آتَوُا الزَّكٰوةَ فَخَلُّوْا سَبِيْلَهُمْ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ"

तर्जुमा : फिर जब हुर्मतवाले महीने निकल जाएं तो मुश्रिकों को मारो, जहां पाओ। और उन्हें पकड़ो और क़ैद करो और हर जगह उन की ताक में बैठो, फिर अगर वह तौबा करें और नमाज़ क़ाइम रखें और ज़कात दें तो उनकी राह पर छोड़ दो, बेशक ! अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है। *(पारा–10, आयत–4, कन्जुल इमान)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! इस आयते करीमा में ग़ज़बे इलाही का इज़्हार है और उन लोगों के साथ जेहाद करने और क़ैद करने का हुक्म दिया जा रहा है जिन्होंने ख़ुदाए वहदहु ला शरीक के साथ शिर्क व कुफ़्र करके अपनी जानों पर जुल्म किया है, जो राहे रास्त को छोड़ चुके हैं मगर साथ ही रहमते इलाही का भी इस आयत में किसी तरह इज़्हार हो रहा है कि वही काफ़िर व मुश्रिक जिनके साथ तुम्हें जेहाद करने और क़त्ल व क़ैद करने का हुक्म दिया गया था अगर वह अपने शिर्क व कुफ़्र से सच्ची तौबा कर लें और अपनी तौबा पुख़्ता करने के लिये नमाज़ें पढ़ें और जक़ात दें तो उनके लिये रास्ता छोड़ दो, यानी उनके साथ जेहाद और क़त्ल न किया जाये। और यह इसलिये हुक्म दिया गया कि अल्लाह तआला ने अपने फ़ज़्ल व करम से उनका कुफ़्र और उनके साबिक़ा मआसी व जराइम बख़्श दिये हैं। इसलिये कि ईमान और तौबा साबिक़ा तमाम ख़ताओं को माफ़ कर देते हैं। फिर उनके तौबा करने की वजह से उनकी नेकियों और इताअते इलाही पर अल्लाह तआला उन्हें अज्र व षवाब भी इनायत फ़रमाता है।

इस आयते करीमा से एक अज़ीम दर्स और हमें मिलता है कि मौला तआला कितना करीम व रहीम है कि हज़ारों गुनाह करने के बाद भी अगर बंदा उसे याद करके उसे पुकारना शुरू कर दे तो न सिर्फ़ मौला उसके गुनाह बख़्श देगा बल्कि उसे अपने महबूबीन का दर्जा भी अता फ़रमा देगा। जैसा कि ख़ूद इरशाद फ़रमाता है : **"اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ التَّوَّابِيْنَ وَ يُحِبُّ الْمُتَطَهِّرِيْنَ"** "बेशक ! अल्लाह तआला तौबा करने वालों को महबूब रखता है।"

★ अल्लाह की क़सम ! ★

कुरआन पाक में एक जगह है :–

"يَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ مَاقَالُوْا وَلَقَدْ قَالُوْا كَلِمَةَ الْكُفْرِ وَ كَفَرُوْا بَعْدَ اِسْلَامِهِمْ وَ هَمُّوْا بِمَا لَمْ يَنَالُوْا وَ مَا نَقَمُوْا اِلَّا اَنْ اَغْنٰهُمُ اللّٰهُ وَ رَسُوْلُهٗ مِنْ فَضْلِهٖ فَاِنْ يَّتُوْبُوْا يَكُ خَيْرًا لَّهُمْ وَ اِنْ يَّتَوَلَّوْا يُعَذِّبْهُمُ اللّٰهُ عَذَابًا اَلِيْمًا فِى الدُّنْيَا وَ الْاٰخِرَةِ وَمَا لَهُمْ فِى الْاَرْضِ مِنْ وَّلِيٍّ وَّ لَا نَصِيْرٍ"

तर्जुमा : अल्लाह की क़सम खाते हैं कि उन्होंने न कहा, और बेशक ! ज़रूर उन्होंने कुफ़्र की बात कही और इस्लाम में आकर काफ़िर हो गये और वह चाहता था जो उन्हें न मिला। और उन्हें क्या बुरा लगा, यही न कि अल्लाह व रसूल ने उन्हें अपने फ़ज़्ल से ग़नी कर दिया। तो अगर तौबा करें तो उनका भला है और अगर मुंह फेंरे तो अल्लाह उन्हें सख़्त अज़ाब करेगा। दुन्या और आख़रत में और ज़मीन में कोई न उनका हिमायती होगा न मददगार। *(सूरए तौबा, आयत–73, कन्जुल इमान)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! इस आयते करीमा में कई अज़ीम बातों की तरफ़ इशारा है, अव्वल तौबा कि इस में उन मुनाफ़िक़ीन की बुरी ख़सलतों को बयान किया गया है जो सरवरे कायनात ﷺ से दिल में बुग़्ज़ व एनाद रखते हैं, मगर जब आपकी बारगाह में आते हैं तो अल्लाह की क़समें खाने लगते हैं, यहां तक कि उन बदबख़्त और हिरमां नसीबों ने प्यारे आक़ा ﷺ को शहीद करने का भी नापाक मन्सूबा बना लिया, मगर जब यह राज़ फ़ाश हो गया और उनसे इस बुरी साज़िश के बारे में इस्तिफ़सार किया गया तो वह क़सम खाकर कहने लगे कि हमने तो ऐसा नहीं किया, मगर उस ज़ाते

बारी तआला से यह सब कैसे मख़्फ़ी रह सकता है जिसे एक पल के लिये भी न नींद आती है न ऊंघ ! अज़ीं सबब अल्लाह ने तहदीदन और वार्निंग देते हुए उन से इरशाद फ़रमाया कि जान लो ! अगर तुम इन सब कामों से तौबा कर लो तो तुम फ़ायदे में रहोगे और मौला तुम्हें माफ़ भी करेगा लेकिन अगर इसी पर अड़े रहे, तौबा न किया तो फिर ज़मीन में कोई भी तुम्हारा मददगार न रहेगा। लिहाज़ा अल्लाह की तरफ़ रुजूअ लाओ।

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! हम सबको हमेशा उन तमाम बुरी आदतों से बाज़ रहना चाहिये और हमेशा तौबा करते रहता चाहिये। इसी लिये मेरे आक़ा ﷺ का कितना प्यारा फ़रमान है कि जब तक किसी क़ौम में इस्तिग़फ़ार करने और तौबा करने वाले मौजूद रहेंगे वहां अल्लाह का अज़ाब नहीं आ सकता। मौला तआला हम सबको तौबा व इस्तिगफ़ार की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये। آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

★ अपने बंदों की तौबा ★

"اَلَمْ یَعْلَمُوْۤا اَنَّ اللّٰهَ هُوَ یَقْبَلُ التَّوْبَةَ عَنْ عِبَادِهٖ وَ یَاْخُذُ الصَّدَقٰتِ وَ اَنَّ اللّٰهَ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِیْمُ"

"क्या उन्हें ख़बर नहीं कि अल्लाह ही अपने बंदों की तौबा कुबूल करता है और सदक़े ख़ूद अपने दस्ते कुदरत में लेता है और यह कि अल्लाह ही तौबा कुबूल करने वाला मेहरबान है।" *(सूरए तौबा, आयत–103, कन्जुल इमान)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! मज़कूरा आयते करीमा में परवर्दिगारे आलम उन तौबा करने वालोंको यक़ीन दिला रहा है कि अल्लाह ही है जो अपने बंदों की तौबा क़बूल फ़रमाता है। चूंकि बंदा जब गुनाह पे गुनाह करता चला जाता है और ख़ूब अय्याशी व बेबाकी में अपनी ज़िन्दगी के लम्हात बसर करता है मगर जब पूरी दुन्या उसे ठोकर मार देती है और हर जगह वह ज़लील व रुसवा होता है तो अब उसे हर तरफ़ से मायूसी और ना उम्मीदी ही नज़र आती है, तो जब कोई साथ देने को तैयार नहीं होता है ऐसे हालात में भी परवर्दिगार की रहमत पुकार कर कहती है, बंदे! मायूस होने की ज़रूरत नहीं। तौबा क़बूल करना तो हमारी ही सिफ़ते ख़ास्सा है, तुम तौबा करो और सदक़ात दो तो हम उसको क़बूल फ़रमाकर आला इल्लीय्यीन में मक़ाम अता फ़रमायेंगे। अल्लाह

तआला हमें तौबा करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये और हमारी तौबा को क़ुबूल फ़रमाकर हमें आला मक़ाम अता फ़रमाये।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

★ अज़ाब या तौबा ★

"وَ اٰخَرُوْنَ مُرْجَوْنَ لِاَمْرِ اللّٰهِ اِمَّا یُعَذِّبُهُمْ وَ اِمَّا یَتُوْبُ عَلَیْهِمْ وَ اللّٰهُ عَلِیْمٌ حَكِیْمٌ"

तर्जुमा : "और कुछ मौक़ूफ़ रखे गये अल्लाह के हुक्म पर या उन पर अज़ाब करे या उनकी तौबा क़बूल करे और अल्लाह इल्म व हिकमत वाला है।" *(पारा–11, आयत–105, कन्जुल इमान)*

इस आयते करीमा के मफ़हूम का खुलासा यह है कि कुछ सहाबाए किराम ख़ुश हाल होने के बावजूद जंगे तबूक में सरकार के साथ जा न सके और जब आक़ाए कायनात ﷺ ग़ज़वह से वापस आये तो उन्होंन मअज़ेरत भी नहीं की, तो सरकार ﷺ उनसे नाराज़ थे। लिहाज़ा अल्लाह तआला ने यह हुक्म नाज़िल फ़रमाया कि उनका मामला तो अल्लाह पर मौक़ूफ़ रखा है, वह चाहे तो इसी तरह उनको अपनी हालत पर रखे और सज़ा दे या तौबा की तौफ़ीक़ मरहमत फ़रमाकर करम की बारिश फ़रमाये, उसके इख़्तेयार में किसी को दख़ल नहीं है।

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! इससे हमें यह सबक़ मिलता है कि तौबा भी अल्लाह की एक अज़ीम नवाज़िश है। और अगर हम तौबा करते हैं तो यक़ीन जानिये कि मौला ने हम पर बड़ा करम व अहसान किया है। लेकिन अफ़सोस ! और सद अफ़सोस ! है उन लोगों के ताल्लुक़ से जो दिन रात ख़ुदा की नाफ़रमानियां करते रहते हैं मगर कभी अल्लाह की रज़ा का कोई काम नहीं करते, ख़ुदा नख़्वास्ता अगर उनकी इसी हालत पर मौत आ जाये तो फिर बताओ कि उस रब्बे क़दीर के क़हर व अज़ाब से उन्हें कौन बचा सकता है ? लिहाज़ा ख़ुदाए करीम ने अगर तौफ़ीक़े तौबा इनायत की है तो फ़ौरन तौबा कर लेना चाहिये। अल्लाह हम सबको गुनाहों की ज़िन्दगी से बचाकर नेकियों में सबक़त हासिल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

★ अच्छा और बुरा ★

"وَ آخَرُوْنَ اعْتَرَفُوْا بِذُنُوْبِهِمْ خَلَطُوْا عَمَلًا صٰلِحًا وَّ آخَرَ سَيِّئًا عَسَى اللّٰهُ اَنْ يَّتُوْبَ عَلَيْهِمْ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ"

तर्जुमा : "और कुछ और हैं जो गुनाहों के क़रीब हुए और मिला एक काम अच्छा और दूसरा बुरा, क़रीब है कि अल्लाह उनकी तौबा क़बूल करे, बेशक ! अल्लाह तआला बख़्शने वाला मेहरबान है।" *(सूरए तौबा, पारा–11, आयत–101, कन्जुल इमान)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! मज़कूरा आयते करीमा में भी इसी तरह बाज़ उन लोगों की तौबा के ताल्लुक़ से बयान किया गया है कि जिन्होंने बाद में अपनी ख़ताओं और ग़लतियों का एतेराफ़ किया और अफ़सोस व नदामत ज़ाहिर की तो रब्बे क़दीर उनके लिये इरशाद फ़रमाता है कि उनकी यह ख़ता व ग़लती पहली वाली नेकियों से मिल गयी तो अब क़रीब है कि अल्लाह तआला उनकी तौबा कुबूल कर ले, इस लिये कि जो उसकी बारगाह में अपने गुनाहों के एतेराफ़ के साथ हाज़िर होता है तो उन्हें भगाया नहीं जाता, लिहाज़ा हमें चाहिये कि अपने तमाम साबिक़ा गुनाहों और ख़ताओं का एतराफ़ करते हुए रब की बारगाह में अफ़सोस व नदामत के आंसू बहायें, इसलिये कि मौला तआला इरशाद फ़रमाता है : "اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ" "बेशक ! अल्लाह बहुत बख़्शने वाला रहम फ़रमाने वाला है।"

★ मोमिन की नव (9) सिफ़ात ★

"اَلتَّائِبُوْنَ الْعٰبِدُوْنَ الْحٰمِدُوْنَ السَّائِحُوْنَ الرّٰكِعُوْنَ السّٰجِدُوْنَ الْاٰمِرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَ النَّاهُوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَ الْحٰفِظُوْنَ لِحُدُوْدِ اللّٰهِ وَ بَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ"

तर्जुमा : तौबा वाले, इबादत वाले, सराहने वाले, रोज़े वाले, रुकूअ वाले, सजूद वाले, भलाई के बताने वाले और बुराई से रोकने वाले और अल्लाह की हदें निगाह रखने वाले और ख़ुशी सुनाओ मुसलमानों को। *(सूरए तौबा, पारा–11, आयत–111)*

इस आयते करीमा में ख़ुदावंदे कुद्दूस ने जिन लोगों को अज़ीम बशारत से सरफ़राज़ फ़रमाया है और वह बारगाहे ख़ुदा वंदी के मक़बूल तरीन बंदे हैं मगर

उन तमाम सिफ़ात में सबसे पहले तौबा करने वालों को ज़िक्र कर लिया जा रहा है, जिससे तौबा की अज़मत व शान का अंदाज़ा होता है यहां पर हम तौबा के क़बूल होने की चार अलामात ज़िक्र करते हैं मुलाहेज़ा हो :–

- ➡ अव्वल यह है कि जब वह तौबा कर ले तो वह फ़ासिक़ीन से कटकर सालेहीन के साथ लग जाये और नेक मजलिसों में दिलचस्पी से शरीक होता रहे।
- ➡ दूसरी अलामत यह है कि हर नेक काम में अमली तौर पर शामिल होता हो और खुलूस व लिल्लाहियत के साथ तमाम ताआते इलाही में लग जाए।
- ➡ तीसरी अलामत तौबा के कुबूल होने की यह है कि अल्लाह तआला ने जिन उमूर को अपने ज़िम्मे करम पर वाजिब फ़रमाया है उनकी उसे ज़र्रा भर भी फ़िक्र न हो, जैसे अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि हर एक को रिज़्क़ देना मेरे ज़िम्मए करम पर है, फिर उसके लिये फ़िक्र क्यों करे, बल्कि उन तमाम अस्बाब से बे फ़िक्र होकर के वह मशग़ूले इबादत हो जाये।
- ➡ चौथी अलामत यह है कि तौबा के बाद वह अल्लाह तआला की तरफ़ मुतवज्जोह हो जाये, इसलिये कि जो अल्लाह की याद में लग जाये उसे अल्लाह के सिवा किसी और शई से ख़ुशी हासिल नहीं होती, जैसा कि हुज़ूर ﷺ हर वक़्त यादे इलाही में मग़मूम व महज़ून रहते थे।

जब तौबा करने वाले में मज़कूरा चार अलामतें पाली जायें तो यह समझ लेना चाहिये कि रब्बे क़दीर ने अपने करम से उसकी तौबा क़बूल फ़रमा लिया है, लिहाज़ा अवामुन्नास पर भी यह लाज़िम है कि उस पर बदगुमानी के बजाए उसके साथ महब्बत करें और उसकी साबित क़दमी के लिये परवर्दिगारे आलम से दुआ भी करें, उसे साबिक़ा गुनाहों को याद दिलाकर शर्मिन्दा न करें। इसलिये कि अल्लाह तआला ऐसे बंदों को पसंद करता है और उन्हें अजरे अज़ीम अता फरमाता है। अल्लाह तआला हम तमाम के अंदर मज़कूरा चारों सिफ़ात पैदा फ़रमाए और हमें सच्ची तौबा करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوۃ والتسلیم۔

★ रहमत जोश में ★

"وَعَلَى الثَّلٰثَةِ الَّذِيْنَ خُلِّفُوْا حَتّٰى اِذَا ضَاقَتْ عَلَيْهِمُ الْاَرْضُ بِمَا رَحُبَتْ وَ

ضَاقَتْ عَلَيْهِمْ اَنْفُسُهُمْ وَ ظَنُّوْا اَنْ لَّا مَلْجَاَ مِنَ اللّٰهِ اِلَّا اِلَيْهِ ثُمَّ تَابَ عَلَيْهِمْ لِيَتُوْبُوْا اِنَّ اللّٰهَ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ“

तर्जुमा : "और उन तीन पर जो मौक़ूफ़ रखे गये थे, यहां तक कि जब ज़मीन इतनी वसीअ होकर उन पर तंग हो गयी और अपनी जान से तंग आये और उन्हें यक़ीन हुआ कि अल्लाह से पनाह नहीं मगर उसके पास फिर उनकी तौबा क़बूल की ता कि ताइब रहें, बेशक! अल्लाह ही तौबा क़बूल करने वाला मेहरबान है।" *(पारा—11, आयत—30, कन्ज़ुल इमान)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! आयते करीमा का मफ़हूम समझने के लिये पहले उस्के शाने नुज़ूल को भी मुलाहेज़ा करना होगा। उस का पस मंज़र इस तरह है कि जब सरकार ﷺ और आपके अस्हाब जंगे तबूक में तशरीफ़ ले गये तो यह निहायत ही सख़्त गर्मी के दिन थे और सहाबाए किराम के पास उस वक़्त सवारियों की भी बहुत ज़्यादा कमी थी, यहां तक कि दस आदमियों के लिये सिर्फ़ एक ऊंट था और ख़ुराक की तो बहुत ज़्यादा कमी थी कि सिर्फ़ एक खजूर को एक बड़ी जमाअत में तक़सीम कर दिया जाता! मगर ऐसे सख़्त दिनों में हज़रत कअब बिन मालिक, हिलाल बिन उमैया, मरार बिन रबीअ जो कि ख़ुशहाल थे जंग में शरीक न हो सके और अपने दुन्यावी कामों में मसरूफ़ रहे गये, यहां तक कि जब आक़ाए कायनात ﷺ जंग से वापस तशरीफ़ लाये तो उन लोगों ने मअज़ेरत भी नहीं की। जिस की बिना पर सरकार बहुत नाराज़ हुए और अपने सहाबा को हुक्म दिया कि। उनसे सलाम व कलाम न करे, उनके साथ उठना, बैठना तर्क कर दिया जाए। फिर उसके बाद तमाम सहाबाए किराम ने उन तीनों हज़रात का मुकम्मल बायकाट कर दिया, न उनसे सलाम करते न उनके सलाम का जवाब देते, यहां तक कि वह तीनों हज़रात अफ़सोस व शर्मिन्दगी के मारे घरों में गिरया व ज़ारी करते हुए बैठ गए। हज़रत कअब رضی اللہ عنہ यह एक पहाड़ की चोटी पर चले गये और दिन रात रोते गिड़ गिड़ाते अपने ख़ुदाए ग़फ़्फ़ार को पुकारते थे और बहुत ज़्यादा आंसू उन्होंने बहाया, यहां तक कि पचास दिन उसी हालत में गुज़र गये। बिल आख़िर परवर्दिगारे आलम की रहमत जोश में आ गयी और अपने ग़ैब बताने वाले नबी पर यह आयते करीमा नाज़िल की कि जिन तीनों का मामला अल्लाह तआला

ने मौक़ूफ़ रखा था और उन्हें इस बात का यक़ीन हो गया कि सिवाए ख़ुदा वंदे क़ुद्दूस के अब उन्हें कोई बख़्श नहीं सकता तो मौला ने भी उनकी तौबा को क़बूल कर ली है क्योंकि वही तो सबसे ज़्यादा तौबा क़बूल करने वाला मेहरबान है।

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! इस पूरी आयते करीमा से यह बात वाज़ेह हो जाती है कि जब बंदा ख़ुदाए क़ुद्दूस के अहकाम की बजा आवरी नहीं करता तो अल्लाह तआला उसे दुन्यावी परेशानियों में मुब्तेला कर देता है ता कि वह फिर से पलट कर बारगाहे ख़ुदावंदी में आ जाये, मगर उसके लिये यह शर्त है कि सच्चे दिल से तौबा करे और आंसू बहाये। अल्लाह तआला हम सबको शरीअत के अहकाम पर गामज़न रहने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये और अपने क़हर व अज़ाब से महफ़ूज़ व मामून फ़रमाये।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

★ अल्लाह मेहरबान ★

”اَوَلَا يَرَوْنَ اَنَّهُمْ يُفْتَنُوْنَ فِیْ كُلِّ عَامٍ مَّرَّةً اَوْ مَرَّتَيْنِ ثُمَّ لَا يَتُوْبُوْنَ وَ لَا هُمْ يَذَّكَّرُوْنَ“

तर्जुमा : मगर जो उसके बाद तौबा करे और संवर जाये तो बेशक! अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है। *(सूरए तौबा, पारा—11, आयत—125, कन्ज़ुल इमान)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! मज़कूरा आयते करीमा में भी तौबा का लफ़्ज़ है और यह उन मुनाफ़क़ीन के बारे में बताया जा रहा है कि जिन पर हर साल कोई न कोई मुसीबत दर पेश हो जाती है और उन्हें परेशानियों का सामना करना पड़ता है, बलाए मुकम्मल घेर लेती हैं, इस के बावजूद वह न तौबा करते और न उससे कुछ नसीहत हासिल करते, गोया इससे यह पता चला कि जो भी मुसीबत व परेशानी आती है या तंगदस्ती घेर लेती है तो उसकी वजह यह है कि तुम उन मुसीबतों को देखकर नसीहत हासिल कर लो, जब दुन्या की मामूली तकलीफ़ तुम्हें इस क़दर गजनद पहुंचाती है तो फिर आख़ेरत की सज़ाओं का तुम कैसे मुक़ाबला कर सकते हो? लिहाज़ा तुम तौबा कर लो! इसलिये कि अभी तौबा का दरवाज़ा खुला है और उस रब्ब करीम की रहमत किस क़दर वसीअ है कि फ़रमाया गया, अगर बंदा दिन में सौ मर्तबा भी गुनाह कर ले और हर मर्तबा तौबा करे तो मौला तआला उसकी तौबा को क़ुबूल करता जाएगा, मगर इतनी सहूलत होने के बावजूद जो तौबा नहीं करते और गुनाहों

से अपने दामन दाग़दार करते रहते हैं फिर वह कितने बदतरीन बंदे हुए ! अल्लाह तआला हमको उन सब बुरे बंदों से कौसों दूर रखे और दुन्या की तकालीफ़ से हमें सबक़ हासिल करने और आख़ेरत के लिये सामान तैयार करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये। آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

★ तौबा और फ़लाह ★

"وَ تُوبُوا اِلَی اللّٰہِ جَمِیْعاً اَیُّھَا الْمُؤْمِنُوْنَ لَعَلَّکُمْ تُفْلِحُوْنَ"

तर्जुमा : और अल्लाह की तरफ़ तौबा करो ! अय मुसलमानों ! सबके सब उस उम्मीद पर कि तुम फ़लाह पाओ। *(सूरए नूर, पारा–18, आयत–30, कन्जुल इमान)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! आज के इस दौर में कौन ऐसा शख़्स होगा जो कामयाबी के बुलंद मक़ाम पर नहीं पहुंचना चाहता हो, हर कोई ज़फ़र मंदी और अर्जमंदी का तलबगार है। मगर यह सब कैसे हासिल हो सकता है जब कि हमारा दामन गुनाहों से बिल्कुल आलूदा है लिहाज़ा हमें सबसे पहले अपने गुनाहों से ताइब होना पड़ेगा, फिर देखो ख़ुदावंदे कुद्दूस हमें कैसे इनाम व इकराम से नवाज़ता है।

तारीख़ में बे शुमार ऐसे वाक़ियात हैं कि एक इंसान गुनाहों में मुलव्विस अपनी ज़िन्दगी के अय्याम गुज़ारता रहता है मगर जब पूरी दुन्या उसके स्याह करतूत की बिना पर उसे किनारा कश कर देती है, फिर अब उसे एहसास होने लगता है और जब ख़ुदा की बारगाह में आंसू के धारे बहाना शुरू कर देता है तो मौला की रहमत किस तरह बढ़कर उसे अपने आग़ोश में ले लेती है।

मौती समझ के शाने करीमी ने चुन लिये
क़तरात जो गिरे थे अर्क़े इन्फ़आल के

उसके नदामत के आंसूंओं की रब्बे क़दीर की बारगाह में मोतियों से ज़्यादा क़दर व क़ीमत होती है इसी लिये मौला तआला तमाम बंदों को बारहा तौबा की तल्क़ीन फ़रमा रहा है कि बाज़ आ जाओ तमाम गुनाहों से क़ब्ल इसके कि अल्लाह तआला का अज़ाब आ जाए, फिर जब अज़ाब आ जाएगा तो हमें कोई बचा नहीं सकता।

रब्बे क़दीर हम सबको अपने जवारे रहमत में जगह अता फ़रमाये। आमीन

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

★ बुराई भलाई ★

"اِلَّا مَنْ تَابَ وَ آمَنَ وَ عَمِلَ صَالِحاً فَاُوْلٰئِکَ یُبَدِّلُ اللّٰہُ سَیِّئَاتِھِمْ حَسَنٰتٍ وَّ کَانَ اللّٰہُ غَفُوْراً رَّحِیْماً"

तर्जुमा : मगर जो तौबा करे और ईमान लाए और अच्छा काम करे तो ऐसों की बुराईयों को अल्लाह भलाईयों से बदल देगा। और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है। *(सूरए फ़ुर्कान, पारा–19, आयत–59)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! कितना करीम है मेरा मौला कि बंदा उसकी नाफ़रमानी करता है फिर अगर उसकी बारगाह में आजिज़ी के साथ आंसूंओं के चंद क़तरात नज़र करके अपने किये पर शर्मिन्दगी का इज़्हार करता है तो वह करीम न यह कि बख़्श देता है बल्कि गुनाहों से भरे नामए आमाल को नेकियों के ज़रिये मुनव्वर और ताबां कर देता है।

आज दुन्या की अदालत और कचहरी का आप जाइज़ा लें जहां पर एक मुजरिम को पेश किया जाता है फिर उसका जुर्म षाबित हो जाये अब अगर वह मुन्सिफ़ से रोकर माफ़ी मांगना शुरू कर दे, आंसू बहाए और कहे कि मैं आइंदा ऐसी ग़लती नहीं करूंगा, तो दुन्या उसे बेवकूफ़ कहेगी। जुर्म से पहले ही तुम्हें अंजाम समझ लेना चाहिये था। अब तो कुछ नहीं हो सकता है। फिर उसे उसके जुर्म के मुताबिक़ सज़ा दी जाती है। मगर कुरबान जाओ ख़ुदावंदे कुद्दूस की करम पर ! कि मुजरिम अगर चे हज़ारों जुर्म क्यों न किया हो अगर सच्चे दिल से उसकी बारगाह में तौबा कर ले तो उसके सारे गुनाह धुल दिये जाते हैं। लिहाज़ा हमें चाहिये कि अपने गुनाहों से तौबा करते रहें। अल्लाह तआला की बारगाह में दुआ है कि हमें अपनी ताअत में ज़िन्दगी बसर करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये और जो गुनाह हमसे हो गये हैं उन्हें माफ़ फ़रमाये और हमें मौत से पहले तौबा की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये। آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

तौबा का माअना

हुज्जतुल इस्लाम हज़रत अल्लामा इमाम ग़ज़ाली عَلَيْهِ الرَّحْمَةُ وَ الرِّضْوَانُ फ़रमाते हैं कि तौबा तीन चीज़ों का नाम है : पहली चीज़ इल्म, दूसरी चीज़ हाल, तीसरी चीज़ फ़ेअल, इनमें से पहला दूसरे का सबब है और दुस्रा तीसरे का। और यह अल्लाह तआला के अपने निज़ाम की वजह से है कि उसने इजसाम व अरवाह को जारी रखा हुआ है, इन तीनों की तफ़सील यूं है :–

इल्म से मक़सद यह है कि बंदा मालूम करे कि गुनाहों का अज़ाब और नुक़्सान बहुत बड़ा है। वह यह कि गुनाहगार और महबूबे हक़ीक़ी के माबैन गुनाह की वजह कई हिजाबात दर्मियान में हो जाते हैं। जब किसी को उसका यक़ीन हो जायेगा कि गुनाह से ऐसे हिजाबात आड़े आते हैं तो उसे मफ़ारेक़ते महबूबे हक़ीक़ी का दिल पर सदमा होगा। जिस फ़ेअल व अमल से समझेगा कि यही मेरी और मेरे महबूबे हक़ीक़ी की जुदायगी का सबब है तो उसके इर्तेकाब पर नादिम होगा। इसी नदामत का नाम तौबा है।

जब दिल पर इस नदामत का ग़ल्बा होगा तो दिल की हालत में तबदीली आयेगी। इसी तबदीली का नाम क़स्द व इरादा है और इस क़स्द व इरादा का ताल्लुक़ तीनों ज़मानों से है :–

1. ज़मानए हाल से तो यूं कि दिल से यक़ीन करे कि आइंदा यह गुनाह नहीं करूंगा।
2. ज़मानए मुस्तक़बिल से यूं कि जब उसने यक़ीन कर लिया कि उसी गुनाह की शामत से तो महबूबे हक़ीक़ी से दूरी हुई, इसी लिये अब अज़्म बिज़् जुर्म करे कि ज़िन्दगी भर इस गुनाह के क़रीब भी न भटकूंगा।
3. ज़मानए माज़ी से यूं कि अगर कोई शय क़ाबिले क़ज़ा व तलाफ़ी फ़ौत हुई तो उसका नुक़्सान पूरा करे। बहरहाल इन जुमला उमूर का मंशा इल्म हैं यानी ईमान व यक़ीन इस तस्दीक़ की पुख़्तगी का नाम है कि दिल पर यह यक़ीन इतना ग़ल्बा पा जाये कि शक की गुंजाईश तक न हो।

इस कैफ़ियत के बाद नूरे इमान दिल पर छा जाता है उसका नतीजा यह निकलता है कि दिल में नदामत की आग भड़क उठती है और दिल पर सदमा गुज़रता है। इसलिये नूरे ईमान की वजह से सालिक को समझ में आता है कि वाक़ई मैं महबूबे हक़ीक़ी से महबूब हो गया।

तौबा अल्लाह तआला की जनाब में रुजूअ का नाम है। यही सालिकों के रास्ते की इब्तेदा और वासिलीन की गिरां माया मतअ है सालकीन सबसे पहले इसी पर क़दम रखते हैं तौबा राह से रू गिरदानों के लिये मफ़ताह इस्तेक़ामत हैं। अंबिया عَلَيْهِمُ السَّلَام बिलख़ुसूस हमारे जद्दे अमजद सैयदना आदम عليه السلام के लिये सर चश्माए पसंदीदगी।

आदम ज़ादा से गुनाह का सुदूर हो तो यह बइद क़यास नहीं। क्योंकि यह इंसान है। इंसान से ख़तरा होना मुमकिन है। आदम عليه السلام से अज़ रुए हिकमत लग़्ज़िश सादिर हुई तो उन्होंने जबरे नुक़सान किया यानी अल्लाह तआला की तरफ़ रुजूअ फ़रमाया। आदमज़ादा तो उसका ज़्यादा मुस्तहिक़ है कि वह भी रुजूअ एलल्लाह करे।

हज़रत आदम अला नबिय्यीना عليه السلام से लग़्ज़िश सादिर हुई उसमें हिकमत थी लेकिन उसके बावजूद उन्होंने नदामत का इज़्हार फ़रमाया। बल्कि मुद्दत तक अश्कबार रहे। इससे वाज़ेह होता है है कि जिससे ख़ता सरज़द हो और वह आदमज़ादगी का मुद्दई भी हो फिर तौबा का दरवाज़ा न खटखटाये तो वह ख़ताकार है बल्कि ख़ल्फ़े नाबकार है।

नुक्ता : सिर्फ़ ख़ैर का होकर रहना तो मलाइकाए किराम का ख़ास्सा है और सिर्फ़ शर में मुनहिकम होना शैतान से मख़सूस है। हां ! शर से ख़ैर की तरफ़ रुजूअ करना इंसान का काम है। इसी लिये इंसान की सिरिश्त में दोनों ख़सलतों की आमेज़िश है। ख़ैर महज़ करने वाला फ़रिश्ता कहलाता है सिर्फ़ शर का मुर्तकिब शैतान है, हां ! शर की तलाफ़ी करने के लिये रुजूअ एलल ख़ैर करने वाला इंसान ही है।

दाइमी ख़ैर में रहकर अपना रिश्ता फ़रिश्ता से जोड़ना मुमकिन नहीं, इसी लिये हम ने उसकी बात नहीं की इंसान के ख़मीर शर व ख़ैर दोनों में शर का ख़ैर से जुदा होना दो तरह से मुमकिन है :–

1. निदामत (तौबा) से।

2. आतिशे जहन्नम से।

बहरहाल जो हर इंसानी में ख़बाषते शैतानी की मिलावट हो जाये तो उसे दो तरह से जुदा किया जा सकता है, तौबा करे या फिर जहन्नम में जाना होगा। अब इंसान ख़ूद ही सोचे कि उसे दो आतिशों (तौबा की आग, जहन्नम की आग) में से कौन सी आग की बर्दाश्त है। ज़ाहिर है कि तौबा को ही इख़्तेयार करे, क्योंकि यह एक आसान काम है, लेकिन मौत से पहले ही तौबा हो सकती है मरने के बाद जन्नत या दौज़ख़।

मुबल्लिग़े इस्लाम हज़रत सैयद सआदत अली क़ादरी फ़रमाते हैं कि तौबा के माअना हैं रुजूअ एलल्लाह की तरफ़ लौटना, बग़ावत व नाफ़रमानी की ज़िन्दगी, बदकारियों और बद अमली से नादिम व शर्मिन्दा होकर अल्लाह की तरफ़ रुजूअ करना, इज़हारे नदामत करना और आइंदा गुनाहों की ज़िन्दगी से बचे रहने का वादा करना तौबा कहलाता है। अल्लाह वह पसंद फ़रमाता है कि अहले ईमान उससे तौबा करते रहें।

"وَ تُوبُوْا اِلَی اللّٰهِ جَمِیْعاً اَیُّهَا الْمُؤْمِنُوْنَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ"

और अल्लाह की तरफ़ तौबा करते रहो, ऐ मुसलमानो! सबके सब इस उम्मीद पर कि तुम फ़लाह पाओ। *(सूरए नूर, आयत–30, पारा–18, कन्जुल इमान)*

"اِنَّ اللّٰهَ یُحِبُّ التَّوَّابِیْنَ" बेशक! अल्लाह तौबा करने वालों से महब्बत फ़रमाता है। *(सूरए बकरह, आयत–222, कन्जुल इमान)*

गोया तौबा सिर्फ़ गुनाहगारों के लिये नहीं बल्कि हर मोमिन के लिये है। अवाम के लिये भी ख़वास के लिये भी। औलिया व सालेहीन के लिये भी और अंबिया व मुरसलीन के लिये भी। हर एक को उसके मक़ाम के मुताबिक़ तौबा का फ़ायदा हासिल होता है। हम तौबा करें तो गुनाह धुलते है। औलिया व सुलहा तौबा करें तो मरातिबे कुर्ब में इज़ाफ़ा होता है, अंबियाए व मुरसलीन तौबा करें तो उम्मत के गुनाहगारों की बख़्शिश होती है। बहरहाल तौबा अल्लाह को पसंद है और वह तौबा करने वालों को उनकी हैसियत और उनके मर्तबा के मुताबिक़ तौबा का अज्र अता फ़रमाता है। हत्ता कि जिन के सदक़े में सबकी

तौबा क़बूल होती है ताइब और हज़रत आदम علیہ السلام की तौबा भी उन्हीं के सदक़े में क़बूल हुई थी। उन्हें भी हुक्म मिला : **"وَ اسْتَغْفِرْ لِذَنْبِكَ"** "और इस्तिग़फ़ार करते रहिये।" यह हुक्म उस प्यारे के लिये है जो मासूम है, जिससे गुनाह के इर्तेकाब का इम्कान तक नहीं। पस यह हुक्म उन के मन्सब के मुताबिक़ उस हिकमत पर मब्नी है कि महबूब का इस्तिग़फ़ार उनके रब को बेहद पसंद है। नीज़ आक़ा ﷺ का इस्तिग़फ़ार गुलामों की तौबा क़बूल होने का वसीला होगा। और हर गुलाम के लिये इस्तिग़फ़ार आक़ा की सुन्नत बन जायेगा। पस मासूम नबी ने अपने रब के हुक्म की तामील की और ख़ूब तामील की। जैसा कि ख़ूद आक़ा ﷺ ने बताया, रिवायत है कि हज़रत अबू हुरैरा رضی اللہ عنہ से फ़रमाया : **"اِنِّی لَاَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ وَ اَتُوْبُ اِلَیْهِ فِی الْیَوْمِ اَكْثَرَ مِنْ مِائَةِ مَرَّةً"** मैं अल्लाह तआला की बारगाह में दिन में सौ बार से ज़्यादा इस्तिग़फ़ार करता हूं। *(बुखारी शरीफ)*

शारेहे सहीह मुस्लिम हज़रत अल्लामा गुलाम रसूल सईदी, हज़रत मुल्ला अली क़ारी के हवाले से लिखते हैं कि तौबा का माअना यह है कि मअसियत से ताअत की तरफ़, ग़फ़लत से ज़िक्र की तरफ़ और ग़याब से हुजूर की तरफ़ रुजूअ करे और अल्लाह के तौबा करने का माअना यह है कि दुन्या में बंदे के गुनाह पर सतर करे, कोई शख़्स उसके गुनाह पर मुतला न हो और आख़ेरत में उसको सज़ा न दे। अल्लामा तैबी ने कहा कि तौबा का शरई माअना यह है कि गुनाह को बुरा जान कर किल् फौर तर्क कर दे। उससे जो तक़सीर हुई है उस पर नादिम हो और आइंदा उस गुनाह को न करने का अज़्मे मुसम्मम करे और जो गुनाह उससे हो गया है उसका तदारुक और तलाफ़ी करे।

अल्लामा नववी ने कहा है कि गुनाह का तअल्लुक़ हुक़ूकुल अेबाद से हो तो फिर तौबा के कुबूल करने की यह ज़ाइद शर्त है कि वह साहिबे हक़ को उसका हक़ वापस करे। या उससे माफ़ कराये। अल्लामा इब्ने हजर अस्कलानी عَلَيْهِ الرَّحْمَةُ وَ الرِّضْوَانُ ने कहा, "और अगर उसके ज़िम्मे हुक़ूकुल्लाह हैं तो वह नवाफ़िल और फ़रूज़े किफ़ाया में मशगूल होने की बजाए उन फ़ौत शुदा फ़राइज़ को अदा करे, क्यों कि जिस शख़्स की नमाज़ें और रोज़े क़ज़ा हों और वह नवाफ़िल में मशगूल हों तो अदा करने की हालत में भी वह फ़िस्क़ से ख़ारिज नहीं होगा।

★ क़बूले तौबा की शर्तें ★

तौबा क़बूल होने की चंद शराइत हैं :—

1. जब तक सूरज मग़्रिब से तुलूअ न हो उस वक़्त तक तौबा का दरवाज़ा खुला हुआ है, जैसा कि हज़रत अबू हुरैरा رضی اللہ عنہ से रिवायत है कि सरकारे दो आलम ﷺ ने इरशाद फ़रमाया :—

"مَنْ تَابَ قَبْلَ اَنْ تَطْلُعَ الشَّمْسُ مِنْ مَّغْرِبِهَا تَابَ اللّٰهُ عَلَيْهِ"

जिसने आफ़ताब के मग़्रिब से तुलूअ होने से पहले तौबा कर ली अल्लाह तआला उसकी तौबा क़बूल फ़रमायेगा। *(सहीह मुस्लिम, जिल्द—2, सफा—346)*

हज़रत अल्लामा नववी लिखते हैं कि सूरज का मग़्रिब से तुलूअ होना तौबा कुबूल होने की हद है। और हदीषे सहीह में है कि तौबा का दरवाज़ा खुला हुआ है और जब तक तौबा का दरवाज़ा बंद न हो तौबा क़बूल होती रहेगी और जब सूरज मग़्रिब से तुलूअ होगा तो यह दरवाज़ा बंद हो जायेगा और जिसने इससे पहले तौबा न की उसकी तौबा क़बूल नहीं होगी।

2. ग़र ग़रए मौत और वक़्ते नज़अ से पहले तौबा करे क्योंकि वक़्त नज़अ में तौबा कुबूल नहीं होती और न वसीयत नाफ़िज़ होती है। *(शरहे सहीह मुस्लिम)*

फ़ज़ाइले तौबा अहादीष की रौशनी में

★ बंदों पर मेहरबान ★

हज़रत अबू हुरैरा رضی اللہ عنہ बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इरशाद फ़रमाया कि अल्लाह तआला फ़रमाता है कि मैं अपने बंदे के गुमान के साथ हूं और जहां वह ज़िक्र करता है मैं उसके साथ होता हूं। और बख़ुदा अल्लाह को अपने बंदे की तौबा पर उससे ज़्यादा ख़ुशी होती है कि जब तुम में से किसी शख़्स की जंगल में गुम शुदा सवारी मिल जाये और जो शख़्स बदक़द्रे एक बालिश्त मेरा कुर्ब हासिल करता है मैं बक़द्रे एक हाथ क़रीब होता हूं और जो बक़द्रे एक हाथ मेरे क़रीब होता है मैं बक़द्रे चार हाथ उसके क़रीब होता हूं और जो शख़्स मेरे पास चलकर आता है मैं उसके पास दौड़ता हुआ आता हूं। *(मुस्लिम शरीफ, जिल्द—दौम, किताबुत्तौबा, सफा—354)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! मज़कूरा हदीष शरीफ़ से यह बात अच्छी तरह समझ में आती है कि अल्लाह तआला अपने बंदों को माफ़ कर देना और बख़्श देना चाहता है, रब की इतनी रहमत व करम नवाज़ी का ज़िक्र फ़रमाकर कभी कुर्ब की दौलत कभी ख़ुशी का ज़िक्र फ़रमाकर बंदों को गुनाहों से नजात हासिल करने की नसीहत फ़रमाता है। लिहाज़ा हम जल्द तौबा कर के उसके कुर्ब की दौलत हासिल करने और उसको ख़ुश करने की कोशिश करें। वह ख़ुश हो गया तो फिर सारी रहमतें वह हम पर निछावर फ़रमा देगा। अल्लाह तआला हम सब पर करम फ़रमाकर सच्चा और पक्का ताइब बनाये।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوۃ والتسلیم۔

हज़रत अबू हुरैरा رضی اللہ عنہ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया, तुम में से किसी एक शख़्स के तौबा करने पर अल्लाह तआला उससे ज़्यादा ख़ुश होता है कि तुम में से किसी शख़्स को उसकी गुमशुदा सवारी मिल जाये। *(इब्ने माजह शरीफ—313)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! कोई चीज़ गुम हो जाये तो इंसान

को कितनी तकलीफ़ होती है, आदमी बेचैन व बेक़रार हो जाता है। बिल्कुल इसी तरह जब कोई अल्लाह तआला का बंदा उसके फ़रमान के ख़िलाफ़ अमल करके शैतान से क़रीब हो जाता है तो अल्लाह तआला नाराज़ हो जाता है, लेकिन जब एहसास पैदा होता है और वह तौबा करता है तो बिल्कुल उसी तरह अल्लाह तआला को ख़ुशी हासिल होती है जैसे किसी की गुम शुदा चीज़ उसको मिल जाये। आओ ! सच्चे दिल से तौबा करें और आइंदा गुनाह न करने का इरादा करें। अल्लाह तआला हम सबको सच्ची तौबा करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये। آمين بجاه النبى الكريم عليه افضل الصلوٰة والتسليم۔

★ मोमिन की तौबा ★

हज़रत हारिष बिन सुवैद कहते हैं कि हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद رضی اللہ عنہ बीमार थे, मैं उनकी अयादत के लिये गया। उन्होंने मुझको दो हदीषें बयान कीं, एक अपनी तरफ़ से और एक रसूलुल्लाह صلی اللہ علیہ وسلم की तरफ़ से। उन्होंने कहा कि रसूलुल्लाह صلی اللہ علیہ وسلم से यह सुना है कि अल्लाह तआला को अपने बंदए मोमिन की तौबा पर उससे ज़्यादा ख़ुशी होती है कि एक शख़्स की हलाकत ख़ेज़ सुनसान जंगल में अपनी सवारी पर जाए, जिस पर उसके खाने पीने की चीज़ें हों। वह सो जाये और जब वह बेदार हो तो सवारी कहीं जा चुकी हो। वह उस सवारी की तलाश करता है हत्ता कि उसको सख़्त प्यास लग जाए फिर वह। कहे, मैं वापस उसी जगह जाता हूं जहां पर मैं पहले था मैं वहां सो जाऊंगा, हत्ता कि मर जाऊंगा। वह कलाई पर अपना सर रखकर लेट जाता है ता कि मर जाए। फिर वह बेदार होता है तो उसके पास उसकी सवारी होती है और उस पर उसकी ख़ुराक और खाने पीने की चीज़ें रखी होती हैं। तो अल्लाह को बंदाए मोमिन के तौबा करने पर उस शख़्स की सवारी और ज़ादेराह (के मिलने) से ज़्यादा ख़ुशी होती है। *(मुस्लिम शरीफ, किताबुत्तौबा, सफा–354)*

हज़रत अबू अय्यूब رضی اللہ عنہ बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह صلی اللہ علیہ وسلم ने फ़रमाया **"لَوْ لَا اَنْ تُذْنِبُوْا لَخَلَقَ اللّٰهُ خَلْقاً يُذْنِبُوْنَ يَغْفِرُ لَهُمْ"** अगर मग़्फ़िरत करने के लिये तुम्हारे गुनाह न होते तो अल्लाह तआला एक ऐसी क़ौम को पैदा करता जिसके गुनाह होते और अल्लाह तआला उसकी मग़्फ़िरत करता।

मेरे प्यारे आक़ा صلی اللہ علیہ وسلم के प्यारे दीवानो ! इंसान को अपने आपको मासूम

नहीं समझना चाहिये बल्कि गुनाह का पुतला समझना चाहिये और यक़ीनन ! अगर हम से गुनाह न होता तो अल्लाह तआला अपनी शाने ग़फ़्फ़ारी का मुज़ाहेरा किस पर फ़रमाता ? लिहाज़ा हमसे गुनाह जाने अंजाने में हो ही जाते हैं तो फ़ौरन तौबा कर लेना चाहिये। अल्लाह तआला हम सबको अच्छों के तसद्दुक़ बख़्श दे। آمين بجاه النبى الكريم عليه افضل الصلوٰة والتسليم۔

अल्लाह ताअला फ़रमाता है :–

"اِنَّ اللّٰهَ يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ جَمِيْعاً اِنَّه' هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ"

बेशक ! अल्लाह सब गुनाह बख़्श देता है, बेशक ! वही बख़्शने वाला मेहरबान है। *(सूरए ज़ुमर, आयत–53)*

यही वह आयते मुबारका है जिसे नबी करीम صلی اللہ علیہ وسلم ने बेहद पसंद फ़रमाया और उसके मुताल्लिक़ इरशाद फ़रमाया :–

"مَا اُحِبُّ اَنَّ لِىَ الدُّنْيَا وَ مَا فِيْهَا بِهٰذِهِ الْاٰيَةِ" इस आयते मुबारका के एवज़ मुझे दुनिया और माफ़ीहा की दौलत भी दे दी जाये तब भी मैं उस सौदे को पसंद न करूंगा।

इस आयत का शाने नुज़ूल यह है कि हज़रत इब्ने अब्बास رضی اللہ عنہما रिवायत करते हैं कि हुज़ूर صلی اللہ علیہ وسلم की ख़िदमत में चंद मुश्रिक हाज़िर हुए जिन्होंने साबिक़ा ज़िन्दगी में बकषरत क़त्ल किये थे और बकषरत ज़िना का इर्तेकाब किया था। यह लोग अर्ज़ गुज़ार हुए कि आप जो फ़रमाते हैं और जिस चीज़ की दावत देते हैं वह हमें बहुत पसंद है, लेकिन हम तो इतने गुनाह कर चुके हैं जिनकी बख़्शिश की हमें कोई उम्मीद नज़र नहीं आती। क्या आप हमें बता सकते हैं कि इन गुनाहों का कोई कफ़्फ़ारा हो सकता है? यानी हमारे गुनाह माफ़ होने की सूरत हो तब तो हम इस्लाम क़बूल करें और अगर इस्लाम क़बूल करने के बाद भी हमें ऐसे गुनाह की सज़ा भुगतने के लिये जहन्नम में जाना पड़े तो अपने आबा व अजदाद का दीन छोड़ने की हमें क्या ज़रूरत है ? पस आयते मुबारका नाज़िल हुई और क़यामत तक के लिये गुनाहों में मुलव्विष और अपनी जानों पर ज़ुल्म व सितम करने वालों को मुज़दाए बख़्शिश सुना दिया गया। *(तफसीरे ख़ज़ाइनुल इर्फान)*

मेरे प्यारे आक़ा صلی اللہ علیہ وسلم के प्यारे दीवानो ! ग़ौर फ़रमाइए, जब मुश्रेकीन के

लिये इस्लाम कुबूल कर लेने के बाद मुज़दाए मग्फ़िरत है तो हम जो आक़ा ﷺ के गुलाम हैं इस ख़ुशख़बरी के तो ज़्यादा हक़दार हैं ! पस गुनाह कितने ही हों मायूस न होना चाहिये कि रहमते इलाही से मायूसी भी कुफ़्र है। और मायूसी अहले ईमान का शेवा नहीं। देखिये हज़रत याक़ूब علیہ السلام ने भी अपने बेटों को हज़रत यूसुफ़ علیہ السلام का सुराग़ लगाने की हिदायत करते हुए यही बताया था कि ''لَا تَيْئَسُ مَنْ رُّوحِ اللّٰهِ'' मायूस न हो जाओ ! अल्लाह की रहमत से ना उम्मीदी तुम्हें ज़ैब नहीं देती। तुम मोमिन हो, नबी की औलाद हो। ''اِنَّهٗ لَا يَيْئَسُ مِنْ رُّوحِ اللّٰهِ اِلَّا الْقَوْمُ الْكٰفِرُوْنَ'' रहमते इलाही से मायूस सिर्फ़ काफ़िर ही हुआ करते हैं। पस अहले ईमान का काम सिर्फ़ तौबा करते रहना है। और जो तौबा करते हैं उनके लिये आक़ाए रहमत ﷺ का मुज़दा है। रावी हैं अब्दुल्लाह बिन मसऊद رضی اللہ عنہما रिवायत करते है :—

''اَلتَّائِبُ مِنَ الذَّنْبِ كَمَنْ لَّا ذَنْبَ لَهٗ'' गुनाह से तौबा कर लेने वाला ऐसा पाक व साफ़ हो जाता है जैसे उसने कोई गुनाह किया ही न था। *(इब्ने माजह)*

इसलिये तो शरई हुक्म है कि जो अपने गुनाहों से अलल ऐलान तौबा कर चुका अब उसे गुनाह का ताअना देना जाइज़ नहीं, यानी शराबी या चोर को तौबा के बाद शराबी या चोर कहना जाइज़ नहीं।

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! मज़कूरा आयते करीमा और शाने नुजूल पढ़ कर और सुनकर आपने अंदाज़ा लगा लिया होगा कि रब्बे क़दीर अपने बंदों के गुनाहों को उसके तौबा करने की वजह से किस तरह माफ़ फ़रमाता है और बख़्शिश की चादर उस पर डाल देता है। लिहाज़ा आओ ! सच्चे दिल से तौबा कर लें और आइंदा गुनाह से बचने की नियत कर लें। अल्लाह तआला हम सबको गुनाह से बचने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

★ दिल पर सियाह नुक्ता ★

हज़रत अबू हुरैरा رضی اللہ عنہ फ़रमाते हैं कि हुज़ूर ﷺ ने इरशाद फ़रमाया :—

''اِنَّ الْمُؤْمِنَ اِذَا اَذْنَبَ كَانَتْ نُكْتَةٌ سَوْدَاءُ فِيْ قَلْبِهٖ فَاِنْ تَابَ وَاسْتَغْفَرَ صَقَلَ قَلْبُهٗ وَاِنْ زَادَ زَادَتْ فَذٰلِكَ الرَّانُ الَّذِيْ ذَكَرَ اللّٰهُ تَعَالٰى كَلَّا بَلْ رَانَ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ مَّا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ''

मोमिन जब गुनाह करता है तो उसके दिल पर एक सियाह नुक्ता पड़ जाता है, फिर जब तौबा व इस्तिग़फ़ार करता है तो उसके दिल को साफ़ कर दिया जाता है। और अगर वह गुनाह करता ही रहता है तो वह नुक्ता बढ़ता रहता है। फ़रमाया, पस यही है वह ज़ंग जिसका अल्लाह तआला ने ज़िक्र फ़रमाया उनके दिलों पर उनके गुनाहों का ज़ंग लग गया है। *(इब्ने माजह, बाबे जिक्रे जुनूब, सफा–313)*

जैसे ज़ंग लोहे को खाकर मिट्टी बना देता है, उसकी सारी सख़्ती व कुव्वत को ख़त्म कर देता है, ऐसे ही गुनाह मोमिन के दिल की कुव्वत व ताक़त का ख़ात्मा कर देता है। और वह बेहिस, बे ग़ैरत और ज़लील व ख़्वार होकर ज़िन्दगी के दिन गुज़ारता है। अल्लाह तआला महफ़ूज़ रखे। लेकिन बात वही है कि अगर उस हाल में भी बंदा मायूस व ना उम्मीद न हो और उसे तौफ़ीक़े तौबा नसीब हो जाए तो वह बड़ा ही मुक़द्दर वाला है कि रब बड़ा ही मेहरबान है। उसके लिये गुनाहों की सियाही दूर कर देना और नेकियों के नूर से दिलों को मुनव्वर व रोशन कर देना हरज़े दुश्वार नहीं। उसका इरशाद है :—

''اِلَّا مَنْ تَابَ وَ آمَنَ وَ عَمِلَ صَالِحاً فَاُولٰٓئِكَ يُبَدِّلُ اللّٰهُ سَيِّاٰتِهِمْ حَسَنٰتٍ وَّكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا''

मगर वह जो तौबा करे और ईमान लाये और अच्छा काम करे तो ऐसों की बुराईयों को अल्लाह भलाईयों से बदल देगा और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है। *(सूरए फुर्कान, आयत–170)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! मज़कूरा आदमी दिल की तस्कीन ही के लिये सारे काम करता है और दिल का सुकून गुनाहों से ग़ारत हो जाता है, इसलिये कि जब बंदा गुनाह करता है तो दिल पर सियाह नुक्ता कर दिया जाता है, अब उस सियाह नुक्ता का ईलाज दुन्या का कोई माहिर तबीब भी नहीं कर सकता बल्कि उसका ईलाज सिर्फ़ तौबा में मौजूद है कि बंदा जब मग्फ़िरत की दुआ करता है और तौबा करता है तो अल्लाह तआला उसके इस सियाह नुक्ते को मिटा कर रौशनी में तबदील फ़रमा देता है बल्कि सच्ची तौबा की वजह से अल्लाह गुनाहों को नेकियों में तबदील फ़रमा देता है। अल्लाह तआला हम सब पर करम की नज़र फ़रमाकर हमारे गुनाहों को नेकियों में तबदील फ़रमाये

और गुनाहों से बचने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

★ अल्लाह के दरबार में ★

हज़रत अबू ज़र ग़फ़ारी رضی اللہ عنہ से रिवायत है कि मेरे आक़ा ﷺ ने फ़रमाया **"يُؤْتٰى بِالرَّجُلِ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ"** क़यामत के दिन अल्लाह के दरबार में एक शख़्स को पेश किया जायेगा। **"فَيُقَالُ اَعْرِضُوْا صَغَائِرَ ذُنُوْبِهٖ"** तो कहा जोयगा कि इसके सग़ीरा गुनाह पेश करो। **"فَتُعْرَضُ عَلَيْهِ صَغَائِرُهَا"** तो उसके सामने उसके छोटे गुनाह पेश किये जायेंगे। **"وَ تُخْفٰى كَبَائِرُهَا"** और कबीरा गुनाहों को मख़्फ़ी रखा जायेगा। **"فَيُقَالُ اَعَمِلْتَ كَذَا وَ كَذَا"** फिर उससे पूछा जायेगा, तूने ऐसा ऐसा किया था ? **"وَ هُوَ يُقِرُّ وَ لَا يُنْكِرُ وَ هُوَ مُشْفِقٌ مِّنَ الْكَبَائِرِ"** और वह इक़रार करता ही रहेगा और किसी गुनाह का इंकार न करेगा, जब कि वह ख़ौफ़ज़दा होगा अपने बड़े गुनाहों से। **"فَيُقَالُ اَعْطُوْهُ مَكَانَ كُلِّ سَيِّئَةٍ حَسَنَةً"** तो हुक्म दिया जायेगा कि इसकी हर बुराई के बदले नेकी का अज्र दे दो। **"فَيَقُوْلُ اِنَّ لِيْ ذُنُوْباً لَّا اَرَاهَا هٰهُنَا"** तो वह कहेगा, मेरे तो और भी बहुत गुनाह थे जिन्हें मैं यहां नहीं देख रहा हूं। (ताकि मुझे उनके बदले भी नेकियां मिलें) रावी ने बताया कि इरशाद के बाद हुज़ूर ﷺ मुस्कुराए, यहां तक कि आपके दन्दाने मुबारक ज़ाहिर हो गए। यह है **"يُبَدِّلُ اللّٰهُ سَيِّاٰتِهِمْ حَسَنٰتٍ"** कि तफ़सीर कि तौबा करने वालों की बुराईयों को क़यामत के दिन इस तरह नेकियों में बदल दिया जायेगा।

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! अल्लाह तआला किस तरह से क़यामत में भी मेहरबानी फ़रमायेगा, बंदे के इक़बाले जुर्म के साथ ख़ौफ़ ज़दा होने पर उसकी रहमत को गवारा न होगा कि सिर्फ़ बंदे के गुनाह माफ़ कर दिये जायेंगे बल्कि अल्लाह तआला अपनी शान के मुताबिक़ करम फ़रमाकर गुनाहों को नेकियों में तबदील फ़रमा देगा ! बंदा रब की रहमत से ख़ुश होकर और उम्मीद लगाकर गुनाहे कबीरा भी पेश करने की गुज़ारिश करेगा इस इल्तेजा और रब से सच्ची उम्मीद पर ख़ूद रसूलुल्लाह ﷺ मुस्कुराने लगे, और क्यों न मुस्कुराएं कि आक़ा ﷺ की ख़ुशी तो इसी में थी कि उनके गुलामों की बख़्शिश हो जाए।

अल्लाह तआला रहमते आलम ﷺ के सदक़ा व तुफ़ैल में हम सबके गुनाहों को भी नेकियों में तबदील फ़रमाकर मुज़दए बख़्शिश अता फ़रमाये।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

★ तौबाए नसूह क्या है ? ★

हज़रत अबू ज़र ग़फ़ारी رضی اللہ عنہ ने हज़रत उबय رضی اللہ عنہ से पूछा, तौबाए नसूह क्या है? फ़रमाया, मैंने हुज़ूर ﷺ से यही सवाल किया था तो आपने फ़रमाया, क़ुसूरे गुनाह हो गया फिर उस पर नादिम होना अल्लाह तआला से माफ़ी चाहना और फिर गुनाह की तरफ़ माइल न होना। *(तफसीरे इब्ने कषीर, जिल्द पंजूम, सफा–100)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! हम को अपनी तौबा का जाइज़ा लेना चाहिये कि हम कैसी तौबा करते हैं ? अगर हमारी तोबा तौबाए नसूह हो तो उसके लिये हम को साबिक़ा गुनाहों से इज्तेनाब की ज़रूरत है बल्कि कभी भी उन गुनाहों की तरफ़ न पलटें ता कि मौला के फ़रमान पर सही तौर पर अमल हो सके। अल्लाह तआला हम सबको सच्ची तौबा की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

हज़रत हसन बसरी رحمۃ اللہ علیہ ने फ़रमाया कि तौबाए नसूह यह है कि बंदा अपने गुज़िश्ता अमल पर नादिम व शर्मिन्दा हो और उसकी तरफ़ दोाबरा न लौटने का पुख़्ता इरादा और अज़्म रखता हो।

हज़रत जली رحمۃ اللہ علیہ कहते हैं कि तौबाए नसूह यह है कि बंदा ज़बान से इस्तिग़फ़ार करे और दिल में नादिम हो और अपने आज़ा को आइंदा गुनाह से रोके रखे। ऐ मेरे रब ! अपने प्यारे महबूब ﷺ के सदक़ा व तुफ़ैल में सच्ची तौबा, कामिल तौबा, इस्तेक़ामते अलत् तौबा की दौलत हम को नसीब फ़रमा।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

★ तीन बातें ★

हज़रत इमाम नववी رحمۃ اللہ علیہ फ़रमाते हैं कि तौबाए नसूह यह है कि बंदे में यह तीनों बातें पाली जायें :—

1. बंदा गुनाह को तर्क कर दे।

2. जो गुनाह कर चुका उस पर दिल में नादिम और शर्मिंदा हो।

3. पुख़्ता अज़्म करे कि फिर गुनाह नहीं करेगा।

इलाहुल आलमीन मज़कूरा तीनों अलामतों को हमें अपनी ज़िन्दगी में शामिल रखने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

★ तौबा की छः शर्तें ★

मौलाए कायनात सैयदना अली کرم اللہ تعالیٰ وجہہ الکریم ने एक अअ्राबी को यह कहते हुए सुना "اَللّٰھُمَّ اَسْتَغْفِرُکَ وَ اَتُوْبُ اِلَیْکَ" ऐ अल्लाह! मैं तुझसे इस्तिग़फ़ार और तौबा चाहता हूं। आपने फ़रमाया, ऐसे ज़बान से तौबा व इस्तिग़फ़ार चाहना जूटों का काम है! उसने अर्ज़ की कि फिर हक़ीक़ी तौबा किस तरह होगी? आपने इरशाद फ़रमाया, हक़ीक़ी तौबा की छः शर्तें हैं :

1. गुज़िश्ता गुनाहों पर नदामत।
2. फ़राइज़ अगर क़ज़ा हों तो उनका अेआदा।
3. पुख़्ता इरादा करना कि फिर वह गुनाह हरगिज़ नहीं करूंगा।
4. मज़ालिम का रद्द, लूटी और ग़सब की हुई चीज़ों का लौटाना।
5. हुक़ूकुल अेबाद की अदायगी यानी जिसके हक़ में ग़लती हुई है उसको राज़ी करना।
6. अपने नफ़्स को ताअते इलाही पर डाल देना कि लम्हा भर भी मोहलत न हो। जैसे कि इस ग़लती पर उसे सज़ा दी जाये और उसे ताअत का मज़ा चखाना जैसे उसने मअसियत के मज़े लूटे हैं। *(तफसीरे रुहुल बयान, जिल्द–14, सफा–582)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! मज़कूरा छः बातों को अच्छी तरह से ज़ेहन में रखते हुए तौबा व इस्तिग़फ़ार करें! انشاء اللہ रब्बे क़दीर ज़ुरूर अपने करम से तौबा व इस्तिग़फ़ार को क़बूल फ़रमायेगा। अल्लाह तआला हम सबको अच्छी तौबा व इस्तिग़फ़ार की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

★ गुनाह पर नदामत ★

हज़रत अब्दुल्लाह बिन सलाम رضی اللہ عنہ से मरवी है कि बंदा जब अल्लाह तआला के हुज़ूर तौबा करता है और अपने गुनाह पर नदामत महसूस करता है तो उसके नादिम होने से पहले पहले उसके तमाम गुनाह माफ़ कर दिये जाते हैं। *(नुज़हतुल मजालिस–228)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! गुनाह पर तौबा के साथ नदामत ज़रूरी है बल्कि तौबा नाम ही नदामत का है, लिहाज़ा अपने गुनाहों पर नादिम हों! انشاء اللہ ज़रूर मौला करम की नज़र फ़रमायेगा। बल्कि आपने सुना कि दिल में नदामत से पहले ही अल्लाह तआला गुनाहों को माफ़ फ़रमाता है, अल्लाह तआला अपने फ़ज़्ल से रहमते आलम ﷺ के सदक़ा व तुफ़ैल में हम सबको अच्छी तौबा की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

★ गुनाह और जन्नत ★

हुजूर रहमते आलम ﷺ फ़रमाते हैं, गुनाहगार जो गुनाह करता है उसी गुनाह की वजह से जन्नत हासिल कर लेता है। अर्ज़ किया गया, या रसूलुल्लाह! ﷺ वह कैसे? फ़रमाया, जब उसी गुनाह पर नादिम होकर ताइब होता है तो उसे न सिर्फ़ माफ़ फ़रमा दिया जाता है बल्कि अल्लाह तआला उसे जन्नत में जाने का हुक्म फ़रमा देता है।

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! कितना करम है अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त का ख़ताकारों को भी जन्नत अता फ़रमाता है! और वह भी सच्चे दिल से सिर्फ़ तौबा कर लेने के एवज़ में! जब करीम इस हद तक करम फ़रमाने पर आमादा है तो बंदों को चाहिये कि अपने करीम की बारगाह में सिद्क़ दिल से तौबा करके जन्नत को हासिल करें। सच है :—

हम तो माइल ब करम हैं कोई साइल ही नहीं।
राह दिखलाएं किसे रह रवे मंज़िल ही नहीं।

अल्लाह तआला हम सबको तौबा की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

★ मौत के इंतज़ार में ★

फ़रमाने नबवी ﷺ है कि रहमते खुदावंदी को उसकी तवज्जोह से ज़्यादा मुसर्रत होती। हलाकत ख़ैज़ ज़मीन में अपनी सवारी पर खाने पीने का सामान ला दे सफ़र कर रहा हो और वहां आराम की ग़र्ज़ से रुक जाये, वह सर रखे तो उसे नींद आ जाये, जब सोकर उठे तो उसकी सवारी मअ सामान के ग़ायब हो और उसकी जुस्तजू में निकले यहां तक कि शिद्दते गर्मी और प्यास से बदहाल होकर उसी जगह वापस आ जाये जहां वह पहले सोया था और मौत के इंतज़ार में अपने बाजू का तकिया बनाकर लेट जाये। अब जो वह जागा तो उसने देखा उसकी सवारी मअ सामान उस के क़रीब मौजूद है। अल्लाह तआला को बंदा की तौबा से उस सवारी वाले शख़्स से भी ज़्यादा खुशी होती है जिसका सामान जागने के बाद उसका मिल गया है। *(मकाशिफतुल कुलूब)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! जिस रब ने अपने बंदे की परवरिश की और उसकी हर जाइज़ तमन्ना पूरी फ़रमाई, अब अगर बंदा उसकी नाफ़रमानी करके उससे दूर हो जाये तो अल्लाह तआला नाराज़ तो होगा ही लेकिन बंदे को एहसास होना चाहिये कि उसने सहीह नहीं किया और रुजूअ कर ले अपने गुनाहों से और तौबा कर ले तो अल्लाह तआला उस बंदे से इस तरह राज़ी हो जाता है जिस तरह किसी को गुमशुदा चीज़ मिल जाने पर खुशी होती है।

फ़रमाने नबवी ﷺ है अल्लाह तआला का दस्ते रहमत रात के गुनाहगारों के लिये सुबह तक और दिन के गुनाहगारों के लिये रात तक दराज़ रहता है। उस वक़्त तक कि जब मग़रिब से सूरज तुलूअ होगा और तौबा का दरवाज़ा बंद हो जायेगा। (यानी क़यामत तक अल्लाह तआला बंदों की तौबा क़बूल फ़रमायेगा)

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! अल्लाह तआला किस किस तरह से अपने बंदों को तौबा की तरफ़ आमादा करता है। अल्लाह तआला चाहता है कि किसी भी तरह बंदा गुनाहों से पाक हो जाये इसलिये ज़रूर बिल ज़रूर तौबा के दरवाज़े को दस्तक दो, क़ब्ल अज़ मौत तौबा करके गुनाहों से माफ़ी हासिल कर लें ता कि महशर की रुस्वाई से बच जायें। अल्लाह तआला रहमते

आलम ﷺ के सदका व तुफ़ैल तौबा की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

★ आसमान के बराबर गुनाह ★

रसूले खुदा ﷺ का इरशाद गिरामी है कि अगर तुमने आसमान के बराबर भी गुनाह कर लिये और फिर शर्मिन्दा होकर तौबा कर ली तो अल्लाह तआला तुम्हारी तौबा क़बूल फ़रमायेगा। *(मुकाशफतुल कुलूब–139)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! कषरते गुनाह के बावजूद अगर बंदा सच्चे दिल से तौबा कर ले तो परवर्दिगार अपने करम से उसके गुनाहों को माफ़ फ़रमा देता है। आओ! सिद्क़ दिल से तौबा करें और दुआ करें कि अल्लाह तआला हमारी तौबा कुबूल फ़रमाये और गुनाहों को माफ़ फ़रमाये।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

हज़रत सईद बिन मुसय्यिब رضی اللہ عنہ से मरवी है कि यह आयत **"اِنَّهٗ كَانَ لِلْاَوَّابِیْنَ غَفُوْرًا"** उस शख़्स के बारे में नाज़िल हुई जो गुनाह करता फिर तौबा कर लेता फिर गुनाह करता और फिर तौबा कर लेता था। *(मुकाशफतुल कुलूब–140)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! गुनाह इन्सान की फ़ितरत में है और तौबा भी उसके ख़मीर में है, लिहाज़ा जब भी (अल्लाह न करे) गुनाह सरज़द हों जाइ तों अल्लाह की बारगाह में सिद्क़ दिल से ताइब हों! **انشاء اللہ** मौला عزوجل जरूर अपने करम से बख़्श देगा। अल्लाह तआला हम सबकी मग्फ़िरत अता फ़रमाये। آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

★ एक हबशी की तौबा ★

हुजूर ﷺ की ख़िदमत में एक हब्शी हाज़िर हुआ और अर्ज़ किया, या रसूलुल्लाह! ﷺ मैं ख़ताएं करता हूं क्या मेरी तौबा क़बूल होगी? आप ﷺ ने फ़रमाया, हां! वह कुछ दूर जाकर वापस लौट आया और दर्याफ़्त किया कि जब मैं गुनाह करता हूं तो अल्लाह तआला देखता है? आपने इरशाद फ़रमाया, हां! हबशी ने इतना सुनते ही एक चीख़ मारी और उसकी रूह परवाज़ हो गयी। *(मकाशिफतुल कुलूब–140)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! हमारा ख़ालिक़ व मालिक हमारे ज़ाहिर व बातिन, अफ़आल व अक़्वाल, दिल के राज़ों को देख रहा है, अगर यह ख़्याल दिलों में रासिख़ हो जाए तो हम बे शुमार गुनाहों से बच जायेंगे।

★ इब्लीस को मोहलत ★

रिवायत है कि जब अल्लाह तआला ने इब्लीस को मलऊन क़रार दिया तो उसने क़यामत तक के लिये मोहलत मांगी। अल्लाह ने उसे मोहलत दे दी, तो वह कहने लगा, तेरी इज़्ज़त व जलाल की क़सम ! जब तक इंसान की ज़िन्दगी का रिश्ता क़ायम रहेगा मैं उसे गुनाहों पर उकसाता रहूंगा। रब्बुल इज़्ज़त ने फ़रमाया, मुझे अपनी इज़्ज़त व जलाल की क़सम ! मैं उनकी ज़िन्दगी की आख़री सांसों तक उनके गुनाहों पर तौबा का पर्दा डालता रहूंगा। *(मुकाशफतुल कुलूब–140)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो **! سبحان اللہ** कितना करम है अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त का कि वह अपने बंदों को ज़लील व रुस्वा होते नहीं देख सकता, इसलिये शैतान को उसने फ़रमाया कि ज़िन्दगी की आख़री सांस तक उनके गुनाहों पर तौबा का पर्दा डालता रहूंगा। यानी बंदे की तौबा को कुबूल फ़रमाता रहूंगा ता कि क़यामत के दिन शैतान को ज़िल्लत और बंदे को इज़्ज़त नसीब हो। अल्लाह तआला हम सबको तौबा का आदी बनाये।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

★ चार हज़ार साल पहले ★

हज़रत अली کرم اللہ تعالیٰ وجہہ الکریم से मरवी है कि हुजूर ﷺ ने फ़रमाया, मख़लूक़ की पैदाईश से चार हज़ार बरस पहले अर्श के चारों तरफ़ लिख दिया गया था कि **"اِنِّیْ لَغَفَّارٌ لِّمَنْ تَابَ وَ آمَنَ وَ عَمِلَ عَمَلاً صٰلِحاً ثُمَّ اهْتَدٰی"** जिसने तौबा की और ईमान लाया और नेक अमल किये मैं उसे बख़्शने वाला हूं। *(मुकाशफतुल कुलूब–142)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो **! سبحان اللہ** क्या अब भी हम तौबा न करेंगे? पलट आओ अपने रब की तरफ़ और सिद्क़ दिल से तौबा कर लो ! वह ग़फ़्फ़ार ज़रूर करम की बारिश फ़रमाकर गुनाहों को बख़्श देगा। **! انشاء اللہ** मौला हमारी तौबा क़बूल फ़रमाए। **آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔**

★ आंखों से आंसू ★

हज़रत इब्ने मस्ऊद رضی اللہ عنہ से एक शख़्स ने दर्याफ़्त किया, मैं गुनाह करके इंतेहाई शर्मिन्दा हूं, मेरे लिये तौबा है? आपने मुंह फेर लिया। जब दोबारा उस शख़्स की तरफ़ देखा तो आपकी आंखों से आसूं रवां थे। फ़रमाया, जन्नत के आठ दरवाज़े हैं, खोले भी जाते हैं और बंद भी किये जाते हैं, सिवाए बाबुल तौबा के वह कभी बंद नहीं होता, अमल करता रह और रब की रहमत से ना उम्मीद न हो। *(मुकाशफतुल कुलूब–141)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने तौबा के दरवाज़े को खोल रखा है, चूं कि हमें अपनी मौत का इल्म नहीं कि कब मौत आ जाये इसलिये पहले उसके कि मौत का फ़रिश्ता कूच का नक़्क़ारा बजाए हम अल्लाह की बारगाह में सच्ची तौबा कर लें ता कि अल्लाह तआला हम सबको जन्नत का मुस्तहिक़ बनाये। **آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔**

★ ज़मीन का टुकड़ा ★

हज़रत इब्ने अब्बास رضی اللہ عنہما से मरवी है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इरशाद फ़रमाया, जब बंदा तौबा करता है तो अल्लाह तआला उसकी तौबा क़बूल कर लेता है। मुहाफ़िज़ फ़रिश्ते उसके माज़ी के गुनाहों को भूल जाते हैं, उसके आज़ाए जिस्मानी उसकी ख़ताओं को भूल जाते हैं। ज़मीन का टुकड़ा जिस पर उसने गुनाह किया है और आसमान का वह हिस्सा जिसके नीचे वह गुनाह किया है उसके गुनाहों को भूल जाते हैं। जब वह क़यामत के दिन आयेगा तो उसके गुनाहों पर गवाही देने वाला कोई न होगा। *(मुकाशफतुल कुलूब–141. 142)*

★ तौबा क़बूल नहीं ★

हज़रत इब्ने अब्बास رضی اللہ عنہما से मरवी है कि क़यामत के दिन बहुत से लोग ऐसे होंगे जो ख़ूद को ताइब समझ कर आयेंगे मगर उनकी तौबा क़बूल नहीं हुई होगी। इसलिये कि उन्होंने तौबा के दरवाज़े को शर्मिन्दगी से मुस्तहकम नहीं किया होगा। तौबा के बाद गुनाह का अज़्म किया होगा, मज़ालिम को अपनी ताक़त से दफ़ा नहीं किया होगा और आसान उमूर के जवाज़ के

सिलसिले में जो काम उन्होंने किये हैं उनसे तलबे मग्फ़िरत में उन्होंने कोई एहतेमाम नहीं किया। और उनके लिये यह बात आसान है कि अल्लाह तआला उससे राज़ी हो जाए। गुनाहों को भूल जाना बहुत ख़तरनाक बात है, हर अक़्लमंद के लिये ज़रूरी है कि वह अपने नफ़्स का मुहासिबा करता रहे और अपने गुनाहों को न भूले।

اَیُّهَا الْمُذْنِبُ الْمُحْصِیُ اِثْمَه   لَا تَنْسَ ذَنْبَکَ وَ اذْکُرْ مِنْهُ سَلَفَا

وَتُبْ اِلَی اللّٰهِ قَبْلَ الْمَوْتِ وَانْزَجِرَا   یَا عَاصِیًا وَاعْتَرِفْ اِنْ کُنْتَ مُعْتَرِفًا

तर्जुमा : यानी ऐ गुनाहों को शुमार करने वाले मुजरिम ! अपने गुनाहों को मत भूल ! और गुज़िश्ता ग़लतियों को याद करता रह ! मौत से पहले अल्लाह की तरफ़ रुजूअ कर ले, गुनाहों से रुक जा और ग़लतियों का एतेराफ़ कर ले। *(मकाशिफतुल कुलूब–142, 143)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! हमें अपने गुनाहों को कभी नहीं भूलना चाहिये कि हमारा वजूद गुनाहों में डूबा हुआ है बल्कि हमेशा उसे याद रखते हुए गिरया व ज़ारी करते रहना चाहिये इस उम्मीद पर कि अल्लाह तआला को हमारी नदामत पसंद आ जाये और अपने करम से बख़्श दे और करम भी फ़रमाये। अक़्लमंद वह है जो अपने गुनाहों पर शर्मिन्दा भी हो और याद करके गिरया व ज़ारी भी करता हो। अल्लाह तआला हम सबको गुनाहों को याद करके नादिम होने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

آمین بجاه النبی الکریم علیه افضل الصلوٰة والتسلیم۔

★ हज़रत उमर रोए ★

फ़क़ीह अबू लैष رحمۃ اللہ علیہ से मरवी है कि हज़रत उमर رضی اللہ عنہ एक मर्तबा हुज़ूर ﷺ की ख़िदमत में रोते हुए हाज़िर हुए। आपने दर्याफ़्त फ़रमाया, ऐ उमर ! क्यों रोते हो ? अर्ज़ की हुज़ूर ! दरवाज़े पर खड़े हुए जवान की गिरया व ज़ारी ने मेरा जिगर जला दिया हैं ! आपने फ़रमाया, उसे अंदर लाओ। जब जवान हाज़िरे ख़िदमत हुआ तो आप ﷺ ने पूछा, ऐ जवान ! तुम किस लिये रोते हो ? अर्ज़ कि, हुज़ूर ! मैं अपने गुनाहों की कषरत और रब्बे ज़ुल जलाल की नाराज़गी के ख़ौफ़ से रो रहा हूं। आपने पूछा, क्या तूमने शिर्क किया? कहा, नहीं या रसूलुल्लाह ! ﷺ क्या तूने किसी का नाहक़ क़त्ल किया है? आपने

दोबारा पूछा, अर्ज़ किया नहीं या रसूलुल्लाह ! ﷺ आपने इरशाद फ़रमाया, अगर तेरे गुनाहों सातों आसमान व ज़मीनों और पहाड़ों के बराबर हों तब भी अल्लाह तआला अपनी रहमत से बख़्श देगा।

जवान बोला ! या रसूलुल्लाह ! ﷺ मेरा गुनाह उनसे भी बड़ा है। आपने फ़रमाया, तेरा गुनाह बड़ा है या कुर्सी, अर्ज़ किया मेरा गुनाह। आपने फ़रमाया, तेरा गुनाह बड़ा है या अर्शे इलाही? अर्ज़ किया, मेरा गुनाह। आपने फ़रमाया, तेरा गुनाह बड़ा है या रब्बे ज़ुल जलाल? अर्ज़ की रब्बे ज़ुल जलाल बहुत अज़ीम है। हुज़ूर ﷺ ने इरशाद फ़रमाया, बिला शुब्हा जुर्मे अज़ीम को रब्बे अज़ीम ही माफ़ फ़रमाता है। फिर आपने फ़रमाया, फिर तुम मुझे अपना गुनाह तो बताओ। अर्ज़ की, हुज़ूर ! मुझे आप के सामने अर्ज़ करते हुए शर्म आती है। आपने कहा, कोई बात नहीं ! तुम बताओ। अर्ज़ की, हुज़ूर। मैं सात साल से कफ़न चोरी कर रहा हूं। अंसार की एक लड़की फ़ौत हो गयी, मैं उसका कफ़न चुराने जा पहुंचा, मैंने क़ब्र खोद कर कफ़न ले लिया और चल पड़ा। कुछ ही दूर गया था कि मुझ पर शैतान ग़ालिब आ गया और मैं उल्टे क़दम वापस पहुंचा और लड़की से बदकारी की। मैं गुनाह करके चंद ही क़दम चला था कि लड़की खड़ी हो गयी और कहने लगी, ऐ जवान ! खुदा तुझे ग़ारत करे ! तुझे उस निगहबान का ख़ौफ़ नहीं आया जो हर मज़लूम को ज़ालिम से उसका हक़ दिलाता है ! तू ने मुझे मुर्दों की जमाअत से बरहना कर दिया और दरबारे खुदावंदी में नापाक कर दिया है ! हुज़ूर ﷺ ने जब यह सुना तो फ़रमाया, दूर हो जा ऐ बदबख़्त ! तू नारे जहन्नम का मुस्तहिक़ है !

जवान वहां से रोता हुआ अल्लाह तआला से इस्तिग़फ़ार करता हुआ निकल गया। जब उसे इसी हालत में चालीस दिन गुज़र गये तो उसने आसमान की तरफ़ निगाह की और कहा, ऐ मुहम्मद व इब्राहीम के रब ! अगर तूने मेरे गुनाह को बख़्श दिया है तो हुज़ूर ﷺ और आपके सहाबा को मुतलअ फ़रमा दे वरना आसमान से आग भेजकर मुझे जला दे और जहन्नम के अज़ाब से बचा ले। उसी वक़्त हज़रत जिब्रईल علیہ السلام आपकी ख़िदमत में हाज़िर हुए और कहा, आपका रब आपको सलाम कहता है और पूछता है कि मख़लूक़ को तुमने पैदा किया है ? आपने फ़रमाया, नहीं ! बल्कि मुझे और तमाम मख़लूक़ को अल्लाह तआलाने पैदा किया है और उसी ने रिज़्क़ दिया है। तब जिब्रईल علیہ السلام ने कहा, अल्लाह तआला फ़रमाता है, मैंने जवान की तौबा क़बूल कर ली है। पस हुज़ूर

ﷺ ने जवान को बुलाकर उसे तौबा की क़बूलियत का मुज़दा सुनाया। *(मुकाशफतुल कुलूब–143, 144)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! **سبحان اللہ!** कितना करीम है मेरा परवर्दिगार ! आओ, अब तो तौबा करके अपने रब को राज़ी कर लें ! **انشاء اللہ !** वह राज़ी हो गया तो फिर किस चीज़ की कमी है? यक़ीनन ! अल्लाह तआला बंदे की तौबा को पसंद फ़रमाता है। अल्लाह तआला हम सबको तौबा की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये। **آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔**

★ आईना देखना ★

रिवायत है कि बनी इस्राईल में से एक जवान शख़्स ने बीस साल मुतावातिर अल्लाह तआला की इबादत की फिर बीस साल गुनाह में बसर किये। एक मर्तबा आईना देखा तो उसे दाढ़ी में बुढ़ापे के आषार नज़र आये वह बहुत ग़मगीन हुआ और बारगाहे रब्बुल इज्ज़त में गुज़ारिश की, ऐ रब ! मैंने बीस साल तेरी इबादत की और फिर बीस साल गुनाहों में बसर किये। अब अगर मैं तेरी तरफ़ लौट आऊं तो मुझे क़बूल करेगा? उसने हातिफ़ ग़ैबी की आवाज़ सुनी वह कह रहा था, तूने हम से महब्बत की तो हमने तुझे महबूब बनाया। तूने हमें छोड़ दिया तो हमने तुझे छोड़ दिया। तूने गुनाह किये, हमने मोहलत दे दी, अब अगर तू हमारी बारगाह में लौटे तो हम तुझे शर्फ़े क़ुबूलियत बख़्शेंगे। *(मुकाशफतुल कुलूब–141)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! मज़कूरा वाक़िआ से आपने अंदाज़ा लगाया कि अल्लाह तआला किस तरह अपने बंदे को बख़्शता है। पस तौबा करें और उससे बख़्शिश की भीक मांगें ख़्वाह गुनाहों पर गुनाह क्यों न सरज़द हुए हों, वह ग़फ़्फ़ार है ज़रूर करम फ़रमाकर बख़्श देगा। इलाही खैर गर्दानी बहक़्क़े शाहे जीलानी।

अल्लाह तआला हम सबको अपने प्यारे महबूब ﷺ के सदका व तुफ़ैल बख़्शिश कर परवाना अता फ़रमाये। **آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔**

★ जन्नत के आठ दरवाज़े ★

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद رضی اللہ عنہ की ख़िदमत में एक शख़्स ने अर्ज़

किया, मुझसे गुनाह सरज़द हो गया है। आपने फ़रमाया, तेरे लिये तौबा लाज़िम है। और यह कहते ही उससे अपना मुंह फेर लिया। चंद लम्हे बाद देखा कि उसकी आंखों में आंसू तेर रहे हैं यह मंज़र देखते ही फ़रमाने लगे, जन्नत के आठ दरवाज़े हैं, बाबे तौबा के अलावा सब दरवाज़े बंद रहते हैं। बाबे तौबा पर एक फ़रिश्ता मुक़र्रर है और वह दरवाज़ा क़यामत तक बंद नहीं होगा। पस रहमते इलाही से कभी मायूस नहीं होना चाहिये। *(नुज़हतुल मजालिस–228)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! अल्लाह तआला के इल्म में यह बात है कि बंदे आजिज़ है उसके पास नफ़्स है और वह उसे बुराई का हुक्म देता है, बंदा कमज़ोरी के बाइस उसकी बात मान कर गुनाह कर बैठता है। फिर जब एहसास पैदा होता है तो वह तौबा करता है और अल्लाह तआला अपने फ़ज़्ल व करम से उसे बख़्श देता है। लिहाज़ा कभी भी मायूस नहीं होना चाहिये। पहले तो गुनाह से बचे लेकिन अगर अल्लाह की नाफ़रमानी कर बैठें तो अब तौबा करके उसकी फ़रमाबर्दारी करो ! **انشاء اللہ !** गुनाह माफ़ फ़रमा देगा। अल्लाह हम सबको तौबा की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

बाज़ कहते हैं कि शैतान इसलिये मलऊन हुआ कि उसने तौबा को वाजिब नहीं समझा। और न ही अपनी ग़लती का मोअ्तरिफ़ हुआ। बल्कि तकब्बुर इख़्तेयार किया और काफ़िर हो गया। जब कि हज़रत सैयदना आदम علیہ السلام को यह सआदत नसीब हुई कि उन्होंने लग्ज़िश का एतेराफ़ किया। अल्लाह तआला की बारगाह में तौबा करने लगे और तवाज़ोअ की, रहमत से नाउम्मीद न हुए और फिर अपने मक़ासिद में यहां तक कामयाब हुए। यहां तक कि ख़ूद ख़ालिक़े कायनात ने तौबा की क़बूलियत का ऐलान फ़रमा दिया। *(नुज़हतुल मजालिस–228)*

हज़रत इमाम ग़ज़ाली رحمۃ اللہ علیہ फ़रमाते हैं कि तौबा करना फ़ौरी तौर लाज़िम है। क्यों कि अल्लाह तआला फ़रमाता है, जो लोग जल्द बाज़ी के बाइस गुनाह का इर्तेकाब कर बैठते हैं और फिर जल्द ही तौबा की तरफ़ आ जाते हैं तो उनके गुनाह मिटा दिये जाते हैं, जैसे कि निजासत को ख़ुश्क होने से पहले ही साफ़ कर लिया जाता है, इसी तरह तौबा भी जल्द करने से गुनाह की निजासत भी जल्द धुल जाती है। अल्लाह तआला का इरशाद है कि बेशक !

नेकी बुराई को मिटा देती है। लिहाज़ा नेकी के नूर के सामने गुनाह की जुलमत को ठहरने की ताक़त नहीं। गुनाह तारीकी है उसका चिराग़ नेकी है और वह नेकी तौबा करना है। *(नुज़हतुल मजालिस–229)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! नेकियों की कषरत की वजहसे انشاء الله ! परवर्दिगार जरूर माफ़ फ़रमाएगा। अल्लाह तआला हम सबको कषरत से नकियों की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

रसूल करीम ﷺ का इरशाद है कि अल्लाह तआला को तौबा करने वाले की आवाज़ से ज़्यादा कोई और महबूब आवाज़ नहीं है। जब वह अल्लाह को बुलाता है तो रब तआला फ़रमाता है कि मौजूद हूं जो चाहे मांग! मेरी बारगाह में तेरा रुत्बा मेरे बाज़ फ़रिश्तों के बराबर है, मैं तेरे दायें बायें ऊपर हूं और तेरी दिली धड़कन से ज़्यादा क़रीब हूं। ऐ फ़रिश्तों! तुम गवाह हो जाओ! मैने इसे बख़्श दिया है। *(मकाशिफतुल कुलूब–145)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! कितना करम है उस करीम का! आओ, सच्चे दिल से तौबा करें और अपने रब के हुजुर पलट आयें, वह ज़रूर अपने करम से हमको माफ़ फ़रमा देगा। अल्लाह तआला हम सब पर करम की नज़र फ़रमाये। آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

फ़ज़ाइले मस्जिद

اِنَّمَا يَعۡمُرُ مَسٰجِدَ اللّٰهِ مَنۡ آمَنَ بِاللّٰهِ وَ الۡيَوۡمِ الۡآخِرِ وَ اَقَامَ الصَّلٰوةَ وَ آتَى الزَّكٰوةَ وَلَمۡ يَخۡشَ اِلَّا اللّٰهَ فَعَسٰٓى اُولٰٓئِكَ اَنۡ يَّكُوۡنُوۡا مِنَ الۡمُهۡتَدِيۡنَ

तर्जुमा : **अल्लाह की मस्जिदें वही आबाद करते हैं जो अल्लाह और क़ियामत पर इमान लाते और नमाज़ क़ाइम करते हैं और ज़कात देते हैं और अल्लाह के सिवा किसीसे नहीं डरते तो करीब है कि यह लोग हिदायतवालोंमें हों।**

मस्जिद तो बना ली शबभरमें इमांकी हरारतवालोंने
मन अपना पुराना पापी था बरसोंमें नमाज़ी बन न सका

मस्जिदें मर्षिया ख़्वां हैं के नमाज़ी न रहे
यअनी वह साहिबे अवसाफे हिजाज़ी न रहे

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلَيْكَ يَا رَسُوْلَ اللهِ ﷺ
وَعَلٰى آلِكَ وَاَصْحَابِكَ يَا حَبِيْبَ اللهِ ﷺ

मसाजिद की अहमियत कुरआन की रौशनी में

इबादात में नमाज़ एक अहम इबादत है। पहली उम्मतों में नमाज़ एक मख़सूस मक़ाम पर ही अदा की जा सकती थी, हर जगह उसकी इजाज़त न थी। लेकिन सरकारे दो आलम ﷺ की उम्मत को दीगर उम्मतों के मुक़ाबले में जहां दीगर अेअ्ज़ाज़ हासिल हैं वहां यह अेअ्जाज़ भी हासिल है कि अल्लाह तआला ने इस उम्मत के लिये तमाम ज़मीन को मस्जिद बनाया, इंसान जहां कहीं नमाज़ अदा करे जाइज़ है।

इस्लाम दीने फ़ितरत है और फ़ितरते मआशेरत और इज्तेमा की मुतक़ाज़ी है इसलिये इस्लाम ने इजतेमाइयत को हर जगह मुक़द्दम रखा, बाहमी ताल्लुक़ की तारीफ़ की गयी और इन्तेशार व इफ़तेराक़ को नापसंदीगी की नज़र से देखा गया। यही वजह है कि नमाज़ के लिये मस्जिद का एहतेमाम किया गया जहां मुसलमान दिन में पांच मर्तबा जमा होकर सिर्फ़ बारगाहे ख़ुदावंदी में इज्तेमाइ हाज़री देते हैं और अपने मअरूज़ात मिलकर पेश करते हैं, बल्कि एक दूसरे के दुख सुख से आगही हासिल करके मसाइल के हल के मुश्तरका जद्दो जेहद कर सकते हैं। यही वह असबाब हैं जिनकी बिना पर हुज़ूर ﷺ ने अपने इरशादात में मस्जिद की फ़ज़ीलत को वाज़ेह तौर पर बयान फ़रमा दिया है।

★ बड़ा ज़ालिम कौन ? ★

”وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنْ مَّنَعَ مَسَاجِدَ اللهِ اَنْ يُذْكَرَ فِيْهَا اسْمُهٗ وَسَعٰى فِىْ خَرَابِهَا اُولٰئِكَ مَا كَانَ لَهُمْ اَنْ يَدْخُلُوْهَا اِلَّا خَائِفِيْنَ لَهُمْ فِى الدُّنْيَا خِزْىٌ وَلَهُمْ فِى الآخِرَةِ عَذَابٌ اَلِيْمٌ“

फ़ज़ाइल व आदाबे मस्जिद

तर्जुमा : और उससे बढ़कर ज़ालिम कौन ? जो अल्लाह की मस्जिदों को रोके? उनमें नामे ख़ुदा लिये जाने से और उनकी वीरानी में कोशिश करे। उनको न पहुंचता था कि मस्जिदों में जायें मगर डरते हुए, उनके लिये दुनिया में रुसवाई है और उनके लिये आख़ेरत में बड़ा अज़ाब है। *(सूरए बकरह, आयत–114, कन्ज़ुल इमान)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! इस आयते करीमा में उन लोगों को सख़्त ज़ालिम कहा गया है जो मस्जिदों को वीरान करते हैं। वैसे तो यह आयत करीमा उन नसरानियों के ताल्लुक़ से नाज़िल हुई जिन्होंने बैतुल मुक़द्दस की सख़्त बे हुरमती की थी, तौरेत को जलाया, नापाक जानवर का ज़बह किया गया तो ख़ुदाए क़हहार व जब्बार ने अपने ग़ज़ब का इज़हार करते हुए इरशाद फ़रमाया, क्या उससे भी बड़ा ज़ालिम कोई हो सकता है जो अल्लाह के घरों की इस तरह बे हुरमती करे ?! मगर साथ ही उन तमाम लोगों के लिये भी उसमें सख़्त वईद है जो मस्जिद में न ख़ूद जाते हैं न दूसरों को जाने देते हैं। इसी लिये सरवरे कायनात ﷺ ने इरशाद फ़रमाया है, जब तुम देखो कि शराब ख़ानों के दरवाज़े खुले हैं और मसाजिद के दरवाज़े बंद हैं तो समझ लो क़यामत क़रीब आ चुकी है । लिहाज़ा कभी भी मस्जिद में नमाज़ अदा करने कुरआन की तिलावत करने या दीगर दीनी महाफ़िल इन्अेक़ाद करने से न रोका जाये। अल्लाह तआला हम सबको मसाजिद की ताज़ीम व तौक़ीर करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये। آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

★ मस्जिद ईमान पर गवाह ★

”وَلَا تُبَاشِرُوْهُنَّ وَاَنْتُمْ عٰكِفُوْنَ فِى الْمَسَاجِدِ تِلْكَ حُدُوْدُ اللهِ فَلَا تَقْرَبُوْهَا كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللهُ آيٰتِهٖ لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ“

तर्जुमा : और औरतों को हाथ न लगाओ जब तुम मस्जिदों में एतेकाफ़ से हो और यह अल्लाह की हदें हैं उनके पास न जाओ, अल्लाह यूं बयान करता है अपनी आयतें की कहीं उन्हें परहेज़गारी मिले।

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! मज़कूरा आयते करीमा में अल्लाह तआला ने उन मुसलमानों को आगाह फ़रमाया है जो मस्जिद में एतेकाफ़ की नियत से बैठते हैं कि वह अब न अपनी औरतों से जमअ करें न दीगर शहवत

वाले काम, और उससे यह पता चलता है कि मस्जिद में अगर कोई एतेकाफ़ करे तो उसे अल्लाह के तक़र्रुब की दौलत नसीब होती है। इसी वजह से मर्दों को अपने घर में एतेकाफ़ करने से मना किया गया है क्यों कि मस्जिद में तुम सिर्फ़ ख़ामोश बैठे रहे तो भी मौला तबारक व तआला तुम्हें नेकियां अता फ़रमाता है। बल्कि सरवरे कायनात ﷺ इरशाद फ़रमाते हैं कि जिस शख़्स को तुम देखो कि उसे मस्जिद की हाज़री की आदत है तो उसके ईमान की गवाही दे दो।

मेरे प्यारे आका ﷺ के प्यारे दीवानो ! मस्जिद में आने की बड़ी फज़ीलतें और बड़ी सआदतें हैं, मगर अफ़सोस कि आज कितने ऐसे नौजवान हैं जिन के शब व रोज़ गुनाहों के अड्डों पर गुज़र रहे हैं, चौराहे पर खड़े होकर घंटों गप्पियां मारना उनकी रोज़ की आदत है मगर एक दिन मस्जिद में बुलाओ तो तरह तरह के हीले बहाने बनाने लगते हैं। अल्लाह तआला हम सबको ऐसी बुरी आदतों से बचाये और मस्जिद में बकषरत जाने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

★ मस्जिद के लिये ज़ीनत ★

"یٰبَنِیْ آدَمَ خُذُوْا زِیْنَتَکُمْ عِنْدَ کُلِّ مَسْجِدٍ وَّ کُلُوْا وَ اشْرَبُوْا وَلَا تُسْرِفُوْا اِنَّہٗ لَا یُحِبُّ الْمُسْرِفِیْنَ"

तर्जुमा : ऐ आदम की औलाद ! अपनी ज़ीनत लो जब मस्जिद जाओ और खाओ और पियो और हद से न बढ़ो, बेशक ! हद से बढ़ने वाले उसे पसंद नहीं। *((सूरए अअ्राफ, आयत–31)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! इस आयते करीमा में मसाजिद में जाने के आदाब से आगाह किया जा रहा है कि ऐ बनी आदम ! तुम मस्जिद में जाओ तो अच्छे कपड़े पहन लो, या यह कि जब भी नमाज़ के लिये खड़े हो तो लिबासे फाख़िरा पहन कर मुजैयन हो जाओ। इससे यह पता चलता है कि अल्लाह तआला अच्छे, पाक और साफ़ लिबास के साथ मिलना यानी नमाज़ पढ़ना बहुत ज़्यादा पसंद है। जैसा कि ईमान आज़म अबू हनीफ़ा رضی اللہ عنہ के ताल्लुक़ से यह रिवायत मिलती है कि आपने नमाज़ के लिये एक मख़सूस लिबास तैयार कराया था यानी एक क़मीस, अमामा शरीफ़, चादर और शलवार।

उस ज़माने में उनकी मजमूई क़ीमत डेढ़ हज़ार दिरहम थे और वह उसे दिन रात नमाज़ के वक़्त पहना करते और फ़रमाते कि अल्लाह तआला को उम्दा लिबास के साथ मिलना लोगों के मिलने से ऊला और बेहतर है, लिहाज़ा आज कल कुछ नाहंजार लोग मस्जिदों में जाते ही अपने कपड़े के बटन खोल देते हैं, आस्तीन और नीचे से पायजामा चढ़ा लेते है, जैसे कि वह किसी से लड़ाई का इरादा रखते हों ! अल्लाह तआला को इस हालत में मस्जिद में आना सख़्त नापसंद है। इसलिये कि जब लोगों को वह नापसंद हो तो अल्लाह तआला को कैसे पसंद हो सकता है ! लिहाज़ा अल्लाह तआला से दुआ करें कि हमें मसाजिद की ताज़ीम व तकरीम करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये और उसे नापाक करने वालों से हम सबको कौसों दूर रखे ।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

★ आमाल ग़ारत ★

"مَا کَانَ لِلْمُشْرِکِیْنَ اَنْ یَعْمُرُوْا مَسٰجِدَ اللّٰہِ شٰھِدِیْنَ عَلٰۤی اَنْفُسِھِمْ بِالْکُفْرِ اُولٰٓئِکَ حَبِطَتْ اَعْمَالُھُمْ وَ فِی النَّارِ ھُمْ خٰلِدُوْنَ"

तर्जुमा : मुश्रिकों को नहीं पहुंचता कि अल्लाह की मस्जिदें आबाद करें ख़ूद अपने कुफ़्र की गवाही दे कर, उनका तो सब किया धरा ग़ारत है और वह हमेशा आग में रहेंगे। *(सूरए तौबा, आयत–17)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! यह आयते करीमा उन लोगों के लिये एक अज़ीम दर्स है जो बज़ाहिर अपने को मस्जिद का मुतवल्ली, निगरां और पासबान वग़ैरह कहते हैं। इसलिये कि जब जंगे बदर में कुफ़्फ़ार असीर (कैदी) हो गये और उनको तमाम सहाबाए किराम तआना देते हुए उन्हें कोस रहे थे तो उन्होंने यही कहा कि आप लोग सिर्फ़ हमारी बुराईयां गिन्वा रहे हैं हालांकि हमारी बहुत सारी अच्छाईयां भी हैं कि हम मस्जिदे हराम की तामीर करते हैं और हम काबा मोअज़्ज़मा के निगरां और पासबान हैं, हम हज्जाजे किराम को पानी पिलाते हैं। तो अल्लाह तआला ने उनके इस तफ़ाख़ूर को रद्द करते हुए इरशाद फ़रमाया कि तुम्हें इस बात का हक़ पहुंचता ही था इसलिये कि तुम्हारा दिल कुफ़्र व शिर्क से वीरान है। लिहाज़ा तुम जिसे नेकियां समझ कर करते हो यह सब यहीं धरा रह जायेगा। आज के वहाबिया का भी यही दावा

है कि मस्जिदे हराम के हम ख़ादिम हैं, वहां पर इमामत वग़ैरह सब हमारी है, इन तमाम वसाविस को लेकर वह हमारे सादा लोह सुन्नी मुसलमानों को गुमराह करते हैं, लिहाज़ा ऐ मुसलमानो ! तुम हरगिज़ यह न समझो कि मस्जिदे हराम की तामीर करना, वहां पर ख़िदमत करना यही असल ईमान है, हरगिज़ नहीं ! बल्कि यह सिफ़त तो पहले के कुफ़्फ़ार व मुश्रेकीन भी किया करते थे, हां ! जिस के दिल में ईमान है, सरकारे दो आलम ﷺ की अज़्मत व महब्बत है फिर वह अगर मज़कूरा सिफ़ात का मालिक हो तो वह यक़ीनन ! बड़ा ही खुश नसीब है। अल्लाह तआला हम सबको मसाजिद आबाद करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये। آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

★ मोमिन और तामीरे मस्जिद ★

रब्बे करीम फ़रमाता है :–

"اِنَّمَا يَعْمُرُ مَسٰجِدَ اللّٰهِ مَنْ آمَنَ بِاللّٰهِ وَ الْيَوْمِ الآخِرِ وَ اَقَامَ الصَّلٰوةَ وَ آتَى الزَّكٰوةَ وَلَمْ يَخْشَ اِلَّا اللّٰهَ فَعَسٰىٓ اُولٰٓئِكَ اَنْ يَّكُوْنُوْا مِنَ الْمُهْتَدِيْنَ"

तर्जुमा : अल्लाह की मस्जिदें वही आबाद करते हैं जो अल्लाह और क़यामत पर ईमान लाते और नमाज़ क़ायम करते हैं और ज़कात देते हैं और अल्लाह के सिवा किसी से नहीं डरते। तो क़रीब है कि यह लोग हिदायत वालों में हों। *(सूरए तौबा, आयत–18)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! गुज़िश्ता आयत में जो वहम था कि मस्जिद को अब कौन तामीर करेगा तो उसका इज़ाला इस आयत में किया जा रहा है। मस्जिद की तामीर वही करते हैं जिन के दिलों में ईमान है और वह नमाज़ और ज़कात भी अदा करते हैं।

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! मस्जिद तामीर करने की बड़ी फ़ज़ीलत आयी है। सरकारे कौनेन ﷺ इरशाद फ़रमाते हैं कि इंसान की मौत के बाद उसके तमाम आमाल मुन्क़तअ हो जाते हैं, हां ! मगर जिसने दुन्या में मस्जिद तामीर की हो तो उसको क़ब्र में भी नेकियां दी जाती रहेंगी। फिर सरकारे दो आलम ﷺ इरशाद फ़रमाते हैं कि जो अल्लाह की रज़ा के लिये मस्जिद बनवाता है या उसमें हिस्सा लेता है तो मस्जिद की हर उंगली या हर हाथ के मिक़दार के बदले में अल्लाह तआला उसके लिये बहिश्त में चालीस

लाख शहर तैयार फ़रमायेगा। हर शहर में एक एक लाख घर होंगे और हर घर में एक लाख पलंग बिछे होंगे और हर पलंग पर उसके लिये हूरें बिठाई जायेंगी और उन तमाम घरों में से एक घर में चालीस हज़ार दस्तरख़्वान चुने जायेंगे और हर दस्तरख़्वान पर चालीस हज़ार प्याले होंगे जिनके मुख़्तलिफ़ रंग और ज़ाइक़ा के खाने होंगे और उस बंदे की हर वक़्त कुव्वत जैसे जमअ और खुर्द व नोश में इज़ाफ़ा किया जायेगा कि वह उन खानों को खाकर पचा सकेगा और मज़कूरा हूरों से जमअ भी कर सकेगा। अल्लाह तआला हम को भी मस्जिद की तामीर या उसमें तआवुन की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

★ मस्जिद को ढा दो ★

अल्लाह तआला का फ़रमान आली शान है :–

"وَالَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا مَسْجِداً ضِرَاراً وَّ كُفْراً وَّ تَفْرِيْقاً بَيْنَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَ اِرْصَاداً لِّمَنْ حَارَبَ اللّٰهَ وَ رَسُوْلَهٗ مِنْ قَبْلُ وَ لَيَحْلِفُنَّ اِنْ اَرَدْنَا اِلَّا الْحُسْنٰى وَ اللّٰهُ يَشْهَدُ اِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ"

तर्जुमा : और जिन्होंने मस्जिद बनाई नुक़सान पहुंचाने को और कुफ़्र के सबब और मुसलमानों में तफ़रक़ा डालने को और उस के इंतेज़ार में जो पहले से अल्लाह और उसके रसूल का मुख़ालिफ़ है और वह ज़रूर क़समें खायेंगे हम ने तो भलाई चाही और अल्लाह गवाह है कि वह बेशक ! झूटे हैं। *(सूरए तौबा, आयत–107)*

इस आयत में मस्जिदे ज़र्रार के ताल्लुक़ से फ़रमाया गया है कि जब सरकारे दो आलम ﷺ ने मस्जिदे क़ुबा में कुछ दिन क़याम फ़रमाया और उसमें नमाज़ें पढ़ीं तो उसकी फ़ज़ीलत बढ़ गयी। अब उसकी बहुत ही ताज़ीम व तकरीम की जाने लगी। तो उस वक़्त जो मुनाफ़ेक़ीन थे उन्हें यह देखकर रहा न गया और हसद के मारे उन्होंने कहा कि हम एक दूसरी मस्जिद तामीर करेंगे और उसमें हम नमाज़ें पढ़ेंगे। लिहाज़ा उन्होंने जल्दी जल्दी मस्जिद की तामीर शुरू की और उसमें नमाज़ भी क़ायम कर ली। मगर यह सब उन्होंने सरकार ﷺ की इजाज़त के बग़ैर ही किया था। और दिन भर उस मस्जिद में उनका काम यही था कि सरकार ﷺ के ख़िलाफ़ मन्सूबा आराई करते थे।

फिर सरकार ﷺ की गुस्ताख़ी में दिन काटते रहे थे। लिहाज़ा जब हुजूर ﷺ को हुक्म हुआ और यह आयत नाज़िल हुई तो सरकारे ﷺ ने हज़रत वहशी رضی اللہ عنہ को एक जमाअत के साथ भेजा कि जाकर उस मस्जिद को मुन्हदम कर दो! लिहाज़ा वहां पहुंचकर उन्होंने उस मस्जिद को आग लगा दी और उसकी दीवारें मुन्हदम करके मैदान बना दिया, यहां तक कि सरकार ﷺ ने दिन में यह हुक्म दिया कि उस जगह पर गंदगी और ग़लाज़त डाला करें। लिहाज़ा उस से यह साबित हुआ कि जो मस्जिद मेरे आक़ा ﷺ की गुस्ताख़ी व दुश्मनी की बना पर बनायी गयी हो उस मस्जिद को मुन्हदम कर दिया जाये, इसलिये कि वह मस्जिद नहीं। लिहाज़ा हम तमाम ख़ुश अक़ीदा मुसलमानों को उन घिनौवने अक़ाइद वालों की मसाजिद में जाने से परहेज़ करना चाहिये जो हमारे आक़ा ﷺ को अपने बराबर समझते हैं और मुर्दा तसव्वुर करते हैं, मआजल्लाह! अल्लाह तआला उनके ऐसे गुमराह अक़ीदे से तमाम मुसलमानों की हिफ़ाज़त फ़रमाये और उनके तसल्लुत में जो मसाजिद हैं उनमें मुसलमानों को ग़ल्बा अता फ़रमाए।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

★ अल्लाह की मस्जिद ग़ैर अल्लाह के नाम ★

रब्बे क़दीर ने कुरआन पाक में फ़रमाया :–

"وَاَنَّ الْمَسٰجِدَ لِلّٰهِ فَلَا تَدْعُوْا مَعَ اللّٰهِ اَحَداً" तर्जुमा : और यह कि मस्जिदें अल्लाह جل جلالہ ही की हैं तो अल्लाह के साथ किसी की बंदगी न करो। *(सूरए जिन, आयत–18)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! मज़कूरा आयते करीमा में रब्बे क़दीर मसाजिद की हक़ीक़ी हैसियत को वाज़ेह फ़रमा रहा है कि मस्जिदें तो सिर्फ़ अल्लाह ही की है। लिहाज़ा उसमें अल्लाह के अलावा किसी दूसरे की इबादत न करो। लिहाज़ा मसाजिद में ग़ैर दीनी काम भी बिल्कुल जाइज़ नहीं हैं। जैसे आज कल कुछ लोग सियासत की बुन्याद पर यहूद व नसारा को भी मसाजिद में बुलाते हैं ता कि वह उनसे ख़ुश हो जायें, ऐसे लोग सख़्त गुनाहगार होंगे और यही लोग मस्जिदों को वीरान करने वाले हैं। और इसी आयत के तहत अल्लामा इस्माईल हक़्क़ी رحمۃ اللہ علیہ इरशाद फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआला ने

जो यह फ़रमाया कि मस्जिदें अल्लाह ही की हैं, लिहाज़ा अगर मस्जिद किसी ग़ैरुल्लाह के नाम पर रखी जाये उसके बनाने या उसकी मदद करने की वजह से तो यह शिर्क नहीं होगा। जैसे कि मस्जिदे नबवी, मस्जिदे अक़्सा, दर हक़ीक़त मस्जिद अल्लाह की हैं मगर मजाज़न किसी का नाम रख दिया जाता है। इसी तरह अगर कोई सुन्नी ग़ौषे आज़म या ख़्वाजा गरीब नवाज़ का बकरा कहा तो उसे मुश्रिक नहीं कहना चाहिए, इसलिये कि हक़ीक़त में अल्लाह के नाम पर ही ज़बह किया जायेगा, सिर्फ़ इन्तेसाब उनके नाम से किया जाता है। बहर कैफ़ मसाजिद में दीनी इबादात के अलावा दूसरे काम भी शुरू हों तो रब्बे क़दीर का सख़्त ग़ज़ब नाज़िल होगा। अल्लाह तआला हम सबको उसकी रज़ा की ख़ातिर मसाजिद में इबादत करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

फ़ज़ाइले मस्जिद अहादीष की रौशनी में

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! अल्लाह वहदहु लाशरीक जिसकी ज़ात हर ऐब से पाक है, उस परवर्दिगार ने बंदों के इबादत करने की जगह को मस्जिद फ़रमाया, करम बालाए करम यह कि बंदों को रफ़अत व बुलंदी का मक़ाम अता फ़रमाने के लिये फिर उन मस्जिदों को अपना घर क़रार दिया ता कि बंदा अल्लाह के घर में हाज़िर हो तो गोया वह अपने ख़ालिक़ से मुलाक़ात कर रहा है, यही वजह है कि सरकारे दो आलम ﷺ ने ज़मीन पर सब से अच्छी जगह मस्जिद को फ़रमाया। चुनांचे इस सिलसिले की चंद अहादीष जिनमें मस्जिद के फ़ज़ाइल बयान किये गये हैं हम पेश कर रहे हैं।

★ सबसे बेहतरीन जगह ★

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर رضی اللہ عنہ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इरशाद फ़रमाया : **"خَيْرُ الْبَقَاعِ الْمَسَاجِدُ وَ شَرُّ الْبَقَاعِ اَسْوَاقُ"** सबसे बेहतर जगह मस्जिदें हैं और सबसे बदतर जगह बाज़ार। *(अल् हदीष ब हवाला फतावा रज़विय्यह, 3/432)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! ताजदारे कायनात ﷺ ने सबसे बेहतर जगह मस्जिद को फ़रमाया और सबसे बदतर जगह बाज़ार। उसकी वजह यह है कि हमारी तख़लीक़ का मक़सद कुरआन ने वाज़ेह लफ़्ज़ों में बयान

फ़रमा दिया है कि हमने इंसान और जिन्नात को अपनी ताअत व फ़रमाबर्दारी के लिये पैदा किया है, इसलिये जो जगहें उस मक़सद को ज़्यादा पूरा करती हैं वह अल्लाह तआला के नज़दीक महबूबतरीन हैं और जिन जगहों में ज़िक्रुल्लाह और इताअत व फ़रमाबर्दारी के बजाए मअसीयत होती है वह अल्लाह तआला के नज़दीक बदतरीन हैं।

आज हमें अपना एहतेसाब करना है कि हम किस जगह ज़्यादा वक़्त गुज़ारते हैं, बेहतर जगह पर या बदतर जगह पर? ऐ इस्लाम के मुक़द्दस शहज़ादो! सुकून व इत्मिनान मस्जिद में ही रखा है, बाज़ारों में नहीं। इसका मतलब यह नहीं कि आप तिजारत के लिये बाज़ार न जायें और वहां लोगों से मेलजोल न रखें, बल्कि मुराद यह है कि अपना क़ीमती वक़्त बाज़ार में गुज़ारने के बजाए मस्जिद या घर वालों में गुज़ारने की कोशिश करें। एक वह मुसलमान थे जिनकी हालत यह थी कि अगर एक लुहार हथौड़ा ऊपर उठाए हुए किसी लोहे पर मारना चाहता है मगर दर्मियान में अज़ान की आवाज़ कान में पड़ गयी तो फ़ौरन हथौड़े को हाथ से रखकर ख़ानाए ख़ुदा की तरफ़ चल पड़ते। उन्हीं ख़ुशनसीबों के बारे में यह आयत करीमा नाज़िल हुई। कि :—

"رِجَالٌ لَّا تُلْهِيهِمْ تِجَارَةٌ وَّلَا بَيْعٌ عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ" वह ऐसे लोग हैं कि उनको तिजारत और ख़रीद व फ़रोख़्त अल्लाह के ज़िक्र से ग़ाफ़िल नहीं करती।

अल्लाह عزوجل हम सब पर करम की नज़र फ़रमाये और मस्जिदों को आबाद रखने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये। **آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔**

★ फ़ज़ीलते तामीरे मस्जिद ★

सरकारे कौनेन ﷺ ने इरशाद फ़रमाया, जो शख़्स अल्लाह तआला की रज़ा के लिये मस्जिद बनवाता है या उसमें हिस्सा लेता है तो मस्जिद की हर उंगली या हर हाथ के मिक़दार के बदले में अल्लाह तआला उसके लिये बहिश्त में चालीस लाख शहर तैयार फ़रमायेगा, हर शहर में एक एक लाख घर होंगे। और हर घर में एक एक लाख पलंग बिछे होंगे और हर पलंग में उसके लिये हूरें बिठाई जायेंगी। और मज़कूरा घरों में एक एक के अंदर चालीस चालीस हज़ार दस्तरख़्वान चुने जायेंगे। और हर हर दस्तरख़्वान पर चालीस चालीस हज़ार प्याले होंगे जिन में मुख़्तलिफ़ रंग और मुख़्तलिफ़ ज़ायक़े के खाने होंगे और

उस बंदे की हर कुव्वत में इज़ाफ़ा किया जायेगा कि उन खाने को खाकर बचा सकेगा और मज़कूरा बाला हूरों से जमअ भी कर सकेगा। *(रुहुल बयान, जिल्द–5, सफ़ा–120)*

★ जन्नत में घर ★

दूसरी जगह रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया :—

"مَنْ بَنٰی لِلّٰہِ مَسْجِداً بَنَی اللّٰہُ لَہٗ بَیْتاً فِی الْجَنَّۃِ" जिसने अल्लाह के लिये मस्जिद बनाई अल्लाह तआला उसके के लिये जन्नत में घर बनाता है। *(मुस्लिम शरीफ़–202)*

और हज़रत अबू क़रसाफ़ा رضی اللہ عنہ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इरशाद फ़रमाया, मस्जिदें बनाओ और उनसे कूड़ा करकट साफ़ करो क्यों कि जिस ने अल्लाह तबारक व तआला के लिये घर बनाया अल्लाह तआला उसके लिये जन्नत में घर बनाता है। *(शमाइमुल अंबर, 21)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! मस्जिद बनाना और मस्जिद से कूड़ा करकट साफ़ करना यह बहुत बड़ी नेकी है, इसलिये कि जब बंदा अल्लाह तआला के घर की सफ़ाई उसकी रज़ा और बंदों की राहत के लिये करता है तो रब तआला भी अपनी शान के मुताबिक़ उन को अज्र अता करता है। अल्लाह तआला हम सबको मस्जिद के एहतेराम और मस्जिद बनाने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये। **آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔**

★ मस्जिद में हाज़री का अज्र ★

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्उद رضی اللہ عنہ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इरशाद फ़रमाया, ज़मीन में मस्जिदें अल्लाह तबारक व तआला का घर हैं और बेशक! अल्लाह तआला ने अपने ज़िम्मए करम पर लिया है कि उसको बुज़ुर्गी अता फ़रमाये जो उसकी बारगाह में हाज़री के लिये मस्जिद में आये। *(शमाइमुल अंबर, 20)*

سبحان اللہ! मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! अल्लाह तआला पर किसी का कोई हक़ नहीं है, अल्लाह तआला का सब पर हक़ है। वह सबसे बरतर व बाला है, बादशाह हो या गधा हर कोई उसका मोहताज है। बावजूद इसके

उसने अपने ज़िम्मे करम पर ले लिया है कि जो कोई उसके घर आये वह ज़रूर उसको बुजुर्गी अता करेगा। कहीं हमारी बे इज़्ज़ती की वजह उसके घर से दूरी तो नहीं ! ऐ इज़्ज़त के तलबगारो उसके वादा पर भरोसा करते हुए उस के घर आ जाओ।। काम है। बल्कि अल्लाह तआला की रज़ा के लिये उसके घर को साफ़ करो। ! انشاء الله ज़रूर इज़्ज़त व सरबुलंदी हासिल होगी। अल्लाह तआला हम सबको तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

آمین بجاہ النبی الکریم علیه افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

★ मस्जिद न आने पर वईद ★

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्उद رضی اللہ عنہ से रिवायत है कि अगर तुम लोग घर में नमाज़ पढ़ते जैसे यह नाख़लफ़ अपने घर में पढ़ रहा है, तो तुम अपने नबी صلی اللہ علیہ وسلم की सुन्नत के तारिक होते और अगर तुम सुन्नते मोअक्किदा के तर्क को अपना आशकार बना लेते तो गुमराह हो जाते। *(फतावा रज़विय्यह, 6/381)*

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्उद رضی اللہ عنہ से रिवायत है कि जब अज़ान हो तो उन पांचों नमाज़ों की हिफ़ाज़त करो यह नमाज़ें हिदायत की राहें हैं, बेशक ! अल्लाह तआला ने अपने महबूब सैयदे आलम صلی اللہ علیہ وسلم के लिये राहें मुतअय्यन फ़रमाई, हम तो यह जानते थे कि उन नमाज़ों से ग़फ़लत खुला मुनाफ़िक़ ही करेगा। एक वक़्त वह था जो हम ने अपनी निगाहों से बाज़ लोगों को दूसरों के सहारे नमाज़ के लिये लाया जाता और सफ़ में खड़ा किया जाता देखा और आज तुमने आम तौर पर अपने घर को मस्जिद बना लिया सुनो ! अगर तुम अपने घरों में ही नमाज़ पढ़ते रहे और मस्जिद को तर्क कर दिया तो तुम अपने नबी करीम صلی اللہ علیہ وسلم की सुन्नत के तारिक हो गये और ऐसा हो तो तुम बड़े नाशुक्रे कहलाओगे। *(फतावा रज़विय्यह, 6/381)*

मेरे प्यारे आक़ा صلی اللہ علیہ وسلم के प्यारे दीवानो! मज़कूरा हदीषे मुबारका ने हमारी हालत हम पर वाज़ेह कर दी है कि हम क्या करें? ख़ुदा के बंदो! हुज़ूर صلی اللہ علیہ وسلم के दौरे पाक में मुनाफ़िक़ मस्जिद की बजाए घर में नमाज़ पढ़ता लेकिन आज अल्लाह रहम व करम फ़रमाये कि बेशतर मुसलमान या तो नमाज़ ही से ग़ाफ़िल हैं या फिर घर ही में लोग नमाज़ पढ़ लेते हैं। परवर्दिगार हम सब के हाल पर रहम फ़रमाये और अपने प्यारे महबूब صلی اللہ علیہ وسلم के सदक़ा व तुफ़ैल नमाज़ मस्जिद

में अदा करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये और मुनाफ़क़ीन की आदत से बचाये।

آمین بجاہ النبی الکریم علیه افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

★ नूरे कामिल की बशारत ★

हज़रत बुरैदा رضی اللہ عنہ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صلی اللہ علیہ وسلم ने इरशाद फ़रमाया : ''بَشِّرِ الْمَشَّائِيْنَ فِي الظُّلَمِ اِلٰى الْمَسَاجِدِ بِالنُّوْرِ التَّامِّ يَوْمَ الْقِيَامَةِ'' तारीकियों में मस्जिदों तक कषरत से पयादा जाने वालों को रोज़े क़यामत नूरे कामिल की बशारत दे दो। *(फतावा रज़विय्यह, 3/473)*

मेरे प्यारे आक़ा صلی اللہ علیہ وسلم के प्यारे दीवानो ! नमाज़े मग़्रिब, ईशा, फ़ज्र की नमाज़ें तारीकियोंमें अदा की जाती हैं, ऐसे में बंदाए मोमिन तारीकी को बहाना बनाकर बैठ नहीं जाता बल्कि मस्जिदों में कषरत से आता जाता है, तो मेरा परवर्दिगार भी उस पर करम की नज़र फ़रमाता है और उसके प्यारे महबूब صلی اللہ علیہ وسلم के ज़रिये नूरे कामिल की बशारत क़यामत के लिये दिलवाता है। यक़ीनन! क़यामत का होलनाक दिन और वहां का ख़ौफ़ सबसे ज़्यादा ख़तरनाक है लेकिन रहमते आलम صلی اللہ علیہ وسلم के ज़रिये वहां के लिये नूरे कामिल की बशारत मस्जिद में तारीकी में आने वालों को मिलती है। अल्लाह हम सब को अमल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये। آمین بجاہ النبی الکریم علیه افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

★ जन्नत की क्यारियां ★

हज़रत अबू हुरैरा رضی اللہ عنہ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صلی اللہ علیہ وسلم ने इरशाद फ़रमाया कि जब तुम जन्नत की क्यारियों पर गुज़रो तो उनमें चरो। (यानी उनका मेवा खाओ) हज़रत अबू हुरैरा رضی اللہ عنہ कहते हैं कि मैंने अर्ज़ किया, या रसूलल्लाह ! صلی اللہ علیہ وسلم जन्नत की क्यारियां क्या हैं? फ़रमाया, मस्जिदें। हज़रत अबू हुरैरा رضی اللہ عنہ ने फिर अर्ज़ किया, वह चरना क्या है ? फ़रमाया :-

''سُبْحَانَ اللّٰهِ وَ الْحَمْدُ لِلّٰهِ وَ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَ اللّٰهُ اَكْبَرُ'' पढ़ा करो। *(फतावा रज़विय्यह, 6/441)*

मेरे प्यारे आक़ा صلی اللہ علیہ وسلم के प्यारे दीवानो ! रसूले आज़म صلی اللہ علیہ وسلم ने जन्नत की क्यारियां किस जगह को क़रार दिया ? मस्जिद को, और वहां का चरना क्या है ? ''سُبْحَانَ اللّٰهِ وَ الْحَمْدُ لِلّٰهِ وَ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَ اللّٰهُ اَكْبَرُ'' कहना। इस हदीषे

पाक का वाज़ेह मतलब व मफ़हूम यह है कि जो शख़्स ख़ानाए ख़ुदा में जाकर उसकी तस्बीह व तहलील और अवराद व वज़ाइफ़ में मशगूल रहता है और यह तस्बीह पढ़ता है: "سُبحَانَ اللّٰہِ وَ الحَمْدُ لِلّٰہِ وَ لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ وَ اللّٰہُ اَکبَرُ" वह मरने के बाद जन्नत में अन्वाअ व इक़साम की नेअमतों से बहरावर होगा। अल्लाह तआला हम सबको रहमते आलम ﷺ के सदक़ा व तुफ़ैल मस्जिद में जाने और मज़कूरा अमल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

★ मक़सूदे तामीरे मसाजिद ★

हज़रत अबू हुरैरा رضی اللہ عنہ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इरशाद फ़रमाया: "اِنَّمَا بُنِیَ المَسْجِدُ لِذِکْرِ اللّٰہِ وَ الصَّلٰوۃِ" यह मस्जिदें फ़क़त अल्लाह तआला के ज़िक्र और नमाज़ के लिये बनाई गयी हैं। *(शमाइमुल अंबर–21)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! मज़कूरा हदीष शरीफ़ ने वाज़ेह कर दिया है कि मस्जिद में अल्लाह के ज़िक्र और नमाज़ के अलावा उमूरे दुन्या से परहेज़ करना चाहिये। ज़िक्र के लफ़्ज़ में बड़ी वुस्अत है। अगर बंदाए मोमिन दीने इस्लाम या पैग़म्बरे इस्लाम ﷺ के ज़िक्रे पाक को मस्जिद में करे तो यह सब भी अल्लाह का ज़िक्र ही शुमार होगा। अलबत्ता दुन्या की बातों से बचना जरूरी है कि मस्जिद का तक़द्दुस पामाल होता है और सख़्त गुनाह भी है। लिहाज़ा मस्जिद में सिर्फ़ और सिर्फ़ दीनी बातें ही हों और नमाज़, तिलावत, दुरूद व सलाम व बयान ही हो। अल्लाह हम सबको मस्जिद का एहतेराम की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

हज़रत अबू ज़मरा رضی اللہ عنہ से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन सैयदना अबू बक्र सिद्दीक़ رضی اللہ عنہ ने फ़रमाया कि मस्जिदें ज़िक्रे इलाही के लिये बनायी गयी हैं।

और हज़रत अबू हुरैरा رضی اللہ عنہ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इरशाद फ़रमाया, मस्जिद में हर तरह की गुफ़्तगू फ़ुज़ूल है मगर कुरआन की तिलावत अल्लाह तआला का ज़िक्र और अच्छी बात पूछना या उसका जवाब देना। *(शमाइमुल अंबर–21)*

★ मस्जिद में मना है ★

हज़रत सालम बिन अब्दुल्लाह رضی اللہ عنہ से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन

हज़रत उमर फ़ारूक़ رضی اللہ عنہ ने मस्जिदे नबवी के किनारे एक कुशादा जगह बनायी और उसका नाम बतीहा रखा। फिर फ़रमाया, जो बात करने का इरादा करे या शेअर कहना चाहे या बुलंद आवाज़ से बोलना चाहे तो इस कुशादा जगह में आये। *(शमाइमुल अंबर–19)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! मस्जिदे नबवी के किनारे इस जगह के बनाने की वजह यह थी कि उस दौर में रिआया के मसाइल और फ़ैसले सब कुछ मस्जिद ही में होते थे। वफ़ूद का आना और दीगर ज़रूरी अहकाम वग़ैरह मस्जिद ही में जारी होते, मुसलमानों की तादाद दिन बदिन बढ़ती गयी और मसाइल बढ़ते चले गये, लिहाज़ा एक ख़ास जगह बात करने के लिये मख़सूस की गयी ता कि दूसरों की इबादतों में ख़लल वाक़ेअ न हो बल्कि बात चीत के लिये इस ख़ास मक़ाम पर चले जायें ता कि मस्जिद का तक़द्दुस बाक़ी रहे। अल्लाह हमें भी मस्जिद के एहतेराम की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

★ सारी ज़मीन मस्जिद है ★

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह رضی اللہ عنہ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इरशाद फ़रमाया, मुझे पांच चीज़ें अता की गयी जो मुझसे पहले किसी नबी को न दी गयी :–

- ➡ मेरी मदद इस तरह फ़रमाई गयी कि एक माह की मसाफ़त से कुफ़्फ़ार के कुलूब में मेरे लश्कर का रोब डाल दिया गया।
- ➡ मेरे लिये तमाम ज़मीन जाए सज्दा और पाक बना दी गयी, लिहाज़ा मेरा उम्मती जिस जगह नमाज़ का वक़्त पाए उसी जगह नमाज़ पढ़ ले।
- ➡ मेरे लिये माले ग़नीमत हलाल कर दिया गया।
- ➡ दूसरे अंबिया किसी ख़ास क़ौम की तरफ़ मब्ऊष हुए थे लेकिन मुझे तमाम इंसानों का रसूल बनाकर भेजा गया।
- ➡ मन्सबे शफ़ाअत से मुझे सरफ़राज़ा गया। *(जामिउल अहादीष, 518, 519)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! सरकार ﷺ जैसा कोई नहीं। سبحان اللہ! रहमते आलम ﷺ ने पांच एज़ाज़ात गिनवाये। जिसमें एक बड़ा

अेज़ाज़ यह है कि हमारे लिये सारी रुए ज़मीन मस्जिद बना दी गयी लिहाज़ा हुज़ूर ﷺ का उम्मती जब जहां वक़्त हो वहां ज़मीन पर पर नमाज़ अदा कर ले यानी मस्जिद वग़ैरह क़रीब नहीं है और नमाज़ का वक़्त हुआ तो रास्ते के किनारे पर भी नमाज़ अदा कर ले, उसकी नमाज़ हो जायेगी। लिहाज़ा मुसलमानों नमाज़ पढ़ने में टाल मटोल और बहानाबाज़ी न बनाओ। आक़ा ﷺ का सदक़ा है कि तमाम ज़मीन को मस्जिद बना दी गइ। अल्लाह तआला हम सबको तौफ़ीक़ अता फ़रमाये। **آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔**

★ मस्जिदे नबवी में नमाज़ ★

हज़रत अबू हुरैरा رضی اللہ عنہ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इरशाद फ़रमाया :–

"صَلوٰةٌ فِی مَسْجِدِیْ هٰذَا خَیْرٌ مِّنْ اَلْفِ صَلوٰةٍ فِیْمَا سِوَاهُ اِلَّا الْمَسْجِدُ الْحَرَامُ"

मेरी उस मस्जिद में एक नमाज़ उसके अलावा दूसरी मस्जिदों के मुक़ाबले में एक हज़ार नमाज़ों से बेहतर है मगर मस्जिदे हराम के मुक़ाबले में नहीं।

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! रहमते आलम ﷺ का इख़्तेयार तो मुलाहज़ा करो कि अपनी मस्जिद के षवाब को दूसरी मस्जिदों के षवाब के मुक़ाबले में कई गुनाह बढ़ा दिया। रब ने अपने फ़ज़्ल से हुज़ूर रहमते आलम ﷺ को इख़्तेयार दिया है कि जितना चाहें षवाब बढ़ा दें।

سبحان اللہ! अल्लाह तआला हम सबको मस्जिदे नबवी शरीफ़ और मस्जिदे हराम और बैतुल मुक़द्दस में नमाज़ की अदायगी की तौफ़ीक़ और मौक़ा इनायत फ़रमाये।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

★ बैतुल मुक़द्दस में नमाज़ ★

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर رضی اللہ عنہ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इरशाद फ़रमाया : जब हज़रत सुलैमान علیہ السلام बैतुल मुक़द्दस की तामीर से फ़ारिग़ हुए तो अल्लाह तआला से तीन दुआएं कीं पहली दुआ यह कि लोगों के दर्मियान फ़ैसला करने की ऐसी कुव्वत अता हो जो अल्लाह तआला के हुक्म के मुवाफ़िक़ हो दूसरी दुआ यह कि ऐसी हुकूमत हो जो बाद में किसी को न

मिले, तीसरी दुआ यह कि इस मस्जिदे बैतुल मुक़द्दस में फ़क़त नमाज़ का इरादा करके आये तो वह गुनाहों से ऐसा पाक हो जाये जैसे आज ही मां के पेट से पैदा हुआ। हुज़ूर ﷺ ने इरशाद फ़रमाया, लेकिन दो चीज़ें अता फ़रमा दी गयीं और मुझे कामिल उम्मीद है कि तीसरी भी अता फ़रमा दी गयी। *(जद्दुल मुम्तार, 2/268)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! दो चीज़ें जो बज़ाहिर अता हुई वह वाज़ेह थीं। हुकूमत और फ़ैसले की कुव्वत और तीसरी चीज़ के ताल्लुक़ से ग़ैबदां नबी ﷺ ने उम्मीद ज़ाहिर की कि वह भी अता फ़रमा दी गयी होगी और वह है बैतुल मुक़द्दस में नमाज़ अदा करने के इरादे से आने वाले का गुनाहों से पाक हो जाना। अल्लाह तआला हम सबको भी बैतुल मुक़द्दस में नमाज़ अदा करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये। **آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔**

★ मस्जिद रौशन करना ★

हज़रत इस्माईल बिन ज़्याद رضی اللہ عنہ से रिवायत है कि अमीरुल मोमिनीन हज़रत अली کرم اللہ تعالیٰ وجہہ الکریم माहे रमज़ानुल मुबारक में मस्जिदों के पास से गुज़रे तो उनमें चिराग़ रौशन थे यह देखकर आप ने यह दुआइया कलिमात कहे, ऐ अल्लाह तआला! अमीरुल मोमिनीन सैयदना उमर फ़ारूक़े आज़म की क़ब्र को इसी तरह रौशन फ़रमा दे जिस तरह उन्होंने हमारी मस्जिदों को रौशन किया। *(फ़तावा रज़विय्यह, 3/597)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! मज़कूरा हदीष से यह बात वाज़ेह हुई कि मस्जिदों में रौशनी करना सहाबाए किराम को कितना पसंद था, और क्यों न हो! अल्लाह तआला का घर जब मुनव्वर होगा तो लोग बा इत्मिनान व सुकून और हुज़ूरीए क़ल्ब के साथ उसमें इबादत करेंगे। नमाज़ की अदायगी के साथ तिलावते कुरआने मुक़द्दस भी करेंगे। तारीकी की वहशत और ख़ौफ़ भी दिल में न होगा। लिहाज़ा अल्लाह तआला तौफ़ीक़ दे तो ज़रूर बिल ज़रूर मस्जिद में रौशनी का एहतेमाम करें, I काम है। बल्कि अल्लाह तआला की रज़ा के लिये उसके घर को साफ़ करो **انشاء اللہ !** मौलाए कायनात हज़रत अली کرم اللہ تعالیٰ وجہہ الکریم की दुआ का कुछ हिस्सा जरूर मिल जायेगा। रब्बे क़दीर अपने फ़ज़्ल से और प्यारे आक़ा ﷺ के करम से हम सब को तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

और हज़रत अनस बिन मालिक رضی اللہ عنہ का क़ौल है कि जो शख़्स मस्जिद में चिराग़ जलाये जब तक उस चिराग़ की रौशनी से मस्जिद मुनव्वर होती है हामेलीने अर्श तमाम फ़रिश्ते उसके लिये मग्फ़िरत की दुआ करते हैं। *(मकाशिफतुल कुलूब)*

मेरे प्यारे आक़ा صلی اللہ علیہ وسلم के प्यारे दीवानो ! इंसान आज के दौर में मस्जिद के लिए बल्ब, टयूब लाईट वग़ैरह के ज़रिये मस्जिद को रौशन करे तो यक़ीनन ! वह भी मज़कूरा दुआ में हिस्सादार हो सकता है और दुआ भी मामूली मख़्लूक़ की नहीं बल्कि अल्लाह तआला के तमाम मासूम फ़रिश्ते ऐसे शख़्स के लिये मग्फ़िरत की दुआ करते हैं। अल्लाह तआला हमें मस्जिद को मुनव्वर करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये। **آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔**

★ मसाजिद के दर्जात ★

हज़रत अनस बिन मालिक رضی اللہ عنہ से रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह صلی اللہ علیہ وسلم ने फरमाया कि आदमी की नमाज़ घर में एक नमाज़ है और उसकी नमाज़ उसकी मस्जिद में जिसमें जुम्आ होता है पांच सौ नमाज़ के बराबर है और उसकी नमाज़ मस्जिदे अक़्सा में पचास हज़ार नमाज़ों के बराबर है और उसकी नमाज़ मेरी मस्जिद में पचास हज़ार नमाज़ों के बराबर है और उसकी नमाज़ मस्जिदे हराम में एक लाख नमाज़ों के बराबर है।

मेरे प्यारे आक़ा صلی اللہ علیہ وسلم के प्यारे दीवानो ! लेकिन मुहल्ला वालों के लिये मुहल्ला की मस्जिद में नमाज़ पढ़ना बनिस्बते जामा मस्जिद के अफ़ज़ल व आला है। सलफ़े सालेहीन, सहाबा व ताबेईन का अमल उस पर शाहिद है कि पंचगाना नमाज़ें अपने अपने मुहल्ले की मस्जिद पढ़ते थे, उनको छोड़कर जामा मस्जिद में न जाते थे। इससे मालूम हुआ कि आम लोगों के लिये यह फ़ज़ीलत सिर्फ़ नमाज़े जुम्आ के साथ मख़सूस है, अलबत्ता अहले मुहल्ला के लिये पंचगाना नमाज़ों में भी पांच सौ नमाज़ का सवाब होगा। इसलिये मुहल्ले की मस्जिद (अहले मुहल्ला के लिये) जामा मस्जिद है मगर जब कि जामा मस्जिद का इमाम सुन्नी आलिम हो तो फिर जामा मस्जिद ही अफ़ज़ल है। *(अल इश्बाह, सफा–159)*

★ मस्जिद की सफ़ाई ★

मशहूर सहाबीए रसूल हज़रत अनस رضی اللہ عنہ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह

फ़ज़ाइल व आदाबे मस्जिद

صلی اللہ علیہ وسلم ने फ़रमाया :–

"عُرِضَتْ عَلَیَّ اُجُوْرُ اُمَّتِیْ حَتّٰی الْقَذَاۃُ یُخْرِجُھَا الرَّجُلُ مِنَ الْمَسْجِدِ وَ عُرِضَتْ عَلَیَّ ذُنُوْبُ اُمَّتِیْ فَلَمْ اَرَ ذَنْباً اَعْظَمَ مِنْ سُوْرَۃٍ مِّنَ الْقُرْآنِ اَوْ آیَۃٍ اُوْتِیَھَا رَجُلٌ ثُمَّ نَسِیَھَا"

मेरे सामने मेरी उम्मत के आमाले ख़ैर पेश किये गये यहां तक कि उसके बारे में जो कि कूड़ा या मिट्टी मस्जिद से निकालता है। और मेरे सामने मेरे उम्मतियों के गुनाह पेश किये गये लेकिन उससे बड़ा गुनाह मैंने नहीं देखा कि किसी शख़्स ने एक सूरत या आयात को याद करके उसको भूला दिया।

اللہ اکبر ! मेरे प्यारे आक़ा صلی اللہ علیہ وسلم के प्यारे दीवानो ! मस्जिद के कूड़ा करकट या मिट्टी निकालना यह अमल भी बारगाहे रसूल صلی اللہ علیہ وسلم में पेश किया जाता है। ज़रा सोचो कि रहमते आलम صلی اللہ علیہ وسلم ने उस अमल को आमाले ख़ैर में शुमार फ़रमाया। लिहाज़ा अगर मस्जिद में कभी कूड़ा या करकट या मिट्टी देखो तो उसे उठाकर बाहर फेंक दो यह न सोचो कि यह तो सिर्फ़ मस्जिद के ख़ादिम का काम है। बल्कि अल्लाह तआला की रज़ा के लिये उसके घर को साफ़ करो। **انشاء اللہ !** अज्रे अज़ीम के हक़दार बन जाओगे। इसी तरह जितना क़ुरआन शरीफ़ याद कर लिया है उसकी तिलावत करो कि उसके भूलने पर रहमते आलम صلی اللہ علیہ وسلم के फ़रमान के मुताबिक़ बड़ा गुनाह है। अल्लाह तआला हम सबको आमाले ख़ैर की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये और गुनाह सग़ीरा व कबाइर से इज्तेनाब की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

★ आदाबे मस्जिद ★

हज़रत अबू क़तादा رضی اللہ عنہ रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह صلی اللہ علیہ وسلم ने फ़रमाया कि : **"اِذَا دَخَلَ اَحَدُکُمُ الْمَسْجِدَ فَلْیَرْکَعْ رَکْعَتَیْنِ قَبْلَ اَنْ یَّجْلِسَ"**

जब तुम में से कोई मस्जिद में दाख़िल हो तो मस्जिद में बैठने से पहले दो रकअत (तहिय्यतुल मस्जिद) अदा कर ले। *(बुख़ारी शरीफ़)*

मेरे प्यारे आक़ा صلی اللہ علیہ وسلم के प्यारे दीवानो ! मज़कूरा हदीष शरीफ़ से यह बात वाज़ेह होती है कि मस्जिद में दाख़िल होते ही अगर वक़्ते मकरूह न हो तो ज़रूर

दो रकअत तहिय्यतुल मस्जिद अदा कर लें। इसके बे शुमार फ़ायदे और फ़ज़ाइल मौजूद हैं। ख़ूद रसूलुल्लाह और सहाबाए किराम इसका ख़ास एहतेमाम फ़रमाते थे। अल्लाह तआला अपने महबूब ﷺ के सदका व तुफ़ैल हम सब को तहिय्यतुल मस्जिद की अदायगी की तौफ़ीक़ अता फ़र्माये।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم-

★ मस्जिद में आने का षवाब ★

हज़रत अबू हुरैरा رضی اللہ عنہ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया, जो सुबह को अव्वल दिन में या आख़िर दिन में मस्जिद को गया, अल्लाह तआला उसकी मेहमानी जन्नत में करेगा (सुबह के वक़्त या आख़िर दिन में) जिस वक़्त भी वह मस्जिद में गया हो। *(बुखारी शरीफ)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! आम तौर पर यह दोनों वक़्त आराम के होते हैं, ऐसे में बंदा अपनी प्यारी नींद कुरबान करके अपने घर के बजाए मौला तआला के घर को तरजीह देता है तो वह करीम भी अपनी शान के मुताबिक़ अज्र फ़रमाता है। यानी जन्नत में मेहमानी फ़रमाता है **سبحان اللہ!** मेरा करीम जब मेहमानी फ़रमायेगा तो उसकी क्या शान होगी? अल्लाह तआला हम सबको मज़कूरा वक़्तों में ख़ास तौर पर मस्जिद में हाज़री की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये। **آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم-**

★ ज़्यादा षवाब ★

हज़रत अनस बिन मालिक رضی اللہ عنہ का क़ौल है कि ज़मीन का हर वह टुकड़ा जिस पर नमाज़ अदा की जाती है या ज़िक्रे ख़ुदा किया जाता है वह इर्द गिर्द के तमाम क़ितआत पर फ़ख़्र करता है और ऊपर से नीचे सातवीं ज़मीन तक वह मुसर्रत व शादमानी महसूस करता है। और जब बंदा किसी ज़मीन पर नमाज़ पढ़ता है तो वह ज़मीन उस पर फ़ख़्र करती है। *(मकाशिफतुल कुलूब, 533)*

★ जन्नत में ले जाने वाला ★

हुजूर नबी करीम ﷺ का इरशाद है कि मस्जिद में झाड़ू देना, मस्जिद को पाक साफ़ रखना, मस्जिद का कूड़ा करकट बाहर फेंकना, मस्जिद में खुश्बू

सुलगाना, बिलख़ुसूस जुम्आ के दिन मस्जिद को ख़ुश्बू में बसाना जन्नत में ले जाने वाले काम हैं। *(इब्ने माजह शरीफ)*

سبحان اللہ! मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! ज़रूर ज़रूर मज़कूरा काम करने की कोशिश करनी चाहिये। ख़ास तौर पर यौमे जुम्आ मस्जिद को इत्र और मुसल्लियों को भी मोअत्तर करने की कोशिश करें और कभी वक़्त निकालकर मस्जिद की सफ़ाई भी करें। प्यारे आक़ा ﷺ का वादा हक़ है **انشاء اللہ !** जन्नत के हक़दार बन जाओगे। अल्लाह हम सबको तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

★ सफ़ाई की अहमियत ★

नबी करीम ﷺ ने यह फ़रमाया कि मस्जिद का कूड़ा करकट साफ़ करना हसीन आंखों वाली हूर का महेर है। *(तिब्रानी)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! मज़कूरा हदीष शरीफ़ से यह बात भी वाज़ेह हुई कि मस्जिद की सफ़ाई मेरे आक़ा ﷺ को निहायत ही पसंद थी और सफ़ाई करने वाले के लिये मुख़्तलिफ़ अज्र की बशारतें भी इसी लिये दीं ता कि मस्जिद की सफ़ाई का एहतेमाम करें। अल्लाह तआला हम सबको तौफ़ीक़ अता फ़रमाये। **آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم-**

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर رضی اللہ عنہ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ के ज़मानाए अक़दस में मस्जिदे नबवी शरीफ़ कच्ची ईंटों से बनी हुई थी और उसकी छत खजूर की शाख़ों की और सुतून खजूर के तने थे। फिर सैयदना अमीरुल मोमिनीन अबू बकर सिद्दीक़ رضی اللہ عنہ ने उसमें कुछ इज़ाफ़ा नहीं फ़रमाया लेकिन अमीरुल मोमिनीन सैयदना उमर फ़ारूक़ رضی اللہ عنہ ने अपने ज़मानाए ख़िलाफ़त में उसकी तामीर इस तरह करायी कि दीवारें कच्ची ईंटों की, छत खजूर की शाख़ों की और सुतून खजूर के तनों के थे यानी यह तामीर भी हस्बे साबिक़ थी। फिर अमीरुल मोमिनीन सैयदना हज़रत उष्माने ग़नी رضی اللہ عنہ का ज़माना आया तो आपने उस में काफ़ी तबदीली की, दीवारें मुनक़्क़श पत्थर और उन पर गचकारी और सुतून मनक़्क़श पत्थरों के और छत शाख़ों के बनवाई। *(जामिउल अहादीष, 54)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! मज़कूरा हदीष शरीफ़ से पता चला

कि ज़रूरत के मुताबिक़ मस्जिद की तौसीअ और इस्तेताअत के मुताबिक़ नक़्श व निगार यह जाइज़ है कि खुल्फ़ाए राशदीन ने यह काम अंजाम दिये। रब्बे क़दीर हमें भी तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

एक रिवायत में है कि जो मस्जिद से अज़ीय्यत की चीज़ें निकाल ले अल्लाह तआला उसके लिये जन्नत में घर बनायेगा। *(इब्ने माजह)*

★ तामीरे मस्जिद का अज्र ★

फ़रमाने नबवी ﷺ है कि जिस शख़्स ने अल्लाह की रज़ा जोई के लिये मस्जिद बनाई अगरचे वह मस्जिद मट तेतर के बल के बराबर क्यों न हो, अल्लाह तआला उस शख़्स के लिये जन्नत में महल बना देता है। *(मुकाशफतुल कुलूब, 533)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! अल्लाह तआला से दुआ करनी चाहिये कि वह हमें मस्जिद बनाने की इस्तेताअत अता फ़रमाये और इतनी दौलत दे कि छोटी ही सहीह एक मस्जिद ज़रूर बना लें ता कि मौला के बंदे उसमें सज्दा रेज़ हो सकें और कुर्बे ख़ुदा की लज़्ज़त हासिल कर सकें।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

★ अल्लाह को महबूब ★

फ़रमाने नबवी ﷺ है कि जब तुम में से कोई मस्जिद से महब्बत करता है तो अल्लाह तआला उससे मुहब्बत रखत है। *(मुकाशफतुल कुलूब)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! अगर हम और आप चाहते हैं कि बारगाहे ख़ुदावंदी के महबूब व मुक़र्रब हो जाएं तो आज ही से मसाजिद से महब्बत करने लग जाएं अल्लाह तआला अपनी कुर्ब की दौलत से नवाज़ देगा। अल्लाह तआला अपने महबूब ﷺ के सदक़ा व तुफ़ैल हमें उसकी तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

★ मग्फ़िरत की दुआ ★

हुजूर ताजदारे दो आलम ﷺ का फ़रमान है कि तुम में से कोई फ़र्द जब तक जानमाज़ पर रहता है तो फ़रिश्ते उसके लिये मग्फ़िरत व बख़्शिश की

दुआएं करते हैं और कहते है कि ऐ अल्लाह ! इस पर सलामती नाज़िल फ़रमा, अल्लाह इस पर रहम फ़रमा। और ऐ अल्लाह ! इसे बख़्श दे। यह दुआएं उस वक़्त तक जारी रहती हैं जब तक वह किसी से बात न करे।

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! **سبحان اللہ!** कितनी बड़ी सआदत है जानामाज़ पर बैठना कि अगर आप मस्जिद में दाख़िल होकर एतेकाफ़ की नियत करके बा वुजू बैठे रहें तो चाहे आप नमाज़ और दीगर इबादतें करें या न करें मौला तआला हर लम्हा षवाब अता फ़रमाता रहेगा।

★ अल्लाह के ज़ाइर ★

मक्की मदनी सरकारे दो आलम ﷺ का फ़रमान है कि अल्लाह तआला का यह इरशाद बाज़ किताबों में मौजूद है कि ज़मीन पर मस्जिदें मेरा घर हैं और उनकी तामीर व आबादी में हिस्सा लेने वाले मेरे ज़ाइर हैं। बस ख़ुश ख़बरी मेरे उस बंदे के लिये है जो अपने घर में तहारत हासिल करके मेरे घर में मेरी ज़ियारत को आता है, लिहाज़ा मुझ पर हक़ है कि मैं आने वाले ज़ाइर को इज़्ज़त व वक़ार अता करूं। *(मकाशिफतुल कुलूब)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! मज़कूरा हदीष शरीफ़ से यह बात समझ में आती है कि मस्जिद अल्लाह तआला के दीदार की जगह है। घर से अल्लाह के दीदार की नियत से जो शख़्स मस्जिद जाता है, अल्लाह तआला पर हक़ है कि वह उस को इज़्जत व वक़ार अता फ़रमाये। और आक़ा दो जहां ﷺ के फ़रमान **"الصلوٰۃ معراج المومنین"** से भी मालूम होता है कि बंदा मोमिन नमाज़ में अल्लाह तआला से हमकलाम होता है और निगाह वाले बसा अव्क़ात दीदारे तजल्लियाते इलाही से शाद काम भी हुए हैं। अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त हमारी आंखों में भी वह वस्फ़ पैदा फ़रमा दे।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

हुजूर अक़दस ﷺ इरशाद फ़रमाते हैं कि जिसने घर में अच्छी तरह वुजू किया फिर मस्जिद को आया वह अल्लाह का ज़ाइर है और जिसकी ज़ियारत की जाये उस पर हक़ है कि ज़ाइर का इकराम करे। *(तिब्रानी)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! दुन्या में हम अगर किसी के घर जायें तो वह अपने मेहमान से मुंह नहीं मोड़ता बल्कि इज़्ज़त करता है, एहतेराम

करता है। तो फिर यह कैसे मुमकिन है कि बंदा अल्लाह के घर जाये और मौला उसका इकराम न करे। काश! हम समझते कि इज़्ज़त बाज़ारों में नहीं अल्लाह के घर में है और इज़्ज़त अल्लाह, उसके रसूल और मोमिनीन के लिये है और अल्लाह जिसे चाहता है उसी को इज़्ज़त अता फ़रमाता है, लिहाज़ा इज़्ज़त चाहते हो तो रब के हुज़ूर आते जाते रहो। अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त हमें दारैन में सुर्ख़रूइ अता फ़रमाए। **آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔**

★ मस्जिद में आने की फ़ज़ीलत ★

सरकारे कायनात ﷺ का इरशाद है कि जब तुम किसी ऐसे आदमी को देखो जो मस्जिद में आने का आदी हो तो उसके ईमान की गवाही दो। *(मुकाशफतुल कुलूब)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! आओ! आज से नियत करें कि **انشاء اللہ !** मस्जिद में जाने में कोताही नहीं करेंगे और ख़ूद भी मस्जिद के पाबंद बनेंगे और अपनी औलाद को दोस्त व अहबाब को भी मस्जिद का पाबंद बनायेंगे। अल्लाह तआला हम सब पर करम की नज़र फ़रमाए।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

हुज़ूर अक़्दस ﷺ फ़रमाते हैं कि मर्द की नमाज़ मस्जिद में जमाअत के साथ घर में और बाज़ार में पढ़ने से पचीस दर्जा ज़ाइद है और यह यूं ही है कि जब अच्छी तरह वुज़ू करके मस्जिद के लिये निकला तो जो क़दम चलता है उससे दर्जा बुलंद होता है और गुनाह मिटता है और जब नमाज़ पढ़ता है तो मलाइका बराबर उस पर दुरूद भेजते रहते हैं। जब तक कि अपने मुसल्ला पर है और हमेशा नमाज़ में है और जब तक नमाज़ का इंतज़ार कर रहा है। *(रवाहुल बुख़ारी व मुस्लिम)*

हुज़ूर ﷺ फ़रमाते हैं कि जो अच्छी तरह वुज़ू करके फ़र्ज़ नमाज़ को गया और मस्जिद में नमाज़ पढ़ी उसकी मग्फ़िरत हो जायेगी। *(रवाहुन्निसाइ अन उष्मान इब्ने अफ़फान رضی اللہ عنہ)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! अल्लाह तआला के घर में इबादत के लिये हाज़िरी वह भी ख़ास जमाअत के साथ नमाज़ अदा करने के लिये कितना बड़ा एअज़ाज़ है कि मौला तआला फ़र्ज़ की अदायगी के लिये आने

वालों को मग्फ़िरत का मुज़दा अता फ़रमाता है। अल्लाह तआला हम सबको फ़र्ज़ की अदायगी के लिये मस्जिद में आने जाने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

★ हर क़दम पर दस नेकियां ★

एक रिवायत में है कि हर क़दम के बदले दस नेकियां लिखी जाती हैं और जब घर से निकलता है वापसी तक नमाज़ पढ़ने वालों में लिखा जाता है।

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! मस्जिद में नमाज़ के इंतेज़ार में बैठना, घर से वुज़ू करके पैदल निकलना अल्लाह तआला की बारगाह में बे हिसाब नेकियों को हासिल करने का बेहतरीन ज़रिया है। यक़ीनन! यह नेकियां कल बरोज़े क़यामत ख़ूब काम आयेंगी। लिहाज़ा ज़रूर थोड़ी सी कुरबानी देकर नेकियों का ज़ख़ीरा जमा करने की कोशिश करें। अल्लाह तआला हम सबको तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

हज़रत जाबिर رضی اللہ عنہ कहते हैं कि मस्जिदे नबवी के गिर्द कुछ ज़मीनें ख़ाली हुई। बनी सलमा ने चाहा कि मस्जिद के क़रीब आ जाएं। यह ख़बर नबी करीम ﷺ को पहुंची फ़रमाया, मुझे ख़बर पहुंची है कि तुम मस्जिद के क़रीब उठ आना चाहते हो? अर्ज़ की या रसूलल्लाह! ﷺ हां! इरादा तो है। फ़रमाया, ऐ बनी सलमा! अपने घरों ही में रहो, तुम्हारे क़दम लिखे जायेंगे। दोबारा इस को फ़रमाया। बनी सलमा कहते हैं कि लिहाज़ा हम को घर बदलना पसंद न आया। *(रवाहु मुस्लिम वग़ैरा)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! मज़कूरा हदीष शरीफ़ से यह बात समझ में आती है कि मस्जिद की तरफ़ जितने क़दम चलेंगे उतना ही ज़्यादा षवाब मिलेगा और रहमते आलम ﷺ को भी यह पसंद है कि हम मस्जिद की तरफ़ पैदल चलें। सहाबी रसूल ﷺ की नियत भी अच्छी थी और मेरे आक़ा ﷺ की तमन्ना भी ख़ूब थी। लिहाज़ा हमें चाहिये कि हम रहमते आलम ﷺ की पसंद को फ़ौक़ियत दें और पयादा पा मस्जिद की तरफ़ आने की कोशिश करें। रब्बे क़दीर हम सब को तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

★ हर क़दम पर षबाव ★

हज़रत इब्ने अब्बास رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمَا कहते हैं कि अंसार के घर मस्जिद दूर थे उन्होंने क़रीब आना चाहा उस पर यह आयत नाज़िल हुई :—

"وَ نَكْتُبُ مَا قَدَّمُوْا وَ آثَارَهُمْ" जो उन्होंने नेक काम आगे भेजे वह और उनके निशाने क़दम हम लिखते हैं। *(रवाहु इब्ने माजाह)*

سبحان الله! मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो! मस्जिद की तरफ़ जाने वाले के निशाने क़दम को परवर्दिगार جَلَّ جَلَالُهٗ देखता है। कितना ख़ुश नसीब है वह बंदाए मोमिन जिसके निशाने क़दम को अल्लाह तआला ख़ूद देख रहा है। अल्लाह तआला हम सबको मस्जिद की तरफ़, दीन की तरफ़, इल्म की तरफ़ और नेकियों की तरफ़ चलने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

آمین بجاہ النبی الکریم علیه افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

हुज़ूर ताजदारे कायनात صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم फ़रमाते हैं कि सबसे बढ़कर नमाज़ में उसका षवाब है जो ज़्यादा दूर से चलकर आये। *(रवाहु बुखारी व मुस्लिम)*

हज़रत उबय बिन कअब رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُ कहते हैं कि एक अंसारी का घर मस्जिद से सब से ज़्यादा दूर था और कोई नमाज़ उनकी ख़ता न होती। उनसे कहा गया कि काश! तुम कोई सवारी ख़रीद लो कि अंधेरे और गर्मी में उस पर सवार होकर आओ। तो उन्होंने जवाब दिया मैं चाहता हूं कि मेरा मस्जिद को जाना और फिर घर को वापस आना लिखा जाये। उस पर नबी صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم ने फ़रमाया, अल्लाह ने तुझे यह सब जमा करके दे दिया। *(रवाहु मुस्लिम वगैरा)*

मेरे प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم के प्यारे दीवानो ! सहाबाए किराम رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْهِمْ اَجْمَعِیْنَ को सवाब की कितनी हिर्स थी कि हर राहत को कुरबान कर देते और तकलीफ़ को उठाकर षवाब जमा करने की फ़िक्र करते। लेकिन आज हमारा हाल ख़ूब ज़ाहिर है। काश! हम चंद क़दम के फ़ासले पर मौजूद मस्जिद में पैदल जाकर सहाबा के नक़्शे क़दम पर चलने की कोशिश करते। आओ! दुआ करें कि परवर्दिगार हम सबको रहमते आलम صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم के सदक़ा व तुफ़ैल सहाबा के नक़्शे क़दम पर चलने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

آمین بجاہ النبی الکریم علیه افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

फ़ज़ाइल व आदाबे मस्जिद

★ बेहतरीन नुस्ख़ा ★

हुज़ूरे अक़दस صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم इर्शाद फ़रमाते हैं कि तकलीफ़ में पूरा वुज़ू करना और मस्जिद की तरफ़ चलना और एक नमाज़ के बाद दूसरी नमाज़ का इंतेज़ार करना गुनाहों को अच्छी तरह धो देता है। (रवाहु बज़्ज़ार व अबू यअ्ला)

मेरे प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم के प्यारे दीवानो! कोशिश करें कि मस्जिद की तरफ़ नमाज़ के लिये घर से वुज़ू करके और जमाअत से पहले जाकर जमाअत का इंतेज़ार भी करें। जमाअत का इंतेज़ार भी षवाब और नमाज़ का इंतज़ार भी षवाब और साथ ही साथ गुनाहों से नजात का भी ज़रिया है। अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त हम सब पर करम फ़रमाये और मस्जिद से लगाव की दौलत अता फ़रमाये। **آمین بجاہ النبی الکریم علیه افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔**

★ अल्लाह की ज़मानत में ★

हुज़ूर रहमते आलम नूरे मुजस्सम फ़ख़े आदम बनी आदम صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم इरशाद फ़रमाते हैं कि तीन अशख़ास अल्लाह तआला की ज़मान में हैं और अगर ज़िन्दा रहें तो किफ़ायत करे, मर जायें तो जन्नत में दाख़िल करे। जो शख़्स घर में दाख़िल हो और घर वालों पर सलाम करे वह अल्लाह की ज़मान में है और जो मस्जिद को जाये अल्लाह की ज़मान में है और जो अल्लाह की राह में निकला वह अल्लाह की ज़मान में है। *(अबू दाउद)*

मेरे प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم के प्यारे दीवानो! मज़कूरा तीन अमल के आदी बनो और अल्लाह तआला की ज़मानत हासिल करो। याद रखें! अल्लाह के ज़िम्माए करम से बेहतर किसी का ज़िम्मा नहीं हो सकता। ख़ुश नसीब हैं वह लोग जिन के अंदर अल्लाह की ज़मान हासिल करने का जज़्बा है। आओ ! आज दुआ करते हैं कि अल्लाह तआला हम सबको अपनी ज़मान अता फ़रमाए।

آمین بجاہ النبی الکریم علیه افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

★ सत्तर हज़ार फ़रिश्ते ★

हुज़ूरे अक़दस صَلَّی اللّٰهُ عَلَیْهِ وَسَلَّم फ़रमाते हैं कि जो घर से नमाज़ को जाए और यह दुआ पढ़े :—

"اَللّٰھُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُكَ بِحَقِّ السَّائِلِیْنَ عَلَیْكَ وَ بِحَقِّ مَمْشَایَ ھٰذَا فَاِنِّیْ لَمْ اَخْرُجْ

اَشِراً وَّلا بِطْراً وَّلا رِيَاءً وَّلا سُمْعَةً وَّخَرَجْتُ اِلْقَاءَ سَخْطِكَ وَابْتِغَاءَ مَرْضَاتِكَ فَاَسْأَلُكَ اَنْ تُعِيْذَنِيْ مِنَ النَّارِ وَاَنْ تَغْفِرَلِيْ ذُنُوبِيْ اِنَّهٗ لَا يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلَّا اَنْتَ"

यानी ऐ अल्लाह! मैं तुझसे तेरे साइलीन और मेरे इस चलने के सदक़े में सवाल करता हूं न मैं तकब्बुर के साथ निकला हूं और न ही बेकार और न ही दिखावे के लिये और न ही शोहरत के लिये। मैं तो तेरे ग़ज़ब से नजात हासिल करने और तेरी रज़ा जोई के लिये निकला हूं। लिहाज़ा मैं तुझसे सवाल करता हूं कि तू मुझे जहन्नम से नजात अता फ़रमा और मेरे गुनाहों को माफ़ फ़रमा। बेशक! तुम ही गुनाहों को बख़्शने वाला है। आक़ाए मदनी ﷺ फ़रमाते है कि अल्लाह तआला उसकी तरफ़ मुतवज्जोह होता है और सत्तर हज़ार फ़रिश्ते उसके लिये इस्तिग़फ़ार करते हैं। *(रवाहु इब्ने माजह अन अबू सइद खुदरी)*

★ मस्जिद में आने जाने की दुआ ★

हुजूर ﷺ ने इरशाद फ़रमाया, जब कोई मस्जिद में जाये तो कहे :–

"اَللّٰهُمَّ افْتَحْ لِيْ اَبْوَابَ رَحْمَتِكَ" ऐ अल्लाह! मेरे लिये अपनी रहमत के दरवाज़े खोल दे।

जब निकले तो कहे ऐ :–

"اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَسْأَلُكَ مِنْ فَضْلِكَ" अल्लाह! मैं तुझसे तेरा फ़ज़्ल चाहता हूं।

★ सायए ख़ुदावंदी में ★

बाइषे वजहे तख़लीक़, साहिबे क़ाब क़ौसैन हुजूरे अक़दस ﷺ ने इरशाद फ़रमाया, सात शख़्स ऐसे हैं जिन पर अल्लाह तआला उस दिन साया फ़रमायेगा जिस दिन उसके साया के सिवा कोई साया न होगा।

01. इमाम आदिल।

02. और वो जिन की नश व नुमा अल्लाह तआला की इबादत में हूई।

03. वह शख़्स जिस का दिल मस्जिद को लगा हुआ है।

04. वह दो शख़्स जो बाहम अल्लाह ﷻ के लिये दोस्ती रखते हैं, उस पर जमा हुए उसी पर मुतफ़र्रिक़ हो गये।

05. वह शख़्स जिसे किसी साहिबे हुस्न व जमाल औरत ने बुलाया, उसने कह

दिया कि मैं अल्लाह से डरता हूं।

06. वह शख़्स जिसने कुछ सदक़ा किया और उस को इतना छुपाया कि बायें को ख़बर न हुई कि दाहिने ने क्या ख़र्च किया।

07. वह शख़्स जिसने तंहाई में अल्लाह तआला को याद किया और आंसू बहाये। *(बुख़ारी शरीफ व मुस्लिम शरीफ)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! मज़कूरा हदीषे मुबारका में जिन सात खुश नसीबों का ज़िक्र है उनमें से एक मस्जिद से दिल लगाने वाला है। लिहाज़ा हम को चाहिये कि हम मस्जिद से अपना दिल लगाये रखें और एक वक़्त की नमाज़ अदा कर लेने के बाद दूसरी नमाज़ की नियत करके मज़कूरा ख़ूबियों को भी अपने अंदर पैदा करें। **انشاء الله!** क़यामत के हौलनाक दिन अल्लाह हम सबको अपने अर्श के साए में जगह अता फ़रमायेगा। अल्लाह तआला हम सबको मज़कूरा सातों आमाले ख़ैर की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये।

★ घरों में मस्जिद ★

उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा رضی اللہ عنہا से रिवायत है कि हुजूर नबी करीम ﷺ ने घरों में नमाज़ की मख़सूस जगह बनाने का हुक्म फ़रमाया और उस जगह को पाक साफ़ रखने का भी हुक्म दिया। *(फतावा रज़विय्यह, 3/118)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! सुन्नत है कि अपने घर में कोई जगह नमाज़ के लिये मख़सूस कर ली जाये और उसको पाक व साफ़ रखा जाये और उसमें ख़ुश्बू वग़ैरह लगायी जाये। औरतें अगर एतेकाफ़ करना चाहें तो उसी घर की मस्जिद में कर सकती हैं। ताजदारे कायनात ﷺ के मज़कूरा फ़रमान से यह भी वाज़ेह होता है कि सुन्नत व नफ़्ल नमाज़ और औरतों के लिये नमाज़ की मख़सूस जगह का एहतेमाम करना चाहिये और उसकी सफ़ाई का भी भरपूर एहतेमाम रखना चाहिये ता कि उस जगह की बरकतों नीज़ वहां की जाने वाली इबादतों से अल्लाह तआला की रहमत का हुसूल मुमकिन हो। अल्लाह तआला अगर कुशादा मकान अता फ़रमाए तो ज़रूर नमाज़ के लिये मख़सूस जगह का एहतेमाम करके रसूले आज़म ﷺ के फ़रमान पर अमल करें। और अगर कुशादा मकान न भी हो तब भी नमाज़

के लिये किसी जगह को मख़सूस रखें कि जब नमाज़ का वक़्त हो उसी जगह पर नमाज़ अदा करें। बक़िया वक़्तों में दूसरे कामों के लिये उस जगह का इस्तेमाल भी कर सकते हैं। अल्लाह तआला रहमते आलम ﷺ के फ़रमान पर अमल की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। آمین بجاہ النبی الکریم علیه افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

★ मुजाहिद फ़ी सबीबिल्लाह ★

हुजूर ﷺ ने फ़रमाया :—

"مَنْ غَدَا اِلَى الْمَسْجِدِ لِيَذْكُرَ اللّٰهَ تَعَالٰى اَوْيُذَكِّرَ بِهٖ كَانَ كَالْمُجَاهِدِ فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ"

जो शख़्स मस्जिद में अल्लाह का ज़िक्र करने के लिये या उसकी नसीहत करने के लिये जाए तो वह शख़्स मुजाहिद फ़ी सबीबिल्लाह है। *(अहयाउल उलूम)*

नीज़ सरकारे दो आलम ﷺ फ़रमाते हैं कि सुबह व शाम मस्जिद को जाना अज़ क़िस्मे जिहाद फ़ी सबीबिल्लाह है। *(रवाहुत् तिब्रानी अन अबी अमामा رضی اللہ عنہ)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! जेहाद फ़ी सबीबिल्लाह कितना बड़ा काम है। कि मुजाहिद घर, रिश्तेदार, कारोबार और अपनी जान तक को अल्लाह के लिये क़ुरबान करने का जज़्बाए सादिक़ लिये मैदाने कारज़ार में क़दम रखता है और दुश्मनों के नरग़े में अपनी जान जाने आफ़रीं के सुपुर्द कर देता है तो उसे मुजाहिद होने का शर्फ़ हासिल होता है। लेकिन मअबूदे हक़ीक़ी के नबीए बरहक़ ﷺ ने सुबह व शाम मस्जिद को आना जेहाद फ़ी सबीबिल्लाह की क़िस्म में शामिल फ़रमाया। लिहाज़ा चाहिये कि सुबह व शाम मस्जिद में आते जाते रहें ता कि जेहाद फ़ी सबीबिल्लाह के मिष्ल षवाब के हक़दार हो सकें। अल्लाह तआला हम सबको तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

آمین بجاہ النبی الکریم علیه افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

★ तारीकी में मस्जिद जाना ★

इमाम नख़ई عَلَيْهِ الرَّحْمَةُ وَ الرِّضْوَانُ का क़ौल है : सलफ़े सालेहीन ने फ़रमाया, रात की तारीकी में मस्जिद में आने वाले के लिये जन्नत वाजिब हो जाती है। *(मुकाशिफतुल कुलूब,—533)*

★ गवाही देगी ★

हज़रत इब्ने अब्बास رضی اللہ عنہما का क़ौल है कि नमाज़ी की मौत पर चालीस दिन तक ज़मीन रोती रहती है, हज़रत अता खुरासानी رضی اللہ عنہ का क़ौल है कि बंदा जब ज़मीन के किसी टुकड़े पर सज्दा करता है तो वह टुकड़ा क़यामत तक उसके अमल की गवाही देगा और उसकी मौत के दिन वह टुकड़ा रोता है। *(मुकाशिफतुल कुलूब,—534)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! ज़मीन को उस सज्दा गुज़ार की जुदाई और उसके अमल से मिलने वाले सुकून से महरूमी पर अफ़सोस होता है लिहाज़ा उस सज्दा गुज़ार के फ़िराक़ में गिरया व ज़ारी करती है। लिहाज़ा हमें कोशिश करनी चाहिये कि ज़मीन के चप्पा चप्पा पर हम सज्दों के निशान छोड़ दें। यह निशान कल बरोज़े क़यामत अल्लाह तआला की रज़ा के हुसूल का ज़रिया षाबित होंगे। अल्लाह तआला हम को तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

آمین بجاہ النبی الکریم علیه افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

★ दिल कैसे माइल होगा ? ★

एक बुज़ुर्ग का क़ौल है कि तहिय्यतुल मस्जिद के नवाफ़िल की अदायगी इबादत में ख़ुलूस और लगन पैदा करती है, लिहाज़ा जो शख़्स तहिय्यतुल मस्जिद के नवाफ़िल को अपने मामूल में शामिल कर ले उसका दिल इबादत की तरफ़ माइल रहने लगेगा। *(आदाबे सुन्नत, 488)*

★ इनाम पाएगा ★

हज़रत हसन बसरी رحمۃ اللہ علیہ फ़रमाते हैं कि जो शख़्स मस्जिद में बकषरत आता जाता है अल्लाह तआला सात इनामात में से एक इनाम से ज़रूर नवाज़ता है :—

- ➡ उसे कोई ऐसा भाई मिलता है जिससे अल्लाह तबारक व तआला के बारे में इस्तेफ़ादा हो।
- ➡ रहमते हक़ नाज़िल होती है।
- ➡ इल्मे अजीब मयस्सर आता है।
- ➡ राहे रास्त बताने वाला कलिमा मिलता है।

- ➡ उससे अल्लाह तआला कोई निकम्मी बात छुड़ा देता है।
- ➡ अल्लाह तआला के ख़ौफ़ की वजह से गुनाहों को छोड़ना नसीब होता है।
- ➡ शर्म की वजह से गुनाहों को छोड़ना नसीब होता है।
- ➡ मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! मज़कूरा वाक़िया से यह बात वाज़ेह हो गयी कि मस्जिद में बकषरत आते जाते रहना चाहिये ता कि मज़कूरा इनाम के हक़दार बन सकें। अल्लाह तआला हम सबको तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

अहकामे मस्जिद

★ गुमशुदा चीज़ की तलाश ★

हज़रत अबू हुरैरा رضی اللہ عنہ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इरशाद फ़रमाया :—

”مَنْ سَمِعَ رَجُلاً يَّنْشُدُ ضَآلَّةً فِى الْمَسْجِدِ فَلْيَقُلْ لَا رَدَّهَا اللّٰهُ عَلَيْكَ فَاِنَّ الْمَسَاجِدَ لَمْ تُبْنَ لِهٰذَا“

जो किसी शख़्स को मस्जिद में गुमशुदा चीज़ तलाश करते सुने तो कहे, अल्लाह तुझे तेरी चीज़ वापस न दिलाये कि मस्जिदें इसके लिये नहीं बनाई गयी हैं। *(जामिउल अहादीष, 506)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! मज़कूरा हदीष शरीफ़ मस्जिद के अदब से मुताल्लिक़ है, मस्जिद में दाख़िल होते वक़्त दिल को बांटने वाली चीज़ों को बाहर ही महफ़ूज़ मक़ाम पर रख देनी चाहिये ता कि मस्जिद में सिर्फ़ अल्लाह तआला की इबादत ही में दिल लगा रहे। अल्लाह रब्बुल इज्ज़त हम सबको एहतेरामे मस्जिद की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

★ ख़रीद व फ़रोख़्त करना कैसा ? ★

हज़रत अबू हुरैरा رضی اللہ عنہ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इरशाद फ़रमाया, जब तुम मस्जिद में किसी शख़्स को ख़रीद व फ़रोख़्त करते देखा तो कहो अल्लाह तआला तेरी तिजारत में नफ़ा न दे। *(फतावा रज़विय्यह, 3/593)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! क़यामत की निशानियों में से यह भी एक निशानी है कि लोग तिजारत की बातें अल्लाह के घर में करें और आज यह बात बिल्कुल आम हो गयी है कि लोग उसको मोअयूब भी नहीं समझते।

ख़ुदारा ख़ुदारा ! अल्लाह के घर के आदाब को मलहूज़ रखें और ख़रीद व फ़रोख़्त की बातें मस्जिद में करने से परहेज़ करें । अल्लाह तआला हम सबको मस्जिद के आदाब बजा लाने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए ।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

★ प्याज़ और लहसन खाकर आने का हुक्म ★

हज़रत अबू सईद खुदरी رضی اللہ عنہ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صلی اللہ علیہ وسلم ने फ़रमाया कि जिसने उस गंदे पेड़ यानी कच्ची प्याज़ लहसन से कुछ खाया तो वह मस्जिद में हमारे पास न आये। *(फतावा रज़विय्यह, 6/381)*

मेरे प्यारे आक़ा صلی اللہ علیہ وسلم के प्यारे दीवानो ! चूं कि कच्ची प्याज़ और लहसन खाने से मुंह में बदबू आती है और रसूले आज़म صلی اللہ علیہ وسلم को उसकी बू बिल्कुल पसंद न थी, कच्ची प्याज़ और लहसन नीज़ सिगरेट बीड़ी वग़ैरह के हवाले से भी ख़्याल रखना चाहिये। अच्छी तरह से मुंह साफ़ करके ही अल्लाह तआला के घर में दाख़िल हुआ करें। अल्लाह हम सबको तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह رضی اللہ عنہ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صلی اللہ علیہ وسلم ने इरशाद फ़रमाया, जिसने कच्ची प्याज़, लहसन या गंदा खाया वह हमारी मस्जिद में न आये कि मलाइक علیہم السلام भी उससे ईज़ा पाते हैं जिससे इंसान तकलीफ़ पाते हैं। *(जामिउल अहादीष–508)*

मेरे प्यारे आक़ा صلی اللہ علیہ وسلم के प्यारे दीवानो ! मज़कूरा हदीष से यह बात वाज़ेह होती है कि मुंह की बू से फ़रिश्तों को भी अज़िय्यत पहुंचती है और ज़ाहिर सी बात है कि मस्जिद में लोग नमाज़ के लिये आते हैं तो उनको भी अज़िय्यत पहुंचती है और इबादत से दिल हट जाता है। लिहाज़ा उसका ख़्याल रखना चाहिये। अल्लाह तआला हम सब पर करम की नज़र फ़रमाये और अदब की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये। **آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔**

★ कच्चा गोश्त ★

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर رضی اللہ عنہ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صلی اللہ علیہ وسلم ने इरशाद फ़रमाया, मस्जिद में कच्चा गोश्त लेकर कोई न गुज़रे। *(जामिउल अहादीष–508)*

फ़ज़ाइल व आदाबे मस्जिद

मेरे प्यारे आक़ा صلی اللہ علیہ وسلم के प्यारे दीवानो ! अल्लाह तआला की बारगाह में दुआ करें कि मौला हम सबको मज़कूरा अदब को बजा लाने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। **آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔**

★ दुन्या की बातें करना कैसा ? ★

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मस्उद رضی اللہ عنہ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صلی اللہ علیہ وسلم ने इरशाद फ़रमाया, आख़िर ज़माने में कुछ लोग होंगे कि मस्जिद में दुन्या की बातें करेंगे, अल्लाह तआला को उन लोगों से कुछ काम नहीं।

मेरे प्यारे आक़ा صلی اللہ علیہ وسلم के प्यारे दीवानो ! ऐसे लोग ख़्वाह इबादत करें या रियाज़त, अगर मस्जिद में दुन्या की बातें करते हैं तो अल्लाह तआला को उनकी इबादत व रियाज़त से कोई काम नहीं। अल्लाह तआला हम सबको मस्जिद में दुन्या की बातों से परहेज़ करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

हज़रत वासिला बिन असक़अ رضی اللہ عنہ से रिवायत है कि हुज़ूर صلی اللہ علیہ وسلم ने इरशाद फ़रमाया, अपनी मस्जिदों को बचाओ ! अपने ना समझ बच्चों और मजनुओं के जाने और ख़रीद व फ़रोख़्त और झगड़ों और आवाज़ बुलंद करने से। *(फतावा रज़विय्यह)*

हज़रत उबैदुल्लाह बिन हफ़्स رضی اللہ عنہ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह صلی اللہ علیہ وسلم ने इरशाद फ़रमाया, जिसने अल्लाह तआला के दाइ की आवाज़ पर लब्बैक कहा और अल्लाह तआला की मस्जिदें अच्छे तौर पर तामीर कीं तो उसके एवज़ अल्लाह तआला के यहां जन्नत है। अर्ज़ किया गया कि या रसूलुल्लाह ! صلی اللہ علیہ وسلم मस्जिदों की अच्छी तरह तामीर क्या है? फ़रमाया, उसमें आवाज़ बुलंद न करना और कोई बेहूदा बात ज़बान से न निकालना। *(शमाइमुल अंबर–19)*

سبحان اللہ! मेरे प्यारे आक़ा صلی اللہ علیہ وسلم के प्यारे दीवानो ! मस्जिदों की तामीर का षवाब उस में आवाज़ बुलंद न करना और बेहूदा बात न करना है। काश ! हम इन बातों को समझते। रब की बारगाह में इल्तेजा है कि अल्लाह तआला हम सबको सहीह समझ और रहमते आलम صلی اللہ علیہ وسلم के फ़रमान पर अमल की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। **آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔**

हम सबके आक़ा व मौला ﷺ का फ़रमाने ज़ीशान है कि आख़िर ज़माने में मेरी उम्मत के कुछ लोग ऐसे होंगे जो मस्जिदों में आयेंगे और गिरोह बनाकर दुन्यावी बातें करते रहेंगे और दुन्या की मोहब्बत के क़िस्से बयान करेंगे उनके साथ न बैठना, अल्लाह तआला को उनकी कोई ज़रूरत नहीं है। *(मुकाशफतुल कुलूब, 533)*

الله اکبر ! मेरे प्यारे आक़ा के प्यारे दीवानो! मज़कूरा हदीषे मुबारका पर अमल बेहद ज़रूरी है कि आज तो मस्जिद में ज़िक्र व अज़कार कम और दुन्यावी बातें ज़्यादा होती हैं। डरो अल्लाह से ! और ख़ुदारा ! ऐसे लोग जो मस्जिद के अदब को बजा नहीं लाते और दुन्यावी गुफ़्तगू करते हैं उनसे अलाहेदा बैठो ता कि तुम से बे अदबी का गुनाह सरज़द हो। अल्लाह तआला हम सब पर करम की नज़र फ़रमाए।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

★ बुलंद आवाज़ से बातें करना कैसा ? ★

हज़रत सईद बिन इब्राहीम رحمۃ اللہ علیہ से रिवायत है कि वह अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि अमीरुल मोमिनीन सैयदना हज़रत उमर फ़ारूक़ رضی اللہ عنہ ने एक शख़्स की बुलंद आवाज़ मस्जिद में सुनी तो इरशाद फ़रमाया, तू जानता है कि कहां है? तू जानता है कि कहां है? यानी बुलंद आवाज़ को नापसंद फ़रमाया। *(शमाइमुल अंबर–19)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! मज़कूरा हदीष शरीफ़ से यह बात समझ आयी कि मस्जिद में बुलंद आवाज़ से गुफ़्तगू करना हुजूर ﷺ को क़तई पसंद नहीं था। आज हम तबाह व बर्बाद इसी लिये हो रहे हैं कि हम हुजूर ﷺ की पसंद और नापसंद का क़तई तौर पर ख़्याल नहीं रखते। अल्लाह हम को सहीह इदराक अता फ़रमाये और आदाबे मस्जिद बजा लाने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये। **آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔**

★ अलामते मुनाफ़िक़ ★

ख़लीफ़तुल मुरसलीन हज़रत उष्मान ग़नी رضی اللہ عنہ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इरशाद फ़रमाया, जिसको मस्जिद ही में अज़ान हो गयी

और वह बग़ैर ज़रूरत मस्जिद से निकला या मस्जिद आने का इरादा नहीं तो वह मुनाफ़िक़ है। *(शमाइमुल अंबर, 40, फतावा रज़विय्यह, 3/374)*

الله اکبر ! मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो! कितना सख़्त इरशाद है हुजूर रहमते आलम ﷺ का हम अपने आपको तलाश करें कहां हैं? हम किस दर्जे पर हैं? ख़बरदार ! निफ़ाक़ से अपने आपको बचायें। अल्लाह तआला हम सब पर करम की नज़र फ़रमाये और मुनाफ़िक़ की आदतों से बचाये।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

हज़रत अबुश्शअषा رضی اللہ عنہ से रिवायत है कि एक शख़्स मस्जिदे नबवी से उस वक़्त निकला जब अस्र की अज़ान हो चुकी थी तो हज़रत अबू हुरैरा رضی اللہ عنہ ने फ़रमाया, उसने हुजूर ﷺ की नाफ़रमानी की। *(हवाला : उपर के मुताबिक)*

हज़रत इमाम अहमद रज़ा मुहद्दिषे बरैलवी قدس سرہٗ फ़रमाते हैं कि मस्जिद को बू से बचाना वाजिब है, लिहाज़ा मस्जिद में मिट्टी का तेल जलाना हराम, मस्जिद में दिया सलाई जलाना हराम, मस्जिद में कच्चा गोश्त ले जाना जाइज़ नहीं। हालांकि कच्चे गोश्त की बू बहुत ख़फ़ीफ़ होती है तो जहां से मस्जिद में पहुचे वहां तक मुनानअत की जायेगी, मस्जिद आज जमाअत के लिये बनायी जाती है, फिर यह ख़्याल न करो कि अगर मस्जिद ख़ाली है तो उसमें किसी बू का दाख़िल करना उस वक़्त जाइज़ हो कि कोई आदमी नहीं जो उससे ईज़ा पायेगा। ऐसा नहीं बल्कि मलाइका भी उस चीज़ से ईज़ा पाते है जिससे इंसान ईज़ा पाता है। मस्जिद को नजासत से बचाना फ़र्ज़ है। *(फतावा रज़विय्यह, 6/381)*

★ फ़रमाने आला हज़रत ★

सैयदी सरकार आला हज़रत इमामे इश्क़ व मुहब्बत इमाम अहमद रज़ा ख़ान फ़ाज़िले बरैलवी رحمۃ اللہ علیہ की एक और तहक़ीक़ मुलाहेज़ा फ़रमायें ता कि एहतेराम मस्जिद का जज़्बा में और इज़ाफ़ा हो जाये।

मस्जिद में दुन्या की मुबाह बातें करने को बैठना नेकियों का खाता है जैसे आग लकड़ी को। फ़तहुल क़दीर में है: **"اَلْكَلَامُ الْمُبَاحُ فِيْهِ مَكْرُوْهٌ يَاكُلُ الْحَسَنَاتِ**

इश्वाहमें है :– ''اِنَّهٗ يَاكُلُ الحَسَنَاتِ كَمَا تَاكُلُ النَّارُ الحَطَبَ''

मदारिकमें हदीष नक्ल की है :–

''الحَدِيثُ فِى المَسْجِدِ يَاكُلُ الحَسَنَاتِ كَمَا تَاكُلُ البَهِيمَةُ الحَشِيْشَ''

मस्जिद में दुन्या की बात नेकियों को इस तरह खा जाती है जैसे चौपाया घास को।

गम्जुल ओयूनमें खज़ानतुल फिक़हसे है :–

''مَنْ تَكَلَّمَ فِى المَسَاجِدِ بِكَلَامِ الدُّنْيَا اَحْبَطَ اللّٰهُ تَعَالىٰ عَنْهُ عَمَلَ اَرْبَعِيْنَ سَنَةً''

जो मस्जिद में दुन्या की बात करे अल्लाह तआला उसके चालीस बरस के अमल अकारत फ़रमा दे।

हदीक़ाए नदिया में है कि दुन्या की बात जब कि फ़ी नफ़सिही मुबाह और सच्ची हो बिला ज़रूरत करनी मकरूहे तहरीमी है। ज़रूरत ऐसी जैसे मोअ्तकिफ़ अपनी हवाइजे ज़रूरिया के लिये बात करे। फिर हदीषे मज़कूर ज़िक्र करके फ़रमाया, माअना हदीष यह है कि अल्लाह तआला उनके साथ भलाई का इरादा न करेगा और वह ना मुराद मेहरूम है।

سبحان اللّٰہ! जब मुबाह व जाइज़ बात बिला ज़रूरते शरइय्यह करने को मस्जिद में बैठने पर यह आफ़ते हैं तो हराम व नाजाइज़ काम करने का क्या हाल होगा? मस्जिद में किसी चीज़ का मोल लेना, बेचना, ख़रीद व फ़रोख़्त की गुफ़्तगू करना नाजाइज़ है। मगर मोअतकिफ़ को अपनी ज़रूरत की चीज़ मोल लेनी वह भी जब कि मुबैअ (फ़रोख़्त की जाने वाली चीज़) मस्जिद से बहार ही रहे मगर ऐसी ख़फ़ीफ़ व नज़ीफ़ व क़लील शय जिस के सबब न मस्जिद में जगह रुके न उसके अदब के ख़िलाफ़ हो और उसी वक़्त उसे अपने इफ़तार व सेहरी के लिये दरकार हो तिजारत के लिये बयअ व शराअ की मोअ्तकिफ़ को भी इजाज़त है। *(फतावा रज़विय्यह, 6/403)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! मज़कूरा बातों को आप सुन चुके अब अमल में कोताही से गुरेज़ करें और अपने आप को हलाकत से बचायें। अल्लाह हम सबको मस्जिद के आदाब बजा लाने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाइ।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

★ एहतेरामे मस्जिद ★

हज़रत मआविया बिन क़रह رضی اللہ عنہ अपने बाप से रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने उन दो सब्ज़ियों के खाने से मना फ़रमाया यानी प्याज़ और लहसन से और फ़रमाया कि उन्हें खाकर कोई शख़्स हमारी मस्जिदों के क़रीब हरगिज़ न आये और फ़रमाया कि अगर खाना ही चाहे तो पकाकर उनकी बू दूर कर लिया करो। *(अबू दाउद शरीफ)*

★ आवाज़ बुलंद करने की ममानेअत ★

हज़रत साइब बिन यज़ीद से रिवायत है कि मैं मस्जिद मैं सोया हुआ था मुझे एक शख़्स ने कंकरी मारी, मैं ने देखा कि वह उमर बिन ख़त्ताब رضی اللہ عنہ थे। कहा, जाओ। उन दो शख़्सों को मेरे पास लाओ। मैं उन दोनों को लाया, पस कहा तुम किन लोगों में से हो ? या फ़रमाया, तुम दोनों कहां के हो? उन दोनों ने कहा, हम ताइफ़ के रहने वाले हैं। फ़रमाया, अगर तुम मदीना के रहने वाले होते तो मैं तुमको सज़ा देता कि तुम रसूलुल्लाह ﷺ की मस्जिद में आवाज़ बुलंद करते हो। *(बुखारी शरीफ)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! मज़कूरा हदीष शरीफ़ से यह बात समझ में आयी कि मस्जिद में दुन्यावी बातें और वह भी बुलंद आवाज़ से करना आदाबे मस्जिद के ख़िलाफ़ है। अल्लाह तआला हम सब को जुमला मसाजिद के एहतेराम की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

★ मस्जिद में थूकने की ममानेअत ★

हज़रत अनस رضی اللہ عنہ से मरवी है कि नबी अकरम ﷺ ने फ़रमाया मस्जिद में थूकना गुनाह है और उसका कफ़्फ़ारा दफ़न कर देना है। *(बुखारी शरीफ)*

और आप की दूसरी रिवायत में यूं है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने मस्जिद की दीवार किब्ला पर रींठ देखी तो यह बात आप को नागवार मालूम हुई जिसका अषर चेहराए अनवर से ज़ाहिर हुआ। आप उठे और उसको अपने दस्ते मुबारक से साफ़ करके फ़रमाया, जिस वक़्त तुम में से कोई नमाज़ के लिये खड़ा हो तो उस हाल से ख़ाली नहीं कि अपने रब से मुनाजात करता है और बिला शक

उसका रब उसके और सिम्त क़िब्ला के दर्मियान होता है। लिहाज़ा तुम से कोई सिम्त क़िब्ला को न थूके और यह अमल सिर्फ़ बायें जानिब या पैरों के नीचे करे उसके बाद आपने अपनी चादर में थूका और उसको मलकर फ़रमाया या इस तरह करे। *(बुखारी शरीफ)*

हज़रत उमर बिन शोएब رضی اللہ عنہ अपने बाप से, वह अपने दादा से रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने मस्जिद में शेअर पढ़ने, ख़रीद व फ़रोख़्त करने और जुम्आ के दिन मस्जिद में नमाज़ से पहले हलक़ा बाध कर बैठने से मना फ़रमाया। *(अबू दाउद)*

और हज़रत अनस رضی اللہ عنہ से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया कि क़यामत की अलामतों में से है कि लोग मस्जिदों में फ़ख़्र करेंगे। *(निसाइ शरीफ)*

मेरे प्यारे आक़ा ﷺ के प्यारे दीवानो ! गैबदां आक़ा ﷺ ने तक़रीबन आज से चौदह सौ साल पहले जिस चीज़ की ख़बर हमें दी थी वह हमारी निगाहों के सामने है कि मस्जिद की आराईश व तज़ईन पर तो ख़ूब तवज्जोह दी जा रही है और बाहम फ़ख़्र करते नज़र आते हैं, लेकिन रूहे नमाज़ नज़र नहीं आती। सच कहा था डाक्टर इक़बाल ने :–

मस्जिद तो बना ली शब भर में ईमान की हरारत वालों ने
मन अपना पुराना पानी था बरसों में नमाज़ी बन न सके

मस्जिदें मर्सिया ख़्वां हैं कि नमाज़ी न रहे
यानी वह साहिबे अवसाफे हिजाज़ी न रहे

चंद मसाइले ज़रूरिया

मस्अला : फ़रमाने नबवी ﷺ है कि जब तुम में से कोई शख़्स मस्जिद में दाख़िल हो तो बैठने से पहले दो रकअत नमाज़ अदा करे।

मस्अला : क़िब्ला की तरफ़ क़सदन पांव फैलाना मकरूह है, सोते में हो या बेदारी की हालत में।

मस्अला :मस्जिद की छत पर वती व बोल व बराज़ हराम है। यूं ही जुनूब और हैज़ व निफ़ास वाली औरत को उस पर जाना हराम है कि वह भी मस्जिद के हुक्म में है। मस्जिद की छत पर बिला ज़रूरत चढ़ना मकरूह है। *(दुर्रे मुख्तार, रद्दुल मुहतार)*

मस्अला : मस्जिद को रास्ता बनाना यानी उसमें से होकर गुज़रना नाजाइज़ है। अगर उसकी आदत कर ले तो फ़ासिक़ है।

मस्अला : बच्चे और पागल को जिन से नजासत का गुमान हो मस्जिद में ले जाना हराम है वरना मकरूह है। जो लोग जूतियां मस्जिद के अंदर ले जाते हैं उनको इस का ख़्याल करना चाहिये कि अगर नजासत लगी हो तो साफ़ कर लें और जूता पहने मस्जिद में चले जाना सूए अदब है। *(रद्दुल मुहतार)*

मस्अला : मस्जिद को हर घिन की चीज़ से बचाना ज़रूरी है। आज कल अक्सर देखा जाता है कि वुज़ू के बाद मुंह और हाथ से पानी पोंछ कर मस्जिद में झाड़ते हैं यह नाजाइज़ है।

मस्अला : कपड़े पांव सना हुआ है उसको मस्जिद की दीवार या सुतून से पोछना मना है। यूं ही फैले हुए गुबार से पोंछना भी नाजाइज़ है। और कूड़ा जमा है तो उससे पोंछ सकते हैं। यूं ही मस्जिद में कोई लकड़ी पड़ी हुई है कि इमारत मस्जिद में दाख़िल नहीं उससे भी पोंछ सकते हैं। चटाई के बेकार टुकड़े से जिस पर नमाज़ पढ़ते हो पोछ सकते हैं मगर बचना अफ़ज़ल है।

मस्अला : मस्जिद का कूड़ा झाड़कर किसी ऐसी जगह न डाले जहां बे अदबी हो।

मस्अला : बिला ज़रूरत मस्जिद की छत पर चढ़ना मकरूह है।

मस्अला : मस्जिद में उंगलियां चटख़ाना मना है।

मस्अला : मस्जिदे मुहल्ला में नमाज़ पढ़ना अगरचे जमाअत क़लील हो मस्जिद जामा से अफ़ज़ल है अगर चे वहां बड़ी जमाअत हो बल्कि अगर मस्जिदे मुहल्ला में जमाअत न हुई हो तो तन्हा जाए और अज़ान व इक़ामत कहे, नमाज़ पढ़े वह मस्जिद जामा की जमाअत से अफ़ज़ल है।

मस्अला : अज़ान के बाद मस्जिद से निकलने की इजाज़त नहीं। हदीष में हुजूर ﷺ ने फ़रमाया कि अज़ान के बाद मस्जिद से नहीं निकलता मगर मुनाफ़िक़। लेकिन वह शख़्स कि किसी काम के लिये गया और वापसी का इरादा रखता है यानी क़ब्ल क़यामे जमाअत। यूं ही जो शख़्स दूसरी मस्जिद की जमाअत का मुन्तज़िम हो तो उसे चला जाना चाहिये। *(आम्म कुतूबे फिक़ह, बहारे शरीअत, जिल्द अव्वल)*

अल्लाह तआला की बारगाह में दुआ है कि जो कुछ हमने आदाबे मस्जिद के मुताल्लिक़ सुना उस पर अमल की तौफ़ीक़ नसीब हो और मस्जिद से बरकतें हासिल करने का जज़्बा भी हमारे दिल में पैदा हो ।

آمین بجاہ النبی الکریم علیہ افضل الصلوٰۃ والتسلیم۔

وَمَا عَلَيْنَا اِلَّا الْبَلَاغُ الْمُبِيْنُ

मुनाजात

या इलाही हर जगह तेरी अ़ता का साथ हो
जब पड़े मुश्किल शहे मुश्किलकुशा का साथ हो

या इलाही भूल जाऊँ नज़्अ़ की तक्लीफ़ को
शादीए दीदारे हुस्ने मुस्तफ़ा का साथ हो

या इलाही गोरे तीरा की जब आये सख़्त रात
उनके प्यारे मुंह की सुबहे जांफ़ज़ा का साथ हो

या इलाही जब पड़े मह्शर में शोरे दारोगीर
अम्न देने वाले प्यारे पेशवा का साथ हो

या इलाही जब ज़बानें बाहर आएं प्यास से
साहिबे कौषर शहे जूदो अ़ता का साथ हो

या इलाही सर्द महरी पर हो जब ख़ुर्शीदे हश्र
सैयदे बे साया के ज़िल्ले लिवा का साथ हो

या इलाही गर्मीए मह्शर से जब भड़कें बदन
दामने मह्बूब की ठंडी हवा का साथ हो

या इलाही नामाए आमाल जब खुलने लगे
ऐब पौशे ख़ल्क़ सत्तारे ख़ता का साथ हो

या इलाही जब बहें आँखें हिसाबे जुर्म में
उन तबस्सुम रेज़ होटों की दुआ़ का साथ हो

या इलाही जब हिसाबे ख़ंदा बेजा रुलाये
चश्मे गिरयाने शफ़ीए मतर्जा का साथ हो

या इलाही रंग लायें जब मेरी बे बाकियां
उनकी नीची नीची नज़रों की हया का साथ हो

या इलाही जब चलूं तारीक राहे पुलसिरात
आफ़्ताबे हाश्मी नूरुल–हुदा का साथ हो

या इलाही जब सरे शमशीर पर चलना पड़े
रब्बे सल्लिम कहने वाले ग़मज़ुदा का साथ हो

या इलाही जो दुआएं नेक मैं तुझ से करूं
क़ुद्सियों के लब से आमीन रब्बना का साथ हो

या इलाही जब **रज़ा** ख़्वाबे गिराँ से सर उठाये
दौलते बेदार इश्क़े मुस्तफ़ा का साथ हो

लाखों सलाम

मुस्तफ़ा जाने रह्मत पे लाखों सलाम
शम्‌ओ़ बज़्मे हि़दायत पे लाखों सलाम

मेहरे चर्ख़े नबुव्वत पे रौशन दुरूद
गुले बाग़े रिसालत पे लाखों सलाम

शबे असरा के दुल्हा पे दाइम दुरूद
नौशए बज़्मे जन्नत पे लाखों सलाम

अ़र्श की ज़ेबो ज़ीनत पे अ़र्शी दुरूद
फ़र्श की तीबो नुज़हत पे लाखों सलाम

नूरे अ़ैने लताफ़त पे अल्तफ़ दुरूद
ज़ेबो ज़ैने नज़ाफ़त पे लाखों सलाम

सर्वे नाज़े क़िदम मग़्ज़े राज़े हि़कम
यक्का ताज़े फ़ज़ीलत पे लाखों सलाम

नुक्‌तए सिर्रे वह्‌दत पे यक्‌ता दुरूद
मर्कज़े दौरे कस्‌रत पे लाखों सलाम

साहि़बे रज्‌अ़ते शम्सो शक़्क़ुल क़मर
नाइबे दस्ते क़ुद्‌रत पे लाखों सलाम

जिसके ज़ेरे लिवा आदमो मन सिवा
उस सदाए सियादत पे लाखों सलाम

शहर यारे इरम ताजदारे हरम
नौ बहारे शफ़ाअ़त पे लाखों सलाम

अ़र्श ता फ़र्श है जिस के ज़ेरे नगीं
उसकी क़ाहिर रियासत पे लाखों सलाम

हम ग़रीबों के आक़ा पे बेहद दुरूद
हम फ़क़ीरों की सर्वत पे लाखों सलाम

दूरो नज़्दीक के सुनने वाले वो कान
काने लअ़्ले करामत पे लाखों सलाम

जिस के माथे शफ़ाअ़त का सेहरा रहा
उस जबीने सआ़दत पे लाखों सलाम

जिस के आगे सरे सरवरॉं ख़म रहें!
उस सरे ताजे रिफ़्अ़त पे लाखों सलाम

जिस तरफ़ उठ गई दम में दम आ गया
उस निगाहे इनायत पे लाखों सलाम

जिस से तारीक दिल जग्‌मगाने लगे
उस चमक वाली रंगत पे लाखों सलाम

पतली पतली गुले क़ुद्‌स की पत्तियां
उन लबों की नज़ाकत पे लाखों सलाम

कुल जहां मिल्क और जौ की रोटी ग़िज़ा
उस शिकम की क़नाअ़त पे लाखों सलाम

जिस सुहानी घड़ी चम्‌का तैबा का चाँद
उस दिल अफ़्रोज़ साअ़त पे लाखों सलाम

एक मेरा ही रह्मत में दावा नहीं
शाह की सारी उम्मत पे लाखों सलाम

काश मह्‌शर में जब उनकी आमद हो और
भेजें सब उनकी शौकत पे लाखों सलाम

मुझसे ख़िद्‌मत के क़ुद्‌सी कहें हां **"रज़ा"**
मुस्तफ़ा जाने रह्मत पे लाखों सलाम